सारिका

जून, १९७६

- साहित्य के ज़रिये: अफ़्रीकी एकता की शिनाख़्त
- अभिमन्यु अनत के ताजा सशक्त उपन्यास 'लाल पसीना' की पहली किस्त
- तथा सभी स्थायी स्तंभ



गर्मी के इन दिनों में आप को आराम और मनोरंजन की ज़रूरत है और
स्टार पाकेट बुक्स
मनोरंजन का सर्वोत्तम एवं सस्ता साधन हैं

प्रत्येक वर्ग के पाठकों के लिए प्रत्येक मास नई-नई सुन्दर 'स्टार बुक्स' आप के प्रिय लेखकों की नई रचनाओं के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं।

नई स्टार बुक्स

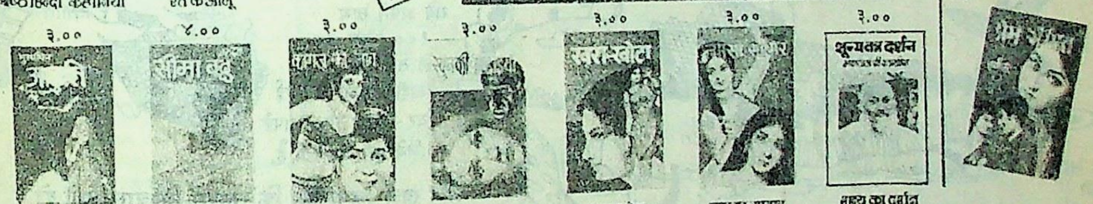


३/- श्रेष्ठ हिन्दी कहानियां — अरुणा कपूर ३.०० रेत के आंसू



और इनके साथ ही प्रस्तुत है आप सब के प्रिय उपन्यासकार **गुलशन नन्दा** की नई फ़िल्म का सचित्र फ़िल्मी कथानक **महबूबा** ३/- 'स्टार सीरीज' में प्रकाशित

साथ ही पढ़िये स्टार की नई लेखिका **संगीता** का प्रथम उपन्यास **प्रेम संगीत** पृष्ठ 192 मूल्य 3/-



३.००	४.००	३.००	३.००	३.००	३.००	३.००
आहुति	शीशा बहू	कागज़ की नाव	खून की परछाइयाँ	खट्टा मीठा	प्याला साग़र	शून्य का दर्शन
मुसाफिर	गुरुदत्त	राजवंश	गुरुदत्त	समीर	लोकदर्शी	(भगवान श्री रजनीश)

अन्य स्टार बुक्स

पिंजरा	गुलशन नन्दा	४.००	मृग तृष्णा	समीर	३.००
चिनगारी	,,	४.००	धड़कन	,,	३.००
भंवर	,,	४.००	आवारा	,,	२.००
शीशे की दीवार	,,	२.००	परिन्दा	,,	२.००
गेलार्ड	,,	४.००	तलाश	,,	२.००
सितारों से आगे	,,	२.००	मुर्दों का षडयंत्र	गुरुदत्त	३.००
दाग स्क्रीनप्ले	,,	३.००	हत्या और हत्यारे	,,	३.००
सफ़र	गुरुदत्त	५.००	भयानक आवाजें	,,	२.००
दीन दुनिया	,,	४.००	तपस्या	स्क्रीनप्ले	३.००
अंधेर नगरी	,,	४.००	उस के साजन	कुशवाहाकान्त	३.००
काली रातें	राजवंश	३.००	उन की कहानी	अमृता प्रीतम	३.००
दर्द पराया	,,	३.००	चाकर गाथा	विमल मित्र	३.००
शिकायत	,,	२.००	भैरवी	शिवानी	३.००
मिलाप	,,	२.००	१९७६ में आप का भाग्य		३.००
उपासना	,,	०.००	भारत की पन्द्रह भाषायें		४.००
रंगरलियाँ	,,	३.००	साईं बाबा के संदेश		३.००
तूफान	,,	३.००	सफलता कैसे मिले ?	समर बहादुर सिंह	३.००
निकम्मा	,,	३.००	जीवन दर्शन	भगवान रजनीश	३.००
			उर्वशी (काव्य)	दिनकर	५.००

कम मूल्य की सुन्दर पुस्तकें और भी कम मूल्य में
स्टार लायब्रेरी योजना
के सदस्य बन कर घर बैठे प्राप्त करें



सदस्यता-नियम एवं सुविधाएं

- सदस्यता शुल्क का केवल १/- भेज कर प्रत्येक मास ११/- की पुस्तकें १०/- की वी. पी. से घर बैठे प्राप्त करें। वी. पी. भेजने का पूरा खर्च—जो प्रति मास ३/- से भी अधिक होता है—हम देंगे। इस प्रकार आप को १४/- के स्थान पर केवल १०/- देने होंगे और ४ नई एवं रोचक स्टार बुक्स आप को डाक द्वारा घर बैठे पहुंचती रहेंगी।
- योजना सदस्यों को पहिली वी. पी. में एक सुन्दर प्लास्टिक बुक कवर निःशुल्क भेजा जाता है।
- छः वी. पी. निरन्तर मंगाने वाले सदस्यों को सातवीं वी. पी. में तीन रुपये मूल्य की एक और पुस्तक भी भेंट में निःशुल्क दी जाती है।
- समय समय पर अन्य कई उपहार भी योजना-सदस्यों को दिए जाते हैं।
- और यदि कोई सदस्य किसी मास वी.पी. न मंगाना चाहें तो यथासमय सूचित करने पर वी. पी. नहीं भेजी जाती—फिर भी सदस्यता जारी रहती है। इसी प्रकार यथा समय पत्र प्राप्त होने पर सदस्य अपनी पसन्द की कोई भी अन्य पुस्तक मंगा सकते हैं।

स्टार पब्लिकेशंज (प्रा०) (लि०)
आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली-110002

Jupiter

अन्य स्टार बुक्स की सूची पत्र लिख कर निशुल्क मंगायें


पहाड़ पर जाने में आप जितना ख़र्च करेंगे
उतने में ही विदेश में छुट्टियाँ बिताइये
मॉरिशस.
अब विदेश में छुट्टियाँ बिताना पहले से कहीं आसान है. और सच पूछिये तो इसका खर्च भारत के किसी भी अच्छे पहाड़ी स्थान पर जाने के मुकाबले कम ही पड़ता है.
स्वप्नमधुर छुट्टियाँ
विशाल फूलों और खूबसूरत झरनों से शोभित तथा जिन्दगी की मस्ती बिखेरता एक स्वप्निल टापू है मॉरिशस.
यहाँ आप पायेंगे जगप्रसिद्ध खूबसूरत समुद्रतट.
यहाँ धूप-स्नान का मजा लीजिये, या जी भर कर तैरिये या फिर बिकनी में सजी सुंदरियों को घूमते हुए देखिए.
दोपहर बाद ख़रीदी कीजिये और शाम कैसिनो में बिताइये. और अगर आप खेल-कूद के रसिया हैं तो नौका विहार कीजिये, वाटर स्कीइंग कीजिये, गोल्फ खेलिये या फिर मछली मारने का आनंद उठाइये और संसार की सबसे बड़ी ब्लू मार्लिन मछली का शिकार कीजिये. वैसे आप घुड़दौड़ में शामिल हो सकते हैं, हिरनों के शिकार पर जा सकते हैं, या डीप सी डाइविंग का मज़ा ले सकते हैं. लेकिन यह इस बात पर निर्भर है कि आपने छुट्टियाँ बिताने के लिये साल का कौन सा समय चुना है.
कम से कम खानापूरी
पिछले तीन वर्षों के बीच अगर आप विदेश जा चुके हैं तो भी मॉरिशस जाने के लिये आपको न तो पी फॉर्म की जरूरत पड़ती है और न पासपोर्ट एन्डोर्समेंट या वीसा की. खर्च के लिये आप बिना रिजर्व बैंक गये अपने साथ १०० डॉलर तक ले सकते हैं. सारी कागजी कार्रवाई एयर-इंडिया खुद आपके लिये पूरी कर देती है.
और ख़र्च इतना कम कि सहसा विश्वास नहीं हो
मॉरिशस में छुट्टियाँ बिताते समय आप अत्यधिक आरामदायक होटलों में ठहरिये या पूरा कॉटेज किराये पर लीजिये — फिर भी दूसरी जगह के अच्छे शानदार होटलों के मुक़ाबले किराया कम ही पड़ता है.
और अगर आप चार या अधिक यात्रियों की मंडली बनाकर जायें तो एयर-इंडिया आपको ज़ोरदार छूट देने को तैयार है.
एयर-इंडिया के ख़ास एक्सकर्शन फ़ेयर के अन्तर्गत एक यात्री को भी भारी छूट मिल सकती है. या फिर संपूर्ण ख़र्च सहित दिलचस्प मंडली में छुट्टियाँ बिताने का सुयोग बैठाने के लिये अपने ट्रैवल एजेन्ट को कहिये.
एयर-इंडिया
सप्ताह में दो बार
सीधे मॉरिशस
AI-9641


मोदी धागा
कशीदाकारी
प्रतियोगिता
प्रथम पुरस्कार १0,000/-रु.
५0,000 रुपये के अन्य आकर्षक पुरस्कार
२ द्वितीय पुरस्कार
२८६ लीटर का जेम रेफ्रीजरेटर
४ तृतीय पुरस्कार
फिलिप्स हाई फ्यू इन्टरनेशनल स्टीरियो सिस्टम
८ चतुर्थ पुरस्कार
रेकोल्ड मिक्सर और ग्राइंडर
१० पंचम पुरस्कार
रेकोल्ड की हॉट प्लेट
१०० सांत्वना पुरस्कार
रेकोल्ड की बिजली की इस्त्री
कल्पना कीजिए! १०,००० रुपये आपके हो सकते हैं! मौका न चूकिये। तुरन्त कशीदाकारी का काम शुरू कर दीजिए।
नियम सरल है
प्रतियोगिता का फैसला निष्पक्ष निर्णायकों का पैनल करेगा जो अन्तिम और मान्य होगा। आप जितने चाहें उतने प्रविष्टि भेज सकते हैं।
हर एक प्रविष्टि अलग कूपन के साथ भेजा जाना चाहिए और उस पर आपके साफ-साफ नाम पते की अलग चिट भी होनी चाहिए।
सभी पुरस्कृत प्रविष्टियों पर मोदी थ्रेड मिल्स का अधिकार होगा। बाकी प्रविष्टियां प्रतियोगिता के बाद हिस्सा लेने वालों को लौटा दिये जायेंगे। प्रविष्टि के खो जाने या खराब हो जाने की जिम्मेदारी मोदी थ्रेड मिल्स की नहीं होगी। प्रतियोगिता के नियमों के बारे में विवरण के लिए मोदी धागे के निकटतम डीलर से एक प्रविष्टि पत्र मांगिये।
जल्दी कीजिए! अंतिम तिथी: ३० अगस्त १९७६
इस कूपन को काटिए और अपनी प्रविष्टि के साथ भेज दीजिए। इस्तेमाल किए गए 'MTM' धागों के कैसमीयां और लेबल भी साथ भेज दीजिए। आपकी प्रविष्टि के साथ एक अलग चिट नत्थी होनी चाहिए जिस पर आपका नाम, पता साफ-साफ लिखा हो।
मोदी धागा कशीदाकारी प्रतियोगिता प्रविष्टि कूपन
नाम ....
पता ....
शहर .... पिनकोड ....
श्रेणी : कढ़ाई / बुनाई / कोशियाकारी / टैटिंग
प्रतियोगिता के बाद :-
कृपया मेरी प्रविष्टि वी०पी०पी० (डाक मूल्य) से लौटा दें।
मैं मोदी नगर से अपनी प्रविष्टि खुद ले लूंगा/लूंगी।
मैं प्रमाणित करता/करती हूं कि मोदी धागा कशीदाकारी प्रतियोगिता में मैंने जो प्रविष्टि भेजी है वह मैंने खुद तैयार की है और मुझे प्रतियोगिता के नियम मान्य हैं।
.... (हस्ताक्षर)
इस पते पर भेजें : — मोदी धागा कशीदाकारी प्रतियोगिता, मोदी थ्रेड मिल्स, मोदी नगर, उत्तर प्रदेश।
आपको क्या करना है :
मोदी धागे के 'MTM' स्ट्रेंडिड कढ़ाई के धागे, क्रोशिया धागे या सूती धागे से अपनी पसन्द की कोई चीज बनाईये। आप कढ़ाई, बुनाई, टैटिंग या क्रोशियाकारी कुछ भी कर सकते हैं। इसका कोई भी आकार या डिज़ाईन हो सकता है लेकिन काम मौलिक होना चाहिए।
आपकी कशीदाकारी के बारे में फैसला करने का आधार मौलिकता, रंगों की पसंद और टांकों की सुन्दरता होगी। आपने इस कशीदाकारी में जिन धागों को इस्तेमाल किया हो उनके कैसमीयों और लेबल संभाल कर रखिए और अपनी प्रविष्टियों के साथ रजिस्टर्ड (ए०डी०) से भेजिए।
पता है : —
मोदी धागा कशीदाकारी प्रतियोगिता
मोदी थ्रेड मिल्स, मोदी नगर, उत्तर प्रदेश।
मोदी धागे
३० से ज़्यादा देशों की पसन्द।
OBM/3165J

सारिका के वार्षिक ग्राहकों के लिए विशेष छूट

'सारिका' के प्रत्येक अंक का मूल्य एक रुपया है. किंतु वर्ष भर के लिए वार्षिक शुल्क मात्र दस रुपये है. यानी साल भर में दो अंक मुफ्त. यदि आप दो साल के लिए ग्राहक बनते हैं. तो शुल्क केवल उन्नीस रुपये है यानी दो वर्ष में पांच अंक मुफ्त. हां. तीन वर्ष के लिए शुल्क केवल सत्ताईस रुपये है.

आपके लिए सारिका की विशेष दरें इस प्रकार हैं:

एक वर्ष—१० रुपये
दो वर्ष—१९ रुपये
तीन वर्ष—२७ रुपये
विदेश में समुद्री डाक से एक वर्ष—३० रुपये

कृपया यह कूपन जरूरी राशि के चेक/ड्राफ्ट/मनी-आर्डर के साथ-साथ आज ही भेज दें—

सर्कुलेशन मैनेजर
सारिका, टाइम्स आफ इंडिया विल्डिंग, वम्बई-४०० ००१.

कृपया मुझे/हमें निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्षों/तीन वर्षों के लिए 'सारिका' भेजने की व्यवस्था करें. १० रुपये/१९ रुपये/२७ रुपये चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भेजे जा रहे हैं.

नाम -------------

पता -------------

हस्ताक्षर ----------

सारिका

कच्छी कहानियों के दो आगामी अंक

जुलाई '७६ और अगस्त '७६

कथा जगत के नये परिवेश और अनछुए, अंधेरे कोनों की तलाश सारिका का लक्ष्य रहा है, सारिका के आगामी दो अंक इसी लक्ष्य की उपलब्धि हैं. ये दोनों अंक— जुलाई, १९७६ और अगस्त, १९७६ कच्छी कहानियों के अंक होंगे.

कच्छ का तपता रेगिस्तान, रेगिस्तान में हहराते रेत के बबंडर और उन बबंडरों से जूझता हुआ वहां का आदमी...भूख और प्यास की छटपटाती संस्कृति और इन सबके बीच कभी न हार मानने वाली आशा और जिजीविषा...यही सब आप इन दो अंकों में पढ़ सकेंगे.

साथ ही अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'लाल पसीना' की अगली किस्त.

तथा सभी स्थायी स्तंभ.



सारिका

कहानियों और कथा-जगत की संपूर्ण पत्रिका

जून, १९७६

वर्ष : १६ ; पूर्णांक : १८२

कहानियां

लघुकथाएं--लोककथाएं

आद्यकथाकार (१२)

तीन कविताएं

विशिष्ट परिचय

धारावाहिक उपन्यास : पहली किस्त

स्थायी स्तंभ

विशिष्ट रिपोर्ट

- आमुख : शब्बीर दीवान

पृष्ठ १२-१३, १७, २५, ३२, ३३, ३७, ४४, ४८-४९, ५५, ६१, ६५ तथा ७३ के चित्रों का रेखांकन : प्रकाश विश्वासराव

संपादक : कमलेश्वर

- मुख्य उप-संपादक : आनंदप्रकाश सिंह
- उप-संपादक : अवधनारायण मुद्गल, सुदीप
- कार्यालय-सहयोगी : श्रीनाथ पांडेय, देवचंद्र झा, भिकाजी शिर्के

पाठकीय

फरवरी अंक

इस अंक में **'गर्दिश के दिन'** स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित श्रीमती दीप्ति खंडेलवाल की आत्मरचना पर सर्वाधिक प्रतिक्रिया हुई. इन मिश्रित प्रतिक्रियाओं के दो-तीन उद्धरण हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं.

श्री एस. वेंकटेश, हैदराबाद, ने अपने भाव भरे लंबे पत्र में लिखा है— **"गर्दिश के दिन'** के अंतर्गत अब तक हमने जितनी भी आत्मरचनाएं पढ़ीं उनमें सर्वश्रेष्ठ श्रीमती दीप्ति खंडेलवाल की लगी. उनकी कलम से निकली हुई हर पंक्ति सीधे अंदर पहुंच कर हृदय को छू लेती है. पाठक का समस्त व्यक्तित्व हिल उठता है उनकी वेदना से. . .नत हो जाता है श्रद्धा से सिर ऐसे व्यक्तित्व के समक्ष जिन्होंने अपनी वेदना के रिसते कणों को स्वयं पी कर हिंदी-कथा-साहित्य को यथार्थवादी मनोवैज्ञानिक कहानियां दीं. ☐

श्री सुधाकर, दिल्ली : "दीप्ति जी की आत्मरचना पढ़ने के बाद ऐसा महसूस होता है जैसे वे अपने नारी होने पर कुछ आतंकित हैं. लगता है जैसे नारीत्व को उन्होंने एक विवशता के रूप में स्वीकारा है. उनकी कहानियों से अधिक मुझे उनकी आत्मरचना पसंद आयी है." ☐

श्री कपिलदेव : "लेखिका आभिजात्य संस्कारों से संपृक्त है तथा उसकी जिंदगी का बहुमूल्य हिस्सा अभी तक उसी जमीन से जुड़ा हुआ है. यह उनकी लेखनी के पीछे से जाने-अनजाने जाहिर हो गया है. शायद इसीलिए अबकी यह कृत्रिम दुःखानुभूति पाठक को भीतर तक छूने से वंचित रह जाती है. मानसिक स्तर पर उन्होंने 'अवाम' के दुख-दर्द को भोगा है, ईमानदारी से उनके दुख-दर्दों को जीने की कोशिश की है—यह भी सच है. इसीलिए उनकी रचनाएं कभी-कभी जिस्म के भीतरी हिस्से को छू जाती हैं." ☐

फरवरी अंक की कहानियों में **'संज्ञा और सर्वनाम'. 'रेत के पौधे' 'एक और शुरुआत' 'नदी जा रही सागर को', 'राहु और केतु'** सबसे ज्यादा पसंद की गयीं पसंद व्यक्त करने वाले हैं सर्वश्री **प्रदीप सिंह पवार** (इंदौर), **अनिल कटारिया** (देहरादून), **अशोक शर्मा** (धमतरी), **डा. करनैल सिंह** (अमृतसर), **विजयशंकर मंडल** (मुंगेर), **अजयकुमार वर्मा** (मोतिहारी), **देवचंद जैन** (इटारसी), **सुरेंद्र ठकराल** (कैथल, हरियाणा) **आर. एल. ठाकुर** (ग्वालियर), **चंद्र मोहन सिंह पवार** (भोपाल), **उदयशंकर** (आरा, बिहार), **राजेंद्र परदेशी** (इलाहाबाद), **प्रदीप जैन** (टीकमगढ़, म. प्र.), **सुश्री सुषमा रमण** (पटना). ☐

ग्वालियर के **श्री अजीज अफसर 'राही'** की पत्नी **श्रीमती तमन्ना** को **'इंद्रधनुषः जुबेदा उर्फ जुब्बी के नाम"** कहानी ने बहुत प्रभावित किया. ☐

मार्च अंक

आज के पोलिश कथा-साहित्य की झलक देने वाली ३० कहानियां मार्च अंक में दी गयी थीं. पाठकों ने अधिकांशतः इस अंक को पसंद किया. **श्री श्याम मनोहर तिवारी,** जबलपुर (म. प्र.) की राय में इस अंक की **'दीवारों के बीच', 'भोर के पहरेदार', 'परिंदों ने भी देखा था,' 'जमीन का टुकड़ा', 'इनकार'** और **'चक्र'** कहानियां श्रेष्ठ रहीं. ☐

श्री रफीक अ. बागबान, बीजापुर (कर्नाटक) को पोलिश कहानियों का यह संग्रह अपने आप में अनूठा प्रतीत हुआ. आपने लिखा है **" 'चक्र', 'चिट्ठी', 'महाराजा',** ...

श्री आर. के. कश्यप, दिल्ली को मार्च अंक से संतुष्टि नहीं मिली—क्योंकि "नीरसता का प्रकोप जहां-तहां बिखरा पड़ा है." ☐

आगरा की **सुश्री वीरबाला जैन** का भी यह मत है कि ऐसा अंक अरुचि पैदा कर देता है—"आखिर एक ही सी शैली में लिखी गयी कहानियों को कोई कहां तक पढ़े !" इनका सुझाव है कि कुछ प्रांतीय भाषाओं की कहानियां और किसी विदेशी भाषा की कहानी प्रत्येक अंक में दी जाये. ☐

श्री सुरेंद्र मिश्र बड़ी दरियापुर (जमालपुर, मुंगेर) का कहना है कि यह अंक विदेशी कथा-साहित्य से पाठकों को अवगत कराने की शृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी है.

" 'सारिका' पढ़ते वक्त ऐसा लगता है कि मैं पढ़ नहीं रहा हूं, बल्कि अपने गांव की उन गलियों में घूम रहा हूं, जहां बच्चे कल से बेखबर धूल से खेल रहे हैं—यह भूलते हुए कि यही धूल उन्हें कल फांकनी पड़ सकती है. और जहां लोग आज के परिवेश में रोटी के संदर्भ से जूझते हुए अपनी उपस्थिति का एहसास बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील हैं. और जहां के किशोर आज भी हवाई जहाज को आकाश में उड़ते देख मानसिक अपरिपक्वता से लाचार पूछ बैठते हैं, 'ई तनि गो के चिड़िया पर ओतै आदमी केना बैठे छै !' सारिका ने इन सभी को वाणी दी है और उसे छापकर आज के युग से जोड़ा है." ☐

'हिप्पी', 'स्मारक', 'दीवारों के बीच', कहानियां दिल से गुजरती हैं. प्रथम मौलिक कन्नड़ कहानी 'रंगप्पा की शादी' को रोशनी में लाने के लिए मैं 'सारिका' का ऋणी हूं. मास्ती जी के छायाचित्र के लिए मैं बेचैन था. 'सारिका' ने उसे भी छापकर मुझे संतोष प्रदान किया है. □

श्री मोहनलाल पालरेचा, होसपेट (कर्नाटक) को '**बोगातीनिया**' अत्यंत ही रोचक एवं दिलचस्प लगी. '**इम्तहान**', '**स्मारक**', '**इनकार**' और '**महाराजा**' ने विशेष रूप से इन्हें प्रभावित किया. □

अप्रैल अंक

अप्रैल अंक 'नवलेखन विशेषांक' था. इसके बारे में जितने पत्र प्राप्त हुए उनमें एक को छोड़कर सभी में इस अंक की सराहना की गयी.

श्री विजयकुमार पाठक, कटिहार (बिहार) के मतानुसार इस अंक की सभी कहानियां व्यक्तिगत, सामाजिक विसंगतियां लिये हुए हैं जो सहज ही प्रभावित कर जाती हैं. आम आदमी के बारे में सोचने के लिए युवा एवं नये लेखकों को प्रोत्साहित कर सराहनीय कार्य किया है." □

श्री गंगाप्रसाद राजौरा, दिल्ली, की दृष्टि में यह विशेषांक पिछले विशेषांकों से किसी भी प्रकार कम नहीं. □

श्री राजेंद्र शर्मा 'पुद्गल', चंदौसी (उ. प्र.) की नजर में भी यह अंक "अपनी अनुभूति एवम् अभिव्यक्ति की सार्थकता में खरा उतरा. . नई प्रतिभाओं को उभरने के लिए दिया गया यह अवसर, 'शायर, सिंह, सपूत' का लीक छोड़ने जैसा लगा." □

और **श्री अशोक शर्मा**, धमतरी (म. प्र.) को यह अंक समांतर कहानियों की ही शृंखला की एक कड़ी लगा क्योंकि कथाकारों ने आम आदमी की छटपटाहट को अलग-अलग कोणों से उकेरा है. □

किंतु कानपुर के **श्री कैलाश नारायण** ने अपनी "अभिव्यक्ति के प्रथम प्रयास' में 'निष्पक्ष न हो कर कटु आलोचक ही" बने रहना चाहते हुए कहा है कि "नवलेखन अंक में राक्षसों, ब्राह्मणों, मंत्रों और रूढ़िगत संस्कारों की पुनरावृत्ति ही करनी थी तो इसे पंचतंत्र और बैताल कथाओं का अंक ही कहना चाहिए था. आज की परिस्थितियों में ऐसी कथाओं का औचित्य ही क्या है!" □

गोरखपुर के **श्री स्वप्निल** के अनुसार "इन कहानियों से गुजरते हुए ऐसा नहीं लगता कि ये नये लेखकों की कहानियां हैं. ये भावुकता से परे कठोर सच की कहानियां हैं जो संघर्षरत और जूझते हुए पात्रों की मनस्थितियों और परिस्थितियों को सूक्ष्म ढंग से व्यक्त करती हैं, चिंतन के लिए नये धरातल का निर्माण करती हैं." □

इस विशेषांक की कहानियों में '**कहर आषाढ़ का**,' '**फरिश्ते की मौत**,' '**टुकड़ा-टुकड़ा मौत**', '**किस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का**,' '**कलम हुए हाथ**' सबसे ज्यादा पसंद की गयीं. '**विमली**', '**छायाएं**', '**मुखौटे**', '**वन वे ट्रैफिक**', '**इम्तहान**', '**कमीना**', '**दरिंदे**,' '**बुतखाना**', और '**किस्सा किस्सा-गोई का**' भी पाठकों को अच्छी लगीं. □

'**गर्दिश के दिन**' स्तंभ में श्रवण कुमार की आत्मरचना ने जोधपुर (राज.) के **श्री नंदकिशोर अरोड़ा**, बाराबंकी (उ. प्र.) के **श्री योगींद्र शर्मा** जैसे पाठकों के मर्म को छुआ है.

श्री प्रेमकुमार मणि साहित्य सचिव, 'मधुबन', पटना से लिखते हैं कि "इस विशेषांक की कहानियां किसलय-सी कोमलता और छटा से परिपूर्ण हैं. प्रौढ़पन का अभाव है. किंतु अपौढ़पन ही अधिक रुच रहा है. मेरे एक प्रोफेसर मित्र को '**सारिका**' की कहानियां सतही लगने लगीं. उन्हें कहानी में गहराई चाहिए. किंतु मुझे तो गहराई में डूब मरने का भय लग जाता है और यह तथा-कथित सतहीपन ही सही सूझ जाता है— क्योंकि यहां टूटती तमन्नाएं पनाह पाती हैं और जी की ललक बढ़ जाती है. '**सारिका**' ने साहित्य को, विशेषकर कहानी विधा को, स्वांतः सुखाय से बहुजन हिताय की ओर एक मनोवैज्ञानिक मोड़ दिया है." □

किंतु लुधियाना के **श्री शिवमूर्ति 'वेणु'** को श्रवण कुमार से शिकायत है. उनका कहना है कि (श्रवण कुमार का) "यह कथन कि फ्रिज, कूलर्स, सोफा सेट वगैरह की सुविधाएं भोगते हुए भी वे सर्वहारा, गरीब या मामूली अभावग्रस्त लोगों की पंक्ति में अपना नाम लिखाने के हकदार हैं, सरासर ज्यादती है. साधनहीन, अभाव-ग्रस्त व्यक्ति का अपमान है, घोर अपमान!" □

संयोजन : रामगोपाल इगलासिया



श्री जाल एस. कार्डमास्टर कमर्शियल मैनेजर बेनेट कोलमैन कं. लि. केंद्रीय सूचना तथा प्रसारण मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल से १७ वीं अखिल भारतीय कांफ्रेंस में छपाई की उत्तमता का पुरस्कार ग्रहण करते हुए.



इस विशेषांक के लिए मॉरिशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम का शुभकामना संदेश

PRIME MINISTER'S OFFICE
MAURITIUS

दिनांक 26 अप्रैल, 1976.

प्रिय कमलेश्वर जी,

मारिशस में हो रहे अफ्रीकी एकता संगठन के 13वें सम्मेलन के अवसर पर आप सारिका का अफ्रीका कथा अंक निकाल रहे हैं, और उसे मारिशस की जनता के नाम समर्पित कर रहे हैं, यह जानकर मुझे अति प्रसन्नता हुई। मुझे पता है कि 'सारिका' ने बराबर तीसरी दुनिया में हो रहे सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों से हिन्दी जगत को परिचित कराया है। विगत दिनों मारिशस के कथा साहित्य पर अपने जो दो विशेषांक निकाले उससे मॉरिशस के साहित्यकारों को अभिव्यक्ति का व्यापक परिवेश मिला है।

2. आज पूरा अफ्रीका शक्ति के साथ विश्व राजनीति में उभर रहा है। राजनीतिक गुलामी की जंजीरें खंड-खंड हो टूट रही हैं। स्वाधीनता की प्रात: वेला अब अफ्रीका को एक नया विहान दे रही है। उपनिवेशवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों से लुटा शोषित महाद्वीप अपनी तमाम असहायता, दीनता और हेयता को त्याग कर अपनी 'पहचान' के साथ खड़ा हो रहा है। वह पहचान जो आयातित और आरोपित जीवन मूल्यों से बुरी तरह ढक गयी थी जिससे हम खुद अजनबी हो गये थे।

3. तीसरी दुनिया के तमाम देशों की तरह अफ्रीका भी एक सांस्कृतिक संशय के चौराहे से गुजर रहा है। पर जैसे हमारे भीतर आजाद होने की राजनैतिक इच्छा शक्ति थी उसी तरह इस सांस्कृतिक संशय से निपटने की प्रचंड इच्छा शक्ति है। नव उपनिवेशवाद के मंसूबों से हम अच्छी तरह परिचित हैं।

4. राजनैतिक आजादी का हमारा संघर्ष लगभग समाप्ति पर है। अब हमें एक जुट हो कर नव निर्माण में लगना है। 'अफ्रीकी एकता संगठन' हमारी सम्मिलित शक्ति का प्रतीक है। इसे तोड़ने के अनेक प्रयत्न हो रहे हैं। पर हम अफ्रीकी लोग अपनी समझ और दूरदर्शिता से इन सारे प्रयत्नों को विफल करके रहेंगे।

5. अफ्रीका के अब और दलित मानवमन की राजनैतिक आजादी ने चिंतन के नये क्षितिज प्रदान किए हैं। हम सामाजिक सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों में विश्व के समक्ष अपनी प्रतिमा की श्रेष्ठता प्रदर्शित कर रहे हैं। पिछले 20 वर्षों में अफ्रीका ने परिवर्तन के आकाश छुए हैं।

6. मुझे विश्वास है कि आप सारिका के इस विशेषांक में साहित्य संस्कृति और कला के क्षेत्र में नव उपनिवेशवाद से संघर्षरत और अपनी पहचान की उपलब्धि के लिए संकल्पवान अफ्रीकी मनीषा की मन: स्थिति को स्वर देंगे।

शुभकामनाओं सहित।

शि. रामगुलाम

शिवसागर रामगुलाम
प्रधान मंत्री

साहित्य के जरिये — अफ्रीकी एकता की शिनाख्त

आज से १३ वर्ष पूर्व ३० अफ्रीकी देशों ने 'अफ्रीकी एकता संगठन' की स्थापना की थी, जिसका उद्देश्य था अफ्रीका में सांस्कृतिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक तथा आर्थिक नीतियों का सह-निर्धारण; उपनिवेशवाद की समाप्ति के लिए सामूहिक संघर्ष; तथा सदस्य देशों की स्वतंत्रता तथा प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए सामूहिक सुरक्षा-व्यवस्था. आज इस संगठन के सदस्यों की संख्या ३० से बढ़ कर ४६ हो चुकी है और जून, १९७६ में इसका आगामी वार्षिक सम्मेलन, मॉरिशस में हो रहा है.

पिछली एक-चौथाई सदी में विश्व के साहित्यिक मंच पर एक नयी आवाज अपनी समस्त शक्ति तथा संवेदना के साथ उभरी है. वह है अफ्रीकी साहित्य की आवाज––जन-मानस की नयी चेतना, जागरूकता, निष्ठा, राजनीतिक स्वतंत्रता व सांस्कृतिक मुक्ति-प्रयासों की अदम्य कामना से अनुप्रेरित व समाहित एक गहन-गंभीर उद्घोष!

फ्रेंच, अंग्रेजी, अरबी, स्वाहिली, हिंदी, स्पेनी, पंजाबी, ज़ुलू, योरोबा, ईबो, हाउजा आदि अनेक भाषाओं में रचे जाने वाले इस अफ्रीकी साहित्य की अपनी पहचान, अपनी शिनाख्त क्या है––यह सवाल बार-बार दुनिया भर के पाठकों के मन में उठता रहा है. अफ्रीकी साहित्य ने अपनी क्या पहचान स्थापित की है, यह वहां के विभिन्न देशों में लिखे जा रहे साहित्य को एक साथ पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है. समस्त अफ्रीकी साहित्य दलित और शोषित, सदियों के औपनिवेशिक आधिपत्य के जुए के नीचे पिसते आ रहे जन सामान्य की नयी आकांक्षाओं और इच्छाओं को अभिव्यक्ति देता है. इन रचनाओं का कथ्य चाहे प्राचीन हो, चाहे अर्वाचीन, पारंपरिक हो या आधुनिक, इसके पात्रों की प्रकृति, उनकी प्रतिक्रियाएं––सब कुछ अफ्रीकी हैं. उनकी सांस्कृतिक धरोहर और जीवन-दृष्टि ने मिल कर उन्हें अपनी निजी पहचान दी है. साथ ही 'ब्लैक' और नीग्रो होने में ही गर्व अनुभव करने की नयी भावना ने उनमें नया आत्मविश्वास भी जगाया है.

यह नया आत्मविश्वास अफ्रीका के आधुनिक साहित्य को विश्व के सर्वश्रेष्ठ और रचनात्मक साहित्य के समकक्ष ला खड़ा करता है.

मॉरिशस की जनता को समर्पित 'सारिका' के इस अंक में अफ्रीका के सर्वाधिक प्रतिष्ठित और चर्चित लेखकों को शामिल करने के बजाय कोशिश यह की गयी है कि अधिक से अधिक देशों को प्रतिनिधित्व मिले. चिनुआ अचेबे, वोल सोयिंका, ऐमोस टुटुला, एबियोसे निकोल, क्वेसी ब्रू, क्रिस्टीना आमा अता आयदू, ग्रेस ओगोट, उस्मान सोसे, लियोपोल्ड संघोर, ज्यां प्लीया, एजीकिल एम्फालेले, रिचर्ड रीव, ला गुमा, केन येंबा, अगोस्तीनो नेतो आदि श्रेष्ठतम अफ्रीकी लेखकों की रचनाओं को इस अंक में न पा कर पाठकों को अजीब लग सकता है–– इन्हें इस अंक में शामिल इसलिए नहीं किया गया है क्योंकि इनकी रचनाएं 'सारिका' में प्रकाशित होती रही हैं–– खासतौर पर 'अफ्रीकी कथा विशेषांक' तथा 'तीसरी दुनिया विशेषांक' में इन्हें ही शामिल किया गया था.

आज संपूर्ण अफ्रीका एकजुट हो कर अपनी शिनाख्त, अपनी सांस्कृतिक पहचान तथा अपने साहित्य के साथ विश्व के समक्ष खड़ा है. काले रंग और धरती की महक से उन्हें प्यार है. घाना के एक कवि फ्रेंक पार्क्स की ये पंक्तियां इसी का उद्घोष करती प्रतीत होती हैं : 'मुझे काली आत्माएं दे दो, / उन्हें काली ही रहने दो, / या चाकलेटी भूरी, / या उन्हें बना दो / मिट्टी के रंग का / मिट्टी की तरह / मिट्टी से भी मटमैला / लेकिन यदि संभव हो तो / कृपया उन्हें काला ही रहने दो / नितांत काला!' □

यह अंक मॉरिशस की जनता को समर्पित



तूफान

• लोचन विदेशी

मॉरिशस के ख्यातनामा कथाकार लोचन विदेशी की यह कहानी मॉरिशस में आने वाले उन विचित्र तूफानों को रेखांकित करती है, जो कि वहां की भौगोलिक विशेषता है. ये तूफान अकसर अपने पीछे विनाश की छाया छोड़ जाते हैं.

झनाक से शीशे फूटने की आवाज हुई. बसावन के खर्राटे बंद हो गये. वह विस्मित बिस्तर पर उठ बैठा. आंखें मीच कर अंधेरे कमरे को एकटक देखा. कमरे के दरवाजे, खिड़कियां, झरोखे सभी बंद थे. बाहर कान लगाया. तूफान का कोलाहल स्पष्ट सुनाई दे रहा था. मूसलाधार वर्षा की मोटी-मोटी बूंदें हवा के झोंके से शीशे से आ टकरातीं. मगर कमरे में गजब की गरमी थी. उसे याद आया, आंख लगने से पहले बिजली की बत्ती का स्विच ऑन था. सोचा, नींद के दरमियान शायद तूफान के क्रमशः बढ़ते झंझावात के कारण करेंट काट दिया गया हो. पर. . . पर शीशा कहां का फूटा? उसने घुटनों के बल खड़े हो कर सिरहाने की खिड़की को अंधे की भांति टटोला.

—सब तो सही सलामत है! वह बुदबुदाया.

तो. . तो कहीं वीरेंद्र के कमरे की खिड़की का शीशा तो नहीं. . .

यह सोच अंधेरे को भेदता वह कॉरीडोर में जाने के लिए दरवाजे की ओर बढ़ा. दो-तीन कदम आगे उसका दायां पैर जैसे शीशे के टुकड़ों पर पड़ा. वह एक कदम पीछे हट कर ठिठक गया. अंदाजा लगाया—फूलदान गिरा होगा. उसने मोमबत्ती जलायी. मंद प्रकाश में देखा, उसकी स्वर्गवासी पत्नी धनिया की तसवीर गिरी पड़ी है. फ्रेम का शीशा फूट कर चकनाचूर हो गया था. एक क्षण धीमी रोशनी में वह चित्र को देखता रहा. छलछलाती आंखों से उसने दोनों हाथों से बड़े ही जतन से फ्रेम को उठाया. एकाएक बसावन की सिसकियों का बांध टूट गया.

—मैं जानता हूं, तेरी रूह अभी तक भटक रही है. यह हरकत उसी की है, अन्यथा यह फोटो कैसे गिर जाती!

उसने कमरे को गौर से देखा एक बार. धुंधली रोशनी में कमरा उसे अजीब-सा लगा. दीवार पर लगी और कितनी ही फोटो थीं. बसावन की आंखें उस कील पर टिक गयीं जिस पर धनिया की फोटो टंगी थी. इसे बसावन ने खुद अपने हाथों से हथौड़े द्वारा ठोंका था. वह अभी भी अपनी जगह कायम है. रुक-रुक कर हौले-हौले कैलेंडरों के सिवा कुछ भी हिल-डोल नहीं रहा था. तो इतनी मजबूत रस्सी से लगा फ्रेम गिरा कैसे? किसी अज्ञात शक्ति ही ने गिराया होगा! शायद सात साल पुरानी घटना का स्मरण दिलाने के लिए. हां, ऐसी ही भयानक, भीषण तूफानी रात थी वह. उसकी याद से आज भी कलेजा कांप जाता है. काश! बसावन ने रेडियो की सूचना का खयाल किया होता तो आज उसे धनिया के वियोग की आग में जल-जल कर न मरना पड़ता. पर उसने ही क्यों, मौसम का गलत अंदाज तो प्रायः सभी ने लगाया था. शाम को दूकान पर जिस किसी से भी मुलाकात हुई थी, उन सभी ने तूफान की सूचना की खिल्ली उड़ायी थी. मुंह बिचका का कहा था उन्होंने—तूफान आयेगा! वो भी जबरदस्त! ऐसा साफ आसमान, न हवा, न बरसात. यही तूफान का लक्षण होता है कहीं! दूकान में, दूकान के बरामदे पर, रास्ते में, चौराहे पर सभी जगह क्या वृद्ध, क्या जवान, सभी ने पुलिस या ऋतु-विज्ञान-शाला की सूचना को हंसी-ठिठोली में उड़ाया था. वे बोलते, हंसी-मजाक करते और एक पल सिर उठा कर पश्चिम को शून्य दृष्टि से देख लेते.

जगदेव चाचा ने कितना समझाया था बसावन को—बेटा बसावन, मेरी बात मान जा और तू भी सपरिवार रिफ्यूजी सेंटर चला चल. पर बसावन के कानों पर जूं भी न रेंगी. कितना अच्छा, नेक हमदर्द पड़ोसी था वह उसका! हमेशा उसका अदब करता था बसावन. उसकी सलाह के बिना कोई भी कार्य न करता था वह. जब फेरी का नया कारोबार करने जा रहा था तो क्या ही अच्छा मशविरा दिया था उन्होंने बसावन को. भगवान ही जाने, उस दिन जगदेव के लाख कहने पर भी बसावन अपनी झोंपड़ी छोड़ कर तूफान आने से पहले उजाले में ही रिफ्यूजी सेंटर क्यों नहीं चला गया था!



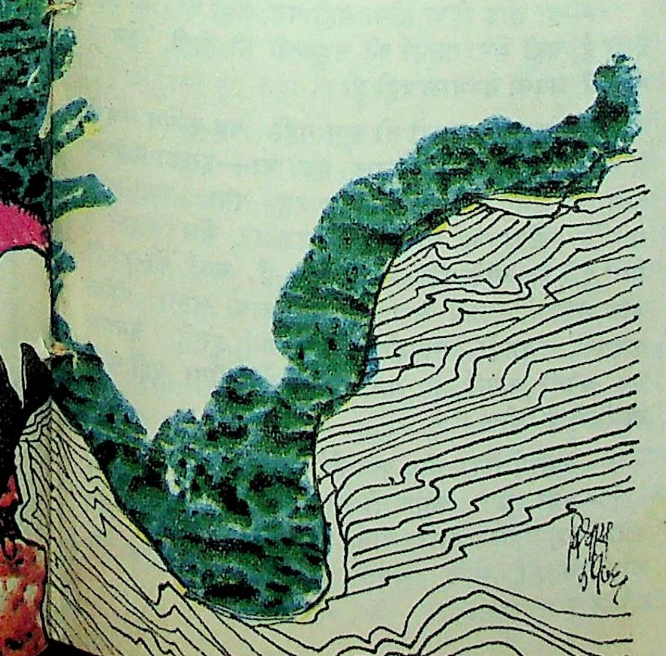
बसावन ने फ्रेम साफ किया और उसे औंधा कर मेज पर रख दिया. बाहर 'सायक्लोन जेनो' जोर पकड़ता जा रहा था, 'तूफान बेरोल' शायद उससे जबरदस्त था जिसमें बसावन का सब कुछ स्वाहा हो गया था. उस समय उसका घर घास-फूस-गोबर-मिट्टी का था. उसे पूरा विश्वास था यदि तूफान आ भी गया तो वह अपनी झोपड़ी ही में अपना बचाव कर लेगा. देखते-देखते आकाश मेघाछन्न हो ही गया था. हवा का रुख परख कर धनिया ने कहा था—— हवा ऐसी ही तेज होती गयी तो इस झोपड़ी में हमारी कुशल नहीं.

——स्त्रियों का कलेजा गोया मुर्गी का होता है, कोई 'आलिक्स' 'काटोल' नहीं आने लगे हैं जो रिफ्यूजी सेंटर का दरवाजा खटखटायें.

बसावन झल्लाया तो धनिया ने फिर मुंह न खोला. मध्य-रात्रि के लगभग जब छत हिलने लगी, मचान में रखी चीजें इधर-उधर गिरने लगी, दीमक से खोखले खंबे चरचराने लगे तो बसावन के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं. अंत में भाग कर रिफ्यूजी सेंटर का ही आश्रय लेना पड़ा था उन्हें.

* *

विनाश के बाद नवनिर्माण होता है. आज बसावन को झोपड़ी की जगह सीमेंट का सुंदर मकान है. कारोल का बाप भी आ जाए तो भी बसावन सुरक्षित है. बसावन के शयनकक्ष की दीवार पर धनिया की और एक आधी साइज वाली फोटो टंगी थी. यह फोटो बसावन की शादी के अवसर पर ली गयी थी. वह तसवीर ऐसी निर्निमेष दृष्टि से देख रही थी गोया पूछ रही हो, तुम हमेशा कहा करती थी न मेरा वीरेंद्र बड़ी मिन्नत-मुरादों का इकलौता बेटा है, उसे किसी प्रकार का कष्ट न होने पाये! देखो तो तुम्हारा लाड़ला अपने बेडरूम में कैसे निश्चिंत, बेसुध बिस्तर पर सो रहा है और बाहर प्राणघातक तूफान का कैसा बवंडर है. तुमने तो खुद अपनी आंखों देखा था ऐसे बावंडर को. कैसी भयानक रात थी वह! रोंगटें खड़ी हो जाते हैं उसकी याद से. घुप्प अंधकार व्याप्त था चारों ओर. पानी की बूंदे माले-सी चोटें करती थीं. हवा के थपेडे सहते, गिरते, उठते, सम्भलते अटकल से रिफ्यूजी सेंटर की ओर भागे जा रहे थे. अचानक बिजली चमकी थी, तुम चौंक गयी थी प्रकृति का विराट रूप देख कर. वीरेंद्र कितना छोटा था तब ! तुम्हारी गोद में चिपका भय से चीख उठता था. प्रभु की कृपा ही थी जो सही-सलामत निदिष्ट स्थान पर पहुंच गये थे, तिस पर भी तू. . . तूने धनिया अपनी मूल्यवान जान सस्ती गवां दी. . . बारह साल मेरे साथ रही मगर समझ न पाई मुझे. मैं मानता हूं, तुमसे अकसर सख्ती से पेश आता था पर मैंने कभी मार-पीट नहीं की.



जब कभी धनिया बसावन की बेरुखी पर रूठ जाती, वह उसे मनाने, समझाने की कोशिश करता. एक दिन ऐसे ही बसावन की फटकार पर धनिया मुंह फुलाये मौन बैठी थी. जब बसावन का गुस्सा ठंडा हुआ तो वह उसे दुलारने लगा.

——धन ! तुम मेरी बात का जल्दी बुरा मान जाती हो, खास मेरी मां की तरह. वह भी पिताजी की छोटी-मोटी झिड़की पर बिना प्रतिवाद किये रूठा करती थी. वह गमखोर थी. . . . तुम्हारी जैसी! . . . पर. . .पर उस दिन की तुम्हारी वह टेक. . .

पीछे दरवाजा खुलने की आहट से उसका ध्यानभग्न हुआ, देखा वीरेंद्र है अपने पैजामे में.

——क्या है बेटा? बसावन ने कौतूहल से पूछा.

——आप जाग रहे हैं पिताजी? कुछ सुना आपने, लगता है कोई मेरे कमरे का दरवाजा खटखटा रहा है.

वीरेंद्र के स्वर में कंपन था.

——मुसीबत का मारा आश्रयहीन कोई गरीब दुखिया होगा बेटा! चल, जल्दी चल, किवाड़ खोल!

——हां पिताजी, वे भीग कर ठिठुर रहे होंगे.

बाप-बेटे ने जोर लगा कर लोहे का दरवाजा खोला. जोरदार तूफान का झटका उन्हें भी लगा. एक पुरुष और दो स्त्रियों ने प्रवेश किया. एक जो सयानी थी, उसकी गोद में तीन साल का एक बच्चा था.

——बाप रे जैसे परलय आ गया है, बसावन ने कहा, भैया चरित्तर तुम सब जल्दी कपड़े बदल लो. सरदी लग जाएगी, तब तक मैं तुम लोगों के लिए कुछ पीने का प्रबंध करता हूं.

——नहीं-नहीं बसावन भैया! तू चिंता न कर. आज हम तुम्हारे मेहमान नहीं, शरणार्थी हैं. आश्रय दे दिया, इतना ही कुछ कम है? जान बची, लाखों पाये. भगवान का शुकर है तुम्हारा मकान बेतों (सीमेंट) का है. यहां कोई डर नहीं. हमारा घर तो अब तक, एक

दीर्घ निश्वास छोड़ कर चरित्तर बोला—शायद तूफान का ग्रास हो गया होगा भय्या!

चरित्तर बसावन का चिर-परिचित था. उसी गली की मोड़ पर उसका एक छोटा मकान था. टीन का, 'आलिक्स' तूफान में उसकी आलो, बांस और घास-फूस की झोपड़ी ढह गयी थी तो सरकार की ओर से मुआवजा मिला था. प्रति पीड़ित को पंद्रह-पंद्रह कोरूगेटेड आयरन शीट और तीस-तीस खंबे. थोड़ी और मेहनत कर्ज करके छोटा साधारण घर बनवा लिया था उसने. धूप-वर्षा से बचने के लिए एक मंडप था, सो उसे भी तूफान उड़ा ले गया होगा. बेचारे निर्धन किसान की कमर तोड़ डाली 'जेनो' ने.

घनिया को इस परिवार से बड़ी हमदर्दी थी.वह अकसर सुनाया करती थी बसवान को कि जब वह फेरी करने चला जाता था तो चरित्तर की पत्नी उसके घर आती, अपना दुखड़ा रोती. अनावृष्टि के कारण उसका मरद बेकार है. दो दिन से चूल्हा नहीं जला है. घनिया दया के वशीभूत हो कभी चावल-दाल तो कभी पैसे ही दे दिया करती थी. दया की ऐसी प्रतिमा को ईश्वर ने इतनी जल्दी क्यों बुला लिया?

घनिया गंवार, अनपढ़ तो थी ही पर कभी-कभी उसकी बुद्धि और सूझ पर बसावन को ताज्जुब होता था. कभी-कभार वह सीख उसे दे जाती कि बसावन की बुद्धि ठिकाने आ जाती. उस दिन की उसकी हरकत उसे हमेशा याद आयेगी. वह बाहर से देहली पर पैर रखते ही घनिया पर अकारण बरस पड़ा था तो उसने एक गिलास ठंडा पानी सामने रखते हुए कहा था— लोग कहते हैं, ठंडा जल पीने से गुस्सा भी ठंडा हो जाता है. सचमुच उसके इस व्यवहार पर बसावन को अनायस हंसी आ गयी थी. इस तरह आये दिन अपने मनोविनोद से पति की थकावट दूर करने का प्रयत्न करती. वीरेंद्र के जनने से दांपत्य जीवन सुखमय, आनंदमय होने लगा था. शिशु वीरेंद्र की किलकारी से घर चुहलगड़ हो गया था. मगर जालिम क्रूर 'बेरील' ने बसावन की सुखी दुनिया उजाड़ दी.काश! आज वह होती तो तूफान के मारे अपनी पड़ोसी को कितनी सांत्वना देती इस घड़ी.

—यह तूफान तो मारिशस को तबाह कर देगा, भय्या! चरित्तर ने मटमैली धोती की टेंट कसते-कसते रसोईघर की चौखट से कहा.

—आओ भय्या चरित्तर, आओ! बैठो पीढ़े पर! सभी को यहीं बुला लाओ. वीरेंद्र, बेटा तू काफी दे गिलासों में. और हां, आलमारी से काबिन बिस्कुट का पाकिट भी लेता आ. . . . चरित्तर भय्या आतिशदान के पास सभी को बुला बैठाओ. क्या कहें, अपने बस की बात नहीं और न ही अमरीका या रूस वालों में इतनी ताकत है कि कोई बम ऐसा बनाएं जो ऐसे साले तूफान की धज्जियां उड़ा कर रख दे. लगता है जल-थल एक हो जायेगा.

—कल मेरी तरह कितने बेघर हो जायेंगे. घायलों का तांता लग जायेगा अस्पतालों में.कितने तो जान से भी हाथ धो बैठेंगे!

बच्चों के साथ पीढ़ा पर बैठते-बैठते चिंतित चरित्तर बोला. सभी आतिशदान के इर्द-गिर्द बैठे थे. बिस्कुट-कॉफी खा-पी रहे थे. श्रीमती चरित्तर शिशु को जांघ पर बिठाये उसे सेंक रही थी.

—ऐसे भयानक तूफान में भय्या को घनिया भौजी की याद तो और भी सताती होगी. बेचारी कितनी अच्छी थी! चरित्तर की पत्नी सहानुभूतिपूर्ण स्वर में बोली.

—यदि यह मकान न होता तो हमारी भी खैर न थी. हमने तो राह ली थी रिफ्यूजी सेंटर की. रास्ते में इनको कितना समझाया चलो चलें आपके घर जो दो-तीन पग ही दूर है. साथ में एक जवान बेटी भी है. ऐसी आफत में शरणार्थी-केंद्र भी गुंडों-चोरों का अड्डा बन जाता है.

बसावन को याद हो आया. उस दिन आफिसर बाबू ने भी कहा था कि 'बेरील' के कराल काल से बचने के लिए उन्होंने सरकारी स्कूल में पनाह ली थी—बसावन चाचा, अपना असबाब संभाल कर रखना, एक बार शरणार्थियों के पैसे-गहने चोरी हो गये.

एक शरणार्थी, आफिसर का अनुमोदन करते हुए बोला था— अजी 'कारोल' में मैंने तो भाग कर एक मित्र के घर प्राण बचाये, उधर लुटेरों को मेरी उजड़ी कुटिया में सोने-रुपये न मिले तो हंडिया, मरमिट ही उठा ले गये.

इनकी बातों ने बसावन को शंकित कर दिया था. बहुत ही कठिन मेहनत- मजूरी करके गाढ़े दिन के लिए थोड़ा जमा रखा था उसने. सोचा , अच्छा हुआ कि जो आफिसर बाबू ने उसे सावधान कर दिया. अब वह रुपये की थैली घनिया से मांग कर भीतरी जेब में रख लेगा.

—घनिया, बसावन धीमी आवाज में बोला—पैसे की थैली जरा देना तो!

—थैली . . . थैली तो आप ही ने रखी है न!

—मैंने?

—तो छोड़ दिया होगा वहीं पर. कहा था कि जहां थैली है, वहीं मेरे गहनों की संदूकची भी होगी, सब ले लो. मैं बच्चा सम्भाल रही हूं.

बसावन को काटो तो खून नहीं. वह कुपित नजरों से घनिया को देखकर उबल पड़ा था—इसका मतलब हुआ कि जमा-जत्था वहीं धरा रह गया. अभी-अभी सुने न लुटेरों के कारनामें? घर-घर सेंध लगाने के लिए ऐसे ही मौके की ताक में रहते हैं. वर्षों की कमाई और सहस्त्रों रुपये के गहनों से हाथ धोना पड़ेगा तुम्हारी वजह से. झोपड़ी तो गिर गयी होगी. बनाना घर अपनी कमाई से अब! नहीं तो जीना यहीं कहीं क्रियोलों के बीच !

—इसमें मेरा दोष क्या है?

—हां ऽऽऽ ! कसूर तो मेरा ही है. चिल्ला-चिल्ला कहा था, पहले थैली, सोने का खयाल रखो ! पर कौन सुनता है मेरी . पसीने की कमाई का दरद तुम औरत क्या जानो !

शायद पति की बात धनिया को लग गयी थी.

जगननन स्कूल का केअर-टेकर चरित्तर का मित्र था. गत तूफानी मौसम में वह दिन-दिन, रात-रात भर तूफान का मारा आश्रयहीन लोगों के साथ रहा था. वह रिफ्यूजी-सेंटर में चोर-चकारी, गुंडा-गिरी की कहानियां सुनाया करता था उसे.

चरित्तर ने बड़े ही उदास मन से कहा—खैर; यदि घर चौपट हो गया तो सरकारी स्कूल ही एक मात्र सहारा होगा हमारा. कल तो वहीं शरण लेनी पड़ेगी. लफंगे हमारा क्या बिगाड़ लेंगे?

—आज ही चले गये होते तो अच्छी जगह मिल जाती.

—नहीं-नहीं बहन, इतना गैर न समझो आप लोग मुझे. सब पर दुख आता है. 'बेरील' में मेरी भी झोपड़ी उड़ गयी थी तो महीनों केशव भय्या के यहां रहा. धनिया होती तो आपकी बातों से घायल हो जाती.

रात के करीब डेढ़ बज गये होंगे. सभी की पलकें नींद से बोझिल थीं. वीरेंद्र एक पुराना 'परी मार्च' देखते-देखते ऊंघने लगा था.

—वीरेंद्र, जा बेटा सो जा. चरित्तर, बगल वाले कमरे में बच्चे जा कर सो जायें.

चरित्तर के बाल-बच्चे सोने चले गये तो बसावन ने डिबिया से सिगरेट निकाली. एक अपने होठ पर रखी, एक चरित्तर को थमायी. चकमक से दोनों सिगरेटें सुलगायीं. कश का आनंद उठाते आपस में दुनियादारी की बातचीत होती रही.

—ईख काफी बढ़ गयी है, चरित्तर मुंह और नाक से धुआं निकालते बोला— झंझावात से खेती का बड़ा नुकसान होगा. साग-सब्जियां तो दो-एक महीने तक सपना हो जायेंगी.

—हां ऽऽ! कंद-मूल पर ही गुजारा करना पड़ेगा. आजकल के कुंजड़े भी तो यही मौके जोहते हैं. पानी का माल सोने के दाम बेचेंगे. महंगाई के कारण तो हम गरीबों को अरवी, सूरन तक खरीदना मुहाल हो जायेगा. बसावन ने चरित्तर के पुराने वस्त्रों को निहारते हुए कहा. कमीज और धोती में यत्र-तत्र पैबंद थे.

—क्या कहें भय्या, ये सब हमारे ही कुकर्मों का दंड है. देखते हो न आजकल के लौंडे-लौंडियों को कैसी बेशर्मी से मटरगश्ती करते हैं. ये कल की छोकरियों को देखो. भला फैशन के नाम पर मिनी जिप, मिनी साड़ी, मिनी ब्लाउज पहने फिरती हैं. गली-गली फिरंगियों के समान नंगी टांगे दिखाती घूमती हैं.

—हमारे जमाने में तन ढंकने के लिए मारकीन राशन में मिलता था, बसावन चरित्तर की बात की पुष्टि करते बोला, फिर भी हमारी बहू-बेटियों का क्या मजाल कि घुटनों तक लहंगा पहनें या उघाड़े माथे या उघाड़ी छाती घर से बाहर आ जायें. आज इतने बेशुमार कपड़े हैं, फिर भी अधनंगा रहना फैशन समझा जाता है. पूरा कलयुग आ गया है भय्या!

—अभी उस दिन की बात है. हजामत बनाते-बनाते नाई सुना रहा था, संसार में भ्रष्टाचार, दुराचार, पापाचार और पता नहीं कितने प्रकार के ऐसे ही चार-अचार हो रहे हैं. शायद इसीलिए तो सुनने को मिलता है, कहीं भूकंप, तो कहीं जलजला, कहीं आंधी तूफान तो कहीं अकाल-अनावृष्टि होती रहती है. लोग कुत्तों की मौत मर रहे हैं. ये सब प्रभु का कहर नहीं तो और क्या है! हमारे देश में आबादी तेजी से बढ़ रही है. कहां से देगी सरकार नौकरी? बेकारी? बेरोजगारी के कारण चोरों की संख्या बढ़ेगी नहीं तो और क्या?

उस रोज भी जब बसावन चितालोक में ग्रस्त था कि तूफान 'बेरील' में उसका पैसा बह गया, उड़ गया या चोरों के हाथ लग गया तो चाचा जगदेव भी तूफान आने के कुछ ऐसे ही कारण बता रहे थे शरणार्थियों को. भोर की बेला का आलम था. 'बेरील' अपनी चरम सीमा पर था. बसावन स्कूल के बरामदे में खड़ा कभी इधर तो कभी उधर झांक-झूंक रहा था. आफिसर बाबू को देखते ही पूछा—मेरी पत्नी को उधर जाते देखा है आपने?

—जी... जी नहीं तो! क्यों! क्या बात है चाचा? आफिसर ने साश्चर्य पूछा था.

—पता नहीं कहां चली गयी. बच्चा उठ कर कब से रो रहा है.

—तो ....तो शायद शौच गयी होगी.

—सुअर कहीं की! क्या ठूंसा था जो इतनी देर पाखाने में बैठी है.

बसावन बौखला रहा था. इतने में एकाएक हवा की रफ्तार कमजोर होने लगी. बसावन को तो जैसे कुछ कचोट रहा था. वहां वह एक पल ठहरना नहीं चाहता था. वह किसी परिचित औरत के हाथ बच्चे को सौंप कर जगदेव चाचा के साथ निकला. रिमझिम वर्षा जारी थी. टूटी शाखाओं, उखड़े पेड़ों को हटाते, तनों को लांघते वे घर के फाटक तक पहुंचे. आखिर वही हुआ जिसका उसे डर था. घर की छत गिर पड़ी थी. बगल में रामलाल की ईख का खेत गोया सपाट मैदान हो. चौराहे पर से जगदेव बड़े ध्यान से देख रहा था कि किस दिलेरी और तत्परता से दो अनजान व्यक्ति उसकी गली में लोगों की छत से उड़े टीनों को ले जा रहे थे.

उधर बसावन किसी तरह घर में अलमारी तक पहुंचा. वहां जो देखा तो स्तब्ध रह गया. धनियां मचान के नीचे दबी चित मरी पड़ी थी. दायीं मुट्ठी में थैली थी.

स्मरण से बसावन की आंखों से आंसू टपक पड़े. चरित्तर ने हमदर्दी जतलाते कहा—धनिया की याद आ रही है न भय्या?

बसावन ने स्वीकारोक्ति में सिर हिला दिया. फिर आस्तीन से आंखें पोंछते हुए उठा —चलो. दो घड़ी हम भी आराम कर लें.

दोनों एक ही पलंग पर जा लेटे. बाहर 'जेनी' तूफान का तांडव नृत्य जारी था. □□□

त्रिओले, त्रोआबुचिक मॉरिशस

कोया • र. शरीफ इस्मान

कोया अपने कमरे में से तैयार हो कर बाहर आयी. इस प्रकार सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित होना वह अपना जन्म-सिद्ध अधिकार समझती थी, और उसका असमय इतना परिपक्व होना अकसर अन्य लोगों को चकित कर देता था. अपनी शालीनता व सम्मान को बनाये रखने का ढंग वह भलीभांति जानती थी और इसके संबंध में वह किसी की सलाह नहीं लेती थी. वह स्वयं ही इसकी निर्णायक थी. मानसिक व बौद्धिक रूप से, उसका इस छोटी-सी उम्र में इतना परिकक्व होना, उसकी उम्र की अन्य लड़कियों से अत्यंत विरोधाभास लगता था. वह अभी सिर्फ नौ वर्ष की छोटी-सी कन्या थी, जिसने अभी यौवन की देहरी पर कदम भी नहीं रखा था.

अपनी समस्त शालीनता के साथ, अपने कबीले की प्रथा के अनुसार, उसने अपनी मां के सम्मुख झुक कर प्रणाम दिया, जो कि एक सुकन्या को बचपन से ही सिखाया जाता है.

––मां फातमाता, क्या मैं अब जा सकती हूं? फातमाता ने (जो कि एक पदवी थी जो उसको उसके सौंदर्य के कारण दी गयी थी) अपनी इकलौती सुंदर कन्या की ओर प्रसन्नतापूर्वक देखा. उसका अंडाकार चेहरा जो अत्यंत सुंदर था, एक परम संतोष और अभिमान से भर उठा––शायद अपने ही प्रति, क्योंकि कोया, उसका ही वास्तविक स्वरूप थी, बिल्कुल कॉर्बन-कापी.

––हां, तुम जा सकती हो, कोया..

कोया हौले से मुसकरायी. अपने गुलाबी रेशम के फ्रॉक में वह वसंत में खिले फूलों की भांति ताजा लग रही थी. उसका सुंदर शरीर वाटू के किसी चित्र की भांति लग रहा था. सूर्य की चमकती रोशनी में वह किसी परी की भांति लग रही थी.

उसकी मुसकराहट से, लाल-लाल होठों के अंदर छिपे मोती जैसे दांत झिलमिला उठे. लेकिन मां की अंतिम हिदायत सुनते ही वह मुसकान एकाएक चमकते चेहरे से गायब हो गयी.

––कोया मेरी पुत्री है! फातमाता अभी भी मुसकरा रही थी. और उसे यह भी नहीं भूलना चाहिए कि बड़ा होने पर उसे कितने सम्मानित युवक से विवाह करना है. उसे मेरा अब पुनः अपमान नहीं करना चाहिए.

* *

उस छोटी-सी सुंदर लड़की के चेहरे से सारी चमक एकाएक खत्म हो गयी. सिर पर बंधे रंग-बिरंगे स्कार्फ के नीचे उसकी भवें अनेक बार सिकुड़ीं और अपने होंठ दांतों से दबाती हुई वह मुड़ी.–ओह फातमाता! उसके होंठ कांपे. मैं आपकी तरह होने का पूरा प्रयत्न करती हूं.

––अवश्य! बेटी! वह तो मैं मानती हूं. लेकिन मैं अभी तक पिछली घटना को नहीं भूल सकी हूं.

कोया की आंखें जमीन की ओर झुक गयीं.

वह भी उस घटना को नहीं भूली थी. उसने घबराहट में अपना एक स्लीपर पैरों से निकाल दिया. अभी पंद्रह दिन पहले की ही तो बात है.–कोया, मां नीहां ने कहा था, अपने चूल्हे में फूंक मारो. यद्यपि उस दिन कोया आज से भी कहीं अच्छी तरह सुसज्जित थी और उन अन्य सातों लड़कियों में से सबसे अधिक नम्र थी,उसने एकदम आज्ञा मान ली. उसे इस तरह धुएं में बैठ कर फूंकना बिल्कुल पसंद नहीं था. जब वह वहां से उठी तो उसका सिर चकरा रहा था. आग फिर बुझ गयी थी.

मासरे––कोया मुड़ी और अपनी अत्यंत सुंदर मुसकराहट बिखरते हुए बोली –– मासरे! जरा मेरे चूल्हे में फूंक मार दे!

तभी मां नीहां की क्रोध भरी आवाज आयी –– अपना चूल्हा स्वयं जलाओ. यदि तुम यह छोटा-सा कार्य नहीं कर सकतीं, तो अपने घर में खाना किस प्रकार बनाओगी, कोया?

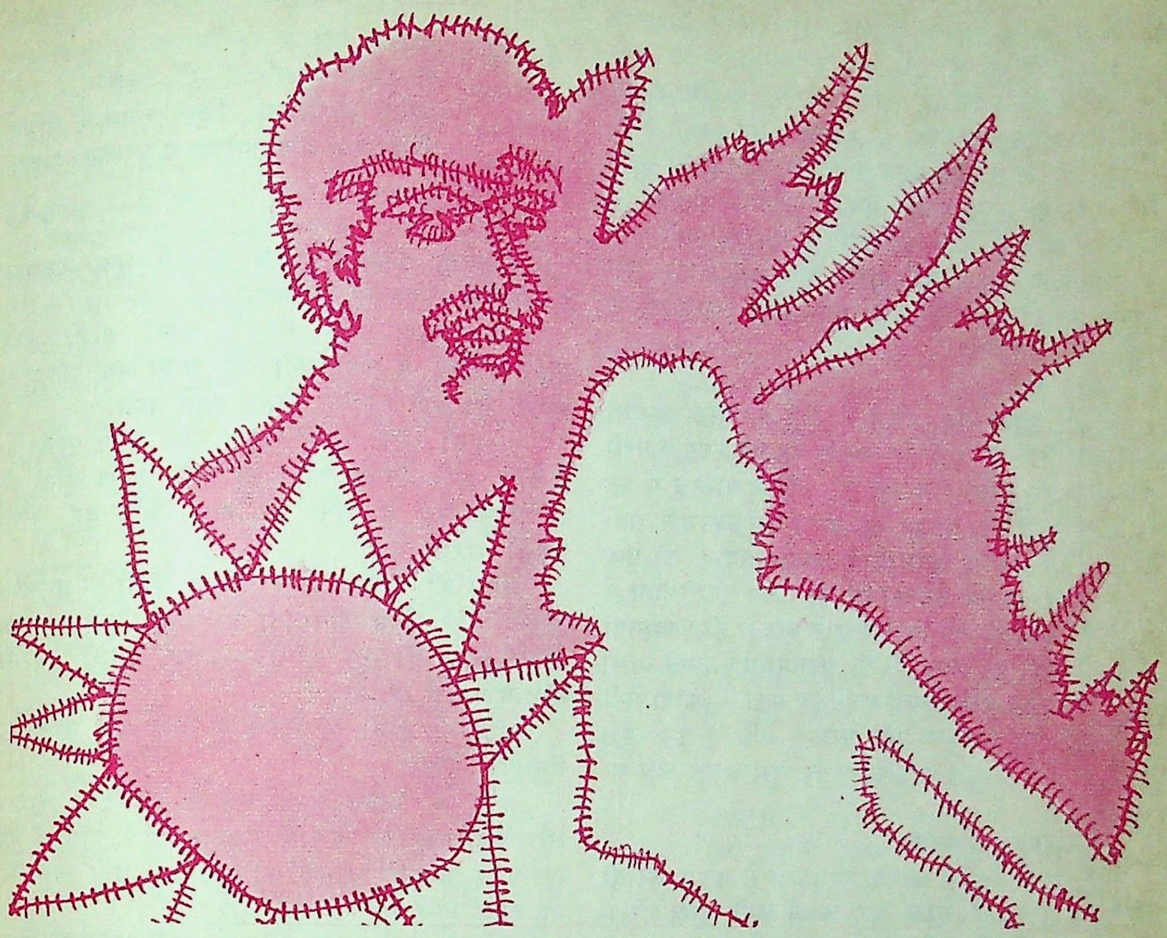
ये चूल्हे, घास से बनी रसोई से दूर आम के वृक्ष के नीचे बने हुए थे. यह एक सुहावना मौसम था, अतः प्रायः सभी स्त्रियां बाहर खुले में ही खाना बनाना पसंद करती थीं. थोड़ी-थोड़ी दूर पर अनेक संतरे और केले के वृक्ष लगे थे. संतरे करीब-करीब पक गये थे.

कोया उन सबकी ओर देखने लगी. उसने मां नीहां की ओर आंख उठा कर भी नहीं देखा, उसे उसकी आज्ञा मानने से सख्त चिढ़ थी. यह सूर्य की रोशनी,और यह सारा दृश्य अत्यंत सुहावना था, यदि वह इस धुएं से छुट्टी पा सकती!

उसकी आंखें पुनः मासरे पर ठहर गयीं. मासरे ने उसे तिरछी आंखों से देखा, और फिर नीहां की ओर इशारा किया. उसकी गरदन की नसें वैसे ही फड़क रही थीं. वह एक छोटे कद की काफी मोटी स्त्री थी. उसका पति भी उसके क्रोध भरे स्वभाव से अत्यंत डरता था. और सब लड़कियां जो वहां खाना सीखने आती थीं, वे भी सब उससे भयभीत रहती थीं. यद्यपि मासरे अपनी सहेली के लिए आग जलाना चाह रही थी लेकिन सिवा उसकी ओर देख कर मुसकराने के और कुछ नहीं कर पा रही थी. ––कोया! नीहां के नथुने क्रोध से फड़फड़ा रहे थे. तुम अपनी चूल्हे में आग जलाओगी कि नहीं?

कोया को बहुत बुरा लगा. उसे बार-बार अफसोस होने लगा कि उसकी मां फातमाता ने उसे यह सब क्यों नहीं सिखाया और वह इतनी साधारण कुक क्यों है! नीहां सारे गांव में सबसे अच्छी कुक थी. अतः कोया यहां खाना बनाना सीखने आती थी. उसने एक ठंडी सांस ली, फिर घुटनों के बल झुक कर फूंक मारने लगी. कुछ ही देर में आग जल गयी.

जब वह वहां से उठी, तो उसकी आंखों में पानी भर रहा था. न तो नीहां को, न उसकी सहेलियों को ही पता लग सका कि वह धुएं की वजह से निकल रहा है,



या कि अपने सम्मान में कमी आ जाने के कारण वह रो रही थी.

करीब दस मिनट पश्चात्, नीहां ने सब्जी काट कर खत्म कर दी, जो कि वह उस दिन लड़कियों को बनाना सिखाने वाली थी. वह उठी और बाहर नल पर हाथ धोने चली गयी.

तभी भाग्य ने कोया का अपमान करने की ठान ली. लेकिन उसने उससे पूर्व कोया की सम्मति नहीं ली, बस यही बुरा हुआ. कोया भी रसोई में अन्य कार्य करने लगी, जिसे कि उसे करने के लिए आज्ञा नहीं दी गयी थी; शायद सौंदर्य के प्रति उसके भारी लगाव ने ही उसे वह कार्य करने को प्रेरित किया होगा.

वह एक बड़े-से बरतन में एक प्लेट धो रही थी. उसने साबुन और स्पंज से उसे साफ किया. लेकिन जब नीहां वहां आयी तो घबराहट में कोया भूल गयी कि वह उस सुंदर डिजाइन वाली प्लेट को धो रही थी.

—ओ अल्लाह! नीहां चिल्लायी. वह प्लेट एकदम नीचे रख दो! कोया! तुम उसे तोड़ दोगी. उस प्लेट को बरतन में से निकाल कर वह घमंड से बोली—यह प्लेट मेरी अत्यंत सुंदर वस्तुओं में से एक है. यह मैं अपने दहेज में लायी थी. यह बहुत पहले की बात है, जब तुम पैदा भी नहीं हुई थीं.

यदि वह यह बात कहने की अपेक्षा, प्लेट पर ही अपना ध्यान जमाती, या वह यह नहीं भूली होती कि वह अभी-अभी एक अत्यंत फिसलने वाली सब्जी 'ओकरा' काट कर आयी है, तो सब ठीक ही था. लेकिन वह सब भूल गयी और उसके हाथों से वह प्लेट गिर कर एकदम टूट गयी.

नीहां एकदम सीधी खड़ी हो गयी. उसका चेहरा क्रोध से भयानक हो उठा. तो क्या स्वयं उसी ने वह सुंदर प्लेट तोड़ दी! उस प्रकार की चाइना-प्लेट बहुत पहले ही बाजार में आनी बंद हो गयी थी. और जैसे ही वह मुड़ी, उसकी दृष्टि कोया के चेहरे पर ठहर गयी.

कोया के होठों के कोनों में ठीक वैसी ही व्यंग्यपूर्ण मुसकान थे, जैसी उसकी मां फातमाता के चेहरे पर नीहां ने कभी-कभी देखी थी. उसके चेहरे पर वह भाव था, जो उससे कहीं उम्र में बड़ी लड़की के चेहरे पर होना चाहिए था. वह लड़की कुछ झिझकी. फिर मानो फातमाता की ही आवाज में बोल उठी——मां नीहां! हमें ध्यानपूर्वक हर काम करना चाहिए न?

नीहां को लगा मानो किसी ने गर्म-गर्म तेल उसके सिर पर डाल दिया हो. वह एक क्रुद्ध शेरनी की भांति आगे की ओर झपटी और अपनी समस्त शक्ति से एक मुक्का बालिका के कंधे पर दे मारा!

प्रथम बार उस अत्यंत सुसंस्कृत लड़की ने अपना सम्मान खोया. अपनी शालीनता खोयी. वह दर्द के मारे जोर से चीखी, और रोती-रोती अपनी मां के पास पहुंची.

यह दो सप्ताह पूर्व हुआ था, और अब वह अतीत की एक घटना बन चुकी थी. नीहां एकदम ठंडी पड़ गयी

थी, और अत्यंत सम्मान दे कर, उसने अपने उस दोष की क्षति-पूर्ति कर ली थी. वह फातमाता के घर गयी और यह कह कर कि वह अपने व्यवहार के लिए अत्यंत दुखी है, उसने फातमाता के अभिमान पर विजय प्राप्त कर ली थी. सु-सु लोग बहुत प्रसन्नचित होते हैं जो अपने पड़ोसियों से अच्छे संबंध बनाये रखने में गहराई से विश्वास करते हैं. दोनों परिवारों में एकाएक बनी खाई को पाटने के लिए नीहां खाली हाथ नहीं आयीं, एक अत्यंत स्वादिष्ट मिठाई बना कर उसने फातमाता के हृदय को जीत लिया.

★ ★

आज कोया पुनः नीहां के घर में खाना बनाना सीखने के लिए जा रही थी. यद्यपि वह एक स्वर्ग के पक्षी की भांति ही रंगीन लग रही थी, लेकिन वास्तव में वह शांति की देवी थी. उसका वहां जाना एक प्रकार से दोनों परिवारों के मध्य सामाजिक आदान-प्रदान को पुनः प्राप्त करने का एक तरीका ही था. अतः फातमाता ने शांति की सांस ली, क्योंकि विवाह के बाद से ही फातमाता व नीहां पक्की सहेलियां रही थीं. फातमाता ने उसके गालों पर पाउडर का अंतिम स्पर्श करते हुए कहा —कोया, मेरी कही हुई बात बिल्कुल नहीं भूलना. यदि वे तुम्हें कुछ खाने को दें, तो तुम यही कहना कि तुम अपना लंच खा चुकी हो.

—अच्छा, फातमाता!

कोया धीरे-धीरे अत्यंत कोमलता से कदम उठाती पाम-वृक्षों से भरी सड़क पर चलने लगी. यह छोटा-सा गांव था. कोया बीच-बीच में रुकती, और अपनी या अपनी मां की सहेलियों को अभिवादन करती हुई, आगे निकल जाती.

लगभग आधा मील चलने के उपरांत, कोया एक गली में मुड़ी और ठीक अपने जैसे ही डिजाइन वाले मकान में घुस गयी. वह मुसकराती हुई आगे के बरामदे में चली गयी और मकान-मालिक को अभिवादन किया. बा साड़ू लुंगी पहने आरामकुर्सी पर बैठे थे. उनके खूब बड़े चेहरे पर एक मुसकान ठहर गयी. नीहां की पाक-शास्त्र में निपुणता के फलस्वरूप ही, वह शायद सारे शहर के सबसे अधिक मोटे व्यक्ति थे, और अत्यंत संतुष्ट पति.

—मेरी नन्ही कोया! तुम कितनी सुंदर लग रही हो! तुम्हें यहां पुनः देख कर बहुत प्रसन्नता हुई.

जब कोया कमरे की ओर मुड़ी तो वह पुनः गहरी निद्रा में खो गये.

अंदर रसोईघर से आती नये चावलों की खुशबू से सारा घर महक रहा था. उसने एक लंबी सांस ली. काश! फातमाता को भी इतना अच्छा खाना बनाना आता होता!

जैसे ही वह अंदर गयी, नीहां को कोया ने बा साड़ू की अन्य दो पत्नियों के साथ बैठे देखा. तीनों के हाथ में एक-एक प्लेट थी. तभी कोया की दृष्टि चावलों के ढेर पर रखे चिकन, लिवर, मूंगफली से बनी सॉस की ओर गयी, जिसकी सुगंध चारों ओर बिखरी हुई थी.

कोया ने झुक कर प्रणाम किया.

सियरा लियोन के प्रतिनिधि लेखक शरीफ इस्मान पेशे से चिकित्सक हैं. मुख्य रूप से उन्होंने कहानियां ही लिखी हैं. एक नाटक भी लिखा, जिसे लंदन में मंचित किया गया और उसे प्रथम पुरस्कार मिला.

● ● ●

—ओह! तुम्हारा हमारे घर में पुनः स्वागत है, नीहां ने मुसकराते हुए कहा.

—धन्यवाद, मां नीहां! कोया बोली और बाहर बरामदे में चली गयी. वहां उसने अन्य छह लड़कियों को वही सुगंधित खाना खाते देखा.

—हलो, कोया. तुमने कितने सुंदर कपड़े पहने हैं! वे बोल उठीं. लेकिन कोया का ध्यान उनके खाने पर था. उसके मुंह में पानी भर गया, और वह स्वयं पर ही शरमा उठी.

नीहां को खयाल आया कि यह छोटी-सी बालिका पिछले पंद्रह दिन फातमाता का बनाया हुआ खराब बेस्वाद खाना खा रही होगी.—कोया, आओ, तुम भी थोड़े-से चावल खा लो!

कोया ने जल्दी से चावल ले लिये और बोली—धन्यवाद, नीहां!

कहां ये आश्चर्यजनक रूप से स्वादिष्ट चावल और कहां अपनी मां के हाथ के स्वादरहित चावल! वह तुलना करने लगी. उसने जानबूझ कर यहां आने का यह समय चुना था. . .और. . .और. . .

जैसे ही उसने सॉस और चावल का एक ग्रास उठा कर मुंह में डाला. . .तभी उसे अपनी मां की हिदायत याद आ गयी. . .—धन्यवाद. . .मां नीहां, लेकिन. . . लेकिन मैं यह नहीं खाऊंगी . . .मैंने अभी-अभी खाया है.

छोटी-सी आज्ञाकारिणी बालिका! —लेकिन नीहां क्रोध में चिल्लायी—तो अल्लाह के नाम पर तुमने लिया क्यों?

जैसे ही उसने इस अस्वाभाविक बच्ची को मारने के लिए हाथ उठाया, तभी उसे पिछली घटना याद आ गयी कि किस प्रकार उसे फातमाता से क्षमा मांगनी पड़ी थी. अपने क्रोध को अंदर ही अंदर पीती हुई वह बोली—कोई बात नहीं, तुम यह खाना मसरी को दे दो.

नीहां ने अभी कठिनाई से अपना वाक्य समाप्त ही किया था कि मसरी लपक कर आगे बढ़ी और उसके हाथ से प्लेट छीन ली. उसे आश्चर्य भी हो रहा था कि कोया किस प्रकार इतने स्वादिष्ट चावलों को खाने से इनकार कर रही है.

एक लंबी आह भर कर कोया ने चावल दे दिये और एकाएक उसका मन उन सब बच्चों के लिए तीखी नफरत से भर उठा—तुमने चावल तो खा लिये! अब तुम जाओ और मेरे लिए एक गिलास पानी ले कर आओ! उसने उसी वितृष्णा भरे स्वर में कहा.

मसरी ने सारे चावल निगलते हुए कहा—क्या तुम्हारे पैरों में चोट आ गयी है, मिस कोया?

कोया ने पुनः एक लंबी आह भरी. दो सप्ताह पूर्व इस घर के किसी भी बच्चे की हिम्मत नहीं थी कि कोया से इस प्रकार बोले. नीहां ने उस प्रकार उसे मार कर उसकी सारी इज्जत छीन ली. उसके अंदर क्रोध भड़क उठा. यद्यपि उसे यह समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्रोध किसके प्रति है. तभी उसे ध्यान आया कि सभी की दृष्टि उसकी ओर है. विशेषकर नीहां की. उसके मन में आया कि मसरी को जोर से एक चांटा लगाये.

लेकिन उसने वैसा नहीं किया. उसकी सगाई पैरामाउंट चीफ के सबसे बड़े लड़के से पक्की हो चुकी थी. वह इस सत्य के प्रति सजग थी. और उसे यह भी मालूम था कि बहुत पहले उसके पितामह ने मसरी के पितामह को खरीदा और बेचा था, वह दासों का व्यापार करते थे. लेकिन अब समय बदल चुका है. दुर्भाग्यवश्य वह मसरी को नीलाम भी नहीं कर सकती. न ही वह नीहां को अपना अपमान करने का अन्य कोई अवसर दगी. अतः उसने वह किया, जो उसकी समझ में सबसे अच्छा ढंग हो सकता था. वह एक साम्राज्ञी की तरह अभिमान से धीरे से उठी और बड़ी अदा से अपने कंधे सिकोड़ कर, अत्यंत मधुर स्वर में बोली —बहुत अच्छा! यदि तुम नहीं लातीं तो मत लाओ. और बड़ी शालीनता से उठ कर बाहर रसोई की ओर चली गयी.

पीछे, नल के नीचे एक बड़े-से ड्रम में एक बरतन तैर रहा था, जिसमें वही, स्वर्गिक सॉस लगा हुआ था. पुनः कोया के मुंह में पानी भर आया और उस क्षण वह अपने समस्त सम्मान को क्षणांश भूल गयी. और तब उसने इधर-उधर देखा. सिवा कुछ मुर्गियों के वह वहां अकेली थी.

जल्दी-जल्दी वह हाथ से उसे चाटने लगी. ओह! वह चावल और सॉस कितने स्वादिष्ट होंगे जिससे उसकी मां ने आज उसे वंचित रहने दिया.

कोया ने अपनी आंखें आश्चर्य से खोलीं. क्या सच ही कोई स्त्री इतना स्वादिष्ट भोजन बना सकती है! उसने एक ठंडी आह ली. . .तभी किसी की खांसी की आवाज सुनायी दी. कोया ने मुड़ कर देखा. . .मसरी मुसकरा रही थी.—तुम्हें किस बात पर हंसी आ रही है? कोया ने चिढ़ कर कहा.

—हा! हा! मिस कोया. . .हा . . .हा. हमारा खयाल था. . .

उसकी हंसी के साथ पांचों लड़कियों की हंसी का सम्मिलित स्वर सुनायी दिया—हमारा खयाल था कि मिस कोया सच ही भूखी नहीं हैं.

उसने अपनी इन नयी दुश्मनों को देखा, जो उसकी इज्जत छीन रही हैं. रानी हो कर उनकी ईर्ष्या का शिकार बनने के स्थान पर वह उनके मजाक का शिकार हो रही है. उसके होठों के कोने कांपे. लेकिन वह रोयी नहीं. उसने उनसे कुछ कहा भी नहीं. वह झुकी और उसने अपने हाथ धोये.

शांति से तेज कदम बढ़ाती हुई वह नीहां के समीप पहुंची. मसरी ने भाग कर पहले ही नीहां को सब बता दिया था.

कोया ने अपना होंठ दांतों से दबाया. यद्यपि उसका हृदय टूट रहा था, वह तीनों स्त्रियों के सम्मुख खड़ी हो गयी और झुक कर अभिवादन किया.—मां नीहां, धन्यवाद! मैं अब जा रही हूं.

नीहां बच्चों को अत्यंत स्नेह करती थी. इस प्रकार एक बालिका का अपमान होता देख उसे बहुत बुरा लगा.

—उनकी परवाह मत करो, कोया! उसने प्यार से उसके कंधे पर हाथ रखा. क्या सच ही तुम और नहीं ठहरना चाहतीं?

—नहीं, धन्यवाद. मैं अब जाना चाहती हूं.

अपने समस्त वस्त्र पहने भी उसे लग रहा था कि वह सबके सम्मुख निर्वस्त्र खड़ी है. और वह बाहर चली गयी.

बार-बार आंसू आंखों में छलक-छलक आते. और उसे कुछ दिखायी नहीं दे रहा था—लेकिन इस प्रकार सड़क पर रोना उसकी शालीनता के विरुद्ध था.

★ ★

जब फातमाता ने उसका घृणा से भरा चेहरा देखा, जो कि उसकी उम्र की लड़की पर अत्यंत अस्वाभाविक लग रहा था, तो वह चीख उठी—ओह! कोया, फिर उन्होंने क्या कर डाला! कोया बिलकुल चुप खड़ी रही. आज की और उस दिन की घटना ने उसकी अपने प्रति सम्मान की समस्त भावना को, जो अपनी माता के प्रति अत्यंत अंध-भक्ति का परिणाम थी, समाप्त कर दिया था. एक बच्ची होने के नाते अभी उसकी शिक्षा का आरंभ ही था. लेकिन उसे लगा कि उसका संसार ही खत्म हो गया है. उनके नथुने जोर से फड़क रहे थे. उसके अंदर मानो तूफान उमड़ रहा था.

उसके अंदर छाये कोहरे को स्पष्ट करती हुई सहसा एक भावना बिजली की चमक की भांति स्पष्ट हो उठी कि उसको जो आज यह दर्द मिला है, उसका कारण यह सामने खड़ी स्त्री है.

—मां फातमाता! उसने जोर की सांस ली. और समस्त आवेग से वह लगभग चीखती हुई बोली, जिससे उसका सारा शरीर बुरी तरह कांप रहा था —मैं तुमसे घृणा करती हूं.

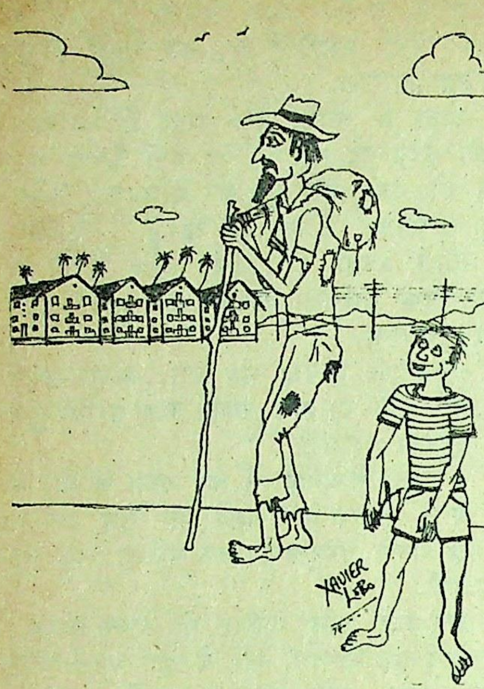
—कोया! फातमाता स्तंभित रह गयी, मानो किसी ने समस्त शक्ति से उसके पेट में घूंसा मारा हो.

—मैं तुम से नफरत करती हूं! मैं तुमसे कितनी नफरत करती हूं, फातमाता!

फातमाता ने बच्ची को छाती से चिपका लिया. और फूट-फूट कर रो उठी.

—कोया! ओह मेरी बच्ची, उन्होंने फिर तुम्हारे साथ क्या किया है! □□□

(अनुवाद : इंदु रायजादा)



● जेवियर ली

गोरे की ताकत

जब खुदा ने इनसान को बनाया तो यूरोपीय लोगों के पहले पुरखे ने खुदा की नकल करने की कोशिश की—उसने भी इनसान के निर्माण का प्रयास किया. . . . और वह इसमें सफल भी हो गया. उसने कई इनसानों की रचना की जो बाहर से बिल्कुल वैसे ही दिखायी देते थे, जैसे कि वे दिखायी देने चाहिए, लेकिन आखिर में, जब उसने यह कोशिश की कि उन नये इनसानों के दिल भी धड़कने लगें, तो वह असफल रह गया.

यही वजह है कि आज तक लोग कहते हैं कि गोरा आदमी बहुत शक्तिशाली होता है, वह हर काम कर सकता है, यहां तक कि इनसानों की रचना भी कर सकता है. काश, वह उनके दिल में धड़कनें भी भर सकता ! ☐

(केन्या)

आदमी का जन्म

एक बार तीन आदमी वेंडे के पास अपनी जरूरतें ले कर आये. एक ने कहा कि उसे घोड़ा चाहिए. दूसरा बोला कि उसे कुछ कुत्ते चाहिए, जिससे जंगल में शिकार कर सके. तीसरे ने अपने आपको तरोताजा बनाये रखने के लिए एक औरत की इच्छा जाहिर की.

महान वेंडे ने उनकी इच्छाएं पूरी कर दीं. पहले को घोड़ा मिला, दूसरे को कुछ कुत्ते और तीसरे को एक औरत.

तीनों अपने घरों की ओर चल दिये. रास्ते में जोरदार बरसात हुई और लगातार तीन दिनों तक होती रही. वे जंगल में रुक गये. उस समय न तो घोड़ा काम आया और न कुत्ते. औरत ने उन तीनों को खाना बना कर खिलाया. घोड़े और कुत्तों के मालिकों ने निश्चय किया कि वे वेंडे के पास जा कर घोड़े और कुत्तों के बदले में औरत की मांग करें. उन्होंने वैसा ही किया.

वेंडे ने कृपा करके घोड़े और कुत्तों को औरतों में बदल दिया.

जो औरत घोड़े से बनी थी, वह बहुत चंचल थी और कुत्ते से बनी औरत बहुत ही कमीनी. लेकिन मूल औरत बहुत भली थी. वही मानव जाति की मां बनी. ☐

(टोगो)

मौत और चंद्रमा

एक बार एक बूढ़ा आदमी रास्ते पर चला जा रहा था कि उसने चांद की रोशनी में रास्ते के पास एक मृत व्यक्ति को पड़े देखा. उसने जंगल के अनेक जानवरों को इकट्ठा किया और उनसे कहा—बोलो, तुममें से कौन इतना ताकतवर है कि वह मुरदे और चांद दोनों को नदी के पार उठा ले जाये?

दो कछुए इस काम के लिए तैयार हो गये. एक कछुए के पंजे बड़े-बड़े थे, उसने चांद को उठा लिया, और नदी के दूसरे किनारे पर सुरक्षित पहुंचा दिया. दूसरे कछुए के पंजे छोटे-छोटे थे, उसने मृतक को उठाया—लेकिन वह नदी में ही डूब गया.

यही वजह है कि चांद, मृत्यु के बाद भी हर रात फिर उदित हो जाता है, जब कि मरा हुआ आदमी कभी लौट कर नहीं आता. ☐

(सेनेगल)

बाबाकोटो

एक समय की बात है, एक आदमी था और एक उसकी पत्नी. वे दोनों खाने की तलाश में इधर-उधर भटक रहे थे. अंत में वे एक जंगल में पहुंचे. कुछ समय बाद औरत ने एक बच्चे को जन्म दिया, फिर दूसरे को, उसके बाद तीसरे को, इसी तरह बच्चों की संख्या बढ़ती गयी. उनकी खाने की तलाश और बढ़ गयी. उनके

दिन मुसीबत में गुजरने लगे. उन्हें पत्तियों और कच्ची जड़ों पर जिंदा रहना पड़ रहा था.

जब बच्चे बड़े हुए तो उनमें से कुछ ने चावल उगाने का निश्चय किया, दूसरों ने स्वतंत्र रहने का निश्चय किया.

जिन बच्चों ने चावल की खेती की थी, वे मनुष्यों के पुरखे बने और दूसरे बाबाकोटो, अर्थात छोटी पूंछ के बंदरों के पुरखे कहलाये.

और आज तक जंगल बाबाकोटो की जाति से भरे हैं. उन्हें न भाषा आती है और न उनके पास घर हैं. पर वे किसी के गुलाम नहीं हैं. □

(मेडागासकर)

आदमी और बंदर

शुरू-शुरू की बात है. माहू ने दुनिया को बना दिया था और खुद जानवरों के साथ व्यस्त हो गयी थी. उसने उन्हें मिट्टी से बनाया था. मिट्टी को अलग-अलग शक्लें दी थीं. उसने अभी जानवरों के नाम नहीं रखे थे. उसने सोच लिया था कि जब सब बन जायेंगे, तब नाम रखेगी. अब वह कुछ जानवरों के पास गयी और उनसे कहा कि वे उसके काम में मदद करें. फिर वह एक ऐसे जानवर के पास गयी जिसे हम बंदर कहते हैं. उसने कहा— तुम्हारे हर हाथ में पांच अंगुलियां हैं. तुम्हें कुछ ज्यादा और बड़ा काम करना चाहिए. अगर तुमने अच्छी तरह काम किया तो मैं तुम्हें मनुष्यों की जाति में मिला दूंगी.

बंदर यह सुन कर बहुत खुश हुआ. वह उछलने और चिल्लाने लगा— ओह, अब मैं जानवर नहीं रहूंगा. मनुष्य बन जाऊंगा.

उसने अपना पूरा समय जंगली जानवरों में यही घोषणा करने में गुजार दिया.

दूसरी बार माहू जानवरों के बीच आयी और देखा कि सारे जानवर कुछ-न कुछ काम कर रहे थे और बंदर बहुत आलसी हो गया था. वह तालियां बजा-बजा कर चिल्ला रहा था कि वह आदमी बनने जा रहा है. माहू ने कहा— मुझे दुख है कि तुम कभी आदमी नहीं बन सकते. □

(बेनिन)

चिरंतन प्यार

बंवारा नाम का एक गांव था. उसमें दो औरतें रहती थीं. दोनों के घर पास-पास थे. दोनों ने एक ही दिन बच्चों को जन्म दिया. एक के लड़का हुआ, जिसका नाम येंगे रखा गया. दूसरी के लड़की हुई और उसका नाम सायरा पड़ा.



दोनों बच्चे साथ-साथ बड़े हुए. उन्हें एक दूसरे से अलग करना असंभव था.

जब सायरा बड़ी हुई तो एक अमीर व्यक्ति ने उससे शादी करनी चाही. लड़की के मां-बाप तैयार हो गये. लेकिन सायरा ने येंगे के बगैर अपने पति के साथ जाने से इनकार कर दिया. लड़की की मां ने दूल्हे से प्रार्थना की कि वह लड़की की शर्त मान ले.

ससुराल में पहुंच कर सायरा ने बड़ी कठिनाई पैदा कर दी. उसने कहा कि वह येंगे के साथ-साथ ही सुहाग-कक्ष में जायेगी. पति को भी झुकना पड़ा.

यह रोज की ही बात हो गयी. जहां-जहां सायरा जाती थी, वहां येंगे भी जाता था. इन हरकतों से सायरा का पति बहुत दुखी हुआ. उसने अपनी सारी परेशानी मुखिया को सुनायी.

मुखिया ने कहा — तुम भाग्यशाली हो, शीघ्र ही दुश्मन से लड़ाई छिड़ने वाली है. युवक होने के नाते येंगे को भी उसमें हिस्सा लेना होगा. उसे आगे कर दो और वह मारा जायेगा. तुम्हें उससे मुक्ति मिल जायेगी.

वही हुआ. लड़ाई के बाजे बजने लगे. येंगे को भी लड़ाई में जाना पड़ा, लेकिन सायरा भी जिद करके उसके साथ गयी. येंगे मारा गया और सुनसुन नामक वृक्ष बन गया. सायरा ने भी अपने प्राण त्याग दिये और एक बेल बन कर उस वृक्ष के तने से लिपट गयी और तभी से पेड़ों के तनों से बेलें लिपटती आ रही हैं. □

(आयवरी कोस्ट)


लॅक्मे वैनिशिंग क्रीम
रूप रंग की छटा बिखेरे
कौन न उस को प्यार से छेड़े
L
Lakmé
VANISHING CREAM
आप पर लोगों की निगाहें पड़ीं कि रुकी रह गईं. इस मनोरम सौंदर्य और रूप की उज्ज्वलता का रहस्य है लॅक्मे वैनिशिंग क्रीम हल्का-फुल्का और बिल्कुल प्राकृतिक, श्रेष्ठ मेक-अप का आदर्श आधार—
लॅक्मे वैनिशिंग क्रीम
सब कुछ रूपरंग के हक में
लॅक्मे


लॅक्मे लैवेण्डर टैल्क
अनोखी फ्रेंच सुगंध का चमत्कार: बिंध गया फ्रांसिसी हुआ शिकार
लक्मे लैवेण्डर टैल्क छिड़किए इसकी निराली मन-मोहनी सुगंध से लोग मंत्र-मुग्ध हो जायंगे. असली फ्रांसिसी खुश्बू···
बिल्कुल यही,
बिल्कुल सही।
Lakme
Lakme
dCA/L-VC-LT/1H HIN

नेकी की कमाई • बिरागो दियोप

बिरागो दियोप का जन्म १९०६ में डाकार, सेनेगल में हुआ. कई वर्षों तक वह अपर वोल्टा में रहे. उन्होंने अधिकतर कविताएं लिखीं हैं और साथ ही अफ्रीकी लोक-कथाओं को अपने ढंग से लिखा है.

• • •

एक खाड़ी में एक भयानक घड़ियाल रहता था. वहीं एक सुरक्षित गड्ढे को वह अपना घर कहता और आराम से शिकार करता रहता.

एक बार खाड़ी का पानी बहुत पीछे हट गया और घड़ियाल का घर सूख गया. वह अपने बचने का उपाय सोचने लगा.

दोपहर को गांव का एक बच्चा सूखी लकड़ियां चुनता-चुनता वहां से गुजर रहा था. घड़ियाल को देख कर बच्चा हंसा.—ए, तुम यहां क्या कर रहे हो?

—मैं रास्ता भूल गया हूं. मेहरबानी करके मुझे खाड़ी के पानी तक पहुंचा दो. बच्चे को उस पर दया आ गयी. उसने घड़ियाल को चटाई में लपेटा और पानी की तरफ चल दिया. जब पानी कंधों तक आ गया, तब घड़ियाल ने कहा —हां. . .यह जगह ठीक है. . .यहां उतार दो. बच्चे ने उसे पानी में डाल दिया. पानी में पहुंचते ही घड़ियाल के तेवर बदल गये. उसने बच्चे को पकड़ लिया. —मैं तुम्हें अब तो जाने नहीं दूंगा. बहुत भूख लगी है.

बच्चे को बहुत आश्चर्य हुआ. उसने कहा. —मैं तुम्हें शरीफ समझता था. . .तुम्हारे यहां क्या नेकी का बदला बदी से दिया जाता है?

—नेकी का बदला हमेशा बुरा मिलता है. . .

—तुम्हारी बात गलत है. . . नेकी का बदला नेकी ही होता है.

—ठीक है, घड़ियाल ने सुझाव रखा. हम तीन लोगों से पूछते हैं. अगर तीनों मेरी बात से सहमत हुए, तो मैं तुम्हें खा जाऊंगा.

—मुझे मंजूर है!

तब तक एक बूढ़ी गाय वहां पानी पीने आ पहुंची. . .घड़ियाल गाय से बोला —दादी . . .तुम इतनी बुजुर्ग हो, बुद्धिमान हो. . . भला बताओ कि नेकी का बदला नेकी होता है. . .या बदी!

—नेकी के बदले में हमेशा बुराई मिलती है, गाय बोली. अब मुझे देख लो. जब मैं जवान थी, दूध दे सकती थी, बछड़े और खाद दे सकती थी. . .मेरी बहुत सेवा की जाती थी. अब बुढ़ापे में चला नहीं जाता तो मुझे घर से निकाल दिया गया है. . .किसी के साथ अच्छाई करो, तो बुराई ही मिलती है.

थोड़ी देर बाद एक बूढ़ा घोड़ा भी वहां पानी पीने आ पहुंचा. . .घड़ियाल ने वही सवाल उससे भी पूछा. . .उसे भी अतीत याद आने लगा. —अच्छाई का बदला कभी अच्छाई से नहीं मिलेगा. मेरी तरफ देखो. एक जमाना था कि आये दिन युद्ध में जाता था! कितने राजाओं की मैंने जान बचायी, मैं शाही अस्तबल में रहता था, नौकर-चाकर आगे-पीछे घूमा करते थे. . . अब बूढ़ा हो गया हूं तो मेरी नेकी का बदला इस तरह मिला है. . .जंगल में भटक रहा हूं.

—दो हो गये, घड़ियाल बोला. तीसरा भी यही कहेगा. . .

—ठीक है, बच्चा बोला, अगर तीसरे ने भी यही कहा तो तुम मुझे आराम से खा लेना.

तभी एक खरगोश वहां फुदकता हुआ आ पहुंचा. घड़ियाल बोला—चाचा, तुमने जमाना देखा है. . . घड़ियाल ने सवाल दोहराया.

—क्या कहा! खरगोश ने चौंक कर अपने कान झटके. लड़का तुम्हें वहां से उठा कर यहां तक लाया है?

—हां. . .मैं उठा कर लाया हूं! लड़के ने कहा.

—यकीन करो, घड़ियाल बोला, यह लड़का ही मुझे यहां उठा कर लाया है.

—अगर यह बात सच है तो तुम उठा कर दिखाओ.

लड़के ने घड़ियाल को उठा लिया.

—अब यकीन आ गया? घड़ियाल बोला.

—उठा लेना कोई बड़ी बात नहीं है. लेकिन तुमने तो कहा है कि. . .सर पर उठा कर यहां तक लाया भी है.

—हां लाया भी है.

—वहां तक ले जा कर दिखाये!

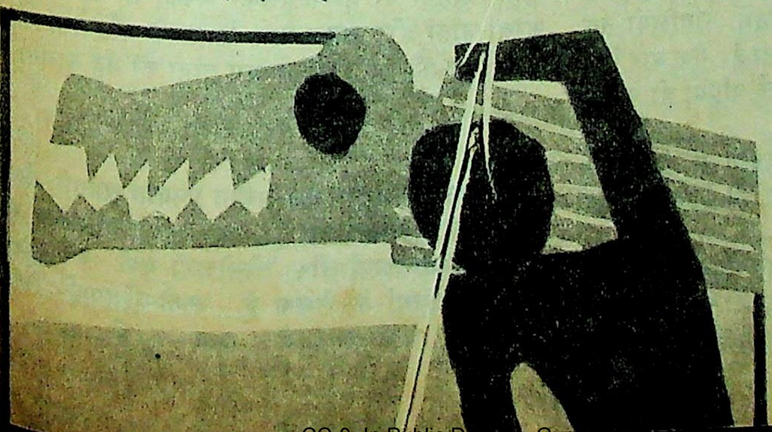
बच्चा घड़ियाल को वापस उसी जगह ले आया.

—अब तो यकीन आ गया?

—हां, आ गया. खरगोश बोला और उसने बच्चे से पूछा कि जॉन के बेटे हो न. . .?

—हां, बच्चे ने बताया.

—इस शैतान घड़ियाल को घर ले जाओ और सब लोग पका कर खाओ. फिर खरगोश ने बच्चे को समझाया—जो अच्छाई का बदला बुराई से देना चाहे, उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए. □□□



जब बूढ़े ताहा ने मोजे पहने

• अब्दुला हामेद अल-अमीन

जो भी उसके पास बैठता, उसे ही वह अपनी कहानी सुनाता; और जब भी मौका लगता, वह इसे अनथक बारंबार दोहराता.

सेना से रिटायर होने के बाद वह कृषिजन्य उत्पादनों की एक बड़ी फर्म में चौकीदार की हैसियत से काम करने लगा था. उसका काम था मालगाड़ी के उन डब्बों की चौकसी करना जो उस फर्म का माल सारे देश में पहुंचाते थे. कभी-कभी रात की पाली में उनींदा हो जाने पर वह बोरों से लदे किसी डब्बे में लेट जाता, सुबह को मालगाड़ी की रवानगी के इंतजार में. यह उसकी बदकिस्मती थी कि एक रात एक ट्रेन जो बगल की पटरी से गुजरने वाली थी, पूरी रफ्तार से दौड़ती उसी पटरी पर आ गयी और वहां खड़ी मालगाड़ी से टकरा गयी. इस टक्कर ने उसे हवा में उछाल दिया और फिर वह धड़ाम से पटरियों के बीच जा गिरा : यह सब एक भयावह क्षण में घट गया. . .

उसके साथी मजदूर उसके पास दौड़े आये. स्तंभित हो वे उस व्यक्ति को देखने लगे जिसने कुछ ही मिनटों पहले उनके साथ खाना खाया था. . .उस आदमी को जिसे भाग्य ने एक ट्रेन के पहियों के नीचे आ कर अपनी इहलीला समाप्त करने के लिए चुना था. किंतु उसने उन्हें हैरत में डाल दिया, क्योंकि वह अचानक बोला उठा—तुम लोग वहां खड़े-खड़े क्या देख रहे हो? चालू हो जाओ. . . चाबियां उठा कर यहां ले आओ मेरे पास, और मेरा बटुआ भी, मेरे पांव. . .?

वह वक्त का एहसास खो देता है. जब आखिरकार, और बड़ी मुश्किल से, वह अपनी आंखें खोलता है, और एक साफ-सुथरा सफेद बिस्तर और एक खामोश कमरा उसकी नजर के फोकस में आते हैं. . .धीरे-धीरे. . .तो धीरे-धीरे घटनाएं उसकी याद में उभरने लगती हैं; वह सुदूर धुंधले स्वप्न में लौटने लगता है. . . वह अपने हाथ को सरकाता है, अपने नितंब की बगल से सटा कर नीचे की ओर. . .वह अपना बायां पांव गायब पाता है. घबरा कर वह दूसरे पांव की ओर हाथ बढ़ाता है. . . उसे भी वहां नहीं पाता. और अचरज की बात यह है कि वह अपने पांवों के होने का और उनमें उंगलियों तक दौड़ते अस्पष्ट-से दर्द का एहसास करता है. एक बार फिर वह अपना हाथ बढ़ाता है, किंतु सिर्फ पट्टियों ही पट्टियों का स्पर्श पाता है. . .

दिन गुजरते जाते हैं और वह जिंदगी में पुनर्स्थापन के लिए और कृत्रिम अंगों के प्रयोग की ट्रेनिंग के लिए सेनेटोरियम में व्यस्त हो जाता है.

अपनी कहानी के अंत तक पहुंचते-पहुंचते अम ताहा अपनी खुरदरी ठोढ़ी को खुजलाता है, जो एक अरसा हुए उस्तरा चलने के एहसास को खो चुकी है, और अपनी झबरीली सफेद मूंछों को उमेठता है, अत्यधिक धूम्रपान के कारण जिनके सिरे जल चुके हैं. कभी ही होता था कि अम ताहा के ओठों के बीच सिगरेट न हो. वह तांबे के चंद सिक्कों में खरीदी गयी सस्ती सिगरेटों को एक के बाद एक लगातार पीता रहता था. . .और बराबर खांसता रहता था. कभी-कभी जब उसकी आखरी सिगरेट खत्म हो जाती और सिगरेटें खरीदने के लिए उसके पास पैसे का अभाव होता, तो वह मुलायम कागज में तंबाकू लपेट कर—जिन्हें वह ऐसे आड़े वक्तों के लिए अपनी थैली में रखता था—अपनी सिगरेटें खुद तैयार कर लेता. तब उसके मुंह से अधिक गाढ़ा और अधिक तीखी गंध वाला धुंआ निकलता, और उसकी कहानी में अधिक गहरी खांसी के विराम लगते जाते.

* *

सेनेटोरियम में पहुंचने पर अम ताहा को एक पहियों वाली कुर्सी मिली थी, पुरानी और खस्ताहाल. लेकिन वह इससे संतुष्ट था. उस पर बैठ कर वह कुछ बहुत दूर से देखता, बिना पैरों के आदमी की तरह नहीं, बल्कि ऐसे मानो कंबल के नीचे सचमुच ही उसके पांव हों. उभरी नसों वाले उसके हाथ पहियों को उकसाते, जिनमें से एक के टायर का कुछ हिस्सा कट गया था और वह एक खास आवाज पैदा करता था, जो उसके दोस्तों के लिए, उसके आगमन का संदेश देती थी. . .कभी-कभी जब उसका प्रिय मित्र अहमद पास होता तो अम ताहा को पहिया धकेलने की परेशानी से छुट्टी मिल जाती. अहमद एक बच्चा था, आठ साल की उम्र में एक बीमारी ने जिसे गूंगा और बहरा बना दिया था और उसके दुबले शरीर के बायें हिस्से को एकदम निर्बल कर दिया था. अम ताहा को देखते ही अहमद उछलता, हांफता और अस्पष्ट शब्दावली की बौछार करता उसके पास चला आता.

अम ताहा का चेहरा उसे देख कर खुशी से दमक उठता जैसे और किसी को देख कर नहीं होता था. अपने नन्हें हाथों से अहमद उचक कर कुर्सी की पीठ पकड़ता और पूरी ताकत से उसे आगे धकेलने की कोशिश करता; अम ताहा पहियों पर हलके-हलके धक्कों से उसकी मदद करता जाता और सहज भाव से उससे बतियाता जाता. अपने दिल की गहराइयों में अम ताहा की यह कामना थी

•••

अब्दुला हामेद अल-अमीन प्रख्यात सूडानी लेखक और समालोचक हैं. आप 'सूडानी साहित्य चक्र' के अध्यक्ष हैं और 'तीसोत्तरी वर्षों में सूडानी साहित्य' के लेखक हैं. अफ्रो-एशियाई लेखकों के आंदोलन में आप काफी सक्रिय हैं.

कि उसका भी एक बेटा होता——चाहे वह अहमद की ही तरह बदकिस्मत क्यों न होता——जो ताहम एक कोमल स्वभाव का और हंसमुख बालक था, जिसकी चमकती आंखों में कुशाग्रबुद्धि और बड़ों की कही बातों की समझ झलकती थी.

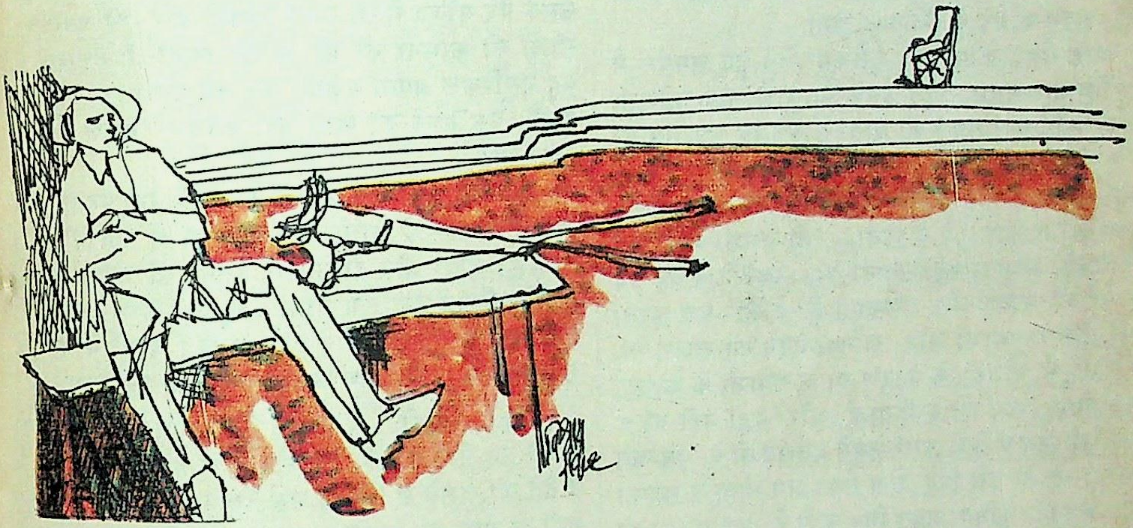
* *

अम ताहा ने चार बार शादी की थी और तलाक लिया था, इस उम्मीद में कि उनमें से कोई शादी तो फलद होगी, लेकिन अल्लाह की यही मर्जी थी कि वह संतान से वंचित रहे. बहरहाल, वह पितृत्व की अपनी वांछा को यहां पूरा करेगा, इस सरल स्नेहशील बालक के साथ बढ़ती हुई दोस्ती और हमदर्दी में. अपनी सस्ती सिगरेटों के पैकेट खरीदने के बाद जो भी पैसे बचते, उनसे अहमद के लिए मिठाइयां खरीदना अम ताहा के लिए एक सुखद कर्त्तव्य बन गया. जब अम ताहा के साथ उसके सफर का अंत टॉफियों या लॉलीपॉप के इनाम से होता, जैसा कि आमतौर से होता था, तो बच्चा खुशी से नाच उठता.

एक दोस्ती अम ताहा और एक छुट्टी बिल्ली के बीच भी बढ़ रही थी, जिसे वहां सुरक्षित ठिकाना मिल गया था. जब पहली बार उसकी नजर उस पर पड़ी थी तो वह भारी गले से म्याऊं-म्याऊं कर रही थी और भूख से व्याकुल चक्कर काट रही थी. उसने अपने सूक्ष्म आहार में से उसे गोश्त का एक टुकड़ा दे दिया था. तब से वह उसके पास से कभी ही इधर-उधर गयी थी. अगर वह कमरे से बाहर जाता तो वह पूंछ उठाये, दीवार से सटी उसके साथ-साथ चलती. स्वास्थ्यलाभ करते अन्य रोगियों के सामने बिल्ली पर अपना प्यार जताने में अम ताहा को मजा आता. जैसे ही उसकी नजर उन लोगों पर पड़ती, वह बड़े प्यार से बिल्ली को पुकारता, और वह उछल कर उसकी गोद में आ बैठती, और ज्यों ही अम ताहा अपने खुरदरे हाथों से उसकी मुलायम पीठ को सहलाता, वह गुड़ीमुड़ी हो कर हौले-हौले गुर्राती.

उसके साथी इस दृश्य पर हंसते : गूंगा अहमद, छुट्टी बिल्ली और अम ताहा, जो उन दोनों को ही प्यार करता. उन लोगों की दिल्लगी नजर-अंदाज करता अम ताहा आगे बढ़ जाता. . .लंगड़ा पहिया फर्श पर तौल देता. . . अपने मन में इस जानकारी पर खुश और संतुष्ट कि उसके वे दोनों दोस्त उसके लिए उन सबसे अधिक प्रिय और बेहतर थे. . .कम-से-कम वे निष्कपट थे और किसी को नुकसान नहीं पहुंचाते थे. निष्कपटता और स्नेहपूर्ण लगाव का समाज में अभाव था.

दरअसल, अम ताहा सामाजिक हालतों से कतई खुश नहीं था——उस छोटे समूह से भी नहीं जिसके साथ दुर्भाग्य उसे संपर्क में ले आया था. यहां अपने अनेक साथियों को वह पसंद नहीं करता था. जिन नौजवानों को वह देखता था, वे अपंग लड़कियों पर डोरे डालते थे जो उन्हें बढ़ावा देती लगती थीं और उन्हें आकर्षित करने के लिए होड़ करती थीं. जहां तक बड़ों का सवाल था, वे ज्यादातर दंभी थे, और उनमें कुछ ऐसे दुर्बल मन वाले थे जो अपने अधपके बालों को भूल कर जवान बनने की हविस रखते थे. यह निहायत शर्मनाक बात थी, अशोभनीय. बूढ़ों में से सिर्फ एक ही के साथ अम ताहा की बनती थी. वह था अल-शेख सैयद जो निहायत खुदापरस्त आदमी था और अपनी पहियेदार कुर्सी पर बैठे-बैठे ही पांचों वक्त की नमाज पढ़ता था. उसकी धार्मिक प्रार्थनाएं कानों को भली लगती थीं और अम ताहा रोज सुबह से शाम तक किसी भी वक्त महान पैगंबर की चर्चा और अल्लाह के बंदों की कहानियां सुना करता. लेकिन शेख सैयद की तमाम सीखों के बावजूद, अम ताहा कभी नमाज



नहीं पढ़ता था. अल्लाह की यही मर्जी है, वह कहता. लेकिन रमजान के दिनों में वह नमाज भी पढ़ता और रोजे भी रखता.

★ ★

अम ताहा शेख सैयद से सुबह-तड़के भी मिलता. शौचालय से अपने कमरे को लौटते हुए शेख सैयद अम ताहा के कमरे में होते हुए जाता जो उसके बिल्कुल पड़ोस में ही था. वह तब तक वहां ठहरा रहता जब तक अम ताहा, जो चाय और कॉफी का सारा ताम-झाम और सामान अपने पास ही रखता था, उसके लिए एक प्याला गर्मागर्म कॉफी तैयार न कर देता. जितनी देर छोटे-से स्पिरिट-लैंप की लपटें कॉफी की केतली के गिर्द नाचती रहतीं, शेख सैयद अम ताहा से गपशप करता रहता. इस वक्त अम ताहा कॉफी के विषय पर बात करना पसंद करता—उसके फायदों और देहात में उसकी बेहद लोकप्रियता के बारे में, जहां उसके बनाने वाले विशेषज्ञ हैं, शानदार महफिलें और उनके विशेष नियम हैं. उदाहरणार्थ, दूसरे या हद से हद तीसरे दौर के बाद और कॉफी लेना अदब-कायदे के खिलाफ होगा.

शेख सैयद कॉफी की चुस्कियां लेते हुए समर्थन में सिर हिलाता जाता, और उसके प्याले से भाप लहराती उठती जाती. अम ताहा की बातों में अमूमन अफसोस का एक स्वर उभर आता, क्योंकि उसे जमाने की रफ्तार पर दुख होता, जिसने कॉफी की परंपरा को खतम करके उसका स्थान चाय को दे दिया. . .जो उसकी निगाह में निश्चय ही भ्रष्टता की निशानी था. . .कॉफी में वह सब कुछ था जो अच्छा और गुणकारी है. कॉफी पेश करना सच्ची मेहमाननवाजी और खानदानीपन का लक्षण था. अब लोगों ने, कंजूसी के कारण या जल्दबाजी के कारण, इसका स्थान चाय को दे दिया है. और यही नहीं बल्कि वे इसे खड़े-खड़े पीते हैं. अगर उनसे बन पड़े तो वे निश्चय ही चलते-चलते इसे पियें. शेख सैयद अम ताहा से सहमत होता. बेशक! दुनिया बहुत गिर चुकी है. वह समाज की आलोचना करता और उन बुराइयों और दुष्प्रवृत्तियों की चर्चा करता जो व्यापक रूप से प्रकट हो चुकी हैं, खासकर पुरुषों और स्त्रियों के स्वतंत्र रूप से मिलने-जुलने के कारण. और इस नुक्ते पर अम ताहा पूरे जोर और आवेश के साथ फूट पड़ता. जब भी औरतों का जिक्र आता, उसे अभिभूत कर देता था. जैसा कि बार-बार दोहराना उसकी आदत थी, वे बिल्कुल भ्रष्ट हो गयी हैं; वे कपड़े तो पहने होती हैं लेकिन नंगी और लंपट हो गयी हैं. सिर्फ दूर देहातों में ही औरतें चरित्रवान और अच्छी हैं, शहरी औरतों से लाख गुना अधिक. शेख सैयद अम ताहा से सहमति जताता और इससे अम ताहा को बेहद खुशी होती. . .उसका आवेश ठंडा पड़ जाता और अंत में वह शेख सैयद को दरवाजे तक पहुंचा कर शाम को मिलने तक के लिए खुदा-हाफिज कहता.

★ ★

तब अपने कृत्रिम पांवों को इस्तेमाल करने के प्रशिक्षण के लिए उसके जाने का वक्त हो जाता. अम ताहा सरक कर चारपाई के किनारे तक आ जाता और फिर चंद सधी-सधायी हरकतों से कुर्सी में जा बैठता, और नर्स की मदद से हो कर आगे बढ़ जाता.

लकड़ी की बैसाखियों के सहारे वह अब भी मुश्किल से ही चल पाता. वह यह देखने के लिए अपने पाजामे के पायंचों को ऊपर सरकाता कि कृत्रिम पांव किस जगह उसकी जांघों पर जमाये गये हैं.

यद्यपि वे लकड़ी के बने थे, फिर भी उनकी बनावट बिल्कुल असली पांवों जैसी थी और उनका रंग भी लगभग असली त्वचा जैसा ही था. अपने ओठों पर जीभ फिरा कर अम ताहा बारी-बारी दोनों पांवों पर नजर डालता जिनका अंत छोटी-सी एड़ी वाले शानदार जूतों में होता जैसे कि उसने पहले कभी नहीं पहने थे. उनमें से निकलते हुए और उसके टखनों से कुछ इंच ऊपर तक चढ़े साफ और खूबसूरत मोजे थे.

उसके ओठों के किनारों पर एक उदास मुसकान की रेखा खिंच जाती. उसके माथे से पसीने की नमकीन बूंदें जब टपकतीं तो वह इस विडंबना पर सोचता कि जब उसके पैर मौजूद थे तो उसने कितनी बार ऐसे जूतों और मोजों की कामना की थी. अपनी छोटी-सी तनखाह में वह बमुश्किल अपना गुजारा भर कर पाता था और वह अपने इस सपने को कभी पूरा करने में सफल नहीं हो पाया था!

दो मीटर चलने में उसे जो मेहनत करनी पड़ती, उससे उसकी सांस फूल जाती. इस कोशिश में उसका चेहरा लाल हो जाता और दोनों ओर इतना-सा चक्कर लगाने में उसे चौथाई घंटा लग जाता; वह एक कदम चलता. . . फिर थक जाता. . . और फिर उसकी जांघों में वह दर्द उठता. . . और लगभग असह्य थकन का वह एहसास.

नहीं. . . नहीं. . . ये कृत्रिम पैर बेकार हैं. अच्छा होता कि वे इन पैरों को ले लेते और वैसी ही पहियेदार कुर्सी दे देते जो लकवे से पीड़ित उस रोगी को दी थी जो ठीक नहीं हो सका था. तब इन कष्टदायक और थका देने वाले कृत्रिम अंगों के बिना ही वह इतमीनान से घर लौट सकेगा.

★ ★

डॉक्टर पास से गुजर जाता और वह खड़ा रहता. उससे जब उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछा जाता, तो अम ताहा अपने मन की बात बता देता. काश, डॉक्टर समझ पाता कि इससे उसे कितनी राहत मिलेगी. लेकिन वह उसकी एक न सुनता और दृढ़तापूर्वक उसे सलाह देता कि वह धीरज से काम ले और अपने कृत्रिम पैरों को इस्तेमाल करना सीखे, क्योंकि तभी वह आगे चल कर अपनी रोजी कमा सकता है.

तब अम ताहा एक और दलील पेश करता कि जो पैर उसके लिए बनाये गये हैं, वे उसके असली पैरों से बड़े हैं और इसी कारण उनमें दर्द होता है. डॉक्टर पूछता कि वह कैसे कह सकता है कि वे बड़े हैं, तो वह जवाब देता कि जो गाउन वह दुर्घटना से पहले पहना करता था वह इन टांगों पर पहले से ऊंचा रहता है! इस पर डॉक्टर हंस पड़ता और अम ताहा का कंधा थपथपा देता. . .उसे

बखूबी मालूम था कि लकड़ी के पैर उसकी अपनी टांगों के ही साइज के बनाये गये हैं और निश्चय ही अम ताहा का गाउन ही सिकुड़ गया होगा.

अम ताहा अपने ओठ सिकोड़ लेता और गुस्से में अपनी कुर्सी पर बैठ जाता... उसके पैर लगभग फर्श को छूते होते. अपने कमरे की ओर बढ़ता वह बराबर बड़बड़ाता जाता और उस दिन को कोसता जाता, जब किसी ने कृत्रिम पैरों को ईजाद किया था. वह अपने से सवाल करता कि इन पैरों को ले कर, जो जरा भर ही मुड़ते हैं, गांव जा कर चटाइयों पर कैसे बैठेगा, जहां लोग ऊंची कुर्सियां या सोफे इस्तेमाल नहीं करते! लेकिन उसकी बात कौन समझेगा? शहरी लोग गांव वालों के मन की बातें नहीं समझते.

अपने कमरे में पहुंच कर वह कुर्सी से उतर कर, पांव फर्श पर लटकाये अपनी चारपाई पर बैठ जाता. एक सिगरेट सुलगा कर वह गहरे कश खींचता और नथुनों से धुआं छोड़ता और बराबर खांसता जाता.

बूढ़ी नर्स सकीना जब उसका भोजन ले कर आती तो उसे इसी तरह बैठा पाती. अम ताहा को उसे देख कर सदा एक तुष्टि और खुशी होती, क्योंकि अपने भारी-भरकम डील-डौल के बावजूद—जिससे ऐसा भ्रम होता था कि रोगियों का सारा खाना वह खुद खा जाती है—वह एक दयालु और कोमल स्वभाव की औरत थी. उसके चेहरे पर अभी भी सुंदरता की छाप थी, जिसे उसके पचास वर्ष मिटा नहीं सके थे.

सकीना उससे पूछती कि वह किस बात की चिंता कर रहा है और उसकी शिकायतों का सिलसिला शुरू हो जाता. और वह कृत्रिम पैरों और डॉक्टर की शिकायत उससे करता. वह सहमत होती कि उन पैरों में जरूर ही कोई खराबी होगी और उन्हें ठीक करने के लिए भेजा जाना चाहिए. वह उसे डॉक्टर से इसकी दरखास्त करने की सलाह देती... और इस प्रकार उसका मनबहलाव करती, क्योंकि उसे मालूम था कि बहुत-सी परेशानियां सिर्फ आदी न होने के कारण होती हैं और बेकार चिंता से कोई लाभ नहीं होता. अम ताहा का चेहरा कुछ खिल उठता और वह उससे पूछता कि आज भोजन के लिए वह क्या लायी है, और फिर उसके बेटे के बारे में पूछता जिसकी तबियत उसने पिछले दिन कुछ खराब बतायी थी. वह घुटनों के बल उसके सामने फर्श पर बैठ जाती और लकड़ी के पैरों को अलग करने में उसकी मदद करती. उसके हाथ उसकी नंगी जांघों से छू जाते और एक ठंडी कंपकंपी उसके शरीर में दौड़ जाती. वह खामोशी से शैतान को लानत भेजता, और अपना चेहरा एक ओर को घुमा लेता, मानो किसी अदम्य विचार से पिंड छुड़ाने की कोशिश कर रहा हो. लेकिन वह विचार उसका पीछा न छोड़ता... और अम ताहा को एक लंबे अरसे बाद अचानक स्मरण हो आता कि उसे एक औरत की जरूरत है... और वह निढाल-सा हो जाता... सकीना के हाथ उसकी जांघों को छूते होते, और उसकी सांस उठ कर उसके चेहरे को सहलाती होती. □□□

युगांडा की लोककथा

सृष्टि की रचना

काबेज्या-एंपुंगु (ईश्वर) ने आकाश और धरती की रचना की. इनके साथ ही विशेष तर्क शक्ति दे कर दो मानव देहधारियों की रचना की. इनमें एक पुरुष था और एक औरत. उस समय तक इन मानवों में मुतिमा अर्थात् हृदय नहीं था. काबेज्या-एंपुंगु की चार संतानें थीं—सूरज, चांद, अंधकार और वर्षा. उसने उन चारों को बुलाया और कहा — अब मैं जाना चाहता हूं. मनुष्य मुझे नहीं देख सकेगा. मैं अपनी जगह मुतिमा को भेजूंगा. लेकिन जाने से पहले मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं. उसने सब से पहले वर्षा से पूछा — वर्षा, तुम क्या करना चाहती हो?

—मैं चाहती हूं कि लगातार बरस कर सारी चीजें पानी में डुबो दूं! वर्षा ने उत्तर दिया.

—नहीं, ऐसा मत करना, ईश्वर ने कहा. इन दो को देखो, उसने मानव और मानवी की ओर इशारा किया — क्या तुम समझती हो कि वे पानी में रह लेंगे? तुम सूरज के साथ पाली बदल कर काम करो. पहले तुम धरती पर पर्याप्त बरसात करो, फिर सूरज को उसे सुखाने दो.

फिर सूरज से पूछा—तुम क्या करोगे?

—मैं अपनी चमक और गर्मी से सारी चीजें जला दूंगा! सूरज ने कहा.

—नहीं! काबेज्या-एंपुंगु ने कहा. ऐसा मत करना, नहीं तो मेरी मानव-सृष्टि को खाना कहां से मिलेगा? जब तुम पृथ्वी को गर्म कर लो तो वर्षा को एक मौका देना कि वह फिर से सब कुछ तरो-ताजा करके फलों को उगने दे.

—अंधकार, तुम्हारी क्या योजनाएं हैं?

—मैं हमेशा राज्य करना चाहता हूं!

—क्या करो, ईश्वर चिल्लाया. क्या तुम चाहते हो कि मेरे प्राणी दुनिया न देख सकें? तुम चांद को धरती पर चमकने का मौका दो. जब तुम देखो कि उसका आखिरी हिस्सा चमकने के लिए रह गया है, तब तुम अपना आधिपत्य जमा लो. अच्छा अब मैं जाता हूं.

कुछ समय बाद मुतिमा (हृदय) एक छोटे-से डिब्बे में आया.

उसने सूरज, चांद, अंधकार और वर्षा से पूछा — हमारा पिता काबेज्या-एंपुंगु कहां है?

—पिता जा चुका है.

—ओह, मैं उससे मिलूंगा और जब तक उसे ढूंढ़ नहीं लूंगा, तब तक मनुष्य में निवास करूंगा. और तभी से मानव की सभी संतानें उस हृदय के साथ पैदा हुई. □□□

फूल... प्यारे फूल

• जोसेफ़ ज़ोबेल

जोसेफ जोबेल का जन्म १९१५ में पेटिसबर्ग में हुआ. इनका पहला उपन्यास एक मच्छीमार कस्बे की पृष्ठभूमि पर है. १९३७ में ये पुल और राज मार्ग विभाग के सचिव रहे. १९४६ में फ्रांस चले गये, १९५७ से सेनेगल में नेशनल ब्राडकास्टिंग के इंचार्ज और कल्चरल सर्विसेज के निदेशक हैं.

वसंत इतनी देर से पहले भी कभी आया हो, किसी को याद नहीं था. पहली मई के दिन लिली ऑव द वैली अभी तक खिली नहीं थी. बारिश हो रही थी और आसमान भूरा था. हर आदमी कह रहा था कि फूल वालों ने बहुत पैसा बनाया होगा—और यह भी कि जो फूल वाला जंगल से ही इन फूलों को बीन लाया होगा, वह मालामाल हो गया होगा.

पर सच्चाई यह थी कि हर तरफ पत्तियां ही बेची जा रही थीं, फूल नहीं. इन पत्तियों के साथ कोई अनखिली-कच्ची कली भी आ गयी हो तो बात दूसरी है.

वसंत के आगमन में सचमुच विलंब हो गया था.

फिर भी, यह भी तथ्य है कि जंगल में हर चीज फूलने के लिए तैयार थी. हर चीज हमारी तरह वसंत के इंतजार में थी. सभी को सूरज के निकलने और अपनी ऊष्मा बिखेर देने का इंतजार था.

—जब ऐसा होता है तो वसंत जल्दी आता है! औरतें कहती थीं.

इस रविवार को भी मौसम बड़ा अच्छा था. दरअसल किसी को उम्मीद नहीं थी कि वह इतना सुहाना दिन साबित होगा.

दोपहर के भोजन के तुरंत बाद शहर जंगल में बिखर पड़ा था. वहां कारों को खड़ी करने के लिए छायादार जगह ढूंढ़ना मुश्किल हो रहा था. इसी तरह, जो लोग एकांत में पढ़ने या आराम करने की आशा ले कर गये थे, उन्हें बड़ी देर तक भटकते रहना पड़ा था. पूरा शहर वहां जमा था—कारें, प्रेमी जन, और नवविवाहित जोड़े; प्रामगाड़ियां, बच्चों के झुंड, और श्वेतकेशी जन जो धूप में भी काली पोशाक पहने रहते थे और जिन्हें सरकार ने सम्मानपूर्वक 'आर्थिक रूप से पिछड़े हुए' संज्ञा प्रदान की थी. इनके अलावा पेरिस वाले भी थे ही, जो हर जगह देखे जा सकते हैं, अपने पूरे परिवारों—बच्चों, मां-बाप और दादा-दादी—के साथ, फोल्डिंग मेजों के गिर्द बैठे ताश खेलते हुए और प्लास्टिक की बोतलों से रंग-बिरंगे पेय पीते-पीते तर्क करते हुए.

दूसरे लोग अपनी कारों में बैठे, रेडियो पर पार्क द प्रिंसेज' के किसी फुटबाल मैच की कमेंटरी सुन रहे थे.

कुछ लोग गेंद के खेल खेल रहे थे. और कुछ गंजे, तोंदुल महाशय अपनी जाकिट उतार कर—ताकि जवान मालूम पड़ें—अपने नातियों के साथ दौड़ लगाने की तैयारी में थे. स्त्रियां इस दृश्य के मजे ले रही थीं.

धूप में हंसना-हंसाना अच्छी बात थी.

नेकर पहने ऐसे लड़के और जीन पहने ऐसी लड़कियां भी ढेर सारी थीं, जो पीठ पर थैले लादे हर मौसम में हर रविवार को जंगल की सैर किया करते थे.

वर्ष में पहली बार आइस्क्रीम बेचने वाला भी फिर दिखायी दिया था. वह सफेद लिनन की जाकिट और सफेद टोपी पहने अपनी छोटी-सी गाड़ी की छतरी के नीचे खड़ा था. गाड़ी पर नया सफेद रंग पुता हुआ था और स्पेनी जैसे नाम के अक्षर लाल रंग में चितरे हुए थे. बच्चे उसकी तरफ ऐसे लपकते थे जैसे पानी की पियाऊ की तरफ मेमने—बीस या तीस सेंट ले कर वह गुलाबी, पीले या ब्राउन रंग के आइस्क्रीम कोन देता था, जो दूर से फूलों के गुच्छे लगते थे.

यह सब जंगल में उस स्थान पर हो रहा था, जहां ओक और बीच के पेड़ों के बीच एक बड़ा घास का हरा मैदान था. चमकीले रंगों वाली स्कर्ट पहने महिलाएं वहां झुक-झुक कर डेजी, डेंडेलियन या चौपतिया क्लोवर के फूल चुन रही थीं.

सड़क इस बड़े हरे मैदान से हो कर गुजरती थी. इस सड़क को पार करना मुमकिन नहीं था, क्योंकि दोनों ही दिशाओं में कारों का न टूटने वाला सिलसिला चल रहा था. सड़क के किनारों पर खड़े रह कर ऐसा लगता था मानो नदी तट पर खड़े हुए, जलराशि को दो विपरीत धाराओं में बहते देख रहे हों.

कारों की तेज रफ्तार से हवा का तेज झोंका आता था जिससे सभी सचेत रहते थे, क्योंकि उस झोंके से महिलाओं के स्कर्ट ऊपर उठ जाते थे और सड़क के किनारों पर जमी बारीक धूल लोगों की आंखों में भर जाने का खतरा था.

वही एक ऐसा व्यक्ति था जो, इसके विपरीत, सड़क के किनारे खड़ा था और हर कार के गुजरने पर पीछे हटने के बजाय कुछ आगे झुक कर अपने हाथ उठा देता था. जितनी तेजी से कार जाती, उतना ही वह उसकी तरफ ज्यादा हाथ हिलाता, यहां तक कि उसकी ओर कुछ कदम बढ़ भी जाता, मानो उसे सम्मोहित करने का प्रयत्न कर रहा हो. दरअसल, कभी-कभी कोई कार धीमी हो कर कुछ आगे रुक जाती, और तब वह उन चमत्कारी सफेद फूलों के दो गुच्छों को हिलाता हुआ उस कार की ओर दौड़ पड़ता.

* *

पिछले दिन शायद उसे आभास हुआ था कि निस्संदेह सुहाना मौसम आ रहा है. और उसने लिली ऑव द वैली के बारे में सोचा था जो पहली मई से पहले खिली नहीं थी, और जिसके बारे में लोगों का कहना था: अब से करीब एक हफ्ते बाद .... ज्यों ही सूरज बादलों से बाहर निकलेगा ....

इसके अलावा वह यह भी जान सका था कि उस खिलने को काफी देर हो चुकी थी. वह हर मौसम में हर रोज जंगल में जब या तो कुकरमुत्ते, डेफोडिल या डेंडेलियन चुनने जाता या लकड़ी बीनने, तब लिली खिलते देखा करता था.

वह पूरे जंगल से परिचित था.

इसलिए वह जल्दी ही जाग गया था और वरन्यु-इल की तरफ चल दिया था, जो लिली आँव द वेली का क्षेत्र है, जिस तरह रेक्लोरोज डेफोडिल का क्षेत्र है. सब यह बात जानते हैं, लेकिन उसे यकीन था कि अगर वह सबेरे तड़के ही चला जायेगा तो उससे पहले कोई और वहां नहीं पहुंच सकेगा. बड़ी लंबी दूरी थी.

और उसके अनुमान के अनुसार वहां ढेरों लिली थीं. इतनी थीं कि झुक-झुक कर एक-एक टहनी चुनने के बजाय वह हंसिया ला सकता था. पूरी सुबह वह लिली चुनता रहा, कभी उकड़ूं बैठ बत्तख की चाल चल कर, कभी घुटनों के बल घिसट कर. उसकी पीठ और कंधे दुख रहे थे और जांघें और पिंडलियां दर्द कर रही थीं, मानो उसकी डंडे से पिटाई हुई हो. इससे



उसकी चाल डगमगा रही थी. लेकिन इस बात का ईश्वर साक्षी था कि पूरे समय वह जंगल में अकेला था. लाल शराब की बोतल के बिना उसकी जीभ तालू से चिपक गयी थी. सचमुच वह इतना प्यासा था कि अपने आपसे कह उठा: हालांकि अभी कुछ भी बिक्री नहीं हुई है, लेकिन जो भी मधुशाला रास्ते में पहले पड़ेगी, उसीकी मालकिन को लिली का एक गुच्छा दे कर बदले में एक गिलास शराब ले लूंगा.

मालकिन को सौदे में घाटा नहीं होता.

बड़े सुंदर और मीठी सुगंध वाले लिली आँव द वैली के फूल थे वे—इन पर वह गर्व कर सकता था—वे बड़ी खूबसूरती से सजाये गये थे.

फूल चुन चुकने के बाद वह घास पर उनके ढेर को टांगों के बीच रखे धूप में बैठ गया. तब थोड़ी-थोड़ी टहनियां ले कर और उनके चारों ओर नरम हरी पत्तियां सजा कर उनके छोटे-छोटे गुच्छे बनाये. फिर उन्हें बांध-बांध कर घास पर रखता गया.

★ ★

मानो कोई खेल हो, कुछ ऐसी बात जो दरअसल गंभीर न हो, कम-से-कम उसकी उम्र के आदमी के लिए जिससे यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि फूलों पर समय नष्ट करे.

फिर भी वह काम तो था ही, और पूरी सुबह उसमें लग गयी.

ऐसे बढ़िया लिली आव द वैली के गुच्छे तो बड़े मजे से एक-एक फ्रांक में बिक जाने चाहिए, उसने सोचा.

और दरअसल, धंधा बड़ी अच्छी तरह शुरू हुआ था. यह जगह उसने खास तौर पर चुनी थी. सड़क के एक तरफ कुछ दूरी पर एक मोड़ था और दूसरी तरफ कुछ दूरी पर एक पहाड़ी थी. यहां कारें आसानी से रुक कर फिर आसानी से ही आगे बढ़ सकती थीं.

यह सच है कि कुछ कारें पूरी रफ्तार से सीधे उसकी तरफ आती थीं और यदि वह ऐन वक्त पर उछल कर सड़क के किनारे की ओर पीछे न हटे, तो कुचल जाने का खतरा पैदा हो जाता था. लेकिन कभी-कभी उसके हाथों के लिली के दो गुच्छों को देख कर किसी खूबसूरत कार की बेतहाशा रफ्तार धीमी हो जाती और हौले से, आज्ञाकारी की भांति वह उसके पास आती—जैसे एक भला कुत्ता मिठाई दिखाने पर आता है.

—ओह, कितने प्यारे हैं ये!

हर बार यही शब्द. और उन्हें लगता कि कीमत वाजबी है.

—ओह, ये तो सुंदर हैं! अपनी कारों की खिड़कियों से बाहर झुक कर भद्र महिलाएं कह उठतीं.

और वह कहता—इनकी सुगंध कितनी मीठी है, यह तो देखिए, मैडम.

तब वह महिला कुछ क्षण रुक कर अपनी पलकों को—लंबी बरौनियों वाली सीपी जैसी पलकों को—उस गुलदस्ते पर झुका देती जिसे उसका खुरसटें लगा

बूढ़ा हाथ उसके चेहरे को समर्पित किये होता.

कभी ऐसा भी होता कि कोई महिला उस गुलदस्ते को लेने से इनकार कर देती जिसे वह पेश करता और उसे अपनी कार के और करीब आने को कहती ताकि वह उसके कंधे से लटके थैले में से खुद कोई गुच्छा चुन ले, जो उसे और भी बड़ा और ज्यादा खूबसूरती से सजाया हुआ जान पड़े.

दो गुच्छे, तीन गुच्छे—और कभी-कभी बकाया रेजगारी भी उसके पास रहने दी जाती.

—धन्यवाद, देवियो और सज्जनो! मेरी लिली ऑव द वैली आपका भाग्य जगायेगी.

तेज रफ्तार की गर्जना के साथ कार फिर दौड़ पड़ती. उस कार के दूर चले जाने से गर्जना कम होती तो फौरन दूसरी आने वाली कार से फिर बढ़ जाती.

तब, थैले पर हाथ फेरते हुए, जैसे कोई जंतु अपने रोओं की पालिश कर रहा हो, वह मंद मुसकान के साथ सोचता—अगर ऐसा ही सिलसिला चलता रहे. . . .

झटपट वह फिर सड़क के किनारे हो जाता. हाथ ऊपर उठा कर आगे झुकता या कदम बढ़ाता. नहीं तो, जब यह देखता कि किसी कार की अंधगति के कारण उसके फूलों का आकर्षण व्यर्थ गया तो पीछे को हट जाता. बात दरअसल यह थी कि किसी कार को रोकना कतई आसान नहीं था.

लेकिन कुछ समय को यह उसके लिए खेल हो गया था, और वह हिसाब लगा रहा था कि कितनी बार उसे सफलता मिली.

★ ★

नतीजा यह हुआ कि उस गाड़ी की तरफ उसका ध्यान नहीं जा सका जो उसके कुछ पीछे आ कर रुक गयी थी. वह एक काली गाड़ी थी जिसके चमकदार एनेमल की बॉडी में जंगल के और सड़क के सारे रंग प्रतिबिंबित हो रहे थे.

दो सिपाही उसमें से निकले थे, नीली वर्दियां, ऊंची टोपियां और बूट पहने हुए. उनके बूट इतने चमकीले थे कि देखने वाले को यही लगता कि वे किसी बड़े डिपार्टमेंट स्टोर की खिड़की से अभी-अभी लाये हुए एकदम नये खिलौने हों.

उसने उन सिपाहियों को नहीं देखा था.

और देखा भी होता तो क्या?

इसलिए अब, एकाएक उसे अपने पीछे एक आवाज सुनायी पड़ी—ए, तुम यहां क्या कर रहे हो? . . .

सच बात तो यह कि उसे पुलिस का डर नहीं था. न उसने कभी हत्या की थी, न चोरी.

फिर भी, उसका खयाल था कि कहीं पर सिपाहियों का आना बुरा लक्षण है, खास कर जब वे इस तरह बोलें.

लिली ऑव द वैली के गुच्छों को दोनों हाथों में लिये हुए वह पीछे को घूमा.

—मैं? उसने पूछा.

—हां, तुम! दूसरे सिपाही ने पीछे आ कर जवाब दिया. हमने तुमसे पूछा कि . . .

—लेकिन, सार्जेंट . . . . मैंने तो कुछ नहीं . . .

—तुम्हारे पास परिचयपत्र है?

—लेकिन, मैं तो कुछ नहीं कर रहा था, सार्जेंट . . .

उसकी बांहें झटके से नीची हो चुकी थीं, जैसे दो टहनियों पर गाज गिर पड़ी हो. लगा कि फूलों के दोनों गुच्छों की आब खत्म हो चुकी थी.

—मैंने तुमसे अपने कागजात देने को कहा था, सिपाही ने दोहराया.

तब फूलों के दोनों गुच्छे अपने थैले में वापस रख कर उसने एक हाथ से अपनी पुरानी जाकिट का पल्ला पलटा और दूसरे हाथ से भीतर की जेब से सड़ी-गली पत्तियों के पैकेट जैसी कोई चीज निकाली. उसे खोल कर कांपती उंगलियों से उसने उसमें से अपना परिचयपत्र निकाला.

—यह लो, सार्जेंट.

सिपाही ने पत्र को उलट-पुलट कर जांचा और ओंठ भींचे हुए, उसकी लिखावट पढ़ने की कोशिश की जो ग्रीज से मैली हो गयी थी. दूसरे सिपाही ने आगे आ कर पत्र पढ़ा और अपनी जेब से काली नोटबुक निकाली.

—लेकिन मैं तो कुछ भी गलत काम नहीं कर रहा था, हुजूर.

—कहां रहते हो तुम?

—क्या फरमाया, हुजूर?

—मैंने पूछा, कहां रहते हो तुम.

—गांव में.

उसने बारबिगू की दिशा में इशारा किया, जो नजर से ओझल था, लेकिन बिल्कुल करीब था—सड़क के रास्ते मुश्किल से दो किलोमीटर पर.

—गांव में किसके मकान में?

—देखिए, सरकार सच बात यह है कि मैं उन लोगों के साथ रहता हूं, जिनका कभी-कभी काम कर दिया करता हूं.

—और इस समय तुम किसका काम कर रहे हो?

—दरअसल बात यह है कि इन दिनों लोग इस कभी खत्म न होने वाली शीतऋतु के कारण ज्यादा मौसमी मजदूरों से काम नहीं ले रहे हैं. लेकिन कुछ लोगों ने मुझे बुक कर रखा है. आप अंदाजा लगा सकते हैं कि देर हो जाने के कारण, यहां पर ढेर सारे नये आलू बीनने को होंगे.

सिपाही ने अपनी नोटबुक के छल्ले से निकल की क्लिप वाली पेंसिल निकाल कर लिखना शुरू कर दिया था और अपने साथी के हाथ में थमे पत्र पर नजर फेंकते हुए लिखे जा रहा था.

—लेकिन हुजूर, मैंने कोई गलती नहीं की है.

सिपाही निश्चित हो कर लिखे जा रहा था.

उसने पूछा—आखिर मैंने गलती क्या की है? क्या आप मेरे साथ थोड़ी सख्ती नहीं कर रहे हैं?

—तुम्हें जंगल से लिली ऑव द वैली ला कर बेचने का कोई हक नहीं है, एक सिपाही ने झुंझला कर जवाब दिया. तुम्हें यह बखूबी मालूम है.

—क्या मतलब, मुझे कोई हक नहीं है? जंगल की लिली ऑव द वैली तो सभी की वस्तु है.

जो सिपाही लिख रहा था, उसने अपनी पेंसिल रोक कर जवाब दिया—बिल्कुल ठीक, यह सभी की है, लेकिन जब तुम इसे तोड़ लेते हो और बेच देते हो, तो यह जनता को लूटने जैसा काम हुआ. क्या यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आती?

ये शब्द उसने धीमी आवाज में ही, रूखे रुख के साथ कहे.

बच्चे, और कुछ वयस्क भी, जो सड़क के उसी किनारे पर थे, नजदीक आ चुके थे. उनकी तरफ घूम कर उसने और भी ज्यादा झुंझलाहट से कहा—मैंने गलती क्या की है?

—और तुमने सड़क पर उछलकूद करके एक्सीडेंटों के खतरे मोल लिये, वह अलग! सिपाही ने आगे कहा.

सिपाही ने उसका पत्र उसे लौटा दिया.

—कसम से, मुझे मालूम नहीं था कि यह कानून के खिलाफ है. पिछले ही हफ्ते तो हर कोई....

—हां, लेकिन लिली ऑव द वैली को बेचने की इजाजत सिर्फ पहली मई के लिए ही होती है. बेकसूर होने का ढोंग करने से कोई फायदा नहीं!

सड़क के उस पार से वह सिपाही के सामने झुक झुक कर हाथों को नचाता हुआ और छाती ठोकता हुआ दिखायी पड़ रहा था. सिपाही ने नोटबुक जेब में डाल ली—मानो कह रहा हो: अच्छी बात है, देख लेंगे.

हर कोई यह दृश्य देख रहा था—वे भी, जो चट्टानों पर बैठे हुए या घास पर लंबे लेटे हुए उदासीनता का भाव दरशा रहे थे.

कारों की उन्मत्त बाढ़ का बहना जारी था.

★ ★

एकाएक लोगों ने देखा कि वह अपने फूल बांट रहा है: एक इस पुरुष को, दो उस महिला को, और उसी वक्त दो और एक नन्हे बच्चे को, जो उन्हें ले कर चंपत हो गया. कुछ बच्चे उसकी ओर लपके, कुछ भाग कर चिल्लाये—मम्मी! डैडी! देखो!

कारें एक के पीछे एक इतनी तेजी से भागी जा रही थीं कि उस पार खड़े लोग सड़क पार करके इस ओर आ न सके. चार-पांच बढ़े भी, किंतु पीछे हट गये. आखिरकार, कारों के सिलसिले के बीच थोड़ा अंतराल पड़ते ही, वे सब के सब एक साथ शिकारी कुत्तों के झुंड के समान दौड़ पड़े. एक भयभीत महिला चीख पड़ी—ज्यां-क्लोद! ज्यां-क्लोद! अरे, भगवान!

लेकिन तब तक खेल खत्म हो चुका था. लिली ऑव द वैली का थला खाली हो गया था.

अब वह आदमी गालियां बक रहा था, पैर पटक रहा था, अपनी टोपी को हवा में उछाल कर फिर जमीन से उठा रहा था, और चारों तरफ हाथ फेंक रहा था—जैसे कि वह फूट पड़ना चाहता हो.

बच्चे आश्चर्य से पीछे हट गये. शायद डरे कि कहीं वह एकाएक हिंसक न हो जाये. किंतु एक महिला उसके पास जा कर बोली—तुम्हारी यह लिली ऑव द वैली बड़ी सुंदर है. मेरी नातिन को तुमने जो प्यारा प्यारा गुच्छा दिया, उसके लिए धन्यवाद.

महिला ने उसे वह गुच्छा दिखाया, जिसे वह बड़ी कोमलता के साथ उंगलियों में थामे हुए थी, मानो कोई गहना हो. लेकिन वह उसकी बात सुन ही नहीं रहा था.

—क्या आपमें से कोई बता सकता है कि मैं क्या अपराध कर रहा था? वह चिल्लाया.

—लो, यह लो, महिला ने कहा.

महिला के बढ़े हुए हाथ में सिक्का देख कर उसने विरोध किया— इसे अपने ही पास रखो, मैडम. मैं उनके कथनानुसार आवारा हूं. मेरा परिवार नहीं, मुझे खाने का कोई हक नहीं.

—ओह! महिला बोली—ऐसे घबराओ नहीं.

—मुझे कारखाने जाने का अधिकार नहीं, वह कहता गया. मेरे लिए सिर्फ जेल है. समझीं आप?

उसके वहशी रुख की परवाह न करके महिला ने उसकी जाकिट की जेब में सिक्का सरका दिया और लिली के गुच्छे को अपनी नाक पर टकराती हुई चल दी.

★ ★

तब वह बुदबुदाता हुआ, लड़खड़ाते कदमों से किनारे-किनारे चल पड़ा. आखिर में घास पर जा कर पड़ गया, और दोनों हाथों में मुंह छिपाय सिकुड़ा पड़ा रहा.

वह रो नहीं रहा था.

वह सिकुड़ता गया, और भी सिकुड़ता गया. कभी-कभी एक कराहट उसके गले से निकलती—उस घायल पशु की तरह जिसका सारा खून बह चुका हो, या किसी आवारा की तरह, जो पी कर बेशर्मी के साथ खुमारी उतार रहा हो.

लेकिन अब कोई उसकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा था.

खुले मैदान ने एक विशाल देहाती मेले का रूप धारण कर लिया था. सुबह की धूप शिखरों पर धारण किये हुए पेड़ तुरही और बीन बजा रहे थे. □□□

(अनुवाद: रामगोपाल इगलासिया)

अफ्रीकी लोककथा

एक दिन एक ग्रामीण अपने खेत में लगे पाम उखाड़ रहा था, तभी एक पाम बोला—ओह! तो तुम अब यहां आ गये! तुमने मुझे बोने में तो कोई कष्ट नहीं उठाया. और अब आराम से मुझे उखाड़ने चले आये! यहां से जाओ और मुझे अकेला छोड़ दो.

वह किसान अपने चारों ओर देखने लगा. किसान का कुत्ता बोला—वह तो पाम था. पाम ने कहा था कि मुझे अकेला छोड़ दो.

किसान बहुत नाराज और आश्चर्य-चकित रह गया, क्योंकि इसके पूर्व वह कुत्ता कभी नहीं बोला था. उसने एक पामवृक्ष की शाखा काटी और कुत्ते की खूब पिटाई की. तभी पामवृक्ष बोला—वह शाखा नीचे रख दो.

उस किसान की मानसिक स्थिति बहुत बिगड़ गयी. क्रोध में उसने उस शाखा को जोर से पटक दिया. अब पाम की शाखा फिर बोल उठी—मुझे फेंको मत, धीरे से रखो.

उसने उस शाखा को धीरे से एक पत्थर पर रख दिया,तो पत्थर बोला—ए! वह टहनी मेरे ऊपर से उठाओ. वह भयभीत किसान, चकित-सा वहां से अपने गांव की तरफ भागने लगा. रास्ते में उसे एक मछुआरा दिखायी दिया जो अपना जाल सिर पर रखे जा रहा था.

—क्या बात है? तुम इस तरह भागे क्यों जा रहे हो? उसने पूछा. उसने जवाब दिया— मेरा पाम मुझसे बोला, 'मुझे अकेला छोड़ दो!' फिर कुत्ता बोला, 'जो पाम कहता है, उसे ध्यान से सुनो.' जब मैं कुत्ते को मारने गया, तो पाम-वृक्ष बोला, 'इस शाखा को नीचे रख दो.' फिर पाम की शाखा बोली, 'मुझे धीरे से नीचे रखो.' फिर पत्थर बोला, 'उस शाखा को मेरे ऊपर से हटाओ!'

—क्या यह सब इतना डरा देने वाला है?



मछुआरे का जाल बोला— अच्छा! तो क्या उसने शाखा को पत्थर से हटा दिया?

ओह! मछुआरा घबरा कर जोर से चिल्लाया. उसने अपना जाल वहीं जमीन पर फेंक दिया और किसान के साथ भागने लगा. रास्ते में उन्हें एक बुनकर मिला, जिसके सिर पर कपड़े का एक गट्ठर था.

—तुम दोनों कहां भागे जा रहे हो? वह बोला.

—मेरा पाम बोला, 'मुझे अकेला छोड़ दो.' किसान ने बताया. कुत्ता बोला, 'जो पाम कहता है, उसे ध्यान से सुनो!' पामवृक्ष बोला, 'यह शाखा नीचे रख दो!' शाखा बोली, 'मुझ धीरे से रखो.' फिर पत्थर बोला, 'यह शाखा मेरे ऊपर से हटाओ!'

—और फिर, मछुआरे ने उसकी बात को जारी रखते हुए कहा, मेरे जाल ने पूछा, 'क्या उसने वह शाखा पत्थर से उठा ली थी?'

—लेकिन इसमें इतना उत्तेजित होने की भला क्या बात है? बुनकर बोला.

—ओह! यदि तुम्हारे साथ भी ऐसा हो तो मुझे पूरा विश्वास है, कि तुम भी भागने लगोगे! उसका गट्ठर बोला.

—अरे! कह कर वह बुनकर अपना गट्ठर वहीं फेंक उन दोनों के साथ भागने लगा.

भागते-भागते वे एक नदी के किनारे आये, जहां एक व्यक्ति नहा रहा था—क्या तुम किसी का पीछा कर रहे हो? उस व्यक्ति ने पूछा.

किसान, मछुआरे और बुनकर ने सारी बातें उसे बता दीं.

—तो क्या इसी बात के कारण तुम इस तरह बेतहाशा भागे जा रहे हो?

—अच्छा! तो क्या यदि तुम उनकी स्थिति में होते तो नहीं भागते? नदी ने पूछा.

वह व्यक्ति पानी से एक छलांग में बाहर कूद गया और उन सबके साथ भागने लगा.

वे सब भागते-भागते गांव के मुखिया के यहां पहुंचे. मुखिया का नौकर उसके लिए एक कुर्सी निकाल कर बाहर लाया. और मुखिया उस पर बैठ कर उन सबकी शिकायतें सुनने लगा.

मुखिया ध्यानपूर्वक प्रत्येक की शिकायत सुनता रहा फिर अविश्वास से डांट कर बोला—इसके पूर्व कि मैं तुम्हें इस प्रकार की झूठी गप मारने के लिए कोई दंड दूं, तुम सब अपने-अपने घर चले जाओ.

वे सब व्यक्ति क्षुब्ध हो कर अपने-अपने घर चले गये. मुखिया सिर हिला कर स्वयं से ही बोलने लगा—क्या विचित्र बात है!

—विचित्र है न? उसकी कुर्सी ने पूछा. अब हक्का-बक्का हो कर भागने की बारी मुखिया की थी. □□□

(प्रस्तुतीकरण : इंदु रायजादा)

किसके सेवक

अफ्रीकी बोधकथा

कमेरा का हब्शी राजा जितना ऊपर से काला था, उससे अधिक शायद अंदर से भी था! क्योंकि दर्प के कतरे हर क्षण उसके इर्द-गिर्द बिखरते ही रहा करते थे. वह हद दर्जे का अभिमानी था. अफ्रीकी रियासत और वह भी छोटी-सी? किंतु वह ऐश्वर्यमद किसी चक्रवर्ती सम्राट की तरह प्रकट करता था. किसीसे भी सीधे मुंह तो शायद वह बात करना अपनी तौहीन ही मानता था.

प्रजा में उसके घमंड को ले कर अनेक प्रकार की दंतकथाएं मशहूर हो चली थीं. जनता उससे बहुत डरती थी, और उसकी हर छोटी-बड़ी इच्छा पूरी करने के लिए तैयार रहती थी? कौन उसके मुंह लगे वाली वृत्ति के कारण वातावरण उसके पक्ष में था, जिसे वह अपना रौब-दाब मानता था.

एक दिन भरे-पूरे दरबार में अभिमान की ठसक से ही वह बोला––अरे, सब लोग मेरे सेवक हैं! यह सारी दुनिया सिर्फ मेरी ही सेवा के लिए है!

दरबारी चुप थे. तभी एक वृद्ध हब्शी ने उसकी इस धारणा का विरोध किया और बोला––यह ठीक है कि आप हमारे राजा हैं, इसलिए हम आपके सेवक हैं. किंतु सिर्फ आप ही सेवा के लिए सेवक पाले हुए हैं, ऐसा भ्रम व्यर्थ है. अच्छा हो कि यह आपका मुगालता नष्ट हो जाये. असल में प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे का सेवक है.

वृद्ध हब्शी की इस बात को सुनते ही राजा के तन-बदन में आग लग गयी. वह चीखा––अरे वृद्ध हब्शी बोकबार! तुम पागल तो नहीं हो गये हो! क्या तुम यह कहना चाहते हो कि मैं भी तुम्हारा सेवक हूं? यदि तुम मुझे एक क्षण के लिए भी अपनी सेवा करने को विवश कर दो तो मैं तुम्हें सौ गायें और दो सौ स्वर्ण मुद्राएं पुरस्कार में दूंगा! ध्यान रखो सिर्फ आज शाम तक ही तुम्हें यह करके दिखलाना होगा! बोकबार, ध्यान रखना, तुम यदि ऐसा नहीं कर पाये तो फिर तुम्हें मृत्यु-दंड दिया जायेगा! तुम्हारी लाश के टुकड़े-टुकड़े करके मैं चील कौवों को नाश्ते के लिए फिंकवा दूंगा!

हब्शी बोकबार बुद्धिमान और संयत विचारों वाला प्राणी था. उसने कमेरा-नरेश की यह चुनौती मंजूर कर ली. अत्यंत विनम्रतापूर्वक वह बोला––ठीक है, नरेश! आप इसे बेकार ही अपने लिए चुनौती मान रहे हैं. वस्तुतः हम सब आपस में एक-दूसरे के सेवक हैं. किसी-न-किसी रूप में एक-दूसरे की छोटी-बड़ी सेवा भी हम वक्त आने पर करते ही हैं. फिर भी आप चुनौती ही मान रहे हैं तो यह भी सही!

––ठीक है! तो तुम चील-कौवों की दावत बनने के लिए तैयार रहो! राजा ने दर्पपूर्वक कहा और चल दिया.

वृद्ध बोकबार भी छड़ी उठा कर चल दिया. ज्यों ही वह दरवाजे पर आया तो कमेरा-नरेश भी उसके पीछे-पीछे था! तभी एक भिखारी ने बोकबार के आगे भिक्षा के लिए हाथ फैलाया.

तभी बोकबार ने राजा से कहा––महाराज! मुझे आज्ञा दीजिए ताकि मैं इस भिखारी को कुछ भिक्षा दे कर अपना कर्तव्य पूरा कर सकूं.

––हां-हां, दो, तभी बोकबार के हाथ की छड़ी छूट कर गिर पड़ी. उसने जेब से कुछ सिक्के निकाल कर भिखारी को दिये. पर उसे धक्का-सा लगा और वह नरेश को ठेलता गिरने लगा. तभी नरेश ने कहा––अरे बोकबार, यह क्या हो गया! और उसने कहा––ओह! तुम्हारी छड़ी गिर गयी है! कहते-कहते राजा ने बिना कुछ सोचे-समझे छड़ी उठायी और बोकबार के हाथों में थमा कर उसे खड़ा कर दिया.

बोकबार ठहाका लगा कर हंसा. पर राजा को कुछ भी समझ में नहीं आया. छड़ी थमा कर वह चलने लगा तो उस वृद्ध ने उसे रोक कर कहा–– देख लिया न कमेरा-नरेश, आपने! सचमुच ही सज्जन महानुभाव सदा ही एक-दूसरे की सहायता करते हैं! अब देखिए न!



मैंने इस भिखारी की सहायता करनी चाही और आपने मेरी!

तभी नरेश को शर्त की याद हो आयी. वह बोकबार से बोला––तो बोकबार महाशय, कमाल कर ही दिया आपने! मैं सचमुच ही शर्त हार गया! अनजाने में ही छड़ी उठा कर आपकी सेवा कर दी! अब आप सौ गायें और दो सौ स्वर्ण मुद्राएं ले लीजिए.

बोकबार बोला––राजन! गायें और स्वर्ण -मुद्राएं देश की संपत्ति हैं. वे मेरे पास रहें या आपके पास, क्या फर्क पड़ता है! मेरा उद्देश्य भी आपकी बात की अवज्ञा करना कभी नहीं रहा. सिर्फ मैं यह बतला देना चाहता था कि आप जो मानते हैं वही सत्य नहीं है, सत्य यह भी है!

राजा पानी-पानी हो गया. उसने बोकबार के समक्ष आगे से बेमतलब घमंड करने की आदत का परित्याग करने की प्रतिज्ञा की और उसे सदैव निभाने का प्रयत्न भी किया. □□□

(प्रस्तुतीकरण : दुर्गाशंकर त्रिवेदी)

लकड़ियां • सिप्रियन एक्वेंसी

शाम ढल चुकी थी. कीचड़ भरी छिछली नदी के किनारे बनी, अपनी झोपड़ी के बाहर बैठा जैटिफ अपनी मां से बातें कर रहा था.

—अरे ... जब उन्हें आना है, तो अब आ जाना चाहिए!

उसकी मां गहरी सांस ले कर बोली—तेरा बचपना नहीं गया, अब तक ....

जैटिफ की उमर चालीस के ऊपर है और उसकी मां की सत्तर से कुछ अधिक.

इससे पहले कि जैटिफ कुछ कहता, एक लंबी मोटरगाड़ी कीचड़ भरे रास्ते पर हिचकोले खाती आयी, और सामने आ कर रुक गयी.

दो लोग गाड़ी से बाहर निकले.

जैटिफ ने आगे बढ़ कर उनका अभिवादन किया.

—गुड ईवनिंग, मैकलारेन सा'ब.

—ईवनिंग, जैटिफ ... तुम मेरी पत्नी से नहीं मिले .... नहीं न? ....

जैटिफ हैरान था. इन लहीम-शहीम आदमियों की बीवियां इतनी ठिगनी क्यों होती हैं!

—नहीं ... गुड ईवनिंग, मैडम ...

—गुड ईवनिंग. वह मुसकरायी.

—और अब ... गोरा बोला ... हमें क्या ... तैयार है सब?

—हां, सा'ब .... लेकिन रास्ता ... बहुत कीचड़ है .... और बदबू भी आती है.

—कोई बात नहीं, गोरा बोला ... फिर अपनी पत्नी से बोला —डार्लिंग, तुम्हें कोई दिक्कत तो नहीं होगी? उसने 'ना' में सर हिलाया. जैटिफ ने सोचा... इसकी गरदन कितनी सफेद है!

जैटिफ रास्ता दिखाने के लिए आगे बढ़ा ....

नदी-किनारे पहुंच कर जैटिफ ने रुक कर पीछे देखा. दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे का हाथ पकड़े, बातें करते, हंसते हुए आ रहे थे.

गोरी औरत के सफेद जूतों पर कीचड़ के धब्बे थे. जैटिफ एक लट्ठे पर बैठ गया. यहां से ले कर लगभग सौ गज की दूरी तक पानी में हलके-हलके हिलते अपने लट्ठों को उसने देखा.

अचानक उसे दूर की आवाजों से कुछ आभास हुआ. गिनती रोक कर उसने उस तरफ देखा. लगता है, लट्ठों के साथ कुछ गड़बड़ है.

लंबे, सफेद चोगे पहने हुए लोगों की एक भीड़ उसे दिखायी दी. उसमें आदमी, औरतें और बच्चे, सभी थे. एक आदमी नदी की मिट्टी में एक लकड़ी ठोकने की कोशिश कर रहा था. किनारे पर खड़े लोग उसे देख रहे थे, जिनमें से कुछ के हाथों में क्रॉस लगी लाठियां थीं और कुछ के हाथों में लाल और सुनहरे किनारों वाली काली किताबें.

जैटिफ की आंखें गुस्से से लाल हो उठीं. अचानक उसे एहसास हुआ कि ये लोग किसी धार्मिक गुट के हैं और यहां मौज-मस्ती के लिए आये हैं.

लट्ठों पर आती-जाती औरतों के चोगे हवा में लहरा रहे थे.

आदमी भी हुड़दंग मचा रहे थे. एक ने तो जैटिफ का कालर पकड़ कर धक्का भी दे दिया.

—तुम्हें मालूम है, कौन हूं मैं? वह बोला. अभी बताता हूं ... मालूम है तुम्हें, कौन हूं मैं? वह आदमी बकता रहा, यहां तक कि जैटिफ झुंझला गया.

मैकलारेन और उसकी पत्नी ने वहां आ कर पूछा कि आखिर बात क्या है.

वे लोग जैटिफ की तरफ उंगलियां उठा कर इतना हो-हल्ला कर रहे थे कि इनकी बात सुनी ही नहीं.

—तुम्हें मालूम है ... कौन हूं मैं? ... वह बोला.

जैटिफ संयत हो कर बोला—भाड़ में जाओ!

जैटिफ ने उस आदमी को गौर से देखा और पहचाना—अरे, यह तो किप्पा था! ग्रेव-स्ट्रीट के मकान में रहने वाला उसका किरायेदार.

—किप्पा, जैटिफ बोला, तुम इन लोगों के बीच...

किप्पा ने पिछले दस महीनों से मकान का किराया नहीं अदा किया था.

—अभी बताता हूं तुझे! ... वह गुर्राया. वहां खड़े तमाम लोगों ने किप्पा का बढ़ा हुआ हाथ पकड़ लिया. जैटिफ ने देखा कि इस गुट में तमाम जवान और खूबसूरत औरतें हैं. वह बाद में पता करेगा कि सदस्य कैसे बनें ...

जैटिफ की सोच का बहाव मैकलारेन की आवाज से टूट गया—मेरा खयाल है, हमें जो देखना था, वो तो देख ही चुके.

—हां सा'ब ... वह नजदीक आया. ये आसपास जितने भी लट्ठे हैं, सब मेरे हैं ... आइए ...

मैकलारेन ने आगे कहा—मैं यहां से तेईस तारीख को वापस लौटूंगा. मेरे आदमियों को तुम लट्ठे सौंप दोगे और तुम्हें मैं तीन हजार पाउंड का चेक दूंगा...

इतनी बड़ी रकम सुन कर जैटिफ का सर घूम गया ... बाप रे! तीन हजार पाउंड ... उसे अपनी मेहनत का अच्छा फल मिल जायेगा. अपने बेटे बायो को डाक्टरी पढ़ाने ग्लासगो भेज सकेगा ....

—ठीक है सर ... बिल्कुल ठीक ...

★ ★

दूर जाती मोटरगाड़ी की लाल बत्तियां छोटी हो कर गुम हो गयीं. जैटिफ ने एक लंबी सांस ली.

नदी के उस पार से तेज हवा का झोंका आया. उसने आसपास देखा. पूरब का आकाश काले बादलों से

सिप्रियन एक्वेंसी नाइजीरिया ही नहीं, संपूर्ण अफ्रीका के श्रेष्ठतम लेखकों में से एक हैं. अफ्रीकी जन सामान्य की आकांक्षाओं और शहरियत की ओर बढ़ती हुई उनकी जिज्ञासाओं को उन्होंने बड़ी खूबी से अपनी रचनाओं में चित्रित किया है.

● ● ●

घिरता जा रहा था. छह बज रहे होंगे. जैटिफ झोंपड़ी के अंदर गया. उसकी मां सर्दी से ठिठुर रही थी. दूर गांव की आवाजें छन कर यहां तक आ रही थीं.

बाहर तूफान बरपा था. छप्पर और छतें हवा में इधर-उधर उड़ रही थीं. धमाके के साथ बारिश शुरू हो गयी.

जैटिफ को अपने लट्ठों की फिक्र लगी थी. वह बारिश थम जाने के लिए प्रार्थना करने लगा. ग्यारह बजे तक अंधड़ चलता रहा. आधी रात तक पानी झोंपड़ी के फर्श पर बहने लगा. और छत टपकने लगी.

सुबह छह बजे जा कर कहीं ऊपर वाले की बाल्टी खाली हुई. तूफान थम गया.

जैटिफ बाहर आया. उसका दिल तेजी से धड़क रहा था. तराई के किनारे आ कर उसने दहाड़ मारी —अरे....मार डाला!...

दूर-दूर, मीलों तक एक भी लट्ठा नहीं था.

वह वापस दौड़ा. मां दरवाजे में ही खड़ी थी.

—मेरे सब लट्ठे कोई ले गया, मां... मैं तो लुट गया! ....वह रोने लगा ... अब क्या करूं?

—मूरख न बन! उसकी मां ने कहा, तू समझता है ये तूफान की वजह से हुआ ... नहीं!

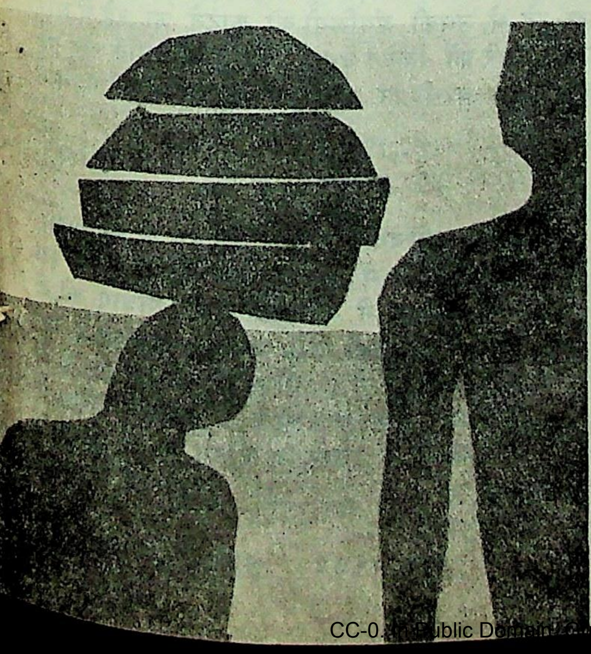
—लेकिन क्या ....?

—यह सोचना छोड़ कि मैं पुराने जमाने की हूं. मेरी बात सुन. तू और बायो अभी मकोको जाओ. सुना है कि लट्ठों के लुटेरे वहीं हिस्सा-बांट करते हैं.

जैटिफ की समझ में कुछ नहीं आया. बोला—लेकिन बायो तो लागोस में है.

—तो अकेले ही जा ...उसकी मां ने कहा.

तीन हजार पाउंड चले जाने के विचार ने ही उसे



मकोको की तरफ ढकेल दिया.

खाड़ी के पास आ कर उसने अपनी नाव 'गाने-बजाने' के शोर की तरफ मोड़ दी.

लोग उसकी तरफ दौड़े, उसे कंधों पर उठा लिया, जबरदस्ती उसके मुंह में शराब उंडेलने लगे. मैं नहीं पीता, मैं नहीं पीता, वह कहता रहा और शराब से उसके होंठ जलते रहे. नशे में घुत एक आदमी उसे लाल-लाल आंखों से घूरने लगा.

—तुम जानते नहीं, मैं कौन हूं?

वह आदमी खाने वाली निगाहों से जैटिफ की तरफ बढ़ा—बताता हूं.

—किप्पा! जैटिफ चिल्लाया. लेकिन किप्पा ने आगे बढ़ कर उसके जबड़े पर घूंसा जमा दिया, फिर बाकी लोगों ने भी जुट कर जैटिफ को मारते-मारते अधमरा कर दिया.

★ ★

उसकी आंख खुली तो उसके सामने सफेद दीवारें और थर्मामीटर लहरा गया.

दरवाजा खुलते ही नर्स अंदर आयी. उसने थर्मामीटर निकाल कर उसके मुंह में दे दिया. फिर दरवाजा खुला, इस बार एक लड़का कीमती सूट पहने हुए अंदर आया. यह बायो था. मुंह में थर्मामीटर होने की वजह से जैटिफ कुछ बोल नहीं सका.

—पैसे मुझे मिल गये हैं, बायो ने बताया. तेईस सौ पाउंड. मिस्टर और मिसेज मकलारेन पांच दिन पहले इंग्लैंड चले गये. तुम्हें यहां दस दिन हो चुके हैं. एक बार तो लगा कि तुम बचोगे नहीं. और क्या बताऊं? मैं घर गया. मां ने बताया कि तुम कहां गये थे. मैं चालीस मजदूर ले कर तुम्हारे पीछे गया, पर हमें देर हो गयी ...तुम्हें बचा नहीं सके ... लेकिन लट्ठे बच गये हैं. पता है, उन लोगों ने लट्ठे यहां से पंद्रह मील दूर छिपाये थे!

नर्स ने आ कर जैटिफ के मुंह से थर्मामीटर निकाल कर रोशनी में देखा.

—मेरी समझ में एक ही बात नहीं आ रही है, जैटिफ बोला. आखिर इस तूफान में उन लोगों ने लट्ठे चुराये कैसे?

—पता नहीं, पापा! बायो बोला. ये लोग बहुत चालाक हैं.

—हां, जैटिफ कोहनियों के बल उठता हुआ बोला. खैर, अब तुम ग्लासगो जा सकोगे.

—लेकिन वो जहाज तो छूट गया.

—तुम हवाई जहाज से जाना.

—लेकिन, पापा ... पैसे कहां? ...

—छिः! ये लट्ठों से मिले पैसे ...! तुम्हें मालूम नहीं ये सब मैंने तुम्हारे लिए ही तो किया था ...

□□□

(अनुवाद : हृदय लानी)

ब्रास • कीकी उवेचिया

अफ्रीका में स्थित मेरे गांव से काफी दूर, उत्तर की ओर, एक ऐसा बंजर इलाका फैला हुआ है, जिसमें हाउसामन नामक एक जंगली जाति रहती है— इस जाति के लोग लंबे-तगड़े और जंगली हैं. इस इलाके में सवाना नामक लंबी-लंबी, तेज-धार घासों के अलावा कुछ भी पैदा नहीं होता.

बारिश के मौसम के बाद सवाना घास सूख जाती है. सियार और सिंह बेचैनी से उसमें घूमते रहते हैं कि कोई राह-भूला हिरन उनके हाथ लग जाये. हवा भी हलकी और खुश्क हो उठती है. तब वह नाइजर नदी के पार के इलाकों पर बड़ी भयावह गति से सिर पटकती लगती है.

१९५४ के बरस, सवाना से उठी वह हवा बड़ी अजीब थी. वह प्यासी थी और क्रूर भी. दिन के समय वह नाइजर नदी के पानियों को सोख लेती थी और रात के वक्त कच्चे घरों के आसपास धुंध के रूप में मंडराती रहती थी. वह पेड़ों के पीले पत्तों को झकझोरती थी और जमीन में छिपी जड़ों को उसने सुखा डाला था. जख्मी टांगों पर वह जहरीली रेत उंडेलती थी, जिससे टांगें सूज जाती थीं और जख्मों में से पीब बहने लगता था. उस हवा ने धरती में दरारें डाल दी थीं, जिनमें से सफेद चींटियों के झुंड के झुंड निकल कर मकानों के इर्द-गिर्द कवायद करने लगे थे.

जब हम स्कूल की तैयारी कर रहे होते, तो हमारे ओठों पर हंसी न होती, क्योंकि हमारे ओठ सूख चुके थे और जमीन की तरह ही पपड़ा चुके थे. धूल उड़ कर हमारी आंखों में पड़ती थी, हम बात करने के लिए मुंह खोलते तो मुंह में पड़ जाती और हमारे खाने को भी किरकिरा बना जाती.

यह हवा अपने साथ सिर्फ धूल, रेत और खुश्की ही ले कर नहीं आयी, मौत भी ले कर आयी.

ऊंची-ऊंची सवाना घासों के बीच मौत की घंटियों की आवाज गूंजती रहती. अनेक बच्चे चेचक के शिकार हुए थे. रोते-रोते मांएं इतना थक गयी थीं कि अब किसी बच्चे के शव को श्मशान की ओर ले जाते हुए उनके गले से किसी तरह की कोई आवाज नहीं निकलती थी.

१९५४ के उस मौसम में फैली महामारी ने नाइजर नदी की ओर बढ़ते हुए, अनेक जानों की कुरबानी ले ली.

इस महामारी के पहले-पहल हुए शिकार लोगों में डोरोथी भी थी, जो मेरी सहपाठिनी थी और तब उसकी उम्र सिर्फ दस बरस थी.

उसके मां-बाप उसे डाक्टर के पास नहीं ले गये— उन्होंने तो उसे महज एक छोटे-से कमरे में बंद कर दिया और निरंतर कुनीन की खुराकें देते रहे. उन्होंने उसके शरीर पर 'ऊली' का लेप कर दिया था, जो एक तरह का सफेद चॉक होता है, और जो रोग-मिश्रित रक्त को शरीर में फैलने से रोकता है.

हर रोज, स्कूल से छूटने के बाद, डोरोथी के मां-बाप मुझे उसके पास जाने को प्रोत्साहित करते थे. और जैसा कि उनकी आदत थी, वे हमें एक ही कटोरे में खाने को चावल भी देते थे.

और जिस शाम डोरोथी की मृत्यु हुई, मैं उसके पास ही थी. डोरोथी का चेहरा छोटा-सा था. मुंह काफी चौड़ा, जिसमें उसकी उम्र के बावजूद पानी भरा रहता था. उसकी गहरी धंसी हुई, पीली आंखें थीं, जो मुसकराहट के समय भी उदास बनी रहती थीं. उस समय मैं डोरोथी को अपने स्कूल के खेलों के बारे में बता रही थी, जब अचानक मेरे बाल-मन को एहसास हुआ कि डोरोथी वहां नहीं थी. उसकी आंखें अब भी मेरी ओर टिकी थीं, लेकिन वे भारी चमकीली हो उठी थीं. मैंने उसका नाम ले कर उसे कई बार पुकारा. . . लेकिन वह आवाजों की दुनिया से दूर जा चुकी थी.

फिर धीरे-धीरे कमरे में लोगों की भीड़ जुड़ने लगी. एकाएक सन्नाटा छा गया, और तब कोई औरत तेज, दिल दहला देने वाली चीख के साथ क्रंदन कर उठी— मेरी बांह पर किसी का भारी हाथ पड़ा और मुझे कमरे से बाहर खींच ले गया. मैंने देखा, डोरोथी की मां धरती पर लोट रही थी और मुट्ठियां भर-भर कर धूल अपने बालों में डाल रही थी.

—मेरी कोख की जन्मी! वह विलाप कर रही थी. . . . आखिर वे तुम्हें लेने आ ही गये. . . . मेरे रहते ही. . . हाय मेरी कोख की जायी! . . अब सर्दी की ठंडी रातों में मुझे गर्मी कौन पहुंचायेगा. . .

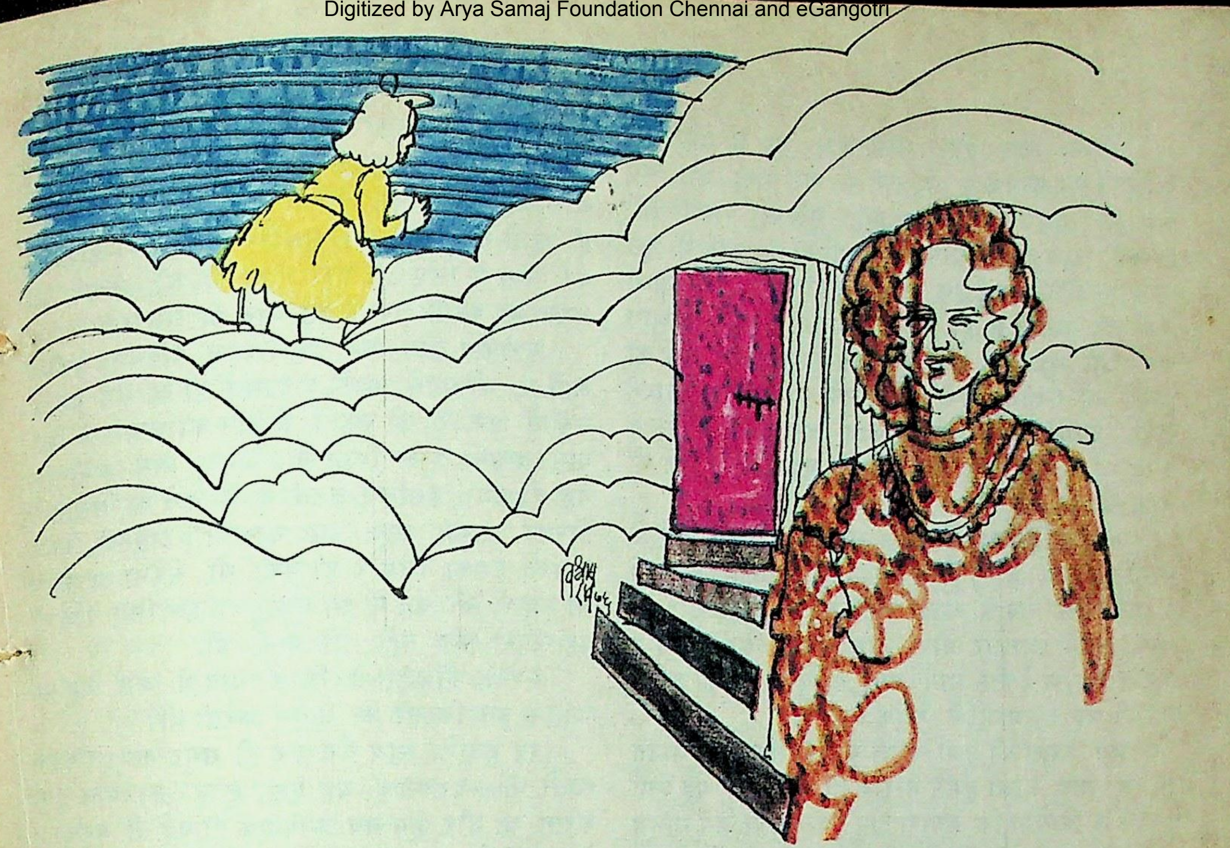
एक बूढ़ी औरत एक बांस की मदद से डोरोथी की आत्मा को मृतकों की दुनिया से बाहर निकालने की कोशिश कर रही थी, पर कोई फायदा नहीं हुआ. डोरोथी उस दुनिया के भोजन का स्वाद ले चुकी थी.

* *

एक आदमी मृत बच्ची को कोसने लगा. उसने कहा कि वह 'ओगबांजे' थी, प्रेतात्माओं द्वारा भेजी गयी आत्माओं में से एक, जो बचपन में ही मर कर अपनी मांओं को पीड़ा पहुंचाती हैं. वे उसे कुचलने जा रहे थे, उसकी अंगुलियों को काटने जा रहे थे और उसके चेहरे को विकृत बनाने जा रहे थे ताकि जब वह दुबारा इस धरती पर आये तो हर कोई उसे पहचान

• • •

कीकी उवेचिया का जन्म १९४६ में ओनित्शा, नाइजीरिया में हुआ. नाइजीरिया की इस नयी लेखिका ने यूरोप की भरपूर यात्राएं की हैं और 'ब्रास' इनकी प्रथम प्रकाशित कहानी है, जो मार्च, १९६९ में प्रकाशित हुई थी. इस कहानी में लेखिका ने अपने जन्मस्थान में प्रचलित विश्वासों और लोगों के सामान्य जीवन का जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है.



ले कि वह पहले भी इस धरती पर आ चुकी है.

अगले दिन हमने अपने स्कूल से देखा कि पुराने श्मशान की ओर एक जुलूस चला जा रहा है. डोरोथी की मां अपनी टांगों को घिसटती हुई चली जा रही थी. उसके बालों में रेत और राख भरी हुई थी. उसका चेहरा आंसुओं और पसीने से सराबोर था. एक आदमी चटाई और सफेद कपड़े में लिपटी एक गठरी उठाये हुए था.

जुलूस धीरे-धीरे स्कूल को पार कर गया. हम बच्चों ने अपनी कक्षाएं छोड़ दीं और उत्तेजित हो कर शव-यात्रा के पीछे भागने लगे.

* *

डोरोथी की मौत के कुछ दिन बाद, मेरी अध्यापिका एक दिन मुझे मेरे घर छोड़ गयी. मेरी आंखें धंसी हुई और पीली थीं. मेरा शरीर ज्वर से तप रहा था. जब तक मैं अपने घर पहुंची, तब तक मैं करीब-करीब मूर्च्छित हो चुकी थी. निस्संदेह मुझे भी चेचक ने घेर लिया था.

मैं नहीं जानती कि अगले कुछ दिनों मेरे साथ क्या हुआ. ज्वर बहुत तेज रहा होगा, लेकिन मुझे इतना जरूर मालूम है कि उन दिनों मैं अपने माता-पिता, अपने घर, घर के पास के अमरूद के वृक्षों तथा अपने कुत्ते फीदो से बहुत दूर थी.

भारी चादरों में लिपटी जहां मैं चटाई पर लेटी थी, वहां से मैं समुद्र की लहरों की आवाज सुन सकती थी. मच्छर मेरे कानों के पास घूं-घूं कर रहे थे. लेकिन मेरी बांहें इतनी कमजोर हो चुकी थीं कि मैं उन्हें हटा भी नहीं सकती थी. कभी-कभी लोग मेरे कानों में कुछ फुसफुसाते थे, लेकिन उनकी भाषा मेरी समझ में नहीं आती थी. तब एक औरत ढिबरी लिये हुए मेरे बंद कमरे में आती थी और गर्म-गर्म, मिर्चों वाली यखनी मेरे गले में उंडेल देती थी. रात में—या जब मुझे लगता था कि रात है—वह औरत मुझे समुद्र-तट पर ले जाती थी, जहां मैं शौचादि से निवृत होती थी. तब वह एक चौड़े पत्ते से मुझे साफ करती थी और समुद्र-जल से मुझे स्नान कराती थी. मुझे कोई दवा नहीं दी जाती थी—सिर्फ यखनी दी जाती थी, काफी मात्रा में. मेरे शरीर के जोड़ों पर ऊली का लेप कर दिया गया था, और बीच-बीच में कोई व्यक्ति आ कर मेरे शरीर पर मीठी-सी महक वाले तेल से मालिश भी कर जाता था.

मैं नहीं जानती, मैं उस अंधेरे कमरे में, मौत के इंतजार में, कितने दिन पड़ी रही. . . और न ही यह कि वह भयंकर ज्वर कितने दिनों तक मुझे घेरे रहा. लेकिन एक दिन वह दयालु स्त्री, जिसने जाने कितने दिनों तक मेरी सुश्रूषा की थी, मेरे पास आयी. उसने मेरे जर्जर शरीर को उठाया और समुद्र-तट पर, चमकीली धूप में, लिटा दिया.

मेरे चारों ओर की रेत उतनी ही चमकीली थी, जितना मेरे ऊपर चमकता सूरज.

* *

मैं ब्रास में रहती थी—बयाफा की खाड़ी के एक द्वीप में, जहां मेरी मां और उनके पूर्वज पैदा हुए थे. अपनी बीमारी के दौरान मैंने जिन औरतों को अस्पष्ट तौर पर देखा और सुना था, वे मेरी दादियां-नानियां थीं, या मेरी मां की चचेरी-ममेरी-मौसेरी बहनें, जिन्होंने मुझे ठीक करने या अपने पूर्वजों के साथ गाड़ देने का बीड़ा उठाया था.

लेकिन मेरी बीमारी खत्म हो चुकी थी. चमत्कार ही हुआ था, क्योंकि तब चेचक के हमले के बाद भी जीवित रह पाना असंभव ही माना जाता था.

अगले दिन मेरी मौसी मुझे घर के पीछे बने झाड़ियों भरे बगीचे में ले गयी—चल पाना मेरे लिए अब भी दूभर था. वहां वह मुर्गियां पालती थी. पिछली रात बोआ नामक सर्प मुर्गियों के दरबे में घुस गया था और उसने एक चूजे को दबोच लिया था. बोआ अभी तक बगीचे में ही था और भोजन के बाद विश्राम कर रहा था. हम दूर खड़े इस विशालकाय सर्प को देखते रहे. एकाएक मेरी मौसी सर्प की आरती उतारने लगी, क्योंकि सर्प ने मेरी जान बचायी थी. 'जीवन के बदले जीवन.' मेरी जान लेने के बदले उसने चूजे की जान ले ली थी.

सर्पों में हमारा विश्वास अटूट था. हमारे टापू के समुद्र-तट और घासों में सर्प बहुत बड़ी संख्या में रहते थे. इनमें से सब से ज्यादा बोआ सर्प ही वहां रहते थे और अपने आकार और इनसानों को कभी दंश न देने के कारण देवता माने जाते थे. बोआ सर्प ही हमारे मृतकों की आत्माओं के रक्षक भी थे.

हम बोआ की पूजा करते थे, क्योंकि हम जानते थे कि यदि बोआ हमसे नाराज हो गया, तो वह ऐसा तूफान ले आयेगा कि हमारा टापू डूब जायेगा. हमें मालूम था कि धरती के चारों कोनों को महान बोआ ने ही अपनी लपेट में ले रखा था और जब भी वह बेचैन होता था, तो समुद्र में भयानक तूफान आ जाते थे.

जब वे हमारे घर में आते थे, तो हम उनका स्वागत करते थे. और जब दिन की तेज धूप में वे बाहर से गुजरते थे तो हम उनका गुणगान करते थे. हम उनके लिए भोजन भी रख छोड़ते थे—इस तरह हम अपने पुरखों को भी भोजन करा देते थे.

लेकिन हमारी आस्थाएं निर्मूल नहीं थीं. हर रोज हमें सर्पों की शक्ति के नये-नये प्रमाण मिलते रहते थे.

* *

वह एक सर्द रात थी. सारा दिन समंदर तूफान से घिरा रहा था और अनेक मछुआरे तबाह हो गये थे, क्योंकि उनके जाल हाथों से जाते रहे थे.

मोदू एक बूढ़ा मछुआरा था. उसके दो जवान बेटे उसे छोड़ कर चले गये थे. इस रात तूफानी लहरें जब उसका जाल खींच ले गयीं, तो वह टूट गया. लोग सोचने लगे, वह पागल हो गया है.

मोदू टापू में घूमने लगा—अपने लड़कों, अपनी गरीबी और अपने जाल को ले कर रोता हुआ.

लेकिन हमारे टापू में कुछ भी हो सकता था. और हुआ भी. उस रात जब वह बूढ़ा आदमी सो रहा था, तो एक बोआ इसके घर में घुस आया और उसने अपने आपको तकिये में बदल कर सोते हुए मोदू के सिर के नीचे लगा दिया. बाद में मोदू ने बताया, उसे ऐसा लग रहा था, जैसे उसका सिर रेशम पर टिका हो और जैसे किसी ने उसकी सारी चिंताएं चस ली हों.

ग्रास के सभी निवासी एक-दूसरे से रिश्ते में बंधे हुए थे. इसलिए हम लोग एक-दूसरे को 'भाई' या 'बहन' कहते थे

इन बहनों में सेरेना भी थी. वह शादीशुदा थी और अपने पहले प्रसव के लिए, अपने पति के साथ ग्रास आयी हुई थी. सेरेना दिन भर समुद्र-तट पर ही रहती थी और जाल बुनती रहती थी—और रात को सोने के लिए ही घर जाती थी. घर में उसे डर लगता था, क्योंकि घर के ढह जाने का खतरा था.

यूरोपीय लोग जब पहले-पहल पश्चिम अफ्रीका आये थे, तो सबसे पहले वे ग्रास में ही आ कर बसे थे. उन्होंने समंदर की लहरों से टापू को बचाने के लिए बांध बनाना शुरू किया था, लेकिन बांध कभी पूरा नहीं हो पाया. इसलिए धरती के धसकने का सिलसिला निरंतर चलता चला आ रहा था. टापू की अनेक इमारतें इसका शिकार हो चुकी थीं. सेरेना का मकान भी लहरों की जद में आ चुका था. इसीलिए रात को वह गहरी नींद नहीं सो पाती थी.

सेरेना को बहुत-से किस्से याद थे और वह बड़े प्यार से उन किस्सों को बयान करती थी.

वह हमारे साथ बैठ कर ही समुद्र-तट पर खाना खाती थी—दरअसल यह एक तरह का भोज हुआ करता था और हम सब लोग एक ही बड़े-से बरतन में से इकट्ठे बैठ कर खाते थे.

एक दिन दोपहर के भोजन के बाद, जब बड़ी-बूढ़ी औरतें बच्चों को सेरेना के पास छोड़ कर विश्राम करने चली गयीं, तो एकाएक उसे प्रसव-पीड़ा शुरू हो गयी. . .

बच्चे के पैदा होने में अभी काफी देर थी, लेकिन सेरेना एकदम शांत थी; यद्यपि उसके निकट आते मातृत्व ने उसे उस अजीब कहानी की याद जरूर दिला दी होगी, जो उसके अपने जन्म के साथ जुड़ी हुई थी.

बहुत-बहुत समय पहले, जब सेरेना की मां करीब दस साल की थी, तो वह अपनी दो छोटी बहनों के साथ स्नान करने या कपड़े धोने के लिए समुद्र-तट पर आया करती थी.

एक दिन जब तीनों बहनें स्नान कर रही थीं, तो एकाएक छोटी दोनों बहनों को समंदर की लहरें अपने साथ खींच ले गयीं.

चीखो-पुकार की आवाज सुन कर कुछ अन्य स्नान करने वालों ने तैर कर इन बच्चियों की ओर जाना चाहा लेकिन वे दोनों हंस रही थीं—हम किसी दिन लौट कर आयेंगी. वे कह रही थीं, हम तो सिर्फ अपने असली घर लौट कर जा रही हैं!

इस तरह सेरेना की मां ने अपनी दो बहनें खो दी थीं. जैसा कि उन्होंने वादा किया था, बारह बरसों के बाद वे लौटीं जरूर. . .और अब वे अपनी ही बहन के बच्चे बन कर आयी थीं.

सेरेना की मां का प्रथम प्रसव बेहद यातनादायी रहा और अजीब भी. एक दिन उसने सेरेना को जन्म दिया. सेरेना गोरी और सुकोमल थी. फिर एक दिन बाद दो और बच्चे उसके गर्भ से बाहर आये. इन बच्चों को तिड़वां माना जाना चाहिए था, लेकिन

जूजू-कर्ता ने कहा कि बात ऐसी नहीं है. सेरेना की मां को सिर्फ सेरेना को ही जन्म देना था, और शेष दोनों बच्चे, जो काले और चौड़ी हड्डी के थे, और कोई नहीं, सेरेना की मां की वे दोनों बहनें थीं, जो बारह बरस पहले समंदर में खो गयी थीं.

जब सेरेना हमें यह कहानी सुना रही थी, तो उसकी पीड़ा और भी बढ़ गयी. जब दर्द असह्य हो गया, तो सेरेना भाग कर समुद्र-तट पर उगी झाड़ियों के पीछे चली गयी. थोड़ी देर तक कराहों और भारी सांसों की आवाज सुनायी देती रही. और फिर एकाएक शांति छा गयी —लेकिन तभी एक नवजात शिशु के रोने की आवाज ने वातावरण को हिला दिया.

★ ★

मेरी बीमारी के कुछ सप्ताह बाद, एक युवती बीमार पड़ गयी. उसे जलपरियां सता रही थीं, और उसे अपने साथ अपने घर ले जाना चाहती थी.

इस लड़की का रंग बहुत गोरा था और उसके लंबे-सीधे बाल थे. हमारे द्वीपवासियों का विश्वास था कि खूबसूरती समंदर से आती है, इसलिए भी सुंदर लड़कियों की नियति यही थी कि वे युवावस्था में ही मर जायें ताकि वे अपने पूर्वजों की आत्माओं को मुक्ति दिला सकें. ऐसी लड़कियां अकसर भावुक होती थीं. और जरा-जरा सी बात पर उन्हें मूर्च्छा के दौरे पड़ने लगते थे.

इस तरह के दौरे पड़ने पर लड़की के परिवार वाले समझ जाते थे कि अब उसका अपने 'समंदरी' घर को लौट जाने का समय आ गया है. तब वे भोज का आयोजन करते थे, जिसके दौरान लड़की की आत्मा जलमग्न हो जाती थी और 'अपने' परिवार के लोगों से बात करती थी.

भोज के दो या तीन दिन पूर्व लड़की पर बेहोशी का दौरा पड़ता था. तब उसके शरीर पर खड़िया का लेप कर दिया जाता था. उसे हाथों के बने खूबसूरत वस्त्र पहनाये जाते थे और गले में रेशमी रूमाल बांध दिये जाते थे.

तब गीत गाती हुई औरतें इस लड़की को समुद्र तट तक ले जातीं, जहां उससे एक सफेद मुर्गी की बलि देने को कहा जाता. यह बलि उसके जल-परिवार के लिए होती. लड़की ऐसा करने से इनकार कर देती क्योंकि वह मरना चाहती थी. वह बार-बार हाथ छुड़वा कर पानी की ओर दौड़ती ताकि वह उसमें कूद जाये. तब निराश और क्रुद्ध हो कर वह गांव की ओर दौड़ती. आखिर में मुर्गी की बलि के लिए वह मजबूर कर दी जाती : लेकिन उसकी आंखों में अपने रिश्ते-नाते-दारों के लिए गुस्से की लाली होती.

गांववासियों का नाचता-गाता झुंड उसे घेर लेता, पर उसके पांव निरंतर उसे समंदर की ओर भागने को उत्साहित करते रहते.

फिर धीरे-धीरे गीत के स्वर और ढोलक की थाप लड़की को भी नाचने को मजबूर कर देती. जब नृत्य अपने पूरे जोम पर होता तो लड़की इस उत्सव के लिए रखे गये एक विशेष अंडे को कच्चा ही निगल जाती और बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ती. यही वह क्षण था, जब उसकी आत्मा मुक्त होती और वह अपने जल-परिवार से भेंट कर सकती थी.

उत्सव खत्म हो जाता. उसके संबंधी उसे उठा कर घर ले आते. वह एक सप्ताह तक बेहोश पड़ी रहती. . . फिर धीरे-धीरे सब कुछ सामान्य होने लगता.

★ ★

ब्रास में कुछ महीने बिताने के बाद मैं अपनी दादी के साथ पोर्ट हारकोर्ट जा रही थी. रास्ते में ओकीरीका द्वीप पड़ता था. दादी ने सोचा, वह द्वीप में कुछ खरीदारी करेंगी. लेकिन उनके इरादे को सुनते ही एक नाविक अपने घुटनों के बल बैठ कर दादी से गुजारिश करने लगा—न मां, वहां मत जाओ. . .

दादी बहुत तगड़ी थीं. उन्होंने उसे कॉलर से पकड़ा और बोलीं—चल-चल! मेरे साथ चल!

द्वीप अभी दूर ही था कि हमें वहां अधनंगे मर्दों, बच्चों और औरतों का एक झुंड दिखायी दिया.

दादी खड़ी हो कर ब्रासी भाषा म उनस बातें करने लगीं. तभी एकाएक वह डरपोक नाविक जोर से चिल्लाया और पानी में कूद पड़ा.

ओकीरीका के वासी—जो अगुवानी के लिए आये लगते थे—नाविक के पीछे-पीछे पानी में डुबकी लगाने लगे. कुछ मिनटों के बाद वे ऊपर आये. नाविक उनके साथ नहीं था. ओकीरीका-वासियों ने हमें बताया कि नाविक पानी में गिरते ही मर गया था और लहरें उसे खींच ल गयी थीं.

लेकिन हमें उनकी बातों पर यकीन नहीं आया.

दादी द्वीप में चली गयीं. द्वीपवासी बहुत गरीब थे. दादी को खरीदने के लिए कुछ दिखायी नहीं दिया—सिवा लाल-लाल गोश्त के बड़े-बड़े टुकड़ों के. आधा दिन भटकने के बाद दादी ने गोश्त ही खरीदने की सोची, लेकिन दूकानदार बहुत ज्यादा पैसे मांग रहा था और दादी का गुस्सा बढ़ता जा रहा था.

आखिरकार दादी चिल्लाने लगीं—अरे भाई, आखिर इस गोश्त में ऐसी क्या खास बात है कि तुम इसे इतना महंगा बता रहे हो?

दूकानदार कुछ नहीं बोला.

—बोलते क्यों नहीं? दादी बोलीं. मुझे लूटना चाहते हो?

—दरअसल यह बहुत अच्छा गोश्त है, दादी मां! तुम समझती क्यों नहीं?

—अब मुझे बनाओ मत! कह कर दादी चलने को हुईं.

—अरे, दादी मां, ले जाओ. ऐसा गोश्त फिर नहीं मिलेगा —आदमी को गोश्त है, आदमी का! . .

. . .हमारा शक सही निकला था. हमारे नाविक का आधा गोश्त तब तक लोगों के पेट में भी पहुंच चुका था. . . ☐☐☐

(अनुवाद : विजया)

डीना
• लुई बर्नार्दो होनवाना

मोजांबीक की नयी पीढ़ी के सशक्ततम कथाकार लुई बर्नार्दो होनवाना का जन्म नवंबर, १९४२ में हुआ. पिता पुर्तगाली प्रशासन में दुभाषिये का काम करते थे, फिर भी बेटे को हाई स्कूल तक भी नहीं पढ़वा सके. लुई में आत्म-विश्वास और संघर्ष का माद्दा था... और ये दोनों ही गुण उनकी कहानियों में बड़े सटीक ढंग से उभरे हैं. लुई की कहानियां औपनिवेशिक दमन और क्रूरता को बड़ी बेरहमी से उघाड़ती हैं.

• • •

मडाला ने झुके-झुके ही दोपहर के बारह घंटे सुने. उसने सर उठा कर देखा, तो दस-बारह कदम की दूरी पर, मकई के गट्ठरों के बीच ओवरसीयर की हरी पतलून दिखायी दी. वह काम करने के अंदाज में झुका रहा. इतनी हिम्मत नहीं हुई कि सीधा खड़ा हो जाये. घंटे बजने के बाद हमेशा ओवरसीयर गालियां देता हुआ चिल्लाता है— हरामियो, काम बंद करो... लेकिन वह अभी तक चुप है. तेज धूप उसकी नंगी पीठ पर चुनचुना रही थी. नाक से टपकती पसीने की बूंदों से वह वक्त का अंदाजा लगाता रहा.

उसने सर उठा कर फिर देखा... ओवरसीयर की पतलून अब भी वहीं थी. पीछे गट्ठरों के बीच यहां-वहां दूसरे मजदूर भी काम करते-करते ओवरसीयर के हुक्म का इंतजार कर रहे थे.

'डीना' (खाने) का घंटा बजते ही भूख और भी तीखी हो जाती है. आंतें और भी ऐंठती हैं. गरदन की नसें तो ऐसे तड़कती हैं कि जान ही निकल जाये. वैसे भी मकई के पौधे जड़ से उखाड़ने में बुढ़ापे का सारा कस-बल दुहाई देने लगता है.

एक पौधे का डंठल पकड़ कर उसने झटका दिया. सफेद जड़ें काली मिट्टी बिखेरती बाहर आ गयीं. पौधा उखाड़ने से बन गये गड्ढे से भाप तक नहीं निकल रही. कितनी गरमी है!

ऐसी गरमी और यह काम! फिर बार-बार सांप की तरह लहराता दर्द. ओवरसीयर ने अभी तक काम रोकने के लिए कहा नहीं. पौधा एक तरफ फेंक कर उसने कुछ सुनने की कोशिश की. कुछ नहीं, सिर्फ हवा का एक झोंका खेतों की फुनगियों पर सरसरा गया.

घंटा बजने के बाद से वह आठ-दस पौधे और उखाड़ चुका है. कहीं ऐसा तो नहीं कि ओवरसीयर की आवाज वह न सुन पाया हो!

बाप रे! मडाला दर्द से कराहा. यह दर्द तो जान ही लेकर जायेगा. लेकिन जब तक वह जिंदा रहेगा, इसी तरह चिलचिलाती धूप में काम करते जाना है. ओवरसीयर की गालियां सुननी हैं और पौधे उखाड़ने हैं... तीन, चार, पांच....

पौधा उखाड़ते ही गड्ढे में एक काला बिच्छू रेंगने लगा. उसके पास कुदाली या फावड़ा होता तो वह उसे मार देता. खैर, जाने दो!

बिच्छू का जहर अब वह बर्दाश्त नहीं कर पायेगा. तीन दिन दर्द से तड़प कर चौथे दिन मर जायेगा. सांप भी निकल आते हैं कभी-कभी.

ऐसे ही एक बार खेत में काम करते-करते पितारोसी को सांप ने काट लिया था. बेचारा पानी तक नहीं मांग पाया. वहीं ढेर हो गया. इस दुर्घटना के बाद से उसकी पत्नी सिर्फ शराब के बदले में हर किसी के साथ सोने लगी थी. पूरी बस्ती में सिर्फ मैं ही उसके साथ नहीं सोया, क्योंकि मैं पितारोसी को अच्छी तरह जानता था और फिर मैं बूढ़ा भी तो हो चुका हूं!

नीचे झुकते ही आंतों की ऐंठन कलेजे को चीरती चली गयी. दर्द सहने की कोशिश में उसने अपने जबड़े कस कर भींच लिये.

—साला ओवरसीयर काम रोकने के लिए नहीं कह रहा! वह बुदबुदाया.

★ ★

—चलो, काम बंद करो! ओवरसीयर चिल्लाया.

दस, ग्यारह, बारह. मडाला ओवरसीयर के चिल्लाने के बाद भी पौधे उखाड़ता रहा. वरना ओवरसीयर सोचेगा कि साले को बहुत जल्दी पड़ी है. उसने माथे का पसीना उंगली से समेट कर छिड़का. सीधा होते-होते उसे चक्कर आ गया.

एक-दो मजदूर काम रोक चुके थे. ओवरसीयर उन पर चिल्लाया — सालो, काम के टाइम खोपड़ी खुजलाते रहते हो... घंटा बजते ही डबल तेजी आ जाती है.... किये डाओ... एक दिन मारते-मारते जान निकाल लूंगा... कुत्ते!

फिलिमोन काम रोक कर खड़ा होने जा रहा था. ओवरसीयर को गुस्से में देख कर फिर झुक गया. लेकिन मडाला को देख कर उसे कुछ साहस मिला और वह उस तरफ देखता खड़ा हो गया.

और दूसरे मजदूर ओवरसीयर को घूरते धीरे-धीरे इकट्ठे होने लगे. जिस्मों के पसीने से तर बदन में गुस्से और नफरत की एक लहर दौड़ गयी.

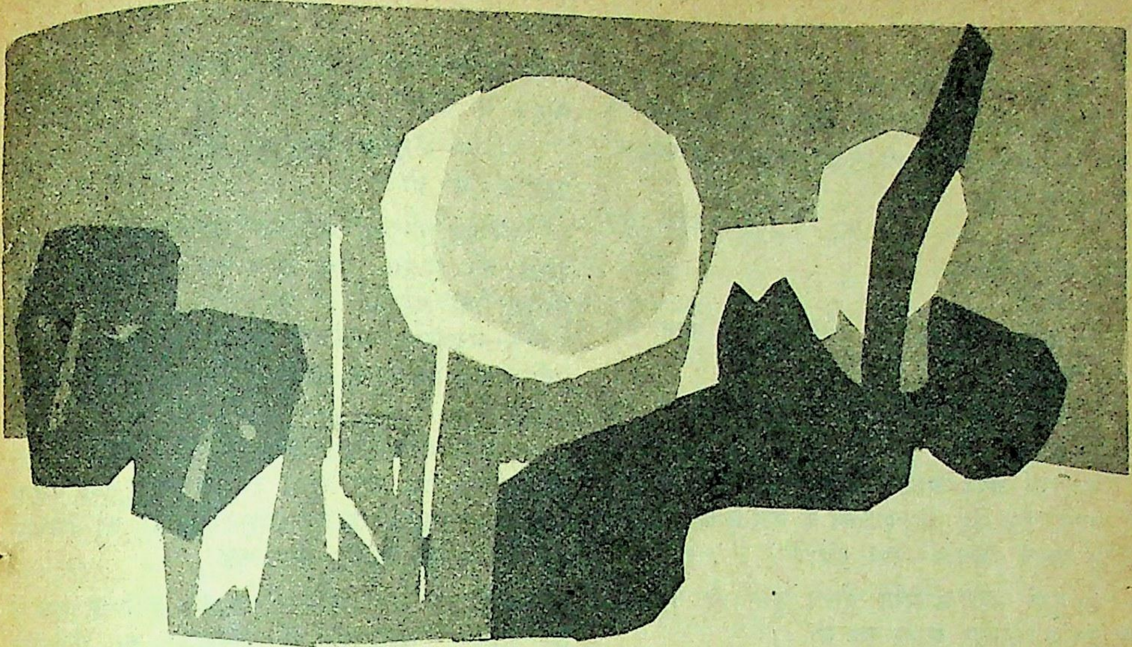
—अब हम खाने के लिए चलेंगे, रजिस्टर बंद करता हुआ ओवरसीयर बोला और बाड़े की तरफ चलने लगा. सभी मजदूर चुपचाप उसके पीछे-पीछे चलने लगे.

मडाला ने चारों तरफ नजर दौड़ायी. यहां-वहां दूर-दूर तक खेतों की हरी चादर फैली थी. बिल्कुल समुद्र की तरह.

गोरे लोगों के खेत बिल्कुल समुद्र की तरह लगते हैं, उसने सोचा. वह खेतों की समुद्र से तुलना करने लगा. समुद्र में कौन-से पौधे उखाड़ने होते हैं?... कुछ पल सोच कर उसने एक उंगली उठायी — नहीं, खेत समुद्र की तरह नहीं होते.

★ ★

मडाला बाड़े में पहुंचा. दूसरी टोलियों के कई मजदूर खाना खा चुकने के बाद छांव में जाने की



तैयारी में थे. खेतों में कटाई करने वाली टोली को हमेशा देर हो जाती है. उनकी टोली के रसोइये ने अभी देगची चढ़ायी ही है.

आसपास देख कर वह आराम करती काल टोली के पास आ कर छांव में बैठ गया.

—मडाला, किसी ने पूछा, तुम्हारी टोली के क्या हाल हैं?

मडाला चुप रहा, क्योंकि जवाब देने से पहले हमेशा वह सवाल को अपने जेहन में दोहराता. फिर सोचे हुए जवाब को मन-ही-मन दोहरा कर तब बोलता.

—धूप बहुत तेज है.

—हां. . . धूप बहुत तेज है. मडाला बुदबुदाया.

—और ऊपर से हर दम खोपड़ी पर सवार ओवरसीयर . . .

मडाला ने बोल रहे लड़के की तरफ देखा.

—ओवरसीयर बहुत हरामी है, लड़का बोला. साला एक मिनट के लिए भी कमर सीधी नहीं करने देता. एक बार ऐसी ही गर्मी थी. और ओवरसीयर भी था. . . . धीरे-धीरे वह अपनी टोली के लोगों की तरफ मुखातिब हो गया.

★ ★

ओवरसीयर छांव में एक लकड़ी के बक्से पर बैठा था. सामने रखे बक्से पर तरह-तरह के खाने की प्लेटें सजी थीं. पास ही शराब की बोतल थी. वह मजे ले कर खाना खाता और बीच-बीच में शराब के घूंट भरता जाता.

मडाला को याद आया, पिछले महीने उसने भी दोस्तों के साथ अड्डे पर शराब पी थी.

—मडाला! जिम्मो की आवाज थी. चलो, अब हम भी खा लेते हैं. जिम्मो और नजदीक आ कर बोला, तुम्हारी बेटी मारिया तुमसे मिलने आयी है.

मारिया उसकी तरफ आती दिखायी दी.

—पापा, उसने आवाज दी.

—आ, बेटी. . . मडाला ने पूछा, कैसी है? घर पर सब लोग ठीक तो हैं?

—तुम लोग वहां छांव में जा कर आराम से बातें करो, जिम्मो बोला.

जिम्मो मारिया को बहुत चाहता है, लेकिन मारिया को मालूम है कि वह हर किसी के साथ सो जाती है, इसलिए कोई उससे शादी नहीं करेगा.

—सब ठीक-ठाक तो है घर में? मडाला ने फिर पूछा.

—सब ठीक है, मारिया बोली, तुम कैसे हो, पापा?

—मैं ठीक हूं, बेटी.

आसपास के सभी मजदूर मारिया की तरफ मुसकरा कर उसका अभिवादन करते घूर रहे थे. उनकी नजरें उसके झालरदार फ्रॉक के अंदर धंसती चली जा रही थीं. मारिया को इस तरह सब का घूरना खराब लग रहा था.

—मडाला, चलो, अब खाना खा लो, जिम्मो बोला. अगर ओवरसीयर ने देख लिया कि तुम यहां बातें करने में लगे हो तो. . . .

—नहीं, जिम्मो, तुम खाओ. . . . मडाला बोला, मैं थोड़ी देर अपनी बेटी से बातें करूंगा.

खलिहान के कोने से ओवरसीयर बाहर निकल कर इनकी तरफ आया.

—ए मारिया, वह बोला. तू यहां क्या कर रही है? मडाला को फंसा रही है क्या? लेकिन इसमें तो अब दम रहा नहीं. बूढ़ा हो चुका है. अच्छा तो जिम्मो को फंसा रही होगी.

—मैं किसी को फंसा-वंसा नहीं रही! मारिया बोली. मैं तो उससे पुर्तगाली भाषा में बात करने की कोशिश कर रही थी.

—तो क्या उसके साथ सोयेगी नहीं?

मारिया की नजरें धरती में गड़ गयीं.

मडाला अपनी बेटी का चेहरा देख कर सोचने लगा कि ओवरसीयर की फूहड़ बातों से मारिया को कैसा लगा होगा.

—तुम. . . तुम. . . सहसा मारिया बोली, तुम खाना खाओ जा कर. . . .

—क्यों?

—सुबह से काम पर लगे हो, अब खाना खा लेना चाहिए.

—क्यों, क्या बात है? वह उसकी आंखों में देख कर बोला.

मारिया अपने आप में सिकुड़ गयी. उसने मडाला की तरफ पीठ फेर ली. मडाला ने कंधे छू कर उसका चेहरा सामने किया— क्या हुआ?

—कुछ नहीं, मारिया बोली. कुछ भी तो नहीं. बस तुम जाओ और खाना खा लो.

—लेकिन मुझे तो बिल्कुल भूख नहीं है, उसने हवा में हाथ फैलाये. . . . बिल्कुल नहीं. . . लेकिन क्या तुझे खाना नहीं खाना है?

—नहीं, मारिया ने कहा, मुझे नहीं खाना. . . मैंने खा लिया है, कैंटीन में एक दोस्त मिल गया था. उसने बहुत खिला दिया.

—मडाला, मारिया ठीक कहती है! जिम्मो की आवाज थी.

—अच्छा ठीक है, मडाला उठता हुआ बोला. मैं खा कर आता हूं.

मडाला जिस जगह पर बैठा रोटी खा रहा था, वहां से मारिया दिखायी दे रही थी. वह लगातार उस तरफ देखे जा रहा था, पर उसे पता ही नहीं चला कि कब ओवरसीयर आ कर मारिया से बातें करने लगा है.

मडाला को खेद हुआ कि वह उनकी बातें नहीं सुन पा रहा. उसने सोचा, जब आदमी किसी औरत के साथ सोना चाहता है, तो क्या कहता होगा?

थोड़ी देर तक ओवरसीयर मारिया से बातें करता रहा. फिर एक तरफ चल दिया. कुछ देर बाद मारिया भी उसी दिशा में चल पड़ी.

मडाला ने उंगलियां चाट कर बालों में हाथ फेरा. खेतों में वापस जा कर जूझने में अभी थोड़ी देर थी. मडाला उस जगह पर आ कर बैठ गया, जहां कुछ देर पहले तक काल टोली बैठी थी.

थोड़ी देर पहले जिस लड़के ने मडाला से बात करने की कोशिश की थी, बोला —मडाला, तुम्हारी बेटी वहां, पीछे, ओवरसीयर से बातें कर रही है.

टोली के मुखिया को यह बात अच्छी नहीं लगी. लड़के को सुना कर बोला—जब किसी की समझ में कुछ न आये, तो चुप ही रहना चाहिए.

घुटन भरी खामोशी छा गयी. अपने पांवों के पास एक पौधे के डंठल को मडाला ने मुट्ठी में भींच लिया. अनजाने झटके में पीछे की जड़ें मिट्टी फोड़ कर बाहर आ गयीं.

—क्या मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूं? जिम्मो पास आ कर बोला.

मडाला चुपचाप खेतों की तरफ जाते हुए उस रास्ते को घूरता रहा, जिस पर ओवरसीयर और मारिया जा रहे थे.

—मडाला, जिम्मो बोला, क्या तुम्हें कुछ भी नहीं लगता कि तुम्हें हमसे कुछ करने के लिए कहना चाहिए?'

मडाला ओवरसीयर और अपनी बेटी को जाते हुए देखता रहा. उसे लगा कि जिम्मो से कुछ कहना चाहिए. पर उसने सवाल दोहराया नहीं था, इसलिए उसे नहीं मालूम कि वह क्या कहे.

थोड़ी देर बाद ओवरसीयर की पूरी देह खेतों में खो गयी. . . मारिया भी लड़खड़ा कर धीरे-धीरे वहीं डूब गयी. पौधों में एक हलचल हवा के झोंके के साथ शांत हो गयी.

—मडाला! जिम्मो ने डांटा. उधर मत देखो.

मडाला के भीतर ही कुछ ऐंठ कर रह गया, लेकिन यह उस दर्द की ऐंठन नहीं थी, जो आंतों को ऐंठती कलेजे को चीरती चली जाती है.

काट खाने वाला सन्नाटा छा चुका था. किसी की हिम्मत मडाला की तरफ देखने की नहीं हो रही थी. लड़के के चेहरे पर अजीब-सी सख्ती थी.

एक-एक करके मडाला काल्पनिक पौधे की पत्तियां नोचने लगा. उसे यह सोच कर रुलाई आ गयी कि बुढ़ापे और बीमारी ने उसके हाथों में इतनी ताकत भी नहीं छोड़ी कि वह काल्पनिक पौधे को जड़ से उखाड़ फेंके, जिसकी जड़ें खेतों के पौधों से भी गहरी धरती में पैठी हैं.

होइंग टोली और कई टोलियों के मजदूर मडाला के आसपास इकट्ठे होने लगे.

★ ★

खेतों के समुद्र की सतह पर ओवरसीयर का धड़ बाहर आता दिखा. वह दोनों हाथों से रास्ता बनाता इस तरफ आने लगा.

थोड़ी देर बाद मारिया भी दिखायी दी. उसने अपने फ्रॉक और बदन से घास-फूस और मिट्टी झाड़ी और बच-बच कर खलिहान की तरफ आने लगी.

सन्नाटा गहरा गया था. काल टोली के मजदूर मारिया को रास्ता देने के लिए इधर-उधर हट गये.

—मडाला! उस लड़के ने कहा. जहां तुम काम करते हो, वहां तो बहुत तेज धूप है.

—हां, बेटे, मडाला बोला. . . . . बहुत तेज धूप है. सन्नाटा तोड़ने की यह कोशिश बेकार गयी. खामोशी और पैनी होती चली गयी.

—मडाला, वह लड़का फिर बोला, बोलो, मडाला हमें क्या करना चाहिए? आज यहां इस सब का

फैसला हो जाये. ये लोग ज्यादा से ज्यादा हमें जान से मार देंगे. . . . लेकिन हम मरने से नहीं डरते. . . . बोलो, मडाला, कुछ तो बोलो. हमें अभी कुछ करना चाहिए.

सहमति की एक फुसफुसाहट वहां खड़े मजदूरों में फैल गयी.

—हम सब ने देखा है कि उसने तुम्हारी आंखों के सामने तुम्हारी बेटी के साथ क्या किया! कुछ तो बोलो, मडाला, इस तरह हम कब तक सहते रहेंगे?

लड़का चुप हो कर मडाला की बुझी आंखों में विद्रोह की चिंगारी तलाशने लगा.

* *

टिकटी से बाहर आ कर ओवरसीयर ने आसपास देखा और एक तरफ बैठी मारिया की गोद में चांदी का एक सिक्का उछाल दिया.

—यह रही तुम्हारी फीस!

मारिया सिक्का झटक कर खड़ी हो गयी. दोनों हाथों से छाती ढंक कर कंधे भींच लिये.

—क्या हुआ? ओवरसीयर को आश्चर्य हुआ. पैसे नहीं चाहिए क्या?

—क्यों? मारिया ने चेहरा दूसरी तरफ कर लिया. तुमने ऐसा क्यों किया? . . . मडाला ने देख लिया. वह बुदबुदायी.

—लेकिन तुझे हुआ क्या है? ओवरसीयर बोला तुझे डर है कि लोगों को पता लग जायेगा कि तू धंधा करती है. क्यों?

गरदन झटक कर मारिया गुस्से में बोली—मडाला बाप है मेरा!

—क्या? सहसा ओवरसीयर का चेहरा पीला पड़ गया. मुझे पता ही नहीं था कि तुम मडाला की बेटी हो. वह बोला, कसम से, मडाला. . . . मुझे मालूम ही नहीं था कि तुम्हारी कोई बेटी भी है. . . सच. . . ! मडाला आज तुम आराम करो. . . छुट्टी. . . जाओ. . .

कोई कुछ नहीं बोला. खामोशी ओवरसीयर के दिल में डर पैदा करने लगी थी.

—साला मुझे कैसे पता लगता कि यह मडाला की बेटी है! ओवरसीयर मजदूरों की तरफ देख कर बोला. मुझे सपना आता था क्या?

वह मडाला की तरफ बढ़ा.

—मडाला, मैं तुम्हें पैसे दूंगा. . . . तुम अपनी बेटी के साथ कैंटीन में खाओ-पियो जा कर.

मडाला का चेहरा झुका ही रहा. ओवरसीयर बड़बड़ाता हुआ एक तरफ चला गया.

—मडाला, काल टोली का वह लड़का फिर बोला, हम सबने देखा है कि ओवरसीयर ने तुम्हारी बेटी के साथ क्या किया है. हमें कुछ करना चाहिए.

मजदूर लड़के की बात से सहमत थे.

ओवरसीयर आड़ से बाहर निकल कर आया. उसके हाथों में शराब की एक बोतल थी.

—चलो, सब अपने-अपने काम पर! वह बुत की तरह खड़े हुए मजदूरों को देख कर चिल्लाया. चलो टाइम हो गया है. काल टोली मवेशियों को पानी पिलायेगी. . . . होइंग टोली मेरे साथ आयेगी.

मजदूरों में कोई हरकत नहीं हुई.

—तुम लोगों ने सुना नहीं, हरामियो. . . ! वह चिल्लाया. घंटा बज चुका है. सुना नहीं, कामचोरो! उसने शराब की बोतल ऊपर उठायी. मडाला! वह बोला.

मडाला खड़ा हो गया. ओवरसीयर ने शराब की बोतल मडाला की तरफ बढ़ायी. मडाला ने उसके हाथ से बोतल ले ली.

सभी मडाला की तरफ देख रहे थे. लड़के ने मडाला के पास जा कर कुछ कहना चाहा. —मडाला, तुम. . .

मडाला ने आसपास खड़े मजदूरों को देखा. और एक ही सांस में पूरी बोतल खाली कर दी. खाली बोतल उसने ओवरसीयर को वापस कर दी.

—चलो, हरामखोरो. . . ! काम पर चलो! ओवरसीयर चिल्लाया.

खामोशी हार में बदल चुकी थी. बुत हिलने लगे थे. मारिया चुपचाप सब देखती रही.

ओवरसीयर बोतल को गरदन से पकड़ कर बड़बड़ाया—हरामी काले!

काल टोली के उस लड़के ने मडाला के सामने आ कर जमीन पर थूक दिया—कुत्ता! वह बोला.

मडाला उसे नजरअंदाज कर खेतों की तरफ जाते रास्ते पर चल दिया. दूसरे मजदूर भी उसके पीछे चल पड़े.

ओवरसीयर फिर चिल्लाया.

लड़का अब तक खड़ा था. ओवरसीयर ने बोतल लड़के के सर पर फोड़ दी.

—सुना नहीं, मां के यार! . . .

वह हिला तक नहीं. . . दूसरे वार में लड़के का सर फट गया. लड़का लहरा कर गिरा. ओवरसीयर उसके चेहरे पर बूट की ठोकर मारता हुआ बोला—साला. . . रंडी की औलाद!

* *

मडाला फिर पौधे उखाड़ने लगा था. दर्द फिर कलेजे को चीर गया था.

उखाड़े हुए पौधों को वह इकट्ठा करने लगा—तेरह. . . चौदह. . . पंद्रह. . . ☐☐☐

(अनुवाद : हृदय लानी)

शहीद

जब अपने ही घर में मिस्टर और मिसेज गैस्ट्रौन की डाकुओं द्वारा हत्या कर दी गयी, तो वह समाचार अत्यंत चर्चा का विषय बन गया. रेडियो, टेलीविजन, अखबार सब का ही वह मुख्य समाचार था. वह प्रथम अंग्रेज परिवार था जो समस्त देश में फैले विद्रोह की आग का शिकार हुआ था. इंडियन-बाजार, अफ्रीकन-ड्यूक. प्रत्येक स्थान पर वही चर्चा थी. उस हत्या के भिन्न-भिन्न अनुमान लगाये जा रहे थे.

इस हत्या की सबसे अधिक चर्चा, एक ऊंची पहाड़ी पर बने श्रीमती हिल के एकाकी घर में हो रही थी जिनके पति की पिछले वर्ष यूगांडा की यात्रा में, मलेरिया के प्रकोप में, मृत्यु हो गयी थी.

उनकी लड़की और लड़का इंगलैंड में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे. अनेक वर्षों से वहां रहने के कारण व अनेक चाय के बगीचों की मालिक होने के कारण मिसेज हिल का काफी आदर किया जाता था, भले ही वे कुछ लोगों द्वारा पसंद नहीं की जाती थीं. उसका कारण यह था कि उनका व्यवहार वहां के निवासियों के प्रति अत्यंत नम्र था. जब हत्या के दो दिन पश्चात, मिसेज स्माईल और मिसेज हार्डी उसी विषय पर, बहस करने आयीं, तो उनके चेहरे पर उदासी और विजय दोनों का ही मिला-जुला भाव था. उदासी का भाव तो स्वभाविक रूप से ही, उस यूरोपियन पति-पत्नी की मृत्यु के कारण था. लेकिन विजय का भाव इसलिए था कि मिसेज हिल के समक्ष इन नीग्रो की स्पष्ट रूप से प्रकट होड़ थी. अब मिसेज हिल यह नहीं कह सकेंगी कि आदिवासी लोगों को शिक्षा और नम्र व्यवहार द्वारा सभ्य और सुसंस्कृत बनाया जा सकता है.

मिसेज स्माईल्स एक अधेड़ उम्र की मिशनरी थीं, जिनके चेहरे पर हमेशा यह भाव रहता था कि उन्हीं यूरोपयिन लोगों के कारण ही इस असभ्य देश में सभ्यता का प्रचार हुआ है. और वह नीग्रो लोगों को बार-बार इस सत्य का स्मरण करवाना भी नहीं भूलती थीं.

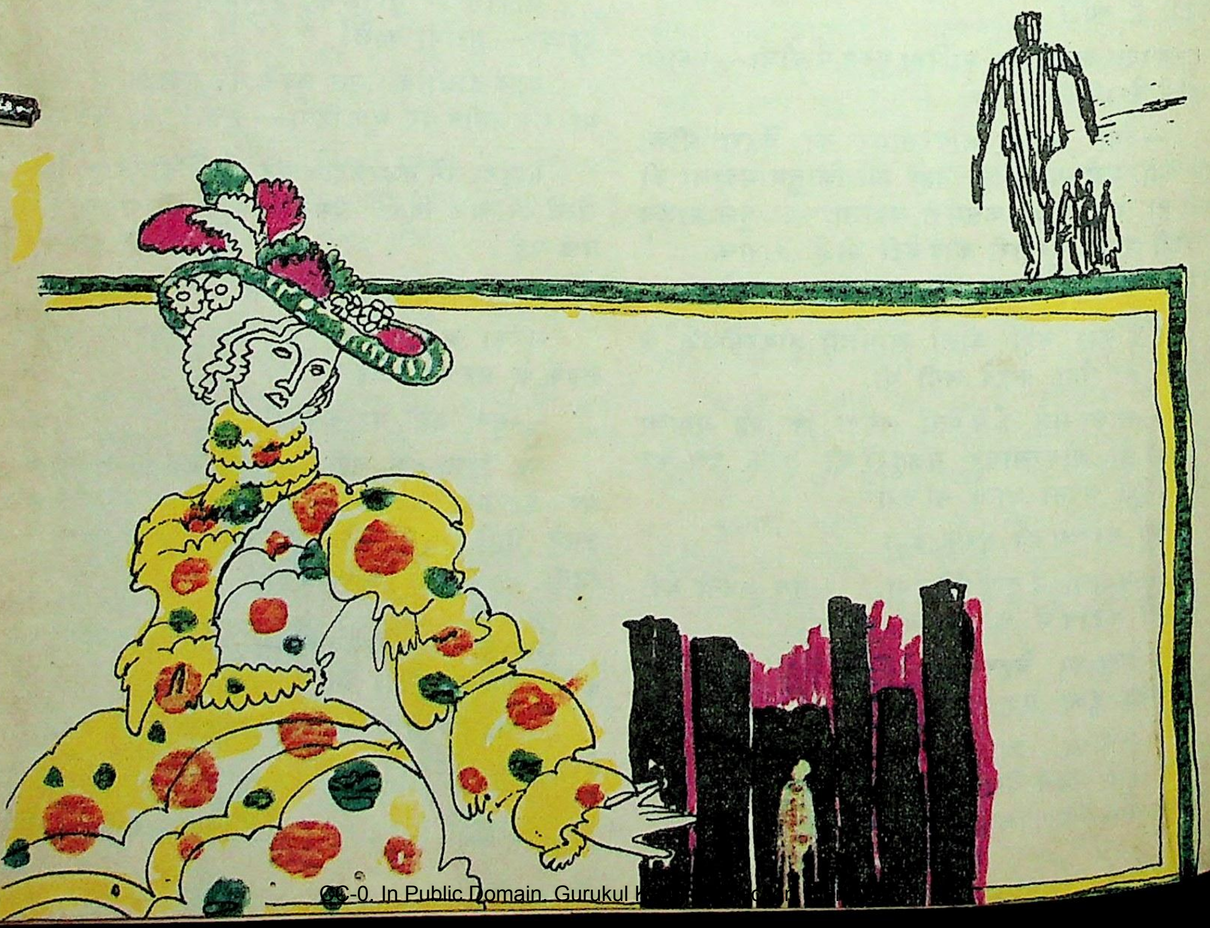
मिसेज हार्डी एक सीधी स्त्री थी जिसका किसी विषय पर अपना कोई भी व्यक्तिगत मत नहीं था. वह हर एक की हां में हां मिलाती थी.

जब मिसेज हिल ने कहा कि हमें उनसे सिर्फ नम्रता का व्यवहार करना चाहिए, अब मेरे ही नौकरों को देखिये, वे सब मुझसे स्नेह करते हैं तो मिसेज हार्डी ने एकदम स्वीकृति प्रदान की.

मिसेज हिल ने कुछ मकान बनवा दिये थे और एक बच्चों का स्कूल खोल दिया था, भले ही वहां अध्यापक नहीं के बराबर थे और बच्चे अधिक समय उन्हीं के चाय के बगीचों में ही काम करते थे.

——यह एक भयानक कृत्य है, मिसेज स्माइल्स ने अत्यंत कटुता से कहा. मिसेज हार्डी ने अपनी स्वीकृति दी——और मिसेज हिल तटस्थ रहीं.

——उन्होंने इतना जघन्य कृत्य किस प्रकार किया? हमीं ने उन्हें सभ्य बनाया. दास-प्रथा और कबीलों के आपसी युद्ध बंद करवाये. इससे पूर्व वे कितना दयनीय जीवन जी रहे थे! मिसेज स्माईल्स को आज अपनी वक्तृत्व-शक्ति दिखाने का अवसर मिला था. फिर वे उदास स्वर में बोल उठीं——लेकिन मैं हमेशा ही कहती आयी



•जोसुआ मुआंगी करुकी

कि ये जंगली कभी सभ्य हो ही नहीं सकते.

—हमें उनके प्रति कुछ ज्यादा सहनशील होना चाहिये, मिसेज हिल ने पुनः कहा.

—सहनशील, सहनशील! सहनशीलता की भी एक सीमा होती है. क्या गैस्ट्रोन्स से भी ज्यादा कोई सहनशील हो सकता है? और वे ही मारे गये! मिसेज स्माईल्स ने क्रोध भरे शब्दों में कहा.

—और नौकर ने, उन्हें अपने शयन-कक्ष से बाहर बुलाया और फिर मार डाला.

—सच?

—यह सब आज के अखबार में था.

मिसेज हिल अपराध की भावना से भर कर इधर-उधर देखने लगीं क्योंकि उन्होंने आज का अखबार ही नहीं पढ़ा था.

चाय का समय हो गया था और वे रसोई में नौकर से चाय के लिए कहने चली गयीं.

शीघ्र ही जोर्ज चाय ले कर आ गया. जोर्ज उनके घर में दस वर्ष से नौकर था.

—ये लोग ऊपर से कितने भोले लगते हैं, मिसेज स्माईल्स ने कहा.

—हां, बिल्कुल फूल की तरह! लेकिन अंदर जो सांप है, वह! मिसेज स्माईल्स ने शेक्सपीयर का उद्धरण देते हुए कहा.

—यह मेरे यहां पिछले दस वर्षों से कार्य कर रहा है. बहुत ही नेक है और मुझे बहुत चाहता है. मिसेज हिल ने अपने नौकर का पक्ष लेते हुए कहा.

—लेकिन मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है, विशेषकर इसके चेहरे का भाव.

—मुझे भी!

काफी देर तक वे तीनों, हत्या-कांड, सरकार की नीति और समसामयिक-विद्रोह की भावना पर चर्चा करती रहीं. और जब वे दोनों स्त्रियां चली गयीं, मिसेज हिल देर तक हत्या के बारे में सोचती रहीं. आज उन्हें पहली बार इस बात का एहसास हुआ कि वे इस ऊंची पहाड़ी पर नितांत अकेली हैं. लेकिन उनके पास एक पिस्तौल है, सोच कर काफी ढ़ाढस बंधा.

* *

रात का खाना खत्म करके जोर्ज बाहर चला गया. वह एक छोटी-सी पगडंडी से हो कर, अपने क्वार्टर्स की ओर चलने लगा. उसने रात्रि के सन्नाटे और स्वयं के अकेलेपन के बोध को कम करने के लिए सीटी बजाने का प्रयत्न किया. लेकिन तभी एक उल्लू के रोने की आवाज सुनाई दी.

वह रुक गया, और एक क्षण के लिए स्तब्ध खड़ा रह गया. आगे अंधकार में वह कुछ नहीं देख पा रहा था. लेकिन पीछे, मेम साहब का शानदार बंगला बत्तियों से चमक रहा था. उसने क्रोध से उधर देखा और उसे सहसा लगा कि वह बहुत बूढ़ा हो रहा है. तुम! तुम! मैं तुम्हारे साथ इतने वर्ष से कार्य करता आ रहा हूं और तुमने मेरी यह हालत बना दी है. मेरी ही जमीन पर, तुम आराम से रह रही हो. मैंने तुमसे बदले में क्या पाया? जोर्ज जोर-जोर से चिल्ला कर यह सब और और भी बहुत-सी बातें कह देना चाहता था, जो वर्षों से उसके हृदय में संचित हो गयी थीं.

फिर उल्लू के रोने की आवाज सुनाई दी.

यह उसके लिए एक सूचना है, उसने सोचा और पुनः उसकी समस्त आत्मा विद्रोह कर उठी—उन सब लोगों के प्रति जिनकी सफेद चमड़ी थी. और उन सब विदेशियों के प्रति जिन्होंने उसके देश को हथिया लिया था.

उसे याद आया कि उसका पिता किस प्रकार, अपने अधिकारों की मांग करता-करता मारा गया था जब कि वे सब लोग शांतिपूर्ण उपायों द्वारा अधिकारों की मांग करते हुए जलूस निकाल रहे थे. तब से जोर्ज को अपनी जीविका कमाने के लिए गहरा संघर्ष करना पड़ा है. इधर-उधर नौकरी के लिए भटकते हुये, अंत में यहां पुनः लौट आया था. यह जमीन जो अब मिसेज हिल ने हथियाई है, उसी के पूर्वजों की है. अकाल के समय उसके पिता को अपने परिवार-सहित, कुछ समय तक, अपने गांव चले जाना पड़ा था. वापस लौटने पर, यह जमीन उनके हाथ से निकल गयी थी. तब वह बहुत छोटा था लेकिन उसे अपने पिता के शब्द याद हैं—'याद रखना कि यह जमीन तुम्हारी है. धैर्य रखो. जब ये यूरोपियन चले जायें तो पुनः अपनी जमीन के लिए संघर्ष करना.'

जोर्ज को मिसेज हिल बिल्कुल पसंद नहीं थीं. विशेषकर उनका हर समय यह बखान करना कि उन्होंने अपने कर्मचारियों के लिए कितना-कुछ किया है. उसने मिसेज स्माईल्स और मिसेज हार्डी की तरह, निर्मम स्त्रियों के साथ भी काम किया है. लेकिन इन स्त्रियों के साथ उसे व्यवहार भी करना आता था. लेकिन मिसेज हिल जैसी स्त्री का साथ, जो अपने अत्यंत नम्र व्यवहार का प्रदर्शन करती थी, उसे परेशानी में डाल देता था. जोर्ज अपने देश में बसने वाले सभी लोगों से घृणा करता था. उसे सबसे ज्यादा चिढ़ थी, उनके इस प्रदर्शन से और उसमें निहित आत्म-संतोष से, कि वे नीग्रों के साथ बहुत सहानुभूतिपूर्ण हैं, मित्रतापूर्ण हैं. ऐसी स्त्री के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाय, यही समझना कठिन है.

अचानक वह जोर-जोर से बोलने लगा—मैं उनसे घृणा करता हूं, बेहद घृणा करता हूं! और तभी वह एक आत्मसंतोष से भर उठा. आज रात मिसेज हिल के मरने की बारी है. कम-से-कम एक यूरोपियन तो कम होगा.

वह अपने कमरे में आया. अन्य सब कर्मचारियों के घर की बत्ती बंद हो चुकी थी. कुछ सो गये होंगे और कुछ पास की दुकान पर बीयर पीने गये होंगे. उसने अपने कमरे में बत्ती जलाई. अपने बिस्तर पर बैठ कर, यदि वह बांह फैलाये, तो वह करीब-करीब सभी

दीवारों को छू सकता है, तब भी वह यहां अपनी दो पत्नियों और अनेक बच्चों के साथ रह रहा है. तब भी मिसेज हिल सोचती हैं कि सिर्फ ईंटों का यह छोटा-सा कमरा बनवा कर उन्होंने अपने नौकरों के लिए बहुत-कुछ कर दिया.

जब भी उनके यहां कोई मेहमान आता था, तो वह पहाड़ी के एक कोने में खड़ी हो कर, इन मकानों को दिखाया करती थी. 'बहुत अच्छे हैं न!' वे पूछा करती थीं.

यह सोच कर कि आज रात उनको, अपने इन सब कृत्यों का फल मिल जायेगा, वह पुन: मुसकरा उठा. उसने अपने परिवार को पहले ही गांव भेज दिया था, ताकि उन पर कोई विपत्ति न आये.

अन्य लड़के भी अब आने ही वाले होंगे. फिर वह उन्हें मिसेज हिल के मकान तक ले जायेगा. वह एक अत्यंत जघन्य कृत्य होगा. लेकिन वह सब कितना आवश्यक है.

उल्लू के रोने की आवाज अब और भी तेज हो गयी थी. यह एक बुरा शगुन होता है. वह फिर मेम साहब के बारे में ही सोचने लगा. वह मेम साहब व मास्टर के साथ इतने लंबे अरसे तक रहा है. वह जानता है कि वह अपने पति को बहुत प्यार करती थी और उनकी मृत्यु की सूचना पा कर वह विक्षिप्त-सी हो गयी थी. तब उसे उस पर दया करने का अवसर मिला था, सिर्फ तब. दोनों बच्चे भी उसी के सामने बड़े हुए थे. मिसेज हिल का अपने बच्चों से भी गहरा लगाव था. वह उन बच्चों के बारे में सोचने लगा, जो इंगलैंड में बिना मां-बाप रहते होंगे.

* *

और तब उसे सहसा लगा कि वह मिसेज हिल को नहीं मार सकेगा. मिसेज हिल उसके सम्मुख सिर्फ मां के रूप में आ कर खड़ी हो गयी. वह एक मां को नहीं मार सकेगा. उस परिवर्तन के लिए स्वयं से वह घृणा कर उठा. उसने अपने उस व्यक्तित्व को पुन: उभारने का प्रयत्न किया, जो उस औरत से तीखी नफरत करता था लेकिन वह असफल रहा. उसने कभी उन्हें मां के रूप में देखा ही नहीं था.

इन क्षणों में उसे क्या हो गया है? वह जानता है कि वह हमेशा वैसी ही रहेंगी--- एक अनावश्यक अधिकार जमानेवाली, झूठा प्रदर्शन करने वाली स्त्री. और तभी उसे इस बात का भी एहसास हुआ कि उसका व्यक्तित्व विभाजित हो गया है, और शायद वह हमेशा वैसा ही रहेगा. वह दस वर्षों का संबंध एकाएक समाप्त नहीं कर पायेगा, यद्यपि वे वर्ष उसके लिए सिर्फ दर्द और अपमान के वर्ष थे. वह प्रार्थना करने लगा कि इस संसार में कभी अन्याय न हो और तब काले और गोरे के मध्य यह दूरी भी नहीं होगी और वह या कोई भी व्यक्ति इस प्रकार के मानसिक-संघर्ष में भी नहीं रहा करेगा.

अब वह क्या करे? क्या वह लड़कों को धोखा दे? वह वहां अनिश्चय की स्थिति में बैठा रह गया. काश, उसने उस स्त्री को मां के रूप में न देखा होता!

वह घर से बाहर निकल आया.

जोसुआ मुआंगी करुकी केन्या के उन साहित्यकारों में से हैं, जिन्होंने अफ्रीकी पारंपारिक मूल्यों और यूरोपीय सभ्यता से उनके टकराव को अपनी रचनाओं में रेखांकित किया है. करुकी की कहानियां अजीब-सी करुणा जगाती हैं.

चारों तरफ गहन अंधकार था, और वह स्पष्ट कुछ भी नहीं देख पा रहा था. आकाश के तारे भी मानों उसी के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे थे. तभी उसे एक प्रबल शक्ति ने मानों मिसेज हिल के मकान की ओर पुन: जाने को प्रेरित किया. उसने उन्हें बचाने का निश्चय कर लिया था.

समय बहुत कम था. वैसे भी देर हो चुकी थी और लड़के किसी भी समय आ सकते थे. अत: वह तेज भागने लगा. सड़क पर उसे कुछ पैरों के चलने की आवाजें आयीं. वह झाड़ी के पीछे छिप गया. जब वे लड़के आगे निकल गये, तो वह पुन: चलने लगा. फिर उसे अपने इस धोखे से नफरत हो गयी.

* *

अंत में पसीने से भरा हुआ, वह मिसेज हिल के घर तक पहुंचा. दरवाजा खटखटाता हुआ वह जोर-जोर से चीखने लगा---मेम साहब! मेम साहब!

मिसेज हिल अभी बिस्तर पर नहीं गयी थीं. वह बुरी तरह चौंक उठीं. उनके मस्तिष्क में विचारों का तांता छिड़ गया. दोपहर की बातचीत के पश्चात वह स्वयं को बहुत असुरक्षित अनुभव कर रही थीं. जोर्ज के जाते ही उन्होंने अलमारी से अपनी पिस्तौल निकाल ली थी, और वही इस समय उनके हाथ में थी. उन्हें तैयार रहना चाहिए. पति की मृत्यु से वे किस प्रकार अकेली रह गयी हैं!

अपने पुराने दिनों की याद करते हुए वे बार-बार आहें भर रही थीं. उसने, उसके पति ने और अन्य बाहर से आये व्यक्तियों ने इस जमीन पर अधिकार जमा कर, इसे निर्वासित किया है. जार्ज जैसे व्यक्ति अब, आपसी कबीलों के युद्ध की चिंता से मुक्त हो कर शांति से अपना जीवन बिता रहे हैं. उन्हें यूरोपियनों को धन्यवाद देना चाहिए. तो भी उसे वे राजनीतिज्ञ बिल्कुल पसंद नहीं, जो इन आज्ञाकारी और परिश्रमी लोगों को बिगाड़ने चले आये हैं. उन्हें गेस्ट्रोन्स की हत्या से भी बहुत धक्का लगा है. और फिर जब उन्हें इस सत्य का एहसास होता है कि वे इस घर में नितांत अकेली हैं, तो वे सोचती हैं कि उनके लिए अच्छा होगा कि वे कुछ दिनों के लिए नैरोबी अपने मित्रों के पास चली जायें.

लेकिन तब वे अपने लड़कों का क्या करें? क्या उन्हें यहां अकेला छोड़ दें? वे जोर्ज के बारे में सोचने लगीं. वह एक अजीब-सा लड़का है. क्या उसकी बहुत-सी पत्नियां हैं? क्या उसका बड़ा परिवार है? वह यह सोच कर आश्चर्य-चकित रह गयीं कि जार्ज उनके साथ इतने वर्ष तक रहा, तो भी, इन बातों के बारे में

नौकर को, बच्चों का पिता सोचते हुए बहुत अजीब-सी अनुभूति हो रही थी. फिर उन्होंने एक ठंडी आह भरी. यह एक गलती थी. अब भविष्य में वे इस बात का ध्यान रखेंगी.

* *

तभी उन्होंने दरवाजे पर दस्तक सुनी. उनका नौकर. उनका चेहरा पसीने से भर उठा. लड़का क्या कह रहा है? वे कुछ नहीं सुन सकीं. गैस्ट्रोन की हत्या की सारी स्थिति उनके सम्मुख स्पष्टता से खड़ी हो गयी. अब उनका अंत सामने है. जोर्ज अन्य डाकुओं के साथ उनकी हत्या का षड्यंत्र रच रहा था. वे कांपने लगीं और स्वयं को अशक्त महसूस करने लगीं.

लेकिन तभी उनके अंदर शक्ति मानो पुन: वापस लौट आयी. वे जानती थीं कि वे यहां अकेली हैं. वे शीघ्र ही दरवाजा तोड़ कर अंदर आ जायेंगे. नहीं, वे वीरता से मरेंगी. उन्होंने पिस्तौल को कस कर पकड़ लिया और दरवाजा खोल कर, एक फायर किया.

तभी उनके सिर में जोर से चक्कर आ गया. उन्होंने प्रथम बार एक आदमी को मारा है. वे स्वयं को अत्यंत अशक्त महसूस करने लगीं और रोती-रोती गिर पड़ीं—आओ और मुझे मार डालो! उन्हें यह नहीं पता था कि उन्होंने अपने ही रक्षक को मार डाला है. जोर्ज मर गया था.

अगले दिन वह समाचार सब अखबारों में छपा—'एक अकेली स्त्री ने पचास डाकुओं का वीरता से मुकाबला किया. सबसे आश्चर्य की बात तो यह कि उनमें से एक को मार भी डाला.'

मिसेज स्माईल्स और मिसेज हार्डी बधाई देनेवाली प्रथम महिलाएं थीं.

—हम कह रहे थे न कि सब बुरे हैं.

—वे सब बुरे हैं! मिसेज हार्डी ने स्वीकृति दी और मिसेज हिल चुप रहीं. सारी परिस्थिति उन्हें अभी तक भयानक लग रही थी. जितना ही वे उसके बारे में सोचतीं, उतना ही, वे चकित हो रही थीं.

वे क्षितिज में सूनी-सूनी निगाहों से देखती रहीं. फिर धीरे से एक आह भर कर बोलीं—मुझे लगता है, मैं जोर्ज को समझ नहीं सकी.

—इन सबको बेंतों से मारना चाहिए. मिसेज स्माईल्स उत्साह से बोलीं.

—सच ही सबको खूब मारना चाहिए मिसेज हार्डी ने स्वीकृति दी.

लेकिन शायद यह कभी कोई नहीं समझ सकेगा कि जोर्ज एक शहीद था. न ही कभी किसी को यह पता चल सकेगा कि मिसेज हिल को अंदर ही अंदर अत्यंत ग्लानि हो रही थी. □□□

(अनुवाद : इंदु रायजादा)

कांगो की लोककथा

खतरों से खेलने वाली

कबाइली सरदार की बेटी नार्मबिडे को उसके पिता ने बहुत-कुछ समझाया-बुझाया कि वह ब्याह कर ले, किंतु उसने कहा कि जब तक वह भयानक तथा रहस्यपूर्ण मानी जानेवाली लूआन नदी की यात्रा नहीं कर लेती, ब्याह की बात सोच भी नहीं सकती. और सखी-सहेलियों को ले कर वह नदी तट पर जा पहुंची.

अभी वे सब नदी की धारा में स्नान कर ही रही थीं कि उनके वस्त्र रहस्यपूर्ण ढंग से गायब हो गये. कपड़े वापस पाने के लिए वे दैत्य की स्तुति करने लगीं. धीरे-धीरे उनके वस्त्र नदी तट पर पुन: दिखने लगे. किंतु गर्विता नार्मबिडे ने कहा—मैं किसी दैत्य से भिक्षा नहीं मांगूगी! अभी उसने यह कहा ही था कि एक विकराल दैत्य प्रकट हुआ और उसे उठा ले गया.

लड़कियों ने भाग कर कबाइली सरदार को सारी बात सुनाई किंतु वहां पहुंचते ही उसे तथा उसके समूचे दल को वह दैत्य निगल गया. सोबाविली गड़रिये के दो सुंदर जुड़वां बालक भी उसके शिकार हो गये. गड़रिये ने घर आकर जब यह समाचार सुना तो दैत्य की खोज में निकल पड़ा. थोड़ी दूर जाने पर उसने दैत्य को एक खेत में पड़े देखा. सोबाविली ने छुरे से उसका गला काट डाला और सभी बाहर आ गये.

अब नार्मबिडे ने जिद पकड़ ली कि वह सुप्रसिद्ध सर्प-पुरुष से ही ब्याह करेगी. दुरूह यात्रा के बाद वह मनयोका के घर पहुंची, सर्प-पुरुष की जो माता थी. मनयोका उस कबाइली सरदार की पत्नियों में एक थी जिसके सात बेटे थे. जब मनयोका ने अपने एक सुंदर बालक को जन्म दिया तो अन्य उसे एक जंगल में छोड़ आये थे.

जिद्दी नार्मबिडे वहीं पास की झोपड़ी में रहने लगी. हर रात वह थाली में भोजन रखती और सबेरे उसे गायब पाती. एक रात को मध्य रात्रि में कोई झोपड़ी में घुसा और भोजन करने लगा. नार्मबिडे ने हाथ फैला कर उसे टटोला, मानो वह किसी सर्प की केंचुल हो. —क्या तुम सर्प-पुरुष हो? वह पूछ बैठी. —हां, यदि तुम मुझसे ब्याह कर लो जादू खत्म हो सकता है.

मनयोका भी खुशी से भर उठी. सरदार के पास जा कर उसने सारी कहानी सुनायी. उसने नार्मबिडे के पिता को बुला भेजा. वह भी दल-बल सहित आ पहुंचा. सर्प-पुरुष तथा खतरों से खेलनेवाली नार्मबिडे की धूमधाम से शादी हुई. □□□

फटा हुआ नकाब

• मैबल डोव डैंक्वे

क्वाम असांटे बहुत द्विविधा की स्थिति में था. उसने अपनी पत्नी की ओर देखा जो उसके बिस्तर के पास ही स्टूल पर बैठी हुई थी. उसी ने आवाज दे कर पत्नी को बुलाया था, और अब उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह बातचीत किस प्रकार आरंभ करे.

—अकोसुआ, यदि मैं तुम्हें अपना व्यापार आरंभ करने के लिए पचास पाऊंड दूं तो कैसा रहेगा? तुम पाउडर, सेंट, कपड़े का व्यापार करना पसंद करोगी? पत्नी कुछ नर्वस हो कर मुस्कराई. वैवाहिक जीवन के दस वर्षों के पश्चात, पति का एकाएक इतना कृपालु होना, उसे, घबराहट से भर गया था.

वह एक काले रंग की स्त्री थी लेकिन उसके नयन-नक्ष अत्यंत गढ़े हुए थे, और अपने पिरेड रापा और सिल्क के स्कार्फ में वह अत्यंत कमनीय लगती थी. उसके लंबे चेहरे पर सोने के लंबे-लंबे झुमके बहुत फब रहे थे. स्टूल पर बैठी, वह लंबी छरहरे बदन की युवती तीन बच्चों की मां थी, यद्यपि देखने में वह बिल्कुल लड़की-सी लगती थी. अपने ग्रामीण-कानून के अनुसार विवाह के पश्चात, उसने दस वर्ष तक अपने पति की जी-जान से सेवा की थी. वह पूर्ण रूप से पति के प्रति समर्पित थी. यह यहां का कानून है कि यद्यपि पुरुष को तो संपूर्ण अधिकार प्राप्त हैं, लेकिन स्त्री की स्थिति समाज में बहुत खराब है.

—क्या तुम पचास पाऊंड लेना पसंद करोगी? पति ने पुनः पूछा, मैं सौ भी दे सकता हूं. तुम मेरी एक बहुत अच्छी पत्नी रही हो.

क्या उस स्त्री की चेतना को वस्तुःस्थिति का एहसास होने लगा था? नहीं, उसने विचार, को झटके से परे हटा दिया.

वह ऐसा नहीं कर सकता.

क्वाम ने अपना गला साफ किया—उसे अपने हृदय के भार को हल्का करना ही होगा. क्या वह स्वयं नहीं समझ पा रही है कि अब यह वैवाहिक-संबंध रखना असंभव हो गया है?

एक कपड़े का व्यापार करने वाली स्त्री पहले तो ठीक थी. जब वह स्वयं जीवन में संघर्ष कर रहा था, वह एक पत्नी के साथ-साथ एक नौकरानी भी थी. और वह नम्र और सभ्य भी थी, लेकिन आदमी को परिवर्तन की आवश्यकता है. उसने अपनी दुमंजली बिल्डिंग बनवानी समाप्त ही की है, और वह क्लब का एक महत्वपूर्ण सदस्य भी हो गया है. उसकी एकेडमी ने उसे एक महत्वपूर्ण पद भी दे दिया है. साथ ही विश्वविद्यालय से उसने एक ऊंची डिग्री भी ले ली है. उसकी बहुत बड़ी महत्वाकांक्षा पूरी हो चुकी है, और वह अब अपनी जाति का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हो चुका है. अब वह टाऊन काउंसिल का मेंबर भी बनना चाह रहा है.

मन ही मन कल्पना करके कि उसे काऊंसिलर क्वाम असांटे, ओ. बी. ए, ए. एस. एस., कह कर बुलाया जा रहा है, वह मुस्करा उठा. अकोसुआ उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगी.

—अकोसुआ. . .मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि मैं एक लेडी से विवाह करने जा जा रहा हूं. तुम्हें सौ पाऊंड में दे दूंगा!

वह स्त्री चुपचाप बैठी रही.

—वह एक फ्रॉक पहनने वाली लेडी है. तुम थोड़ा बहुत तो पढ़ सकती हो, फिर भी मेरे मित्र तुम्हें अनपढ़ ही कहेंगे.

—क्या तुमने दस वर्ष पूर्व मुझसे विवाह करने से पूर्व अपने मित्रों से सलाह ली थी? उसकी आवाज शांत व ठंडी थी लेकिन वे शब्द बहुत कटु थे.

—यदि तुम बहस करोगी, तो मैं तुमसे इस बारे में कोई चर्चा नहीं करना चाहता, वह उठ कर कमरे में घूमने लगा.

—इस देश में कितने लोग हैं, जो एक स्त्री को सौ पाऊंड दे सकते हैं, तुम्हें कानून के अनुसार सिर्फ पच्चीस पाऊंड ही मिलना तय होता है. मैं सिर्फ दयावश ही तुम्हें इतना दे रहा हूं. तुम्हें कुछ तो कृतज्ञ होना चाहिए. अकोसुआ ने उसकी ओर देखा. उन आंखों में अपरिमित दैन्य था.

—मैं बच्चों को अचिमोटा कालेज में डाल दूंगा. मैं सिर्फ समाज में अपना ऊंचा स्थान बनाये रखने के लिए ही ऐसा कर रहा हूं. मुझे गवर्नमेंट हाऊस व अन्य मुख्य जगह आमंत्रित किया जायेगा. . .कुछ तो कहो, अकोसुआ!

—मुझे सिर्फ यही कहना है कि तुम्हें तुम्हारे पच्चीस पाऊंड, पचास पाऊंड या सौ पाऊंड मुबारक हों. मुझे कुछ नहीं चाहिये.

—क्या!—क्या! सुनो, ऐसे क्रोध में कोई कार्य न करो.



—यदि तुम मुझे स्पर्श करने का प्रयत्न करोगे तो मैं तुम्हारे चेहरे पर जोर से एक चांटा मार दूंगी.

—क्या तुम अपने पति को, अपने मालिक को मारोगी? क्या तुम पागल हो गई हो?

—मैं यह मकान छोड़ कर जा रही हूं.

—यदि तुम बिना मेरी सम्मति के मेरा घर छोड़ कर मुझे समाज में अपमानित करने का प्रयत्न करोगी तो तुम्हारी लिए ठीक नहीं होगा. मैं तुम्हारे जैसी जिद्दी औरत के साथ वैसे भी नहीं रहना चाहता. आखिर मैंने कौन-सा पाप कर दिया? मैं सिर्फ समाज का एक डीसेंट और आदरणीय सदस्य बनना चाहता हूं. यदि तुम मेरी आज्ञा के बिना मेरे घर से जाओगी, तो मैं तुमसे एक-एक पैसा क्लेम करूंगा जो मैंने इन दस वर्षों में तुम पर खर्च किया है. सिर्फ वह ही नहीं, मैं तुम्हारे पिता और संबंधियों को दिये गये सब उपहार भी वापस क्लेम करूंगा. तुम्हें हमारे ग्रामीण-कानून के सब नियम विदित ही हैं.

—हां, मुझे तुम्हारे सब ग्रामीण कानून मालूम हैं, जो स्त्री को तो जीवित ही कब्र में गाड़ देते हैं, और तुम पुरुष, उस कब्र पर खड़े हो कर नृत्य करने में मशगूल रहते हो.

—तुमने निबटना एक असंभव कार्य है, कहते हुए वह क्रोध में बाहर निकल गया.

अकोसुआ अपने कमरे की ओर भागी और कमरा बंद करके, फूट-फूट कर रोती हुई अपने बिस्तर पर गिर पड़ी. उसका दिल टूट गया था.

—मैं यहां से चली जाऊंगी, चली जाऊंगी, वह धीरे-धीरे सिसकियों के बीच बुदबुदायी. उसकी मां बचपन में ही मर गई थी. लेकिन उसका पिता कोका के एक संपन्न व्यवसायी थे. वह अपनी पुत्री से अत्यंत स्नेह करते थे, जिसने अपने लिए एक 'स्कॉलर' पति का चुनाव किया था.

वे क्या कहेंगे? लेकिन रोने से तो काम नहीं चलेगा मुझे कुछ करना चाहिये. वह बिस्तर से उठी, उसकी आंखें बुरी तरह सूजी हुई थीं. उसने अपना और बच्चों का सामान बांधा.

बच्चे स्कूल से आते ही होंगे. कल जैसे ही ये कूमासी रवाना होंगे, हम पिता के घर चले जायेंगे.

★ ★

कुमासी के लिए ट्रेन में बैठे-बैठे क्वाम अभी तक बहुत बुरे मूड में था और सोच रहा था, मैंने इस औरत का दिमाग सही रास्ते पर ला दिया. इस दुनिया का क्या होगा यदि एक कपड़ा बेचने वाली औरत इस प्रकार का व्यवहार करेगी, क्योंकि एक सज्जन और स्कॉलर व्यक्ति एक फ्रॉक पहनने वाली आधुनिका से चर्च में विवाह करना चाहता है.

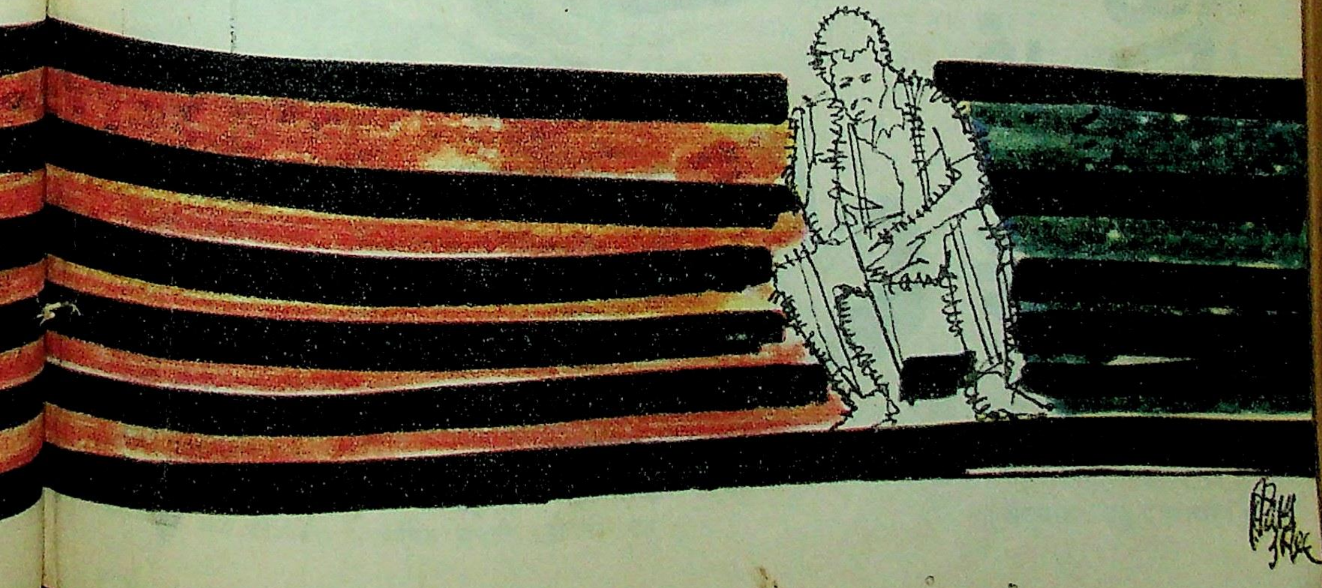
क्वाम असांटा, अन्य पुरुषों की भांति ही अपनी गलत धारणाओं पर आवश्यकता से अधिक विश्वास करता था. पश्चिमी सभ्यता ने उनका दिमाग खराब कर दिया था यदि कोई स्पष्टवादी मित्र उसे यह स्पष्ट बता देता कि न तो वह एक सज्जन-पुरुष है, और न ही एक क्रिश्चियन है, और अकोसुआ उससे कहीं ज्यादा सभ्य है तो शायद वह हैरान रह जाता. लेकिन दुर्भाग्यवश उनका कोई सच्चा मित्र नहीं था, अतः वह अपने बारे में बहुत ऊंची धारणा रखता था.

तीन दिन पश्चात आकरा लौटने पर उसके भतीजे ने उसे स्टेशन पर ही बताया कि उसकी पत्नी बच्चों को ले कर अपने पिता के पास चली गई है.

क्वाम अत्यंत क्रोधित हो उठा. उसने अपने ससुर को तीन तार भेजे कि वे शीघ्र ही अकोसुआ को वापस भेज दें. लेकिन कोई उत्तर नहीं आया. फिर उसने दो अधेड़ स्त्रियों को उसे लाने भेजा, लेकिन वे फिर उसको लिए बिना ही वापस लौट आयीं.

उसके मित्रों ने, सिगार और शराब पीते हुये उसे सांत्वना दी — तुम क्यों चिंता करते हो ! कपड़ा बेचने वाली औरतें बहुत हैं. और यदि वह फ्राक पहिनने वाली औरत भी हो, तो भी क्या फर्क पड़ता है ! एक औरत की हस्ती ही क्या है!

—मैं अकोसुआ का व्यवहार बिल्कुल समझ नहीं




उत्साह भरा जीवन
नेस्कैफे® के ताज़ा और स्फूर्तिदायक स्वाद से
नेस्कैफे®
एकमात्र इन्स्टैन्ट कॉफी
जो १०० % शुद्ध कॉफी से
बनी है
NESCAFE
instant coffee
दुनिया भर में सबसे ज़्यादा बिकने वाली
इन्स्टैन्ट कॉफी
NSC.2/76 HIN

पा रहा हूं. मैं तो उसे सिर्फ छेड़ ही रहा था कि मैं शायद एक आधुनिक स्त्री से शीघ्र ही विवाह कर लूं. लेकिन वह तो सिर्फ मजाक की बात ही थी. यदि वह नहीं लौटी, तो मुझे वास्तव में ही विवाह करना पड़ेगा.

क्वाम असांटे ने, तीन सौ पचास पाउंड की एक लंबी लिस्ट बनाई. यह धन, इन दस वर्षों में उसकी पत्नी पर खर्च हुआ था, और विवाह में उपहार दिये गये थे.

आखिर अकोसुआ एक स्त्री है, और स्त्रियां हमेशा ही कमजोर होती हैं. मैं एक पत्नी को अकवापिन में और दूसरी को आकरा में रख सकता हूं. हमारे यहां एक व्यक्ति के लिए करीब आठ लड़कियां तक होती हैं. यदि मैं एक से ही विवाह करूंगा तो अन्य सात लड़कियों का क्या होगा? सोच कर वह स्वयं को सांत्वना देने लगा.

* *

माथ एरीटी, जो क्वाम की दूसरी पत्नी बनने वाली थी, एक सुंदर लड़की थी, काफी खुश-मिजाज और मोटी. उसे क्वाम असांटे को पाने पर बहुत गर्व भी था. उसने अपना नया मकान बनवा कर फर्निश कर लिया था और मार्था उसी में रह रही थी. वास्तव में वह आकरा की एक भाग्यशाली लड़की थी. कम-से-कम वह ऐसा ही समझती थी. लेकिन क्या उसने कभी उस लड़की के बारे में सोचा था जिसकी जगह वह लेने जा रही थी?

वह दिन आ गया. होली ट्रिनिटी चर्च मेहमानों और संबंधियों से भर गया. क्वाम और मार्था के चेहरे पर अत्यंत तृप्ति और आनंद का भाव था. सर्विस के बाद रोजर क्लब में एक बहुत शानदार रिसैप्शन का आयोजन हुआ. व्हिस्की, शैंपेन, के प्याले खनखना उठे. मित्रों और संबंधियों के अनेक बधाई तार आये. उनमें से कुछ तो पढ़ कर सुना दिये गये. बाकी कल पढ़ेंगे, यह निश्चय किया गया.

अंत में आमंत्रित सज्जन, नव-विवाहित जोड़े से हाथ मिला कर विदा होने आरंभ हुए. वह एक लंबी व शुष्क सेरेमनी थी, लेकिन वह शीघ्र ही समाप्त हो गयी और वे दोनों कार से घर लौट आये.

जब उन्होंने स्वंय को अकेला पाया, तो दस बज चुके थे. जल्दी-जल्दी डिनर ले कर मिसेज असांटे मुश्किल से ही अब अपनी आंखे खोल पा रही थी. वह सीधे बिस्तर की ओर चल दी. मिस्टर असांटे कुछ देर बरामदे में ताजी हवा खाने बैठ गये, शायद उन्हें भी कुछ झपकी आ गयी थी. सारे दिन की थकावट और उत्तेजना उन पर भी हावी थी. अचानक वह चौंक कर जग गये. क्या उन्होंने किसी के कदमों की आहट सुनी थी? वह तेजी से ड्राईंग रूम की ओर मुड़े.

क्या यह मार्था ही यहां दुल्हन के वेश में, सैटी पर सिर झुकाये बैठी है —— मार्था डार्लिंग, क्या तुम अभी तक बिस्तर पर नहीं गयीं?

उसने अपना सिर उठाया. असांटे ने जोर से अपनी पलकें झपकाईं. आंखें मलीं. अकोसुआ उसकी ओर शर्माई हुई दृष्टि से देख रही थी. उसे वह दृष्टि याद हो आई, वह दृष्टि उसे बार-बार आकर्षित करती रही थी. वह

घाना की कथा-लेखिका मेबल डोव डैंक्वे ने अफ्रीकी महिला के मुक्ति-प्रयासों को अपनी कहानियों में रेखांकित किया है. मानवीय रिश्तों और बाहरी शक्तियों द्वारा उन रिश्तों को तोड़ने की कोशिश को भी उन्होंने बड़ी खूबी से चित्रित किया है.

● ● ●

उसकी ओर मंत्र-मुग्ध-से बढ़े.

अकोसुआ तुम इस समय यहां क्या कर रही हो? उसने कुछ उत्तर नहीं दिया, लेकिन वह सैटी से उठ खड़ी हुई. अपने सफेद ब्रोकेड के सिल्क के सफेद गाऊन में वह अत्यंत खूबसूरत लग रही थी. लंबा ब्राईडल-पर्दा ओरेंज रंग के फूल से नीचे रंगा हुआ था और नीचे तक लटक रहा था. वह उससे दूर जाने लगी. वह उसकी ओर तेजी से बढ़ा. उसके चेहरे पर एक व्यंग्यभरी मुस्कान थी, और उसके कदम और तेज हो उठे. असांटे की रगों में खून तेजी से भागने लगा.

कितनी गजब की सुंदर लग रही है! क्या सच ही उसने उस साधारण-सी लड़की के लिए अपनी रूपसी पत्नी को छोड़ दिया था! उसने अपनी बाहें आगे फैलाई.

—अकोसुआ, मुझे क्षमा कर दो. वह उसकी ओर देख कर मुस्कराई. वह उसकी ओर पुन: बढ़ा, वह और तेजी से आगे बढ़ गयी. बीच की मेज के चारों ओर वे दोनों तेजी से चक्कर लगाते रहे. अंत में उसने उसके नकाब के पिछले हिस्से को कस कर पकड़ लिया. मेज की टांगें उलट गयीं. उसका माथा, मेज के किनारे से जोर से टकराया और वह गिर पड़ा.

असांटे का छोटा भाई, सुबह-सुबह आया और उसने हाथ में फटे हुए नकाब के एक टुकड़े को हाथ में कस कर पकड़े हुए दूल्हे को सिटिंग-रूम में पाया. उसके चेहरे पर प्रसन्नता का भाव था. शीघ्र ही डाक्टर को बुलाया गया, डाक्टर ने बताया कि काफी पहिले ही उसकी मृत्यु हो चुकी थी. सारे घर और पड़ोस में कोहराम मच गया.

वह फटा हुआ सफेद नकाब का टुकड़ा कहां से आया, यह कोई अंदाज नहीं लगा पाया क्योंकि मिसेज असांटे का नकाब कहीं से फटा हुआ नहीं था.

—हम कल बधाई के तार पूरे नहीं पढ़ पाये थे, मैं सुबह वही खत्म करने आया था, छोटा भाई बोला 'उसकी आंखे आसुंओं से भरी हुई थी. उसने जेब से सब तार निकाले.' डाक्टर औपचारिक ढंग से उन्हें देखने लगा. वह यकायक चौंक पड़ा.

—क्या मिस्टर असांटे एक विवाहित व्यक्ति थे?

—हां, वे गांव की प्रथानुसार एक कपड़ा बेचने वाली से विवाहित थे. छोटे भाई ने उत्तर दिया.

—अच्छा ! तो एक मुख्य तार है, जो अक्वापिन से आया है, डाक्टर ने अपना गला साफ करते हुए कहा. यह कल चला था और इसमें लिखा है— तुम्हारी पत्नी अकोसुआ का आज सुबह दस बजे देहांत हो गया. शीघ्र आओ. □□□

(अनुवाद : इंदु रायजादा)

भारतीय भाषाओं की प्रथम मौलिक कथाएं और आद्यकथाकार

(१२)

किसी भी भाषा की पहली कहानी की खोज अपने आप में एक महत्वपूर्ण और रोचक कार्य है. इस महत्वपूर्ण खोज के लिए 'सारिका' ही पहल कर रही है. पूर्व के अंकों में मलयालम, गुजराती, बंगला, तेलुगु, डोगरी, कश्मीरी, सिंधी, उड़िया, पंजाबी, मराठी और कन्नड की प्रथम मौलिक कहानियां आप पढ़ चुके हैं. इस अंक में दी जा रही है-- असमिया की प्रथम मौलिक कहानी. जब यह क्रम समाप्त होगा, तब आप स्वयं ही निर्णय ले सकेंगे--एक कि भारतीय भाषाओं में से पहली आधुनिक कहानी किस भाषा के पास है, और दो कि क्या कहानियां सचमुच पश्चिम से आयी थीं?

प्रथम मौलिक असमिया कहानी

कन्या: एक विवेचन • नवारुण वर्मा

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा आधुनिक असमिया कहानी के जनक हैं. उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक से उन्होंने कहानी लिखना आरंभ किया था तथा उसे पूर्ण पल्लवित व विकसित करने में अपना महान मार्गदर्शन दिया.

प्रसिद्ध कथाकार योगेशदास ने बेजबरुवा की कहानी-कला के संबंध में लिखा है--'यह देखा जाता है कि पश्चिमी कहानी-साहित्य ने सबसे पहले स्पष्ट रूप धारण किया था उन्नीसवीं सदी के अंतिम भाग में जबकि बेजबरुवा का पहला कहानी-संग्रह 'सुरभि' बीसवीं सदी के प्रथम दशक में सन् १९०९ ई. में प्रकाशित हुआ. . . . वास्तव में पश्चिमी कहानी के रूप ग्रहण और असमिया कहानी के आविर्भाव के मध्य व्यवधान बहुत ही कम समय का है. अंग्रेजी और बंगला में कहानी का आभास मात्र पाकर बेजबरुवा ने असमिया में भी उसका प्रयोग कर डाला. . . . . बेजबरुवा की प्रतिभा किसी भी विषय में अंधानुकरण की नहीं थी, कुछ प्रभावित होने की बात अलग है.'

कुछ आलोचकों के विचार से लोक-कथाओं के संग्रह और पुनर्लेखन के जरिये ही उन्हें कहानी-लेखन की प्रेरणा प्राप्त हुई थी. कुछ लोगों का यह भी कहना है कि बेजबरुवा ने लोक-कला और कहानी के लेखन में घाल-मेल कर दिया है. परंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि उस समय तक कहानी-लेखन की कोई विशिष्ट शैली ही नहीं बन पायी थी. अतः बेजबरुवा के समक्ष केवल कथा-लेखन की समस्या ही नहीं अपितु कला-शैली के निर्माण का प्रश्न भी था. उनकी कहानियों में लोक-कथाओं की शैली का कुछ प्रभाव अवश्य है पर उनकी कहानियों ने ही आगे चलकर असमिया कहानी-कला का मार्ग प्रशस्त किया, इसमें संदेह नहीं. इससे यह भी सिद्ध होता है कि असमिया कहानी का उन्मेष मूलतः लोक-जीवन से ही हुआ है.

प्रमुख रूप से हास्य-व्यंग्यात्मक होने पर भी बेजबरुवा की कहानियों में समकालीन समाज-चित्र बड़े ही मार्मिक ढंग से उभरा है. सामाजिक-पारिवारिक त्रुटियों पर उन्होंने इन कहानियों में मीठी चुटकियां ली हैं. असमिया उच्च वर्ग, असमिया किसान-समाज, कलकत्ते के बंगाली मध्यवर्ग तथा उड़ीसा की जनजातियों के समाज का विश्वसनीय चित्रण उनकी कहानियों में प्राप्त होता है. उनकी 'भोम केरेला, आमालै नेपाहरिब', आदि कहानियों में सामाजिक प्रवंचना के रूप हैं, 'धर्मध्वज फयसलानबीस' जैसी कहानियों में जातिभेद की कट्टरता पर प्रहार है, वहीं 'भदरी' में पारिवारिक प्रेम-संबंध का चित्रण. 'मुक्ति' कहानी में बाल-मनोविज्ञान की करुणापूर्ण झलक है तो 'रतन मुंडा' उड़ीसा के जन-जाति-समाज की सरलता का करुण चित्र.

प्रसिद्ध आलोचक श्री त्रैलोक नाथ गोस्वामी ने अपनी 'आधुनिक गल्प-साहित्य' पुस्तक में लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा की कहानी-कला संबंधी विशद चर्चा करते हुए लिखा है--'असमिया-समाज के एक वर्ग के लोगों में जो खामियां हैं, पाखंड-आडंबर हैं, उनके प्रति अधिक आकर्षित होने के कारण ही बेजबरुवा की कहानियों में जैविक और आर्थिक समस्याओं के चित्रण का प्रयास नहीं है. . . . पैने वाक्य वाणों से एक वर्ग के लोगों को घायल करने की बजाय उनकी खामियों को रस-घन स्थिति में प्रस्फुटित कर और कभी-कभी अतिरंजित कर वे हमें हंसाया करते हैं. और पाखंड-आडंबर के स्वरूप का मुखौटा भी खोलते चलते हैं. . . जीवन की जटिलताओं, अनुभूति की गहराई, मानव की क्षुद्रता और महत्व को कहानियों के जरिये अभिव्यक्त करना ही यद्यपि उनका सर्वोपरि आदर्श नहीं है तथापि उनकी कहानियां रसीली हैं, मनोग्राही हैं.'

साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने अपनी महान् प्रतिभा द्वारा प्रथम आधुनिक असमिया कहानी को जन्म दे, न केवल असमिया कहानी-साहित्य की नींव

डाली, बल्कि उसे पल्लवित भी किया, जिसके आधार पर आज की असमिया कहानी अपनी विशिष्ट सत्ता बनाये हुए समृद्धि के शिखर की ओर अग्रसर है.

'कन्या' लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा की सर्वप्रथम प्रकाशित आधुनिक कहानी ही नहीं, असमिया साहित्य की भी सर्वप्रथम आधुनिक कहानी है. असम के प्रसिद्ध साहित्यकार अध्यापक नंद तालुकदार से प्राप्त सूचना के अनुसार बेजबरुवा ने इस कहानी की रचना सन् १८९१ ई. में की थी और यह सर्व प्रथम 'जोनाकी' मासिक-पत्र में प्रकाशित हुई. (संबाद पत्रर रद्द कांचलीत असमीया साहित्य – नंद तालुकदार) सर्वप्रथम कहानी होने पर भी इसमें प्रकृति का रमणीक वातावरण जैसा मनोरम बन कर उभरा है, तथा प्रेम के अनजाने रहस्य का जो मार्मिक चित्रण है, वह वास्तव में बेजोड़ है. □□□

असमिया आद्यकथाकार : लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा



लक्ष्मीनथ बेजबरुवा का जन्म पुण्य-प्रसू लोहित की रम्य भूमि असम के एक कुलीन परिवार में हुआ.

असम में जब अंग्रेजी राज्य कायम हुआ, तब अंग्रेज सरकार ने उनके पिता दीननाथ बेजबरुवा को मुंसिफ के पद पर नियुक्त किया. नैसर्गिक सौंदर्य से पूर्ण असम के विभिन्न स्थानों में दीननाथ बेजबरुवा का तबादला होता रहता था. उन्हीं यात्राओं में बालक लक्ष्मीनाथ का साक्षात्कार जहां असम भूमि की अतुलनीय नैसर्गिक सुषमा से हुआ, वहीं विभिन्न जन-समुदायों से मिलने-जुलने का, उनके चरित्रों का अवलोकन करने का अवसर भी प्राप्त हुआ. इंट्रेंस पास करने के बाद उन्हें उच्च शिक्षा हेतु कलकत्ता भेजा गया. विद्यार्थी-जीवन में ही असमिया भाषा के विकास की उत्कट अभिलाषा उनके मन में जग उठी थी और कलकत्ते में ही उन्होंने कुछ साथियों के साथ 'असमिया भाषा उन्नति साधिनी सभा' की स्थापना की थी, जिसने आगे चल कर भाषा-साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये थे. कलकत्ते में उनकी भेंट चंद्रकुमार आगरवाला से हुई जिन्होंने सन् १८९० ई. में वहीं से असमिया मासिक 'जोनाकी' निकाला. लक्ष्मीनाथ प्रारंभ से ही इस पत्र के साथ घनिष्ठ रूप से संबंधित रहे. तीसरे साल 'जोनाकी' का संपादन-भार भी उन्हीं के कंधों पर आ पड़ा था.

बाद को लक्ष्मीनाथ उड़ीसा के संबलपुर में जाकर स्वतंत्र रूप से व्यापार करने लग गये थे. व्यापार के साथ-साथ उनकी साहित्य-साधना भी निर्बाध रूप से चलती रही.

सन् १८९१ ई. में रवींद्रनाथ ठाकुर की भतीजी प्रज्ञासुन्दरी देवी से उनका विवाह हुआ.

उन्होंने 'कृपावर बरबरुवा' नाम के एक ऐसे चरित्र की सृष्टि की जो हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में बेजोड़ है. लक्ष्मीनाथ की रचनाएं मूलतः हास्य-व्यंग्य प्रधान हैं. परंतु उनकी प्रतिभा ने कविता, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि साहित्य की हर विधा में अपना चमत्कार दिखाया था. उनकी इस पहली साहित्य-साधना के फलस्वरूप सन् १९२४ ई. में उन्हें 'असम साहित्य सभा' के अध्यक्ष के रूप में सम्मानित किया गया. सन् १९३८ ई. के मार्च महीने में डिब्रूगढ़ में आपका देहांत हुआ.

असमिया संस्कृति के महान उन्नायक महापुरुष शंकरदेव तथा माधवदेव के संबंध में आपकी कृति 'श्री शंकर देव आस श्री माधवदेव' विशिष्ट शोधपूर्ण जीवनी मानी जाती है. असम इतिहास की पृष्ठभूमि पर आधारित 'चक्रध्वज सिंह' 'बेलिमार' और 'जयमती कुंवरी' उनके विशिष्ट नाटक हैं. उन्होंने असम के जातीय संगीत 'ओ मोर आपोनार देश' के अलावा अनेक उद्बोधक राष्ट्रीय कविताओं की रचना की. उन्होंने असम की लोक-कथाओं का नवीन ढंग से पुनर्लेखन कर प्रकाशित किया था. 'जुनुका' 'साधुककार कुकि', 'बुढ़ी आइर साधु' आदि आपके लोक-कथा संग्रह हैं. 'पद्म कुंवरी' प्रसिद्ध उपन्यास है. □

प्रथम मौलिक असमिया कहानी

कन्या

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा

कुछ खास काम से कुछ दिनों के लिए मुझे प्रवास में रहना पड़ा. प्रवास न कह कर उसे वनवास कहना ही उचित होगा. हमारे उस निवास-स्थान के चारों ओर विशाल-विशाल वृक्ष, पर्वत और कोयले से काले वर्ण के कोल लोगों के छोटे-छोटे घर थे.हां, घर कहने से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वे हमारे-तुम्हारे जैसे घर थे—झोपड़ियां या कुटियां. वे भी असम के गरीब लोगों या भिखारियों की झोपड़ियों जैसी होंगी, ऐसा समझना गलत होगा. पेड़ की चार-पांच डालियां खड़ी कर लगभग चार-चार हाथ लंबे दोछत-- जैसे बना उस पर कुछ फूस बिखर दो, बिना दीवार दोनों ओर की छतों को ही जमीन से लगा कर दीवारों का काम लो, फिर मुंडर पर से आने-जाने की राह बना लो, तो देखोगे कि पती-पत्नी, बेटे-बहू और बाल-बच्चों वाले एक परिवार को रहने लायक कोल लोगों की एक झोपड़ी तुमने बना डाली हैं.

हमारे मकान के नजदीक से ही एक छोटी-सी पहाड़ी नदी हहराती हुई चट्टानों से होकर बहती चली जा रही थी. नदी का नाम था, कन्या. बड़ा मीठा-सा नाम. यह नाम या तो किसी कवि का दिया हुआ था या नदी ने ही अपने गुणों से आम अकवि लोगों के हृदयों में कविता की लहर जगा कर बलपूर्वक यह प्राप्य नाम रखवा लिया था. कन्या के गर्भ में छोटे-बड़े अनेक पत्थर थे. इन पत्थरों पर पानी की धारा से दिनरात लगातार हर-हर की आवाज गूंजती रहती. लगभग आधे मील की दूरी से ही, रुलाई की भांति वह विषाद-सूचक हर-हर की आवाज कानों में आने लगती, जिसे सुन कर मेरा मन बन-बैरागी बन कर कहीं चला जाना चाहता. दोनों ओर की न जानें किस आदिम युग के विशाल पेड़ों की दो कतारें. लगता था, नदी को आलिंगन किये हुए, रुलाई सुन-सुन कर संवेदना सूचक जल-बिंदुओं से उस शोक में सहानुभूति प्रकट कर रही हैं. विश्व-नियंता के राज्य में इस मर्मभेदी शोक का और हृदयस्पर्शी सहानुभूति का तात्पर्य क्या है, भला हम क्या समझेंगे? परंतु जहां ऐसी विशुद्ध सहानुभूति मिले, वहां तो रो कर भी सुख है. सुबह-शाम अवकाश के समय मैं कन्या के तट पर ही गुजार देता, बड़ा अच्छा लगता. वहां मेरे खासकर दो काम रहते. पहला लाल, काले, सफेद, नीले आदि विभिन्न रंगों के पत्थर इकट्ठे करना. दूसरा, तट पर के एक पेड़ की जड़ पर अकेले बैठे कन्या की वह रुलाई सुनना. इतने दिन बाद आज भी उन दोनों कामों और कन्या के उस तट की याद आने पर छाती हनहना उठती है.

मेरे उल्लिखित दोनों कार्यों में किसी-किसी दिन एक मित्र आ कर साथ जुट जाते. मित्रवर कुछ दुनियादार और खुशमिजाज आदमी थे याने इस दुनिया में खा-पहन कर मानवाभिमख होने में जैसा होना चाहिए, बिलकुल उसी प्रकार के. कविता का फेन खा कर जिंदगी भर 'उफ्-उफ्', 'आह आह' करते बिताने वाले न थे. किसी को कभी कविता करते देखते तो उससे दो-एक मजाकिया शब्द का प्रयोग कर हास्यरस की आवतारणा किये बगैर वे रहते न थे. अगर किसी पेड़ का सौंदर्य दिखा कर उनसे कोई बात कही जाये, तो वे जवाब में वह पेड़ लंबाई में कितने हाथ है, उसका घेरा कितने हाथ का है, और काटकर चीरने पर उससे कितने खंभे और कितने तख्ते निकलेंगे तथा उनका मूल्य कितना होगा, आदि हिसाब-किताब काव्य-रस का दशाह-श्राद्ध कर बैठते.अगर कभी कोई काला पत्थर चुन कर उन्हें दिखा-कर कहता, 'अः, देखिये न, कितना सुंदर है' तो वे उसे तोड़ कर पिघलाने पर उसमें कितना लोहा या अन्य धातु निकलेगी, इसका हिसाब लगा कर बात खत्म कर देते. एक दिन एक बढ़िया-सा काला पत्थर उन्हें दिखाते हुए मैंने पूछा—भला यह देखने में इतना चिकना-सा काला पत्थर बन कैसे जाता है? उनका जवाब था—इन काले-काले लोगों को देख रहे हो न? मरने पर इनकी हड्डियां और मांस टुकड़े-टुकड़े होकर ही ये पत्थर बन जाते हैं. मैं पत्थर ढूंढ़ता, चुनता रहता; वे भी मेरे साथ साथ ढूंढ़ा करते, मगर कहते कि उनका उद्देश्य अलग है. वे तो पत्थर नहीं ढूंढ़ते; वे तो ढूंढ़ा इसलिए करते हैं कि कहीं कोई हीरा या अन्य बहुमूल्य पत्थर ही मिल जाये!

जिस पेड़ की जड़ पर बैठ, मैं अपना दूसरा काम करता रहता हूं, उससे लगभग चालीस हाथ दूर नदी का मोड़ था. वहीं लगभग बीस साल का एक नौजवान कोल लड़का आकर हर रोज दिन ढलने से लेकर शाम होने तक बंसी से मछली पकड़ा करता. वह रोज बंसी डाले रहता जरूर, मगर मैंने किसी भी दिन उसे एक भी मछली पकड़ते नहीं देखा. नदी में मछलियां न हों, ऐसी बात नहीं, या बंसी में मुंह मारने की उनकी आदत न हो, ऐसी बात भी नहीं. दूसरे लोगों के लड़के तो उसी नदी में बंसी से झुंड की झुंड मछलियां पकड़ कर मौज से खाया करते थे. असल बात है, हमारा वह लड़का बंसी लगाता था पानी में मगर आंखें लगाये रहता नदी के उस पार. मछलियां अपने अवसर के मुताबिक आकर बंसी को मुंह मारतीं, चारा खींचने का व्यायाम या खींचातानी भी करतीं, आखिर तक बंसी का चारा भरपेट खाकर भूख मिटा अपने घर लौट जातीं. पर बंसी लगाने वाले को पता नहीं चलता. बंसी का मालिक तो सिर्फ नदी के उस पार नजर लगाये किसी स्वप्नपुरी में चक्कर लगाया करता.

उस पार आमने-सामने ही पानी भरने का घाट था. एक किशोरी कृष्णवर्णी कोल बाला नित्य उसी समय बगल में घड़ा लिये पानी भरने आया करती. यही काला चुंबक हमारे काले कोल नौजवान की आंखों को उस पार ले जा कर खींचे रखता. कोल-सुंदरी पानी लेने आती दिन ढले ही, पर शाम हो जाने पर भी उसके घड़े की धुलाई पूरी नहीं हो पाती. उसके उस मिट्टी के घड़े के साथ मैल का इतना गहरा प्रणय क्यों था, पता नहीं. उसे घिस-मांज, धो-धाकर किसी भी प्रकार से घड़े से मैल की काट मिटा नहीं पाती.

खैर, इस मछली पकड़ने वाले और उस पानी भरने वाली में कभी एक भी बात की अदला-बदली हुई हो, ऐसा तो दिखाई नहीं पड़ा था. देखने में सिर्फ इतना ही आया था—इस ओर यह बंसी की डंडी लिये आसमान से टपके आदमी जैसा एक टक आंखें खोले रहता. उधर वह रेत से घिस-घिस कर बार-बार घड़ा धो तिरछी नजरों से इसकी तरफ देखती, समय बिताया करती थी.

इसी प्रकार कुछ दिन बीते. यही लीला नित्य चला करती. कन्या नदी के किनारे जाने के मेरे कामों की तालिका में यह लीला-दर्शन कार्य भी तीसरा स्थान-युक्त हो गया.

एक दिन हम तीनों अपने-अपने नित्यकर्म में जुटे हुए थे, तभी देखा कि वह कोल नौजवान भयंकर रूप से चौंक कर, हाथों से बंसी की डंडी फेंक, झम्म से उस नदी में गिर पड़ा. इसका कोई मतलब समझ न पाकर मैं क्षण भर देखता रहा. देखा, वह ढका-ढक पानी पीता हुआ डूबा जा रहा था. उन्हीं कपड़ों में दौड़ा जाकर मैंने भी तुरंत पानी में छलांग लगा दी. परंतु जब तक मैं पानी में जा पड़ा, तब तक तो वह नीचे चला गया था. लगभग दो मिनट खोजने के बाद उसे पा कर लस्त-पस्त बड़ी तकलीफ से उसे किनारे ले आया. मुड़ कर देखा, चार-पांच आदमी मुझे उस काम में मदद देने हेतु दौड़े आ रहे हैं. कुछ ही समय में वहां कितने ही लोग आकर इकट्ठे हो गये. दौड़ते-धूपते, रोते-चीखते उसके मां-बाप भी पहुंच गये. चीख-पुकार रोने-पीटने का कोलाहल छा गया.

कितने शोक की बात हो गयी थी! सब लोगों के नाना प्रकार के प्रयत्न करने के बावजूद उसे होश में नहीं ला पाये. उसके शरीर रूपी पिंजड़े से प्राण-पक्षी उड़ कर भाग गया.

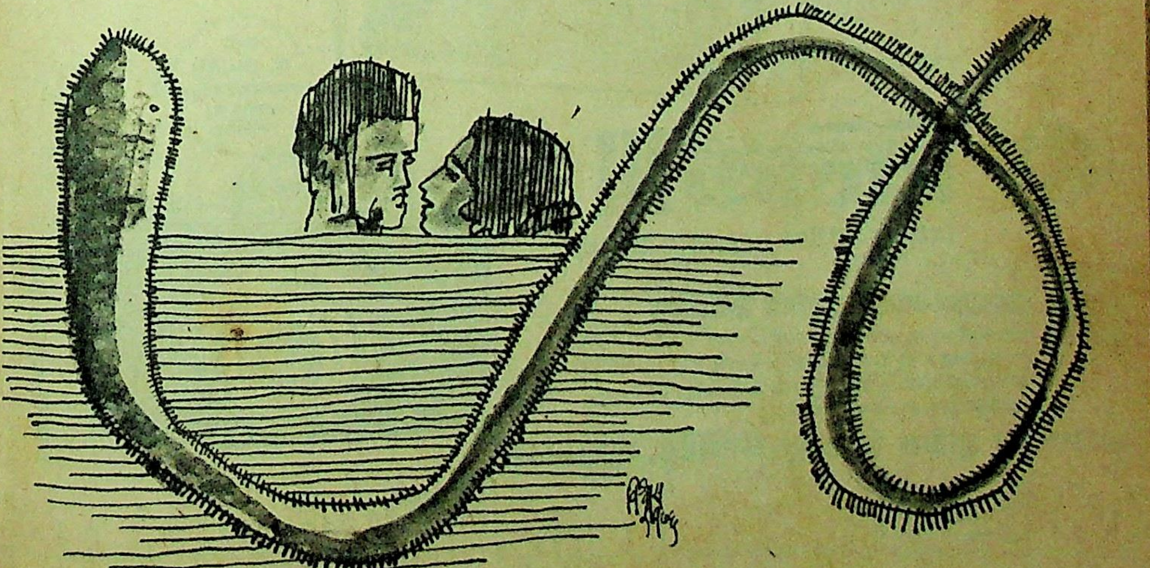
पर वह इस तरह अचानक चौंक कर पानी में गिर क्यों पड़ा, इस बात का पता लगाने गया तो दिखाई पड़ा कि वह तट पर जहां बैठा नित्य बंसी डाला करता था, वहीं एक भयानक अजगर जमीन में दबा पड़ा है. उस सांप के शरीर पर मिट्टी जम कर घास उग आयी थी. वह लड़का नित्य उसी सांप पर बैठा बंसी डाला करता था. वह सांप है, इसका पता ही उसे न था. शायद उस दिन वह सांप जरा-सा हिला-डुला होगा, उसी से वह 'अरे, यह क्या है' सोच, बेहद डरकर पानी में गिर पड़ा था.

गांव के कई लोगों ने आकर जमीन खोद, खूंटी गाड़, कुल्हाड़ी से काट उस सांप को मार डाला. मरने के बाद देखा गया, सांप लंबाई में बारह हाथ और घेरे में ढाई हाथ का था. उस दिन से कन्या के तट पर की वह लीला समाप्त हो गयी. डर के मारे हो या दुख से, मैं भी अब उस ओर मुंह नहीं करता था.

★ ★

इस घटना के तीन दिन पश्चात नदी से पानी लाने-वाला मेरा नौकर. लड़का सुबह-सुबह बेतहाशा दौड़ा आकर पुकार उठा—बाबूजी, बाबूजी!

किसी जमाने में 'पान का जायका सुपारी में, नींद का जायका सुबह में' की कहावत को कहने वाले उस बूढ़े को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हुआ मैं मजे में खर्राटे भरता सोया हुआ था. 'बाबूजी, बाबूजी'

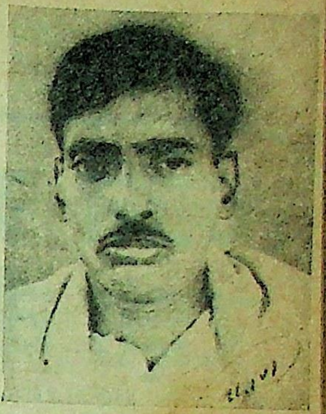


चीखता हुआ सुबह-सुबह मेरी नींद तोड़ने के कारण गुस्से के मारे उस कटहल-बीज जैसे सिर वाले नौकर-लड़के को मुंह बिचकाते हुए मैंने कहा—क्या बाबूजी, बाबूजी, कर रहा है! इस सबेरे-सबेरे दिन को बरबाद करने के लिए. जा, जा, भाग जा यहां से, नहीं तो अभी पकड़ कर मुंह तोड़ दूंगा.

उसने कहा—बाबूजी, आइए न, देखिए उस मोड़ में कौन-सी चीज तिर रही है. मैं जल्दी से उठ कर देखने गया. आदमी के शव जैसा दिखाई पड़ा. मैंने उसे बाहर निकलवाया. देखा, अरे, यह तो नदी के उस पार नित्य पानी भरने आने वाली वही कोल लड़की है!

□□□

(अनुवाद : नवारुण वर्मा)



नवारुण वर्मा असम के साहित्यकार हैं—असमिया और हिंदी, दोनों ही भाषाओं में लिखते हैं और दोनों भाषाओं के बीच संपर्क-सूत्र की भूमिका बखूबी निभा रहे हैं. अब तक अनेक मौलिक व अनूदित पुस्तकें प्रकाशित.

तीन देश : तीन कविताएं

गुलाम लड़की

न तो गोरे और न गुलाम
चैन से रहेंगे;
मुझे बंदी बनाया गया है
एक गोरे की इच्छा पर.
मुझे जिबूटी ले जा रहे हैं,
मेरी मरजी के खिलाफ.
अरे, लौट जाने दो मुझे,
कहीं बीमार न पड़ जाऊं मैं.
लौट जाने दो मुझे
दर्शन करने प्रेतात्माओं का ;
मेरे गांव की प्रेतात्माएं
दया करेंगी मुझ पर.

(नाइजीरिया)

सूरज के बाद...

शांत, भैया, शांत!
पुर जाते हैं जख्म सारे,
समय बीतने पर.
कोई कितना भी रो ले चाहे,
सूरज के बाद सदा चांद आता है.
खा लो कंद-मूल-पत्ते
और बंद करो रोना-धोना
क्योंकि हमेशा-हमेशा ही,
सूरज के बाद चांद आयेगा.

(कांगो)

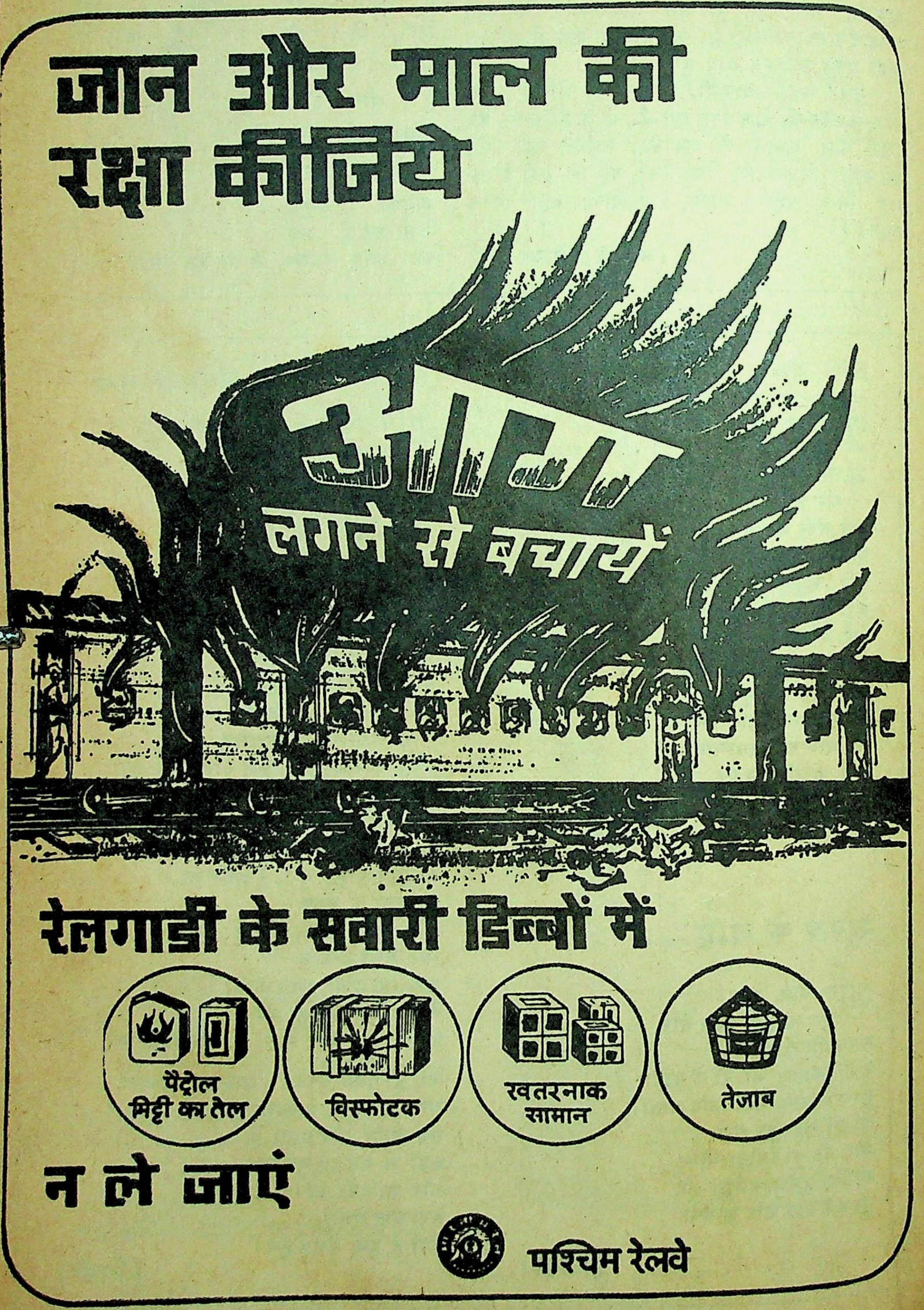
कारिफा ● अंसुमनी सूमा

गांव जान पड़ता है उदास और मुर्दा,
तपती दुपहरी है,
और हलचल नहीं कोई
न कोई जिंदगी, न मुसकराहट,
नौजवानों में भी.
और, कारिफा, विनती है तुम से,
मेरी बात सुनो!

दुपहरी फिर भी दोस्त है हमारी
वह मित्र है प्रेमियों की.
क्योंकि सोये हुए हैं, सब
हम अकेले हैं, दुनिया में,
और कर सकते हैं प्रेमालाप.
खौफ मंडराता है, जैसे बाज चूजों पर.
कोई हावी नहीं हो सकता हम पर :
हम प्यार करते हैं! एक-दूसरे से!
बहरहाल आने वाली है संध्या
आगमन हो ही चुका है शांति का.
जा चुका है बाज.
और बाहर निकल आये हैं चूजे अब :
मिट चुका है खौफ.
जल रहा होगा सूरज अभी,
लेकिन डर नहीं है हमें,
क्योंकि हम प्यार करते हैं एक-दूसरे को.

लो, हो गयी संध्या. शांतिमय संध्या!
और होने लगी हलचल,
सब जीवंत और प्रसन्न हैं,
कब्रों में गड़े हुए मुर्दे तक.
और कारिफा, विनती है तुमसे,
मेरी बात सुनो!
प्रेमी हैं हम, एक हैं हम!

(गिनी)


जान और माल की रक्षा कीजिये
आग
लगने से बचायें
रेलगाड़ी के सवारी डिब्बों में
पैट्रोल मिट्टी का तेल
विस्फोटक
खतरनाक सामान
तेजाब
न ले जाएं
पश्चिम रेलवे

ब्याह

इथियोपिया की लोककथा

एक बार एक सुंदर चूहे ने जन्म लिया. ज्यों-ज्यों वह यौवन में पदार्पण करता गया, उसका सुंदर चेहरा, उम्दा बात-व्यवहार और शुभ्र त्वचा उसके परिवार का गर्व बन गयीं. उसके मां-बाप सोचने लगे कि ऐसे युवक के उपयुक्त पत्नी उन्हें कहां मिल पायेगी.

जब उसके लिए दुल्हन खोजने का समय आया तो उन्होंने निश्चय किया कि ईश्वर के परिवार में ही उसके योग्य युवती का चुनाव किया जाये. सो रीति के अनुसार परिवार के बड़े-बूढ़े ईश्वर के द्वार पर जा खड़े हुए.

—आप लोग दरवाजे पर क्यों खड़े हैं, ईश्वर ने पूछा और वे भीतर चले गये.

—हमें सुंदर, श्वेत चूहे के परिवार ने भेजा है, आपने भी उसके बारे में सुना ही होगा! वह हिम जैसा श्वेत तथा सभी प्राणियों में सुंदर है. सिर्फ आपका परिवार ही उसे पत्नी प्रदान कर सकता है क्योंकि आप संसार में सबसे शक्तिशाली तथा महान हैं.

ईश्वर कुछ देर के सोच-विचार के उपरांत मुसकराये और संदेशवाहकों से बोले—विचार तो नेक है किंतु आप लोग गलत स्थान पर आ गये. हमारे परिवार से भी शक्तिशाली परिवार है पवन का!

—किंतु आप उससे शक्तिशाली कैसे नहीं?

—काश ऐसा ही होता! जब पवन चलता है तो धरती को धूल से ढंक देता है, मेरी भी आंखों में धूल झोंके बगैर नहीं रहता. अब आप ही बतलाइए कि कौन अधिक शक्तिशाली है?

संदेशवाहकों को मानना पड़ा कि पवन अधिक शक्तिशाली है अतएव वे वहां से उसके द्वार पर जा खड़े हुए.

—आप लोग दरवाजे पर क्यों खड़े हुए हैं? पवन ने पूछा.

—हम सबसे सुंदर चूहे के लिए पत्नी की तलाश में हैं. हम ईश्वर के घर गये किंतु उन्होंने बतलाया कि आप उनसे शक्तिशाली हैं. अतएव अपने परिवार की कोई कन्या बतलाइए!

पवन सोच में पड़ गया. आखिर उसने कहा—आप लोगों को धन्यवाद! किंतु सचाई तो यह है कि जब मैं पूरी शक्ति से चलता हूं तो पेड़-पौधों को तो उखाड़ फेंकता हूं लेकिन पर्वत के सामने मेरी एक भी नहीं चलती. तो आप ही देखिए, पर्वत मुझसे शक्तिशाली है.

संदेशवाहक उसे धन्यवाद दे कर पर्वत के द्वार पर जा खड़े हुए.

—आप लोग दरवाजे पर क्यों खड़े हुए हैं, पर्वत ने पूछा और वे तत्काल भीतर चले गये.

—आप लोग सकुशल तो हैं न? कोई शुभ समाचार? आपके बाल-बच्चे कैसे हैं?

उन सबने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया और अंत में अपने आने का ध्येय बताया. पर्वत ध्यान से सुनता रहा और बोला—निःसंदेह ऐसे सुंदर युवा को उसके योग्य पत्नी मिलनी चाहिए किंतु मेरे परिवार में उसके योग्य कोई कन्या नहीं. मेरी अपेक्षा भी एक प्राणी शक्तिशाली है. वह मेरी जड़ में दिन-रात गढ़े कर देता है, मुझे कहीं-कहीं से ढहा देने की भी सामर्थ्य रखता है. उसका परिवार तो सबसे शक्तिशाली है.

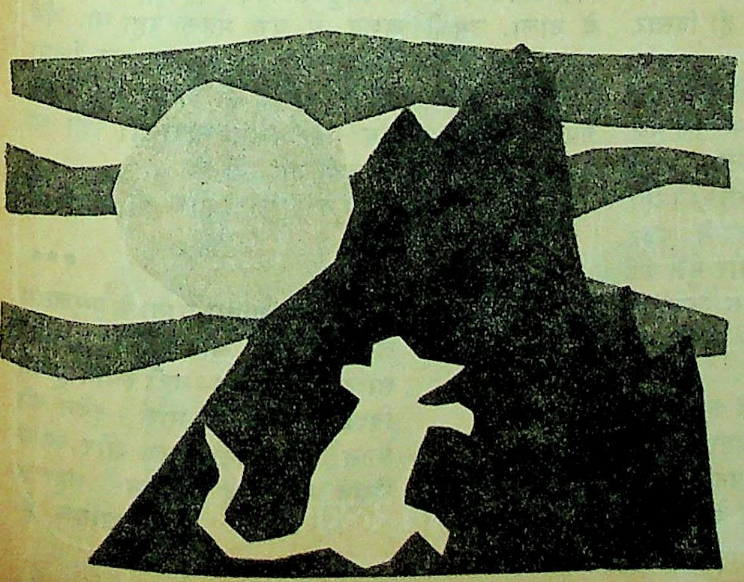
—सचमुच ही ऐसा जीव शक्तिशाली है! हम उसे कहां पायें?

पर्वत ने उसके घर की राह बताई और वे उसके द्वार पर जा पहुंचे. वह चूहे का घर था.

—आप लोग दरवाजे पर क्यों खड़े हुए हैं, चूहे ने पूछा तो उन्होंने भीतर प्रवेश किया और अपने आने का उद्देश्य बतलाया.

चूहे ने सुन कर कहा—आपको अपने पुत्र के लिए पत्नी मिल गयी! कितनी प्रसन्नता की बात है कि हम दोनों के विशिष्टतम परिवारों को एक सूत्र में बंधने का अवसर मिला है!

और इस प्रकार सुंदर, श्वेत चूहे को उसके उपयुक्त पत्नी मिल कर रही. □□□



यह अनुभव बोल रहा है • पेटर क्वाम बुहिन

मैं अपनी तारीफ का बाजा बजाऊं कि नहीं, यह एक समस्या बन गयी है. यह बहुत दुर्भाग्य की बात . लेकिन वह व्यक्ति जो अभी तक मेरी प्रशंसा का ाजा बजाता आया था, अचानक मुझे असमय में ही ोड़ कर चला गया. इसलिए नहीं कि वह अच्छा वेतन हीं पा रहा था बल्कि इसलिए कि आकरा शहर ी चहल-पहल और शोर में, उसका बाजा सुनाई ही रहा था, और लोग प्रभावित हो कर, अपनी प्रतिक्रिया ो व्यक्त नहीं कर रहे थे.

परिचय देते हुए मैं सर्व-प्रथम यही कहना चाहता कि मैं सत्य का निष्ठुर ढंग से उपासक हूं. और इतना पष्टवादी हूं कि कभी-कभी कटु होने का भी आभास ने लगता हूं.

आवश्यकतानुसार मैं छोटा या लंबा हो जाता ूं. मेरा दूसरा नाम 'आल-वैदर' भी है. मेरे व्यक्तित्व में वरोधी तत्वों का अद्भुत समिश्रण है. मैं बी. ए. पास हूं और मैंने पामाविनोलोजी में आनर्स पास किया है. सिवाय कोलतार और टरपेंटाईन तेल के अन्य सब ड्रिंक्स का मास्टर हूं. रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ एलकोहोल का मेंबर हूं, और साथ ही में शराब-निषेध इंस्टीट्यूट का हेड भी हूं. मेरी नसों में हरा खून बहता है, और मेरा दिमाग 'इरास्मस' के दिमाग से भी ज्यादा तेज है. संक्षेप में कहूं, तो उस प्रकार मैं एक अत्यंत आसामान्य व्यक्ति हूं, और फिर भी अत्यंत हैरान हूं कि मेरी गवर्नमेंट ने मुझे भी, स्वतंत्रता दिवस पर आये सम्मानित वी. आई. पीस् की तरह, अत्यंत फैशनेबल और आरामदायक कार से अभी तक सुसज्जित करके सम्मानित क्यों नहीं किया?

मैं आकरा न्यू टाउन में एक ऐसे मकान में रहता हूं, जहां छिपकलियां, गिरगिटों, चूहों का साम्राज्य है. वे यहां आबाधित और प्रजातंत्रीय स्वतंत्रता का आनंद उठाते हैं अर्थात वे मेरे ऊपर टट्टी-पेशाब करने तक को स्वतंत्र हैं. और कभी-कभी मेरे साथ, मेरे ही बिस्तर पर सोने तक की हिम्मत कर बैठते हैं.

जब मैं दोपहर को सोना चाहता हूं तो वे खेलना चाहते है. यदि वे मुझ पर इतनी भी कृपा करें कि मुझे कम से कम शांति से लेटा ही रहने दें, तो भी गनीमत होती क्योंकि उस स्थिति में आखें बंद करके मैं सहनशीलता की ही ट्रेनिंग लेता. लेकिन स्थिति हद से गुजर रही है. वे अब मेरे ऊपर कूदने भी लगे हैं और मुझे कई बार स्किन डिजीज के कारण डाक्टर के पास इलाज के लिए भी जाना पड़ा है. अब वे मेरी आर्थिक स्थिति पर भी धावा बोलने लगे हैं.

कभी-कभी जब ये लोग अपना खेल बंद कर देते हैं, तो मिस सन् जो मेरे ऊपर के कमरे में रहती हैं, और डबल रोटी बनाने का कार्य करती हैं, अपना ओवन जला कर डबल रोटी बेक करना आरंभ कर देती हैं. वह ओवन भी, ठीक मेरे ही सिर पर है. अक्सर मैं डबल रोटी से भी ज्यादा बेक हो जाता हूं.

मैंने चूहों और छिपकलियों के दुःख से आक्रांत एक अत्यंत दयनीय किरायेदार के रूप में जो कि हमेशा ही किरायेदार के भाग्य में बदी होती है, अपने मकान-मालिक से एक ही लय में, सारी शिकायतें उड़ेलनी आरंभ कर दीं. मकान-मालिक जो 'खर्च' से छूत की बीमारी की तरह भयभीत रहता था, मेरी सीलिंग पक्की करवाने की प्रार्थना से एकाएक बुरी तरह चौंक पड़ा. उसने मुझे सलाह दी कि मैं उस दर्द-भरी स्थिति से स्वयं को उबारने के लिए एक क्वालिफाईड स्टैंडर्ड अर्थात बिल्ली क्यों नहीं पाल लेता जिससे कि मेरी आर्थिक स्थिति पर धावा बुल जाये, और वह साफ बच निकले.

अब मेरे पास दो ही रास्ते थे. या तो अपनी आर्थिक स्थिति खोखली करूं और इसी मकान में रहता रहूं या फिर दूसरा मकान खोजूं, जो इस आकरा शहर में मिलना अत्यंत कठिन काम है. अतः हार कर मुझे एक बिल्ली पालनी पड़ी जो अत्यंत निपुण सिद्ध हुई. दो दिन में ही मेरे सह किरायेदार, इतने गूंगे हो गये, जैसे कि मेरे घर की दीवारें. अपने व्यक्तित्व के प्रदर्शन का अर्थ है जान से ही हाथ धोना, यह वे भली-भांति समझ गये थे. स्थिति इतनी सुधर जायेगी, मुझे आशा ही नहीं थी. प्रसन्न था, लेकिन तभी एक दुर्घटना घट गयी.

वह ईस्टर का दिन था. सूर्य अपनी समस्त मुसकान में धरती को चमका रहा था. मैंने अपना ईस्टर-संडे उसी मुसकान से पूरित हो कर मनाने का निश्चय किया. एक मुर्गा खरीद कर मैंने मिस काइंड को बनाने के लिए दिया. मुझे मालूम था कि वह एक बहुत अच्छी कुक है. वह डोमेस्टिक साइंस के स्कूल की हेड मिस्ट्रेस थी. और उसने मेरी इच्छा को वास्तविक रूप दे कर, अपनी पाक-शास्त्र कला की निपुणता का पूरा-पूरा परिचय दे डाला. उसकी खुशबू से घर महक रहा था. मैंने उसका पूरी तरह आनंद उठाने का निश्चय कर लिया और समीप की कैंटीन से शराब की बोतल लाने चला गया यद्यपि मेरा एक-एक कदम भारी हो रहा था और मुंह से लार टपकी चली जा रही थी.

लौट कर, देखा तो मेरी प्लेट साफ थी—— यानी

•••

पेटर क्वाम बुहिन घाना के प्रमुखतम लेखकों में से हैं और अफ्रीकी कथा-साहित्य में उनका वही स्थान है जो विश्व-साहित्य में मार्क ट्वेन को प्राप्त है——यानी हास्य और व्यंग्य लेखन में उन्हें अद्भुत महारत हासिल है.

चिकन गायब था. इधर-उधर देखा, तो मिस केट कोने में बैठ कर अभी तक अंतिम टुकड़े का आनंद ले रही थी. मेरे क्रोध का अंत नहीं था. मैं उसे वहीं खत्म करने वाला था, लेकिन मेरी मनोव्यथा का अंदाज शायद उसने पहले ही लगा लिया था और वह एकदम भाग खड़ी हुई. उसके बाद वह कभी दिखाई नहीं दी.

अब मेरे पास सिवाय दूसरा मकान ढूंढ़ने के और कोई रास्ता नहीं बचा. एक मकान से दूसरे मकान में घूमता फिरा.

बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से मैंने स्वयं को एक महल-नुमा बिल्डिंग के समक्ष खड़ा पाया, जो आधुनिक शिल्प-कला के सौंदर्य और वैभव का जीता-जागता प्रतीक थी.

मैं शान से अंदर घुसा और मालिक के बारे में पूछ-ताछ करने लगा. वह सामने ही बैठा था. लेकिन उसने यह कहा कि मैं चूंकि एक बैचलर युवक हूं, अतः लड़कियां मेरी तलाश में यहां की शांति भंग करेंगी. मैंने यही कह कर गलती की कि मैं एक अविवाहित युवक हूं.

अब मैंने अपना वक्तव्य बदलना ठीक समझा. मैंने उसे समझा दिया कि यद्यपि मैं अभी विवाहित नहीं हूं पर इसका अर्थ यह नहीं कि मेरा विवाह ही नहीं होने वाला है. मैं अगले सप्ताह ही विवाह कर रहा हूं और अपनी पत्नी सहित ही मकान में आऊंगा. वह उस शर्त पर तैयार हो गया. अतः उस मकान को पाने के लिए एक ही सप्ताह के अंदर विवाह करना एक शर्त हो गया. मेरे एक मित्र ने मुझे सलाह दी कि मैं एक नाइट क्लब में जाऊं और शीघ्र ही वहां से एक पत्नी का चुनाव कर लूं. अतः मैं एक बड़े नाइट क्लब में पहुंचा और शान से एक कुर्सी पर बैठ कर एक बड़े आदमी की तरह सिगार पीने लगा. मैंने एक शोट व्हिस्की और दो बीयर की बोतलों का आर्डर दिया.

मेरी आशा फलीभूत होती दिखाई दी. दो खूबसूरत लड़कियां मेरी ओर चली आ रही थीं.

वे मुसकरायीं तो मैंने और भी चौड़ी मुसकान से उनका स्वागत किया. उनमें से एक ने अपना हृदय खोल कर मुझसे बातचीत आरंभ कर दी—मुझे लगता है, मैंने पहले भी आपको कहीं देखा है.

—अवश्य देखा होगा. मैं तो थाना में घूमता ही रहता हूं. मेरा काफी बड़ा बिजनस है. दोनों आश्वस्त हो कर पुनः मुसकरायीं.

वे दोनों मेरे सम्मुख खड़ी थीं. उनकी आंखें प्रेम के समुद्र में डूबी थीं—और मेरे पास से जाने की कोई जल्दी नहीं थी. अतः मैंने उन्हें आमंत्रित किया. वे सहज ही तैयार हो गयीं. वे सौंदर्य की साम्राज्ञी शीघ्र ही अपनी स्लिम फिगर का एक बार पूर्ण प्रदर्शन कर मेरे दायें, बायें बैठ गयीं. और उन्होंने एक के बाद दूसरा ब्रांड का आर्डर दे कर अपने सोफिस्टिकेटेड टेस्ट का प्रदर्शन आरंभ किया.

शीघ्र ही डांस आरंभ हो गया. उन्होंने अपने लचकीले शरीरों को रबर की तरह तोड़-मरोड़ कर द्रुत कदमों से नृत्य आरंभ कर दिया. और उसी दौरान उन्होंने मेरे सम्मुख स्पष्ट कर दिया कि वे किसी की पत्नी बनने की कदापि इच्छुक नहीं हैं, एक हफ्ते के लिए भी नहीं.

मैं वहां से बिल्कुल टूटा हुआ बाहर निकला और मुझे उस मकान को लेने का इरादा छोड़ देना पड़ा.

सारे शहर में सिर्फ वही मकान ही तो नहीं है, सोच कर, मैंने स्वयं को हल्का करने का प्रयास किया.

अतः मैं सूट पहन कर मुंह में सिगार दबा कर, अपने मित्र के बच्चे को कंधे पर उठा कर एडवेंचर को निकल पड़ा. इस बार एक मकान-मालकिन ने मेरा स्वागत करते हुये पूछा—क्या यह आपका बच्चा है ?

मैंने कहा—हां.

—नायजाज बच्चा है, या जायज?

—जायज! संक्षेप में उत्तर दिया.

—तो आप विवाहित हैं ?

—यह तो स्पष्ट ही है!

—आप विवाहित हैं, और आप मेरा कमरा चाहते हैं. एक विवाहित व्यक्ति मेरा मित्र हरगिज नहीं हो सकता, अतः आप मेरे किरायेदार नहीं बन सकते. मैं कुछ कहने ही वाला था कि वह दरवाजा बंद कर अंदर चली गयी.

आप विवाहित हैं या अविवाहित, यह एक ज्वलंत प्रश्न है, और इसका समाधान आपमें नहीं बल्कि आपके ग्रह-नक्षत्रों पर निर्भर करता है. क्योंकि मकान विवाहित होने पर मिलेगा कि अविवाहित होने पर, इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता. □□□

(अनुवाद — इंदु रायजादा)



बूढ़े का तमगा • फर्दीनंद ओयोनो

फर्दीनंद ओयोनो कैमरून में पैदा हुए और फ्रेंच में लिखते हैं. यहां दिया गया अंश उनके बहुचर्चित उपन्यास 'बूढ़ा नीग्रो और उसका तमगा' से लिया गया है.

मेका अहाते के बीचों-बीच चूने से बनाये गये एक दायरे के भीतर सावधान की मुद्रा में खड़ा था. यह अहाता एक स्टेडियम का था. मेका को तमगा मिलने वाला था, इसलिए तमाम कबीले यह रस्म देखने के लिए इकट्ठे हुए थे.

पैविलियन में गोरे लोग आराम से बैठे गोरे हाई कमिश्नर का इंतजार कर रहे थे. तमगा लेने वाला एक यूनानी आदमी भी था. लेकिन वह गोरे लोगों के साथ बैठा था.

आज तक मेका के आसपास दूर-दूर तक के कबीले में किसी को इतना सम्मान नहीं मिला था. वह अपने काले लोगों से अब थोड़ा बेहतर हो गया है. लेकिन वह गोरों के बीच भी नहीं है.

पैविलियन में बैठे कितने ही गोरों को वह अच्छी तरह पहचानता था, लेकिन यहां से उन्हें अलग-अलग पहचानना. . .तौबा! . . सब गोरे एक-से लगते हैं.

उसके बाप के साथ ये लोग ऐसा बर्त्ताव कर रहे हैं. इनकी समझ में यह नहीं आता कि एक बूढ़ा आदमी धूप में घंटों से खड़ा है और वह पेशाब करना चाहता है. और उसे जूते की कील चुभ रही है. . .

पैविलियन से ग्रीक उठ कर नीचे आया. . हाई कमिश्नर ने उसे तमगा दिया. गले लगा कर . . .गाल से गाल लगाये . . .और हाथ मिलाया. . .फिर वे लोग लोग इस तरफ आने लगे.

हाई कमिश्नर उसके सामने आ कर मुसकराया. उसने तमगा मेका के सीने पर लगाया. . .उसने देखा कि यह तमगा यूनानी को दिये गये तमगे जैसा नहीं है. और अफसर ने उसे गले भी नहीं लगाया. मेका ने अपनी छाती पर लगे हुए तमगे को देखा. . .वह मुसकराया. उसने अपना सिर ऊपर उठाया और खुशी से झूम उठा. . .उसका बदन कांपने लगा. . .

एक-दो गोरे उसके पास से गुजर गये. उसने बड़े फाटक की तरफ देखा. गोरे अफसरों की एक टोली आयी. पैविलियन की तरफ चली गयी.

---नहीं. . . यह हाई कमिश्नर नहीं है. . .मेका बुदबुदाया. . . कौन होगा वह आदमी जिसका इतने लोग एक घंटे से इंतजार कर रहे हैं? . . .

घिसे हुए पुराने जूतों में कहीं एक कील सीधी अंगूठे में धीरे-धीरे अपनी जगह बनाती चली गयी. उसने बायां पैर उठा कर दाहिने पर रख लिया. थोड़ी राहत मिली. . .लेकिन धूप और पसीने से जगह-जगह खुजली हो रही थी. . .

मेका ने अपने आप को डांटा---क्या सच्चे मरद जरा-सी तकलीफ से डरा करते हैं! मेरा बाप स्वर्ग में बैठा देख रहा होगा तो क्या सोचेगा? . . .कि जबकि मेरा खतना हुआ था, मुंह से उफ तक निकली थी! . . .वही मेका. . .

उसने चुपचाप जल्दी से चेहरे का पसीना पोंछा. नीचे झुक कर टांगें खुजलायीं और जल्दी से सीधा खड़ा हो गया.

उसने भगवान से प्रार्थना की ---हे भगवान, तू तो सब देखता है. तूने ही गोरे-काले बनाये हैं. . .तूने जैसा भी बनाया, तू भगवान है. . .मैं मन-ही-मन तुझे प्रणाम करता हूं. इस समय मेरी सबसे बड़ी इच्छा है कि मैं जूते उतार फेंकूं और पेशाब कर सकूं. . .उसने मन-ही-मन सीने पर क्रॉस बनाया. . .आंखें खोल कर जबान होठों पर फिरायी.

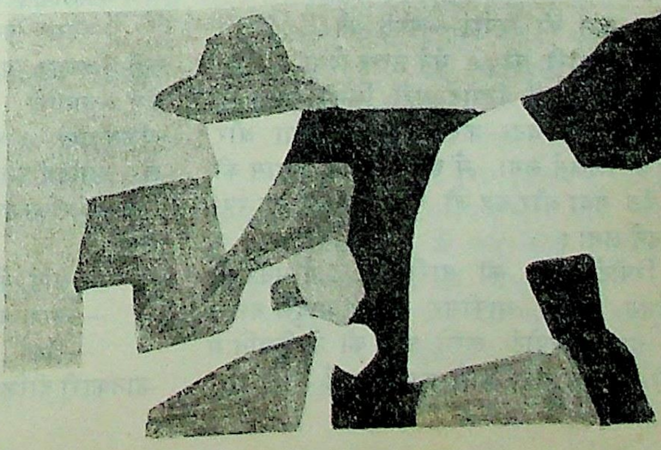
एक लंबी मोटर कार बड़े फाटक से अंदर आती दिखायी दी. . .काली चमचमाती मोटर. . . उसमें बहुत बड़े गोरे अफसर थे.

एक बूढ़ा कीमती वरदी पहने सबसे आगे-आगे चला, उसके पीछे स्थानीय अफसर उससे बातें करता उसके पीछे चलने लगा. जब मेका के पास से वे गुजरे, स्थानीय अफसर ने मेका की तरफ इशारा किया. मेका ने एड़ियां बजाने की कोशिश की.

---ये लोग मुझे तमगा दे क्यों नहीं देते! आखिर बात क्या है? कहीं ऐसा तो नहीं कि तमगा खो गया हो? तब मैं अपने कबीले वालों को और इन सब को क्या मुंह दिखाऊंगा. . ?

उसके दो बेटे फांस की लड़ाई में गोरों के लिए लड़ते-लड़ते मारे गये थे. . .

क्या उनका मरना व्यर्थ हो गया था. . .? □□□



सूटकेस

• अब्दुल मुनइम सलीम

काले रंग के सूटकेस को मैंने बहुत तलाश किया, मगर उसका कहीं पता न लग सका, चार सूटकेसों में से अब सिर्फ तीन ही दिखाई दे रहे थे. ट्रेन में मेरे साथ चार सूटकेस थे, कैरो स्टेशन पर भी कुली को मैंने तीन केसों की मजदूरी दी थी, चौथा जो हल्का ही था, मैंने खुद उठा लिया था. टैक्सी में भी तीन सूटकेस मेरे बराबर सीट पर रखे थे, चौथे को ड्रायवर के पास जमा दिया गया था.

मैं कपड़े बदल कर फौरन तैयार हो गया, परंतु यह सोच कर कि शायद ड्रायवर को सूटकेस वापस करने का समय न मिला हो, मैंने रिपोर्ट करने के विचार को कल तक के लिए टाल दिया. लेकिन मेरा खयाल गलत निकला, ड्रायवर को न आना था और न वह आया. अब रिपोर्ट करना जरूरी हो गया था. मैं रोया पुलिस स्टेशन के लिए रवाना हो गया. ड्यूटी आफिसर अपने कमरे में रजिस्टर भरने में व्यस्त था.

—अस्सलाम-अलैकुम ...!

—वालैकुम अस्सलाम ... उसने रजिस्टर से नजर उठा कर मेरी ओर देखा.

—जी, मुझे एक रिपोर्ट लिखानी है.

—अगला द्वार!

—किधर ..... मैंने पूछा.

—आगे ...ड्यूटी सार्जेंट अब्दुल बसीत, उसने पहले से रूखे लहजे में उत्तर दिया. अब्दुल बसीत मेज के बराबर कुर्सी डाले आराम कर रहे थे, उनका चश्मा सामने मेज पर पड़ा था. मेरी आहट सुनते ही उसने पहले चश्मा उठा कर आंखों पर रखा और फिर प्रश्नात्मक दृष्टियों से मुझे घूरने लगा.

—अस्सलाम-अलैकुम ....

—वालैकुम अस्सलाम ...

—आप ही अब्दुल बसीत हैं?

—हां, मैं ही ड्यूटी आफीसर हूं.

—मुझे एक रिपोर्ट करनी है, मैंने कहा.

—किस बात की रिपोर्ट—चोरी की ...?

—जी हां, चोरी की ...मैंने उत्तर दिया.

—ठीक, चोरी की रिपोर्टें यहीं लिखी जाती हैं, उसने बैठे-बैठे हाथ बढ़ा कर रजिस्टर उठाया और आप ही कुछ लिखने लगा. मैं इजाजत लेकर पास की कुर्सी पर बैठ गया और वह जो कुछ लिखता जा रहा था, उसे पढ़ने लगा :

'यह रिपोर्ट आज की तारीख .... में सबेरे नौ बजे के समय, ड्यूटी आफीसर बनाम अब्दुल बसीत अबुहसनैन द्वारा रिपोर्ट करने वाले की उपस्थिति में लिखी गयी. रिपोर्ट करने वाले का नाम है ....

—आपका नाम ...? मेरी तरफ देखते हुए उसने पूछा.

—अहमद शेख लुत्फी.

—पेशा. . .?

—रमल कंपनी में काम करता हूं.

—उमर. . .?

—३२ वर्ष.

—कहां पैदा हुए?

—अदफीना में.

—अदबफीना कहां ....

—रोजिता जिले में.

—क्षेत्र .....?

—बेहीरा ग्राम.

—इस समय कहां रहते हो ?

—२८, मलिकुल सालह स्ट्रीट.

—हां, तो अब कहिये क्या रिपोर्ट है आपकी. मगर जरा संक्षेप में बताइए, रिपोर्ट आप ही के शब्दों में लिखनी है.

—बहुत अच्छा ....कल जब मैं ....

—रेलगाड़ी की तरह न भागें, जरा आहिस्ता-आहिस्ता बोलें ताकि मैं लिख भी सकूं, मुझे बीच में टोकते हुए उसने कहा.

—कल ...अब आगे बोलिये.

—कल मैं चार सूटकेसों के साथ कैरो स्टेशन पर उतरा था, एक बड़ा सूटकेस था, दो छोटे साइज के थे, चौथा हैंड बैग जैसा था, जिसमें केवल कागज थे.

—हां, केवल कागजात थे ....फिर?

—स्टेशन से मैंने टैक्सी ली थी, घर पहुंचने पर काले सूटकेस को मैंने बहुत तलाश किया मगर उसका कहीं पता न लगा.

—खुदा के लिए ठहर-ठहर कर बोलिये—पता न लग .....अच्छा इसके बाद मुझे याद आया कि वह सूटकेस टैक्सी में ही रह गया...

—हूं, तो यह है ...उसने रिपोर्ट लिखते-लिखते व्यंग्यात्मक अंदाज में मुझे देखते हुए कहा, तुम्हें खबर है यह किस तरह की रिपोर्ट है? तुम क्योंकि मेरे हमवतन हो, इसलिए मुझे थोड़ी-सी हमदर्दी है, वैसे तुम्हारी सूचना के लिए यह बता दूं कि यह सब कुछ व्यर्थ है ....!

—लेकिन क्यों? मैंने घबराते हुए पूछा.

—इस 'क्यों' का तो कोई उत्तर मेरे पास नहीं. अच्छा, यह बताओ कि हम इस चोरी का पता कैसे लगाएंगे ...तुम्हें शायद मालूम नहीं कि हम पुलिसवाले .....अगर सब बात कही जाए तो ... खैर, छोड़िये इन सब बातों को ...आगे बोलिए, वह फिर से रजिस्टर खिसका कर मुझसे प्रश्न पूछने लगा.

—आप कैरो स्टेशन पर कब उतरे ?

—चार बजे की गाड़ी से!

—ठीक ...अब उन संदूकों के बारे में भी कुछ जानकारी दीजिए, इसे भी आप ही के शब्दों में लिखना है.



—बेहतर है . . . पहला केस एक मीटर लंबा, आधा मीटर चौड़ा, रंग भूरा, दूसरा एक मीटर लंबा तीन चौथाई मीटर चौड़ा, तीसरा आधा मीटर लंबा, आधा मीटर चौड़ा रंग काला, चौथा हैंडबैगनुमा, इसका रंग भी काला है.

—अच्छा, तो इनमें से कौन-सा केस खोया?

—काले रंग का.

—क्या इसमें कपड़े थे?

—जी हां!

—तो ऐसा क्यों नहीं कहते—समय व्यर्थ बर्बाद हो रहा है.

—उसमें एक सूट, चार कमीजें, पांच टाइयां और कुछ निजी पत्र थे.

—नहीं ऐसे नहीं, एक एक करके बताइए, कमीज, सूट, टाई . . . . इनकी संख्या तथा रंग भी बताइये.

—सूट भूरे रंग का, कमीजें सब सफेद और टाइयां विभिन्न रंगों की .

—विभिन्न रंग क्या . . .साफ-साफ लिखवाइए जनाब!

—टाई का रंग लाल, दूसरी नीले डिजाइन की, तीसरी भूरे रंग की, चौथी पीली और पांचवीं सफेद.

—ठीक है—हां, तो फिर तुमने टैक्सी ली?

—जी हां!

—टैक्सी किस मॉडल की थी, उसका नंबर तथा ड्रायवर का नाम क्या था?

—टैक्सी फोर्ड थी.

—यह आपको कैसे मालूम पड़ा?

—देखने से.

—देखना-वेखना यहां नहीं चलता, मैं यह पूछना चाहता हूं, आपको यह कैसे पता लगा कि वह फोर्ड के अतिरिक्त किसी दूसरे मॉडल की नहीं है?

—मैंने टैक्सी का बोर्ड स्वयं पढ़ा था.

—हां, यूं कहिये ना—और नंबर?

—६४६४ . . . . !

—यह नंबर आपको कैसे मालूम हुआ?

—मैं जब भी टैक्सी में बैठता हूं, उसका नंबर नोट कर लेता हूं,

—आखिर क्यों?

—वैसे ही बस, यूं समझिए, यह मेरी हॉबी में शामिल है.

—यह हॉबी क्या होती है जी? सही-सही बयान दीजिए ताकि रजिस्टर में लिखा जा सके.

—नंबर नोट करना मेरी आदत है.

—खैर, हालांकि यह उत्तर आपके लिए लाभदायक नहीं, फिर भी खानापूरी तो आवश्यक है—अच्छा ड्राइवर का नाम बोलिये.

—मैंने उससे नाम नहीं पूछा.

—हूं—तो तुमको पूरा विश्वास है कि जब तुम ट्रेन से उतरे थे तो उस समय तुम्हारे साथ चारों सूटकेस थे. क्या इसके सबूत में तुम कोई गवाही पेश कर सकते हो, क्या कुली को पहचानते हो?

—नहीं, अगर देखूं तो पहचान सकता हूं.

—हां, तो वे संदूक टैक्सी में कहां-कहां रखे थे?

—बड़ा संदूक ड्राइवर के पास, बाकी के तीन अपनी


face your admirers...
....रेशम सा, कोमल, स्कूल छात्रा का सा मुलायम रंग-रूप, हमेशा युवा और प्रफुल्लित नजर आइये. ई. एस. पाटनवाला का अफगान स्नो उत्कृष्ट मनमोहक और नमी बनाये रखने वाले गुणों से भरपूर है. अफगान स्नो का नियमित उपयोग आपकी त्वचा को सूखने तथा रूखे होने से बचाता है और आपके नैसर्गिक सौंदर्य को बनाये रखता है.
अफगान स्नो,
सदाबहार सौंदर्य का वास्तविक रहस्य
AFGHAN SNOW
BEAUTY AIDS
E. S. PATANWALA, BOMBAY

सीट पर.

—कृपया जरा आहिस्ता बोलें!

—और फिर——मैं घर आया, ड्राइवर ने बड़ा संदूक उठाया, दो संदूक मैंने हाथों में उठाये, तीसरा वहीं रह गया.

—इस मूल का आपको कब ज्ञान हुआ?

—एक घंटे के पश्चात्.

—क्या यह संभव नहीं कि वह सूटकेस तुमने कहीं और छोड़ दिया हो!

—जी नहीं ....!

—और क्या ....हां-हां इन तमाम चीजों की कीमत भी लिखवाएं.

—संदूक की कीमत ३ पाउंड, सूट २० पाउंड, कमीज प्रत्येक डेढ़ पाउंड ....कुल रकम ३१ पाउंड.

—नहीं, यह रकम तो बहुत हो गयी, चलो १५ पाउंड लिख देते हैं. घबराइए नहीं, आशा रखिए सारी चीजें आपको मिल जायेंगी, १५ या ३१ में कोई अंतर नहीं पड़ेगा.

—जैसी आपकी मर्जी. अच्छा अब आज्ञा दें, मैंने झुंझला कर कहा.

—क्या मतलब? आज्ञा कैसी, इस रिपोर्ट पर दस्तखत क्या मैं करूंगा, अभी ठहरो. मैं जरा इसे पूरा कर लूं. उसने जल्दी-जल्दी रिपोर्ट के अंतिम वाक्य लिखे : 'निम्नलिखित बयान के साथ उक्त रिपोर्ट दोपहर साढ़े बारह बजे रिपोर्ट देने वाले के दस्तखत के साथ समाप्त की जाती है ...!'

मैंने रजिस्टर पर दस्तखत टांके और चलते-चलते पूछा——बसीत साहब, सामान मिलने की कोई आश रखूं?

—क्यों नहीं, जैसे ही हमें सूचना मिलती है, तुम्हें बता दिया जायेगा, खुदा की जात पर भरोसा रखो. वह बड़ा दयालु है.

काफी देर हो चुकी थी, कार्यालय में पहुंचते ही मैनेजर ने बुला भेजा, उसे भी पूरी कहानी सुनानी पड़ी. उसने हमदर्दी तो की, मगर पूरे दिन की अनुपस्थिति का कोई उचित कारण उसे पूरी कहानी में नहीं मिला.

* *

इस घटना को घटे अब कई दिन बीत चुके थे, मेरे जेहन से भी सूटकेस का खयाल निकल-सा चुका था. मगर एक दिन फिर अचानक मैनेजर ने बुला कर एक पीला कागज मुझे दिया, उसमें लिखा था :

'अहमद शेख लुत्फी को अपराध नंबर २५ के संबंध में पुलिस स्टेशन अबीसिया में हाजिर होने की सूचना दी जाती है.....!'

मैंने कागज को दोबारा पढ़ा, मगर कुछ अर्थ समझ में न आया. भला अबीसिया स्टेशन में अपराध नं. २५ से मेरा क्या संबंध है! यह रहस्य मेरी समझ से परे था. तीसरी बार जब मैं कागज को पढ़ने की कोशिश करने लगा तो मैनेजर की आवाज गूंजी.

—यह कौन-सा अपराध है, मिस्टर अहमद ..?

अब्दुल मुनइम सलीम मिस्र के युवा कथाकार हैं और अपनी उम्र के अनुरूप ही अपनी कहानियों में उन्होंने उन शक्तियों को बेनकाब किया है, जो आम आदमी की सहज जिंदगी जीने की इच्छा के आड़े आती रहती हैं.

● ● ●

—यकीन जानिए साहब, मुझे इसका कोई ज्ञान नहीं.

—खैर, मैं कुछ नहीं जानता, तुम फौरन पुलिस स्टेशन जाओ और वापसी पर सारी बात की सूचना दो. समझे——न जाने यह कौन-सा चक्कर है!

बाहर आ कर मैंने अपनी फाइलें समेटीं, डेस्क में ताला लगाया और सीधे पुलिस स्टेशन चल दिया. रास्ते भर मेरे जेहन में तरह-तरह की बातें उभरती रहीं. जैसे-तैसे पुलिस चौकी पहुंचा. ड्यूटी आफिसर को सम्मन दिया. वह किसी मारपीट के केस की इंक्वायरी कर रहा था, मैं बुरी तरह भयभीत था. मैं बीच में ही बोल पड़ा——कृपया यह तो बता दीजिये कि इस सम्मन का मुझसे क्या संबंध है?

—आप जरा बैठें, मैं अभी आपसे बात करता हूं.

मैं मजबूरन खामोश हो गया, कुछ देर बाद उसने मुझसे कहा—— इस सम्मन का संबंध उस रिपोर्ट से है जो तुमने अपने सूटकेस के खो जाने पर एक मास पूर्व रौदा थाने में की थी.

—हां-हां वह सूटकेस——क्या वह मिल गया? मैंने खुशी से पूछा.

—जी नहीं, अभी मिला कहां.

—तो फिर?

—टैक्सी नं ६४६४ का मालिक हमारे क्षेत्र में रहता है, पुलिस स्टेशन रौदा ने इसी कारण केस हमारे कार्यालय में ट्रांसफर कर दिया है. इसी विषय पर आप से कुछ पूछताछ करनी है. कलम नचाते हुए उसने पहला सवाल किया——आपका नाम?

—मेरा नाम अहमद शेख लुत्फी, उम्र ३२ वर्ष, नौकरी रमल कम्पनी में, जन्मस्थान अदफीनिया, जिला रोजिता, ग्राम बेहीरा. . वर्तमान पता २८, मलिकुल सालह स्ट्रीट, रौदा.

—अच्छा तो आपकी रिपोर्ट का विषय क्या है?

—लेकिन श्रीमान ये सारी जानकारी तो मैं पहले ही दे चुका हूं, यह सब रिपोर्ट में लिखा होगा.

—आप सही कहते हैं, परंतु हर आदमी का अपना तरीका होता है. मैं इस केस को अपने तौर पर डील करूंगा. जल्दी बताइये, आपकी रिपोर्ट का क्या विषय है?

—रिपोर्ट का विषय है कि मैं लगभग तीन सप्ताह पूर्व विभिन्न साइज से चार सूटकेसों के साथ कैरो स्टेशन उतरा था, बड़ा सूटकेस एक मीटर लंबा, आधा मीटर चौड़ा, रंग भूरा——दूसरा एक मीटर लंबा तीन चौथाई मीटर चौड़ा, रंग भूरा——तीसरा आधा

मीटर लंबा आधा मीटर चौड़ा रंग काला—चौथा हैंडबैग जैसा रंग काला.

—खूब, मगर जरा आहिस्ते बोलिये.

—बहुत अच्छा—अब आगे सुनिये, मैंने स्टेशन से टैक्सी ली, तीन सूटकेस अपनी सीट पर रखे और चौथा जो अधिक बड़ा था, ड्रायवर की सीट पर रखा था, घर आने पर मैंने देखा, काले रंग का सूटकेस नहीं है. इस सूटकेस में एक सूट—रंग भूरा, कीमत २० पाउंड, चार कमीजें रंग सफेद, कीमत प्रत्येक डेढ़ पाउंड—पांच टाइयां—एक लाल, दूसरी नीली डिजाइन, तीसरी भूरे रंग की, चौथी पीली तथा पांचवी सफेद शामिल हैं.

—लेकिन आप बहुत तेज बोल रहे हैं, पुलिस अधिकारी ने मेरी ओर देखते हुए कहा.

—श्रीमान, बात यह है, मेरे पास समय की कमी है, अभी मुझे आफिस भी पहुंचना है. और फिर यह सारा चक्कर मेरी समझ के बाहर है.

—मगर मुझे तुमसे अभी कुछ और पूछना है, यह बताओ कि उसी दिन तुमने पुलिस में रिपोर्ट क्यों नहीं की जिस दिन वह सूटकेस खोया था?

—मैं उसी दिन रिपोर्ट करना चाहता था मगर यह खयाल आते ही कि शायद ड्राइवर को समय न मिला हो, मैंने रिपोर्ट के खयाल को दूसरे दिन तक के लिए टाल दिया था.

—खूब. . .क्या तुम्हें पूर्ण विश्वास है कि टैक्सी का नं. ६४६४ ही है?

—बिलकुल यही नंबर है.

—यह आप किस बुनियाद पर कह रहे हैं?

—मैंने यह नंबर स्वयं पढ़ा था.

—क्या आप इस संबंध में कोई और बयान देना चाहते हैं?

—जी नहीं. मैं जल्दी से रजिस्टर पर दस्तखत करके बाहर निकल आया, मैं काफी लेट हो चुका था, मुझे दफ्तर पहुंचने की भी जल्दी थी. आफिस पहुंचते ही पहले मैनेजर के कमरे में गया,

—हां सर, बस वही सूटकेस वाला केस है—मैंने घबराई आवाज में एक साथ पूरा वाक्य कहा.

—कौन सा-सूटकेस मिस्टर अहमद?

—वही सूटकेस सर, जिसकी रिपोर्ट एक मास पूर्व रौदा पुलिस स्टेशन में की थी. टैक्सी ड्राइवर क्योंकि अबीसिया में रहता है, इसलिए केस वहां ट्रांसफर कर दिया गया है.

मैनेजर ने कोई जवाब नहीं दिया, मेरी बात अनसुनी करके वह फिर से अपने काम में व्यस्त हो गया. मैं उदास होकर अपनी सीट पर बेदम-सा धंस गया.

लगभग एक सप्ताह बाद मैनेजर ने फिर मुझे बुलाया. इस बार मुझे दो सम्मन दिये, पहला सम्मन रौदा पुलिस का था और दूसरा अबीसिया थाने का था. समझ में नहीं आ रहा था कि पहले कहां जाया जाए. मैंने पहले रौदा पुलिस स्टेशन जाना उचित समझा, कौन जाने वहां सूटकेस मिल गया हो.

रौदा में अब्दुल बसीत से भेंट हुई. मुझे देखते ही उसने कहा—आइये-आइये.

—मगर बसीत साहब, इस बार मुझे क्यों तल किया गया है, कृपया शीघ्र बता दें तो अच्छा हो, समय भी कम है और फिर यहां से मुझे अबीसिया थाने भी पहुंचना है,

—क्यों वहां किसलिए?

—वहां रिपोर्ट जो ट्रांसफर हो गयी है,

—हां-हां, अच्छा तो सुनिये हमारे जासूसों ने कुछ चीजें तलाश की हैं. उनमें एक सूट भी है, भूरे रंग का, शायद वह आपका हो.

—सूटकेस में है ना. . .मैंने पूछा.

—यह बिलकुल अर्थहीन तर्क है, चोर इतने मूर्ख नहीं होते कि चोरी की चीजों को सूटकेस में रख कर बेचें, आइये जरा सूट की पहचान कर लें. उसने अलमारी खोल कर एक मैला-सा सूट मेरे सामने कर दिया, देखिए क्या वाकई यह सूट आपका है? हां, मगर जरा ठहरिये. . . .इससे पहले कि आप इस सूट को देखें, मुझे कुछ प्रश्न करने हैं, सूट के 'कट' के विषय में.

—आपका नाम?

—अहमद शेख लुत्फी, उम्र ३२ वर्ष, जन्मस्थान अदफीनिया, जिला रोजिता, ग्राम बेहीरा, वर्तमान पता २८, मलिकुल सालह रौदा, नौकरी रमल कंपनी. . .

—ठीक-ठीक इस सूट का कट क्या है?

—सिंगल ब्रैस्ट.

—सिंगल ब्रैस्ट. . . और जेबें. .

—सीधी.

—अच्छा, आओ अब सूट देख लो, वह बराबर मेरे सामने सूट को उलट-पुलट रहा था, मगर मैंने देखते ही जान लिया था कि सूट मेरा नहीं है,

—तो फिर यह सूट तुम्हारा नहीं है?

—जी नहीं. . .!

—खैर, रिपोर्ट पूरी कर देता हूं. . .शेख अहमद लुत्फी की हाजिरी पर रिपोर्ट लिखी गयी. शेख अहमद लुत्फी बयान देता है कि सूट उसका नहीं है.

रिपोर्ट पर नियमानुसार दस्तखत करके मैंने अब्दुल बसीत से अनुरोध किया—मैं चाहता हूं, इस केस से संबंधित सारी सूचनाएं बजाए अफिस के मेरे घर के पते पर भेज दिया करें.

बारह बज चुके थे. कल मैनेजर का सामना करने के खयाल से मेरा दिल अभी से बैठा जा रहा था, अबीसिया लंच टाइम से पहले पहुंचना था. जरा-सी देर होने पर दूसरा दिन भी खराब होता, मैं तेज कदमों से बस स्टैंड चल दिया.

अबीसिया के पुलिस अधिकारी की मुसकराहट से मुझे ऐसा लगा मानो संदूक का पता लग चुका हो.

—सर, इस बार मुझे क्यों बुलाया गया है?

—भई, इस बार केस कुछ अधिक उलझ गया है.

—वह कैसे?

—बात यह है जब हमने टैक्सी नंबर ६४६४ के मालिक को यहां बुलाया तो उसने हमें बयान में बताया कि चोरी के दिन वह काम ही नहीं कर रहा था, इसके

सबूत में उसने एक सर्टिफिकेट भी पेश किया है.

—यह भी तो संभव है, उसने झूठा सर्टिफिकेट दिया हो.

—हां संभव तो है, मगर इसे सिद्ध करना बहुत कठिन है, मेरे जेहन में एक और बात आई है.

—वह क्या?

—कहीं ऐसा तो नहीं कि नंबर में कुछ भूल हो रही हो, मेरा मतलब है ६४६४ तथा ४६४६ में जरा-सा अंतर ही है, हिज्जे वही हैं, लेकिन हेरफेर से दूसरा नंबर हो जाता है. और यह कोई बड़ी भूल नहीं है, ऐसा अक्सर हो जाता है. ड्यूटी आफिसर ने अपनी बात कुछ इस प्रकार घुमा-फिरा कर रखी कि कि साथ में मेरा जेहन भी घूमने लगा, मुझे भी शक होने लगा. मैंने आहिस्ता से कहा—संभव है ४६४६ को मैंने ६४६४ बना दिया हो.

—बिल्कुल ठीक, लेकिन ठहरिये, यह बयान लिखित रूप में लेना होगा. पुलिस स्टेशन से जब मैं लौटा उस समय दोपहर के तीन बज चुके थे. कंपनी कब की बंद हो चुकी थी.

अब सिवाय घर जाने के और कोई दूसरा रास्ता न था. दूसरे दिन जानबूझ कर मैं मैनेजर से दूर-दूर रहा. इसी तरह कई दिन गुजर गये. लेकिन एक दिन बला फिर सिर पर आई, मैनेजर बहुत गुस्से में था.

—मिस्टर शेख, आखिर यह है क्या, इसका कोई अंत भी है या नहीं—ये पुलिस स्टेशन . . .अपराध . . . .पूछताछ. . . .

इस बार इंबाबा पुलिस स्टेशन में बुलाया गया था. मेनैजर बिना रुके बोले जा रहा था. उसकी आवाज की गूंज पूरे दफ्तर में फैल गयी थी, मैं किसी से आंख मिलाने के काबिल नहीं रहा था. इंबाबा पुलिस का सम्मन मेरे हाथ में था. सूटकेस को फिर से प्राप्त करने की आशा बहुत पहले मर चुकी थी. मगर यह चक्कर था कि मेरा पीछा ही नहीं छोड़ रहा था. पुलिस स्टेशन पहुंचते ही मैं गुस्से में बिना आज्ञा ड्यूटी आफिसर के कमरे में घुस गया और जेब से सम्मन निकाल कर उसके सामने रख दिया.

—आप ही अहमद शेख हैं. . .सम्मन देखते हुए उसने पूछा.

—जी हां, . . मैं ही वह अभागा हूं.

—बैठिये, फाइल खोलते हुए उसने कहा, कुछ सप्ताह पहले रौदा में जो रिपोर्ट की गयी थी, उसमें तुम्हारा बयान था कि टैक्सी नंबर ६४६४ है.

—हूं. . .मैंने बिना सिर उठाए जवाब दिया.

—और अबीसिया में तुम्हारा बयान था कि टैक्सी नंबर ४६४६ है, इस नंबर की टैक्सी का मालिक जिसका नाम मुस्तफा है, इसी क्षेत्र का निवासी है. इस समय तुमको बुलाने का कारण यह है कि मैं कुछ इस संबंध में पूछ-ताछ करना चाहता हूं.

—श्रीमान, मैं इस केस के विषय में सब कुछ पहले ही बता चुका हूं.

—हां-हां सही है, लेकिन अब केस मेरे पास है, इसे मैं अपने तौर पर डील करना चाहता हूं.

—मगर अब पूछने को और रहा क्या है, आप पहले टैक्सी ड्राइवर से तो मालूम कर लें. संभव है वह. . .

—खैर पूछिये, क्या पूछना है. उसने मेज की दराज से कई कागज निकाले और कलम चलाना शुरू कर दिया. इससे पहले कि वह प्रश्न करे, मैं स्वयं किसी रटे हुए तोते की तरह शुरू हो गया,

—नाम अहमद शेख लुत्फी, उम्र ३२ वर्ष. . .

—खूब. . .रिपोर्ट का विषय क्या है?

अब मेरे गुस्से का पारा अपनी अंतिम बिंदु तक पहुंच चुका था. मैंने दांत भींचते हुए कहा—आफिसर साहब. . . !

—फरमाइये.

मैंने आवाज को संतुलित करते हुए कहा—बात यह है कि सारा केस झूठा है, मेरा सूटकेस बिल्कुल चोरी नहीं हुआ.

—हांय . . .क्या मतलब?

—यही कि कैरो स्टेशन से अपने चारों सूटकेसों के साथ मैं हिफाजत से घर पहुंचा था, मेरा कोई सूट-केस चोरी नहीं हुआ.

—भई, तुम्हारा नाम अहमद शेख लुत्फी है ना—तुम्हारा जन्मस्थान अबदीया है.

—हां है—तो फिर?

—तुमने रौदा तथा अबीसिया इस संबंध में रिपोर्ट की थी?

—जी हां, मैंने की जरूर थी मगर वह सही नहीं थी.

—क्या बकते हो तुम, यह दस्तखत किसके हैं?

—ये मेरे ही दस्तखत हैं, मगर अब सूटकेस मालिक की हैसियत से ही मैं यह कह रहा हूं.

—तो फिर पहले के सारे बयानात. . . ?

—गलत थे !

—अच्छा जैसे तुम्हारी मर्जी, इस संबंध में भी बयान लेना होगा. उसने जल्दी-जल्दी रजिस्टर पर कुछ लिखा और फिर मुझसे दस्तखत करने को कहा. मैंने बिन देखे दस्तखत कर दिये, मगर जैसे ही मैं जाने के लिये मुड़ा उसकी गरजदार आवाज ने मुझे चौंका दिया. —कहां जा रहे हो . . .?

—आफिस. अब तो केस ही समाप्त हो चुका है.

—समाप्त हो चुका है . . .मेरी तरफ घूरते हुए वह जोर-जोर से आवाज लगाने लगा. . .महमूद. . .

सिपाही ने आदेशानुसार मुझे बाजू से पकड़ लिया. मैंने आफिसर की ओर देखा. वह सिर झुकाए शांतिपूर्वक कुछ लिख रहा था. . . मैंने आगे झुक कर रजिस्टर की इबारत को पढ़ा :

'अहमद शेख लुत्फी वापस पुलिस स्टेशन रौदा भेजा जाता है जहां का वह निवासी है ताकि पुलिस अधिकारियों को बिना कारण परेशान करने के अपराध में, क्रिम्नल कोड न. १३५ के अंतर्गत इसके विरुद्ध उचित कारवाई की जा सके—दस्तखत पुलिस आफिसर इंबाबा . . . . . . !!!' □□□

(अनुवाद : निदा फाजली)

सर शिवसागर रामगुलाम : अपार धीरज, असीमित लोकप्रियता

● राजेंद्र अरुण

अफ्रीकी एकता संगठन के होने वाले अध्यक्ष मॉरिशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम के जीवन का अंतरंग चित्र



मॉरिशस के लोकप्रिय प्रधानमंत्री डॉक्टर सर शिवसागर रामगुलाम के संघर्ष और सफलता से भरपूर जीवन को समझना तब तक आसान नहीं होगा, जब तक हम मॉरिशस में बसे भारतवंशियों के इतिहास को न समझेंगे. इस देश में हर भारतवंशी भारत से कुली बन कर आया था. यहां गौरांग प्रभुओं की चाबुक और गालियों पर नाचना उसका काम था और दिन-रात बेजुबान हो खटते रहना ही उसका जीवन-धर्म. ऐसे यातना और उत्पीड़न के काल में १८ सितंबर १९०० ई. को रामगुलाम परिवार में शिवसागर का जन्म हुआ. पुकार का नाम 'केवल' रखा गया.

छह-सात वर्ष की आयु में ही पिता की मृत्यु हो गयी. इसी समय उनकी बायीं आंख में गाय के सींग से चोट लगी और वह आंख खराब हो गयी. बचपन में वह गाय चराते, घास काटते थे. पर थे बहुत ही तीक्ष्ण बुद्धि के. माध्यमिक शिक्षा समाप्त कर वह डॉक्टर बनने के लिए ब्रिटेन गये.

ब्रिटेन में वह १५ साल रहे. काम कर-करके पढ़ाई करते रहे. वहां के समाचारपत्रों में लेख लिखते थे. ब्रिटेन की लेबर पार्टी तथा भारतीय स्वतंत्रता के लिए संकल्पवान युवकों के साथ काम करते थे. मॉरिशस को स्वाधीन करने का सपना उन्होंने वहीं देखा.

१९३५ में जब वह मॉरिशस लौटे तो केवल डॉक्टर ही नहीं थे, राजनीति के एक मंजे हुए खिलाड़ी भी थे. उन्होंने मॉरिशस में लेबर पार्टी की स्थापना में सहयोग दिया और उसमें सक्रिय भी हुए. चिकित्सा के लिए वह गांव में बसे भारतवंशियों के बीच जुट गये. उन्होंने जो राजनैतिक अभियान आजादी के लिए चलाया, वह १२ मार्च १९६८ को मॉरिशस की स्वाधीनता के रूप में पूर्ण हुआ. वह स्वाधीन मॉरिशस के प्रथम और सर्वप्रिय प्रधानमंत्री बने.

आज ७६ वर्ष की आयु में भी उनमें एक जवान की-सी ऊर्जा है. हर शनिवार और रविवार को कम-से-कम १० सभाओं में भाग लेते हैं. अधिकांश सभाएं गांवों में होती हैं जिनमें वह हिंदी में बोलते हैं या भोजपुरी में. वह तीन-तीन घंटे तक एक सभा में स्थितप्रज्ञ-से बैठे रहते हैं. रात के ११-१२ बजे तक वह पार्टियों में रहते हैं, पर सुबह ४ बजे उठ कर बी. सी. सी. जरूर सुनते हैं.

एक पारिवारिक चित्र : (बायें से) पुत्री सुनीता, सर शिवसागर रामगुलाम, लेडी रामगुलाम तथा तथा पुत्र नवीन



सर शिवसागर रामगुलाम स्वामी दयानंद, विवेकानंद, डॉ. राधाकृष्णन, गांधी, मार्क्स, लेनिन और एंगेल्स से बहुत प्रभावित हैं. तुलसी और रामचरितमानस के भी वह भक्त हैं.

व्यक्तिगत जीवन में वह शिव के भक्त हैं. उनका कहना है : 'मैं प्रार्थना में प्रातःकाल केवल दो चीजें मांगता हूं—किसी पर क्रोध न करूं, किसी समस्या से विचलित न होऊं.' उनका जीवन सफलता का ज्वलंत इतिहास है. विरोधी तक स्वीकार करते हैं कि वह इतने दूरदर्शी और सटीक निर्णय लेने वाले हैं कि उन्हें असफलता मिल ही नहीं सकती.

वह अपने सहयोगियों, अनुयायियों और घनिष्ठ स्वजनों से दो चीजों की अपेक्षा रखते हैं—सिद्धांतनिष्ठा और आस्था की. औपचारिकता और तामझाम उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं है.

यदि कोई यह सोच कर उनके निवास-स्थान पर जाये कि वह प्रधानमंत्री के घर जा रहा है, तो उसे निराशा होगी. एक पुलिसवाला बाहर खड़ा रहता है, जो आपको रोकता नहीं, आपकी सहायता करता है. सभी महसूस करते हैं कि यहां प्रधानमंत्री नहीं, उनके 'चाचा रामगुलाम' रहते हैं. उनमें अपार धैर्य है. उनके एक सहयोगी विनोद में कहते हैं : 'प्रधानमंत्री में इतना धैर्य है कि मैं अपना धैर्य खो देता हूं.' और यह धीरज ही उनके महान और लोकप्रिय होने की आधारशिला है. □□□

धारावाहिक उपन्यास (पहली किस्त)

लाल पसीना

• अभिमन्यु अनत

वह नाव ताम्रपर्णी से निकली थी. दोनों भिक्षु नाविक कलिंग के थे. पांड्य देश में दोनों भिक्षुओं ने बाकी भिक्षुओं से अलग अपना निर्णय लिया था. उनसे पहले निकले भिक्षु यवन, कांबोज, गांधार जैसे देशों को पहुंच चुके थे. यह सूचना उन्हें कलिंग ही में मिल गयी थीं. लेकिन जब उनकी नौका भी ताम्रपर्णी ही पहुंच कर रही, उस समय उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ. वहां तो पहले ही से भिक्षु पहुंच चुके थे!

ताम्रपर्णी में उन्होंने चुनी हुई लकड़ियों से अधिक विश्वसनीय नाव बनवायी. नयी भूमि पर प्रथम पहुंचने की चाह लिये दोनों ने वहां से नयी यात्रा शुरू की. सुदूर पूर्व के द्वीपों की चर्चाएं वे सुन चुके थे. उस विस्तृत महासागर के एक द्वीप से दूसरे द्वीप को होते हुए फिर तो वे इतने अधिक आगे निकल आये कि न तो उन्हें स्थान का पता, न दिशा का. सामने सागर विस्तृत होता चला गया था. इधर कई दिनों से वर्षा न होने के कारण और जल-पात्र के खाली हो जाने पर उनकी अपनी स्थिति तो नाजुक थी ही, उनके साथ पीपल का जो अंतिम पौधा था, वह भी मुरझाने लगा था.

प्रथम भिक्षु ने दूसरे की ओर देखा. उसके साहस को बढ़ाने के लिए उसने धीरे से कहा. ––बहुजन हिताय बहुजन सुखाय. . . बढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ! दूसरे ने अपने सूखे होठों को हिलने दिया. कोई स्वर नहीं आया. फिर भी प्रथम भिक्षु ने नेत्र बंद कर लिये ––बुद्धं शरणं गच्छामि.

नाव चलती रही .

एकाएक . . . उस दोपहर में शाम का-सा धुंधलका छा गया. दोनों एक दूसरे को देखते हुए मौन रहे. दूर, काफी दूर, जहां एक क्षण पहले सागर और आकाश के रंग आपस में मिले हुए लग रहे थे, वहां लाली छा आयी थी. देखते-ही-देखते सामने पहाड़ जैसे ऊंचे ज्वारभाटे उठने लगे. हवा में उष्णता आ गयी थी. दूर के प्रलयंकर ज्वारभाटे अपने फेनिल उफान के साथ नाव के पास-पास आते गये. कूपदंड डगमगाने लगा; उसके साथ ही पोत भी कंदुक-क्रीड़ा कर उठा. दोनों ने बड़ी स्फूर्ति के साथ पाल को नीचे उतारा. नाव डगमगाती ही रही.

सागर की उथल-पुथल बढ़ती गयी. उसके गहरे नीलेपन को भेद कर गहराई से दूध की-सी फेनिल लहरें गंभीर गर्जन के साथ उठती रहीं. उस भयानक नाद से दोनों भिक्षु सहम गये थे.

बवंडर. चक्रवात!! और सागर चिंघाड़ता रहा. दूर की वह लालिमा विस्तार पाती गयी. अपने स्वर को सागर के गंभीर गर्जन से ऊपर उठाते हुए एक नाविक ने अपने भय को प्रकट किया आंधी? दूसरे ने उसी आश्चर्यभर स्वर में कहा–विचित्र!

यात्रा के दौरान यात्रियों ने कई आंधियां देखी थीं. चक्रवात, बवंडर, सभी देखे थे, लेकिन इससे भिन्न. अचानक ही एक घटाटोप अंधेरे ने पूरे वातावरण को अपने में लपेट लिया. हाथ को हाथ नहीं सूझ पा रहा था. धड़कनें तेज हो कर भी महसूस नहीं की जा रही थीं. नाव के डोलते रहने के कारण दोनों को अपने अस्तित्व का बोध बना रहा . दोनों के हाथ से पतवारें छूट गयी थीं. उस गहन, अदृश्य वातावरण में दोनों के हाथ आगे बढ़े. स्पर्श होते ही दोनों हाथ एक-दूसरे के साथ बंध गये. भूखड़ों पर झंझावात के थपेड़ों से दोनों ने एक बार फिर अपने जीवित होने का प्रमाण पाया. कुछ दिखायी पड़ जाना नितांत असंभव था.

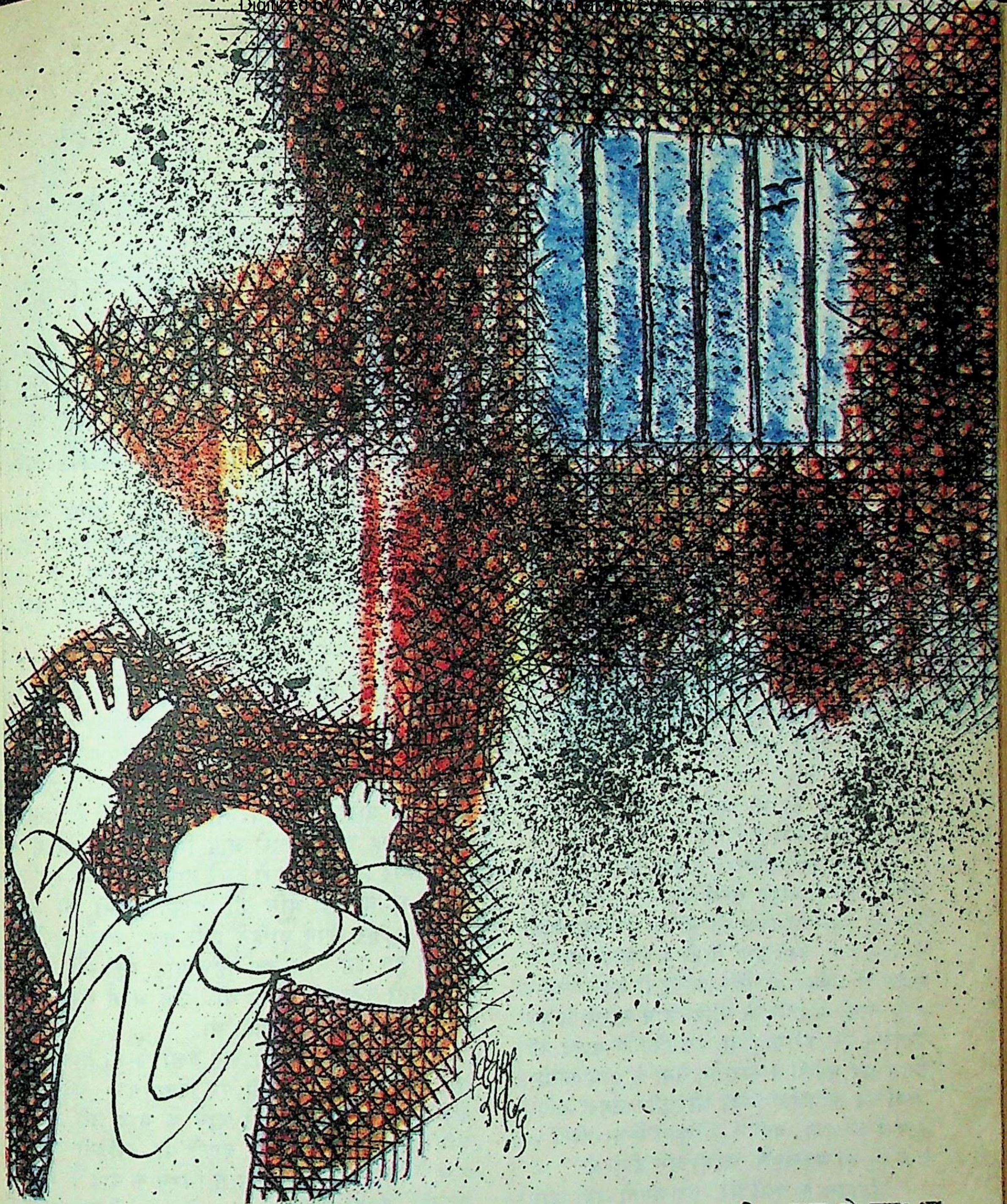
दोनों एक-दूसरे के हाथों को थामे महासागर की उपद्रवी स्थिति का अनुभव करते रहे. दहाड़ती लहरों को सुनते रहे. भयानक कालेपन के बीच दोनों जकड़े रहे. भारी कोलाहल होता रहा. झटास का पानी नाव में भरने लगा. नाव के आस-पास का पानी उबलता-सा प्रतीत हो रहा था.

बिजली कौंधी. उसके साथ ही अंधेरा फट गया. दोनों ने विस्फारित नेत्रों से अपने सामने देखा. ऊंचे ज्वारभाटे एकदम पास आ गये थे. पानी का रंग नीलेपन से हट कर कालेपन को आ गया था. दोनों ने चारों ओर देखा. कोई क्षितिज नहीं था सामने. चारों ओर से उफनती लहरें, विद्रोही ज्वारभाटे.

धमाके के साथ विस्फोट हुआ. वातावरण रंग बदलता रहा. दूसरा प्रलयंकर विस्फोट हुआ.

समर्पण---खेर जगत सिंह को, जिनके भीतर इतिहास आज भी जीवित है

---अभिमन्यु अनत



दोनों नाव के भीतर लुढ़क गये. किसी तरह एक-दूसरे का सहारा ले कर दोनों खड़े हुए —उनके नेत्र खुले-के-खुले रह गये. जीवन का सबसे बड़ा आश्चर्य उनके नेत्रों के सामने व्यतीत हो रहा था. कुछ ही दूरी पर सागर के बीच अंगारे और लपटें उठती दिखायी पड़ीं. गरमी से दोनों के शरीर दग्ध हो चले थे. उनके मुखड़ों पर पानी के छींटे अब भी थे, फिर भी उन्हें पसीने का अनुभव हुआ.

ज्वारभाटे शिथिल होते गये. सागर के रंग बदलते रहे. आंधी, चक्रवात, बंवडर, सभी कुछ थमता जा रहा था. नाव पानी से भर जाने के कारण डूबने लगी थी कि तभी बादल का-सा कोई भारी गर्जन हुआ. बिजलियां चमकीं. एक-दो साधारण विस्फोट हुए —ज्वारभाटे अपने आप में टूट-टूट कर लहरों का रूप लेते गये. तभी दोनों को लगा कि समुद्र के पानी का तापमान बढ़ता जा रहा था. लहरें उबलती दीख रही थीं. वातावरण इतना अधिक उष्ण हो चला था कि श्वास लेना कठिन प्रतीत हो रहा था.

अभी वे सोच ही रहे थे कि यह समुद्र के बीच से निकलने वाला कैसा ज्वालामुखी है कि तभी दूरी पर सागर को फाड़ कर पहाड़-सी कोई चीज ऊपर आती दिखायी पड़ी. एक बार फिर चारों ओर से ज्वारभाटे उठते दिखायी पड़े और बी. से उठने वाला पहाड़ ऊपर को उठता गया. सागर फेनिल ज्वारभाटों के साथ पीछे को हटता गया और पहाड़ फैलते गये. . . भिक्षुओं की नाव के नीचे से भी ज्वारभाटा उठा और नाव को दोनों भिक्षुओं के साथ ऊपर, बहुत ऊपर उठा कर उसने फिर अपनी लपेट में ले लिया. इससे आगे का दृश्य भिक्षुओं ने नहीं देखा. वे अथाह गहराई में विलीन हो गये. द्वीप विस्तृत होता गया जब तक कि बीच के ज्वालामुखी से अंगारे निकलने बंद नहीं हो गये.

→

और इसी तरह महासागर के बीच एक नये द्वीप का जन्म हुआ.

लंबे समय तक वह धरती बंजर बनी रही. फिर धीरे-धीरे धरती ठंडी होती गयी. ज्वालामुखी का विषाक्त प्रभाव कम होता गया. वनस्पतियों का उगना आरंभ हुआ. पक्षी और पशु भी पैदा होते गये.

इतिहास के धूमिल पन्नों से इस द्वीप को पहुंचने वाला पहला जहाज द्रविड़ नाविकों का था, जो संभवतः दिशाहीन हो कर इधर भटक आया था. उस समय द्वीप निर्जन था. द्रविड़ नाविकों को जब अन्य जहाजों और लोगों के इधर पहुंचने की संभावना नहीं दिखी, तो वे वहां से चल पड़े.

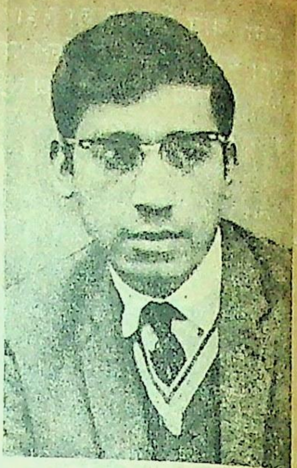
इसी तरह समय बीतता गया. ईसा के बाद पहली शताब्दी के लगभग भारत की ओर जाते हुए अरबों की नजर इस वीरान द्वीप पर पड़ी. उन्होंने भी संभवतः अधिक की उम्मीद न करके उसे छोड़ दिया. इसी तरह समय-समय पर अनेक जातियां आती रहीं, जाती रहीं.

इतिहास के पन्ने कुछ स्पष्ट हुए. हिंद महासागर से यात्रा करते हुए पुर्तगालियों का आगमन इस द्वीप में हुआ. इसे बसाना जब उन्हें टेढ़ी खीर प्रतीत हुआ, तो वे आगे बढ़ गये. उनकी इच्छा भारत जीतने की थी. पुर्तगालियों के बाद और भी लोग आये और चले गये.

भारत पर अधिकार जमाने के लिए फ्रांस और इंग्लैंड के बीच संघर्ष था. उसी समय इस द्वीप को भारत-विजय की सुविधा के लिए लक्ष्य में रखा गया. इसी द्वीप से हो कर फ्रांसीसियों ने मद्रास में अंग्रेजों के खिलाफ पहली लड़ाई लड़ी. इन्हीं लोगों के समय से मॉरिशस में भारतीयों का आगमन शुरू हो गया था. इस द्वीप के महत्व को समझ कर अंग्रेजों ने भारतीय सेना के साथ फ्रांसीसियों पर आक्रमण किया और द्वीप उनके अधिकार में आ गया. यहां से मॉरिशस में भारतीयों के आगमन की महत्वपूर्ण कहानी शुरू होती है.

इतिहास के पन्नों पर धूल जमती गयी और कई पृष्ठों को जला भी दिया गया. फिर भी कुछ पन्नों को एक ऐसी स्याही से लिखा गया था, जिन पर धूल टिक नहीं पायी. ऐसे भी पन्ने थे, जो भारतीय मजदूरों के खून-पसीने से कुछ इस तरह भीगे हुए थे कि उन्हें आग जला न सकी और जो पन्ने जले भी, उनकी राख को खाद समझ नियति ने खेतों में बिखेर दिया. इतिहास की बलि का वह सारा रक्त बह कर खेतों के रक्त से जा मिला और . . . और दबोच दिया गया वह इतिहास परतों के नीचे कैसे सांसों के लिए संघर्ष करता रहा, उसकी गवाही आज भी धरती की सोंधी गंध देती है, लेकिन उस इतिहास को कैसे जिया गया था?

आगे उसी जीवन की कहानी है. . .



अभिमन्यु अनत मॉरिशस के श्रेष्ठतम कथाकार हैं. हिंदी के पाठक उनकी रचनाओं और ख्याति से पूरी तरह परिचित हैं. अभिमन्यु जी की कृतियों में वह गहनता और परिपक्वता मौजूद है, जो उन्हें सहज रूप से ही तीसरी दुनिया के श्रेष्ठतम रचनाकारों में ला खड़ा करती है. 'लाल पसीना' 'एक बीघा प्यार' और 'आंदोलन' के बाद उनका तीसरा उपन्यास है, जिसमें उन्होंने मॉरिशस के इतिहास को प्रगाढ़ रचनात्मकता से पुनरुज्जीवित किया है.

● ● ●

अपनी सांसों को महसूसते हुए वह घास पर पड़ा रहा. उन सांसों के साथ-साथ वह खामोशी की गहराई को भी नाप रहा था. आकाश के झिलमिलाते तारों को अपने मस्तिष्क के भीतर टिमटिमाता अनुभव करता रहा. सामने के अंधेरे को अपनी सांसों से चीरने के प्रयास में असफल वह उसके अपने आप मिटने की आस में बैठा रहा. अंधेरे में एक हाथ से दूसरे हाथ को टटोल कर उसने घासों को हटाया. भूमि की हलकी गरमी को अनुभव किया. फिर अपने दाहिने हाथ को अपने शरीर पर दौड़ाते हुए उसे नाक तक पहुंचाया. वहां भी सांसों के साथ उसी तरह की गरमी थी. उसे अपने सही-सलामत होने का पूरा यकीन हो गया था.

उसने पैरों को हिला कर देखा. अभी ताकत बाकी थी. दोनों हाथों को धरती पर टिका कर वह धीरे से खड़ा हुआ. सीधा खड़ा हो जाने के बाद उसे लगा कि जांघों में बहुत कम ताकत बाकी थी. दाहिनी जांघ पर हाथ फेर कर उसने मुंडेर पर से गिरने के बाद के घाव को महसूसा. उसकी अंगुलियां तरल हो गयी थीं. उस कालेपन में लाल रंग को बस महसूसा ही जा सकता था. वह रंग गहरा था. अधिक था. चोट गहरी थी. हाथ से छू जाने के बाद उसे दर्द अनुभव हुआ.

आंखें ऊपर करके उसने तारों को देखा. फिर खयाल आया. धुंधलके में रास्ता टटोल कर उसे बढ़ना था. अभी वह बहुत दूर नहीं निकल पाया था. अंधेरे का लाभ उठा कर उसे दूर निकल जाना था. दूर, जहां उसके भीतर का डर मिट जाये. जहां से क्षितिज उसे विस्तृत लगे. सांसों की अकुलाहट कम हो जाये. पर वह स्थान अभी दूर था. अभी उसे बहुत अधिक चलना था. उसने कदम उठाया. एक के बाद दूसरा. बड़ी कठिनाई से तीसरा उठा, फिर चौथा भी. थकान अभी बनी हुई थी. बड़ी कठोरता के साथ जांघ की पीड़ा को नकार कर वह बढ़ने

लगा. घाव रिसता जा रहा था. वह उसे रिसने से रोक रहा था. लेकिन उसे रोक पाना आसान नहीं था. उसका दाहिना पांव जमीन पर अच्छी तरह पड़ नहीं पा रहा था. फिर भी वह चलता रहा.

उसका अपना शरीर अधिक बोझिल प्रतीत होने लगा था. लग रहा था वह इतिहास के समस्त बोझ को अपने ऊपर लिये चल रहा था. इतिहास तो कुछ लोगों को कुछ भी नहीं देता. बोझ ही सही, उसे कुछ तो मिला था! लेकिन यह गठरी इतनी भारी कभी नहीं थी. थकान और चोट का खयाल करके उसके होठों के बीच जो फीकी मुसकान आयी, वह क्षणिक रही. उस अंधेरे में उसका ओझल हो जाना बड़ा सहज और तीव्र रहा. एक क्षण उसे ऐसा खयाल भी आया कि जांघ के कारण पांव बेकार हैं. हाथों और घुटनों के बल चलने की इच्छा हुई. वह फीकी हंसी एक बार फिर आयी, और उसी तेजी के साथ फिर गायब हो गयी. सामने के अंधेरे को टटोलते हुए उसके हाथ झाड़ियों से छू गये. उन्हें हटाता हुआ वह बढ़ता गया.

दर्द के अधिक बढ़ जाने पर वह झींगुरों और जंगली कीड़ों की आवाजों की झनझनाहट को अपने ही भीतर पाने लगता. रात के घटाटोप अंधेरे को टटोलता-पकड़ता वह बढ़ता गया. उसकी वह पकड़ कहीं मुलायम थी, कहीं एकदम कठोर और कहीं तो वह स्पर्श से बाहर थी. तब उसके कदम अनुमान से उठते और अचानक किसी खरगोश या चिड़िया द्वारा पैदा की गयी खरखराहट से वह सिहर जाता. उसकी जोरों से आती-जाती सांसें और कांपते कदम वर्षों पहले के फौजी जीवन की याद दिला जाते. उस समय वह कभी नहीं हांफा था. उसे पसीना बहुत आता था, पर पसीना आने का मतलब थकान नहीं होता था.

★ ★

पैर जब जवाब-से देने लगे, तो वह क्षण भर को ठिठका, फिर रात के उस भारी सन्नाटे में उसने धीरे से कहा—नहीं! लोग मुझे यहां पड़ा हुआ नहीं पा सकते. मुझे बेबस पा कर यहां से बांध नहीं ले जा सकते. नहीं-नहीं! वह फिर से चलने लगा. वह अभी उतनी दूर नहीं आ सका था, जहां से चारदीवारी की अकुलाहट पीछे छूट चुकी हो. वह नर्क अब भी उसके मस्तिष्क के अंश-अंश में था. वह लंबा अतीत अब पास ही था. उसे मरना भी था, तो उससे दूर जा कर, उससे कट कर. जीवन के एक-दो क्षण ही सही, वह अलग से उन वेदनाओं को नकार कर ही जीना चाहता था. वह ठौर दूर था, फिर भी उसके संकल्प में वह उतना अधिक दूर नहीं था, जहां पहुंचा न जा सके. वह हाथों के बल रेंग कर भी वहां पहुंचना चाहता था. उसके अपने भीतर की सीली आवाज भीतर-ही-भीतर अकुलाती रही.

उसके कदम बोझिल थे. सभी कुछ युग-सा लंबा लग रहा था. उसकी अपनी सांसें भी. एक टिमटिमाता चिराग भी दीख जाता, तो उसका हौसला इस तरह पिघल कर बह न जाता. अपने बहते हौसले को वह अंजुली में थामे एक कदम को ऊपर उठा कर आगे बढ़ाता और दूसरे को उसके पीछे घसीट लाता. वह अपनी हड्डियों को ढीला-सा होते हुए महसूसने लगा था. उसके भीतर एक भय, जो पहले कभी नहीं था, घर करता जा रहा था. चारदीवारी के भीतर वर्षों तक रह कर वहां की उस यंत्रणा से वह जितना डरा था, उससे अधिक वह वहां फिर से लौटने के खयाल से कांप रहा था. इसी तरह की स्थिति उसकी भारत छोड़ते वक्त भी हुई थी. भावना में अंतर था, पर स्थिति वही थी. अपने गांव और देश से दूर हो कर ही वह वहां के अपनेपन को पहचान सका था. जहाज में पहली बार उसे ज्ञात हुआ था कि सभी अभावों के बावजूद वह स्थान उसका एकमात्र था. अब तो वह मर कर भी वहां नहीं लौटना चाहेगा.

★ ★

एक बड़े-से पत्थर से टकरा कर वह उसी पर बैठ गया. पहली बार उसे यह खयाल आया कि जंगलों में जिया जा सकता है. मारीच की कम-से-कम एक चीज तो सराहनीय रही. भयानक जंगली जानवरों से रहित इस देश का जंगल ही वह स्थान था, जहां स्वच्छंद घूमा जा सकता था. पहाड़ों, नालों, और नदियों के बीच का स्वतंत्र जीवन! सामने के गहरे अंधेरे में उसे जेल के सिपाहियों के चेहरे झिलमिलाते-से नजर आये. उस अंधेरे में मलगासी काले चेहरे और भी भयानक प्रतीत हुए. उसके खयाल को पीछे की ओर उछलते देर नहीं लगी. बहुत पीछे. . . .

बिहार की एक डरावनी रात. अहीरों के मोहल्ले से वह बिरहा सुन कर लौट रहा था. बहुत पुरानी याद समय की झिलमिल परतों से एकदम धूमिल थी. न जाने मस्तिष्क के किस भाग में मुद्दतों तक छिपा रहने के बाद आज बड़ी स्पष्टता के साथ वह दृश्य सामने कौंध गया. वह रात एकदम ऐसी ही थी. ऐसी ही बोझिल, इसी तरह की गंध लिये. दो रात पहले चंदर महतो के खेत से उसने अधकच्ची मकई चुरायी होगी और हाथ में लट्ठ लिये चंदर महतो का काला शरीर लाल और. . .और. . . बाकी यादें स्पष्ट नहीं हो सकीं और उसने भी नहीं चाहा कि उसके जीवन का वह प्रथम भय, प्रथम आंतरिक पीड़ा, उसके भीतर फिर से जीवंत हो जाये— उसने मस्तिष्क पर जोर नहीं दिया.

सामने का अंधेरा कैद की दीवार की तरह उसे अपने सामने की चीजों को देखने से रोक रहा था. उस घटाटोप अंधेरे में उसके लिए एक ही उपाय था. उसने वैसा ही किया. आंखें मूंद ली उसने. नये आने वालों से चारदीवारी के भीतर कई नयी बातें वह सुनता आ रहा था. उसने उन सारी बातों को एक-एक करके याद किया. उसी के देश, उसी के प्रांत के लोग— झोपड़ियां एकदम वहीं जैसी— वहीं की बोली— वहीं के रीति-रिवाज. किसी पिछले कैदी ने तो हनुमान जी के चौथरे तक की चर्चा की. . . उसे बिहार के गांव याद आये. अपने गांव की काली माई याद आयी. इसके साथ ही नये कैदी का फुसफुसाना उसे सुनायी पड़ा :

—हम सबन मिलके गांव में कालि माई की स्थापना

करना चाहत रहीं, पर कोठी वाले गोरवा ने आज्ञा ही ना दी— साले मौगों को मालूम नाहीं कि राज करते राजा जइहे, रूप करते रानी, बेद पढ़ते पंडित जइहे रह जयहीं नेक निशानी.

उसने मन-ही-मन पूछा—आखिर धरम-करम के मामले में दखल देने वाले ये कौन होते हैं? इन हरामजादों ने अभी देवी मैया का कोप नहीं देखा. सारी सेखी निकल जायेगी. इधर नये कैदियों से उसने जो कुछ सुन रखा था, उसे देखने की इच्छा उसके भीतर तीव्र हो चली थी. वह रेंग कर भी एक ऐसे गांव में पहुंचना चाहता था, जहां बिहार का कोई टुकड़ा भी आने वाले कुलियों के साथ आ गया था.

उसके कानों में मुर्गे की बांग आयी. एकदम वैसी ही, जो वह मुद्दतों पहले अपने गांव में सुनता था. उसके कदमों ने उत्साह पा लिया था. वह आगे बढ़ा. सामने के अंधियारे की आड़ से दूर कोई चिराग झिलमिलाता नजर आया. शायद वे पेड़ के पत्ते रहे होंगे, जिनसे आंख-मिचौनी खेलती हुई वह धूमिल रोशनी ओझल हो गयी. दूसरे ही क्षण एक दूसरा चिराग दिखायी पड़ा. उसी तरह दूरी की टिमटिमाहट लिये. फिर तो दो-तीन दीखने लगे. अपने घायल पांव को खींचता हुआ वह उस अनजान डगर के लिए इस तरह बेताब हो गया जैसे कि वह उसका अपना ही गांव हो और वहां उसके अपने ही लोग उसकी लंबी प्रतीक्षा कर रहे हों. उसने दो बहुत ही उतावले कदम उठाये. फिर एकाएक सहम कर स्थिर हो गया. कुछ ही समय में पौ फटने वाली थी. जिस गहरे अंधेरे को कुछ ही देर पहले वह कोस रहा था, उसके बहुत जल्द ही मिट जाने के खयाल से वह कांप उठा. यह अंधेरा उसका रक्षक था. उसके बिना सामने के गांव में पहुंचने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी.

* *

बड़ी कठिनाई से उसने समय का अनुमान किया. सुबह करीब हो कर भी तो तीन-चार घंटों के फासले पर थी. बगल से जो कल-कल ध्वनि आ रही थी, उससे यह समझते उसे देर नहीं लगी कि चंद ही कदमों पर कोई नदी थी. वह गांव की ओर न बढ़ कर नदी की ओर बढ़ गया. नदी किनारे पेड़ों के झुरमुट के कारण अंधेरा और भी गहन था. चट्टान पर बैठ कर उसने सामने के अंधेरे में छिपे गांव के बारे में सोचा—वहां के लोगों के बारे में. गांव के किसी व्यक्ति की नजर उस पर पड़ जाये, इससे पहले वह खुद गांव के किसी आदमी को देख कर उस गांव के बारे में अपना विचार निर्धारित कर लेना चाहता था.

गांव के किसी व्यक्ति का इधर आना हो सके, इसमें अभी तीन-चार घंटे बाकी थे. समय पहले ही से उसके लिए युग-सा लंबा था. उसे काटने के लिए उसने एक बार पीछे छोड़ आये लोगों के बारे में सोचना चाहा—चाहे वह याद दर्दनाक ही क्यों न ठहरी. पीछे जो वह छोड़ आया था, वहां भी घनिष्ठता थी और. . . . एकाएक नदी की ठंडक को अपने भीतर तक महसूस करके उसे अपनी मुक्ति पर आश्चर्य हुआ. क्या वह संभव था? कुछ भी हो, वह सपना नहीं देख रहा था, इसका उसे पूरा यकीन था—तो फिर? खैर, कुछ भी हो, वह चारदीवारी से बाहर आ गया था.

वह सुबह की प्रतीक्षा में बैठा रहा.

वह सुबह अभी तीन-चार घंटों की दूरी पर थी. इस लंबे समय को काटने के लिए उसने चारदीवारी की उस घनिष्ठता को याद किया, जिससे घुल-मिल कर एक अलग संसार बना था. एक सीमित इच्छा का संसार. लंबी सांसों का संकुचित जीवन. . .

यादें घिस गयी थीं. अधिक आगे की यादें कोड़ों और जूतों के प्रहार से छिन्न-भिन्न थीं. इस लिए उसने अधिक आगे की स्मृति का सहारा न ले कर उसी क्षण तक अपनी याद को पीछे जाने दिया, जब वह जेल के अस्पताल में था. जहां से बाहर के ईख के खेत ठीक सामने थे. . . .

ईख के खेत ठीक सामने थे. वहां की हरियाली स्वतंत्र थी. कुंदन की चारपाई खिड़की के पास होने के कारण उसकी आंखें उस दुर्लभ स्वतंत्रता को घूरा करतीं. कुछ वर्ष पहले यह हरियाली वहां नहीं थी. सभी कुछ देखते-ही-देखते हो गया था. उस हरियाली को हाथों से स्पर्श करने को वह लालायित-सा था. वहां की स्वतंत्रता को महसूसते हुए उसके अपने भीतर की चाह सामने के कंटीले तारों की ऊंची दीवार से टकरा कर रह जाती. उन हरे-भरे खेतों से भी पास थी वह काले पत्थरों की चारदीवारी, जहां वह इतने लंबे समय से था कि वह युग-सा प्रतीत होने लगा था. इस स्थान को कैदी दो नामों से पुकारते थे. कभी वे खुश होते तो उसे ननिहाल कह लेते थे, अन्यथा वह चारदीवारी से ही जाना जाता था. सांसें जितनी वहां घुटती थीं, यहां भी घुटती हैं. अंतर केवल इतना होता कि यहां कुंदन अपने को जंजीर में नहीं पाता. पड़े रहने के लिए यहां की लकड़ी की चारपाई पर वाक्वा की चटाई होती. नंगी लकड़ी और उस पर पतली चटाई—कुंदन के लिए कोई विशेष अंतर नहीं था. दोनों स्थानों की व्यवस्था दो बूंद पानी की तरह एक-दूसरे से मिलती थी.

कैदखाने का यह बारह चारपाइयों का छोटा-सा अस्पताल कैदखाने के पिछवाड़े में पड़ता था. उस दिन कैद के भीतर एक और दीवार खड़ी करते समय कुंदन के पांव पर पत्थर लुढ़क आया था. चोट गहरी थी. यहां अस्पताल में जाने पर भी कैद का एहसास क्षण भर के लिए भी नहीं मिटता. यहां भी एक सिपाही भीतर बैठा होता और दूसरा दरवाजे पर तैनात रहता. दरवाजा एक ही था. टट्टी के लिए जाते वक्त भी एक सिपाही साथ हो जाता था. कुंदन का आज यहां दसवां दिन था. यह तो वह अंगुलियों पर गिन कर याद किये हुए था. लेकिन उसकी गिरफ्तारी के बाद आज तक कितने दिन हुए थे, उन्हें दीवार की लकीरें भी बताने में असफल थीं. पहले तीन वर्षों के बाद दूसरी लकीरों के लिए दीवार पर जगह ही नहीं बची थी. कुंदन को इतना अनुमान अवश्य

था कि इस तरह की कोई और दस दीवारें अब तक भर गयी होतीं.

उसके पैर का घाव अब भी दूसरे दिन जैसा था. दर्द भी लगभग वैसा ही था. यहां प्रवेश पा कर तीन दिन तो उसे एक दूसरे रोगी के साथ उसी की चारपाई पर टिकना पड़ा था. आज भी कई चारपायों पर दो बीमार पड़े हुए थे. अस्पताल में दाखिल होने के दो दिन तक मुंह में डालने के लिए कुंदन को एक दाना भी नहीं मिला था. दवा के नाम पर इधर दो दिन से काले रंग की कोई चीज उसके घाव में लगायी जा रही थी, जिसका कोई खास असर भी नहीं था.

रावेनाल की दीवार के बीच कटी हुई छोटी-सी खिड़की से वह दूर के नये उपजे खेतों को देखा करता. वहां की हरियाली के उस पार की कुछ यादें उसके भीतर कभी विद्रोह कर जातीं. ठीक सामने के मुड़िया पर्वत के पार्श्व में थी वह छोटी-सी बस्ती, जहां लड़ाई की जीत के तीसरे ही दिन बाद उसे अपने लोग मिल गये थे—अपने देश से आये लोग. उनमें उसका कोई नहीं था, पर सभी अपने हो गये थे. टुकड़ी के सबसे अधिक जवान सिपाही के नाते उस समय उसकी उम्र उन्नीस की रही होगी. अपने गठीले शरीर के कारण फौज में दाखिल होने में उसे तनिक भी कठिनाई नहीं हुई थी. आरा की छोटी-सी अस्थायी छावनी में उसने प्रशिक्षण पाया था और बहुत कम समय में बहादुरी की दाद कई बार पा चुका था.

...और एक दिन मॉरिशस को जीतने की चाह लिये वह भी सैकड़ों भारतीय सिपाहियों के साथ जहाज पर सवार हो गया था. सभी सिपाहियों की तरह उसे भी यही बताया गया था कि अंग्रेज मॉरिशस को फ्रांसीसियों से जीत कर भारतीयों के हवाले कर देगा. अंग्रेजों के चंद ठेकेदारों ने सभी सिपाहियों को यही सुनने दिया था कि उनकी वफादारी और वीरता के लिए मॉरिशस उन्हें भेंट कर दिया जायेगा. कुंदन ने कई सिपाहियों से भी यही सुना था कि वह टापू उन लोगों का अपना हो जायेगा. कुंदन मन-ही-मन खुश था. रोवे के जी करले रहल अंखवे खोदा गईल!

उस समय कुंदन के भीतर यही एक बहुत बड़ी खुशी थी. भारत में तो वे गुलाम थे, मॉरिशस में कम-से कम इस लाघव भावना से बच जाने की आशा उसके भीतर की सबसे बड़ी प्रसन्नता थी. जहाज के सभी लोगों की आंखों में आंसू थे. अपने जनों से बिछुड़ने का दुख था. कुंदन की अपनी आंखों में आंसू नहीं थे. जिन लोगों से बिछुड़ना था, वे सभी तो बहुत पहले ही उससे बिछुड़ चुके थे. कुंदन एक नये द्वीप की ओर जा रहा था. एक नये संसार की ओर. उसके अपने भीतर एक टीस-सी अवश्य पैदा हुई थी. काश! उसके वे अपने लोग अकाल के शिकार न हो कर उस बेहतर संसार के लिए जहाज में साथ होते. इस खयाल मात्र से उस समय की कुंदन की वह खुशी सीमित और क्षणिक रह गयी थी.

* *

मलगासी था वह काला परिचारक जिसने उसके पास पहुंच कर उसके खयालों से उसे झकझोर दिया. न चाहते हुए भी कुंदन को उसके हाथ से बूयों की कटोरी लेनी पड़ी. टीन की वह पतली अधमैली कटोरी भीतर के गरम बूयों के कारण बाहर से भी गरम हो गयी थी. उसे एक हाथ से दूसरे हाथ में पहुंचाते हुए कुंदन ने काले परिचारक को गौर से देखा. वह हृष्ट-पुष्ट था. कुंदन उसके उस साहस को भीतर-ही-भीतर आजमाता रहा, जिससे उस मलगासी और उसके साथियों ने दासता को नकारा था. आज उन सभी क्रिओलों को हलके-फुलके कामों में लगे देख कुंदन कभी उनके साहस को सराह उठता, कभी उन्हें आलसी मान उन्हें कोस उठता. एकाध बार उसके मन में यह विचार भी आया था कि इन्हीं मलगासी गुलामों की तरह अगर भारतीय मजदूर भी खेतों में काम करने से हट जायें, तो मालिकों की दशा दयनीय हो सकती है. पर ऐसा होने से रहा. वह बिहारियों को बहुत अच्छी तरह जानता है.

आखिर, वह भी तो उन्हीं में से एक ठहरा. परिश्रम से कभी न थकने वाली जाति खेतों से भागे तो क्यों? लेकिन हाल के कैदियों के मुंह से जिस अत्याचार की कहानी वह सुनता आ रहा था, उसके खिलाफ तो वे खड़े हो सकते थे. यहां भी कुंदन को उन लोगों की सहनशीलता याद आ जाती, संतोष याद आ जाता. उसे इन दोनों शब्दों से चिढ़ थी. कभी वह बिहारी मजदूरों के भूमि-प्रेम को अंधविश्वास मान लेता, कभी उस आस्था को इस देश का भविष्य मान कर गंभीर हो जाता.

उसकी अपनी चारपाई के ठीक सामने मंगरू की चारपाई थी. इस अस्पताल में मंगरू ही एक व्यक्ति था, जिससे उसकी घनिष्ठता कैदखाने से शुरू हुई थी. मंगरू से जेलर के पानी का बरतन नीचे गिर कर फूट गया था, जिसके बदले में भीमकाय जेलर ने पूरी ताकत के साथ अपनी लात उस पर दे मारी थी. आसपास के सभी कैदियों के देखते-ही-देखते मंगरू उछल कर सामने की दीवार से जा टकराया था. उसके सिर से खून बहते देख कर भी किसी कैदी की हिम्मत नहीं हुई थी कि बढ़ कर उसे उठाये. हंटरों की परवाह किये बिना कुंदन ने उस वक्त उसके सिर को अपनी गोद में ले लिया था, जब उसने उसे बेहोश पाया था. फिर तो दो और कैदियों की हिम्मत आगे बढ़ने की हो सकी थी, पर किसी से कुछ नहीं हो सका था, क्योंकि दो सिपाही क्रिओली में गालियां देते हुए सामने आ गये थे.

कुंदन का खून कई अवसरों पर खौला था. सिपाहियों के कंधे से बंदूक छीन लेने के लिए कई बार उसकी अंगुलियां हिल-डुल कर रह गयी थीं. उसके दांत कई बार किटकटा उठे थे. हर बार उसके भीतर का सिपाही-आवेश मोम की तरह भीतर-ही-भीतर जम कर रह गया था. बरबस बने मलगासी सिपाहियों के कंधों की बेढंगी लटकी बंदूकों को देख कर उसे अपने बेहतर सिपाही होने का मन-ही-मन गर्व होता. कभी अवसर आ जाये, तो वह प्रमाणित कर दे. पर अवसर आये तब तो! उसे अपनी नादानी पर हंसी आ जाती. इस कैद में उसके दिमागी तर्क तक संकुचित हो गये थे. यहां उमर ढली जा रही थी, फिर भी उसका बच्चों की

तरह सोचे जाना बंद नहीं होता.

कई अन्य अवसरों की तरह उस दिन भी बड़े संयम के साथ उसे अपने को संभालना ही पड़ा था. वह पीछे हट गया था. फौजी जीवन में हमेशा आगे बढ़ना सीख कर भी वह अपनी उस सीख का उपयोग नहीं कर पाता. जब से उसके फौजी कपड़े उस पर से उतरे थे, वह लगातार पीछे ही हटता आ रहा था. उसकी हर छोटी गुस्ताखी के लिए उसके सिर पर भारी बोझ रख कर उसे पीछे को झपटाया जाता. कई बार गिरने पर सिर का भारी पत्थर उसके ऊपर आने से बचा था. उसे पीछे हटना गवारा नहीं था, पर क्या करता? पीछे हट चुकने के बाद ही उसे अपने फौजी प्रशिक्षण के चंद उसूल याद आये. आरा जिले की छावनी में कर्नल भग्गू सिंह कई बार उससे कह चुका था कि क्षत्रीय जितनी बार पीछे को हटता है, उतनी बार उसकी मृत्यु होती है. इस याद के साथ कर्नल का बड़ी-बड़ी मूंछों वाला गोरा चेहरा उसकी आंखों के सामने झिलमिलाने लगता और कुंदन का अपना गोरा चेहरा लाल हो उठता.

★ ★

आज का बूयों भी पतले मांड़ के ऊपर सहजन के चार-पांच पत्तों के सिवा कुछ भी नहीं था. नमक ज्यादा पड़ गया था. या यह भी हो सकता है कि जानबूझ कर ऐसा किया गया हो. दो दिन पहले तीन मरीजों ने यह कह कर बूयों नहीं पिया था कि वह एकदम पनछोर बना था. नमक की उस कमी को इस बार बहुत ही अच्छी तरह से पूरा कर दिया गया था. सामने के सिपाही की आंखें बचा कर कुंदन ने खिड़की के जरिये कटोरी को खाली कर दिया.

अस्पताल के भीतर बैठे सिपाही को भोजपुरी नहीं आती थी, यह जान कर कैदी आपस में कुछ समय खुल कर बातें कर लेते थे. मंगरू ने अपनी चारपाई पर पड़े-पड़े कुंदन से पूछा— क्यों कुंदन, आज भी कोई डाक्टर आयी कि नहीं?

—अभी तो डाक्टर के यहां से गये तीन ही दिन हुए हैं, मंगरू भैया! बगल के जगेसर ने धीरे से कहा.

—अरे, अभी कोयके मरे की नौबत तो आये! मंगरू ने एक लंबी सांस ले कर कहा.

—दिन मोरे ओही दिवस भये आन, खात रहली मेवा पीयत रहली गुड़ पान.

उसके चेहरे पर जो मुसकान थिरक आयी थी, वह व्यंग्य से सनी हुई थी— वह व्यंग्य जो आदमी का अपने ही ऊपर हो.

मंगरू की बगल की चारपाई पर दो रोगी दो अलग दिशाओं की ओर मुंह किये सो रहे थे. दीवार की ओर वाले जगलाल ने, जो यहां से भाग निकलने के दो असफल प्रयास कर चुका था, दबे स्वर में कहा कि उस डाक्टर के आने-न आने से क्या लाभ जो रोगी से चार कदम दूर ही पर खड़े रह कर चिकित्सा को पूरा कर जाता है! सप्ताह के भीतर दो कैदी मरे थे और चार नये आ गये थे. चारों नये दाखिल हुए रोगियों को जोरों का बुखार था. फिर भी दो दिन उन्हें नीचे के बोरों पर एक ही साथ पड़े रहने दिया गया था. कुंदन ने चाहा था कि अपनी जगह उन चारों में से सबसे अधिक पीड़ित को दे दे. इस पर अस्पताल के मुख्य परिचारक ने उसे मां की गाली सुनाते हुए पीछे को धकेल दिया था. उसके पांव की चोट से खून बह चला था. दर्द बढ़ गया था. रात को वह सो नहीं सका.

रात को काफी देर तक वह मन-ही-मन बड़बड़ाता रहा —ओ रे मोरी नींदवा कहां खेले गुली-डंडवा!

इस अस्पताल में सुबह महीनों देर से आती थी.

सुबह होते ही दो मरीजों को हाथों में जंजीर पहना कर काली कोठरी में लौटा दिया गया था. दूसरे दिन मंगरू की बारी थी. मुख्य परिचारक से अपनी बारी सुन कर उसे हंसी आ गयी थी. खुशी से नहीं, बल्कि उस करारे व्यंग्य के कारण, जिसे वह भीतर-ही-भीतर महसूस रहा था. उसके माथे की चोट कुछ-कुछ अच्छी हुई थी, पर इधर तीन-चार रात से उसके पेट का दर्द और भी बढ़ गया था. दर्द इतना अधिक था कि वह बच्चे की तरह रोने लगता था. चीत्कार कर उठता था. यहां के अन्य मरीजों को उसकी चीख से बचाने के लिए उसे चारदीवारी में लौटाया जा रहा था. कम-से-कम इस बात की थोड़ी-बहुत खुशी मंगरू को जरूर थी कि रोगी कैदियों का इतना खयाल तो रखा ही गया था. दिन में उसका दर्द कम होता था और उसके अपने हाथों में, कुछ न करने के कारण, खुजली-सी होने लगी थी. पिछले दिनों रोगियों को वाक्वा के पत्तों से चटाई बटनी पड़ती थी. सूखे पत्तों के अभाव के कारण वह भी बंद था.

जिंदगी में इससे पहले मंगरू कभी बीमार नहीं पड़ा था. उसकी छोटी अंगुली कभी नहीं दुखी थी. एक दिन के लिए भी वह कभी बेकार नहीं रहा, जबकि यहां पूरे तीन सप्ताह से बैठे-बैठे वह ऊब गया था. इन तीन सप्ताहों में उसे बहुत कम नींद आयी थी, पर जब भी आयी थी, सपने में उसने अपने को पत्थर ही तोड़ते पाया था. वह सभी कैदियों से अधिक फुर्तीला था. सबसे अधिक पत्थर तोड़ता था. उस काम को करते हुए चिपचिपाती गरमी में भी अपने शरीर के बहते पसीने की ठंडक को महसूसता रहता. उस सक्रियता में वह अपने परिवार की याद को बिसार जाता, जब कि अस्पताल की चारपाई पर ऐसा करना उसके लिए असंभव था. यहां तो हर क्षण उसे फूलवंती की याद आती. दोनों बच्चों के चेहरे सारा धुंधलापन लिये आंखों के सामने झिलमिला उठते. उनकी इस समय की हालत के खयाल से वह भीतर-ही-भीतर कांप उठता.

सात लंबे, नीरस साल बीत चुके थे. उसकी पुष्पा तो उसी समय दस वर्ष की थी. अब तो विवाह-योग्य हो गयी होगी. इस खयाल से उसकी धमनियों का रक्त जमता-सा प्रतीत होने लग जाता. फूलवंती क्या कर पायी होगी? यह प्रश्न वह कुंदन से कई बार कर चुका था. बार-बार उसे सांत्वना दे कर कुंदन अपनी उस सांत्वना

को अधिक खोखला पाने लगता. कुंदन ही तो था वह, जिसको सिपाही और परिचारक की आंखें बचा कर वह अपनी कहानी सुनाया करता. मंगरू को अपनी उम्र मालूम नहीं थी, पर जब कुंदन अपनी उम्र का अनुमान पैंसठ के लगभग का करता, उस समय मंगरू अपनी उम्र का अंदाजा पचास का लगा लेता. वह इससे भी दो-तीन वर्ष अधिक ही का होगा-- कुंदन सोचता. उसके चेहरे की झुर्रियों और सलवटों को देख कर वह ऐसा नहीं सोचता, क्योंकि उनसे तो वह और भी बूढ़ा प्रतीत होता था.

दिन में खाना काफी देर से पहुंचा. तीन दिन से लगातार मिलने वाले मकई के भात को इस बार भी अपने सामने पा कर मंगरू के होंठों के बीच से वही फीकी मुसकान निकल पड़ी. तीन दिनों से वह अपने हिस्से के भात को बगल के मरीजों में बांटता आ रहा था. इस मकई के भात से उसके पेट का दर्द और भी बढ़ जाता था. मंगरू को एकटक मिट्टी की थाली की ओर देखते हुए कुंदन से नहीं रहा गया. उसने परिचारक से टूटी-फूटी क्रिओली में कहा--यह आदमी इसी मकई के भात को खा-खा कर रात भर सो नहीं पाता. पेट-दर्द से चिल्लाता रहता है. कम-से-कम इस व्यक्ति के लिए किसी हलकी चीज का तो प्रबंध किया जा सकता है!

परिचारक ने पहले तो कुंदन को घूर कर देखा. उसकी आंखों में किसी तरह का भय न पा कर उसने हंस कर व्यंग्य किया --कल से यह हलवा खाने के लिए बड़े घर को लौट रहा है. तुम्हें चिंता करने की कोई बात नहीं.

--दोक्तेर फिन आपेस ली मांज जीरी माई. बिसेसर ने बड़े साहस के साथ कहा. परिचारक ने बिसेसर के ही स्वर में उत्तर दिया --क्यों नहीं! डाक्टर ने सचमुच ही इसे मकई का भात खाने से मना किया है. उसने तो तुम सभी को सेहत के लिए बसमती चावल का हुक्म दिया है. साला छिनुरझप करत है!

उसके इस व्यंग्य से भात परोसने वाला काला रसोइया अपनी भयंकर हंसी से ईख के सूखे पत्तों के छाजन तक को हिला गया. कुंदन ने तो ऐसा ही महसूस किया. हंसी थमने के बाद एक क्षण का सन्नाटा रहा. दूसरे क्षण जगेसर ने अपने मोटे स्वर में अप्रत्यक्ष प्रश्न किया ---अभी तक दवाई नहीं मिली है?

परिचारक की चिल्लाहट के साथ निकली आवाज प्रत्यक्ष उत्तर था.

--खाने के बाद माई हियां त सोझिया के मुंह कुत्ता चाटेला!

कभी दवा खाने से पहले दी जाती थी, कभी बाद में. कभी यह कह कर बिल्कुल ही नहीं दी जाती कि दवा अभी पहुंची नहीं. सभी मरीजों को एक ही दवा दी जाती थी. वही सफेद रंग वाली. सूखे नारियल का आधा छिलका था वह जिससे कटोरे का काम लिया जाता. एक ही कटोरे से सभी मरीजों को पीना पड़ता था. पिछले दिनों उस लंबी चोटी वाले व्यक्ति की मृत्यु का कारण परिचारकों ने उसके दवा लेने से इनकार को बताया था. इस पर किसी ने हंस कर कह दिया था कि वह तो दवा लेने-पीने वालों से भी अधिक समय तक छटपटाता रहा. मंगरू ने पूरे गांभीर्य के साथ कहा था कि इन जल्लादों को ब्राह्मण की मृत्यु की ब्रह्म-हत्या लग कर रहेगी!

★ ★

रात को धीमे स्वर में जगलाल अपने आसपास के दो-चार व्यक्तियों को अपने दोनों बार के भागने की असफलता की कहानी सुनाता रहा. एक बार तो वह कंटीले तारों के कारण पकड़ा गया था, दूसरी बार अपने साथ के डरपोक साथी के कारण. फिर तो यहां से निकल सकने की बात को एकदम असंभव मान कर नये प्रयास की नौबत ही नहीं आयी. किसी के इस प्रश्न पर जगलाल चुप हो गया था कि अगर सचमुच ही यहां से भागना असंभव था, तो फिर कई लोग कैसे फरार हो सके थे?

मंगरू के पेट का दर्द कुछ कम था. उसे नींद आ गयी थी. लेकिन कुंदन उस कहानी को बड़े ध्यान से सुनता रहा. इससे पहले वह संतू के भाग जाने की कहानी सुन चुका था. उस युवक ने अपने ऊपर बांस की बौछार करते हुए एक गोरे को एक ही कुदाली में मार डाला था. अपनी गिरफ्तारी के तीसरे ही दिन बाद वह कैदखाने की ऊंची दीवारों को फांद गया था. दूसरे ही दिन अपने घर पहुंच कर हताश उसने अपने को फिर से सिपाहियों के हवाले कर दिया था, क्योंकि उसकी नवविवाहिता पत्नी ने बलात्कार की शिकार हो कर आत्महत्या कर ली थी.

संतू की कहानी से अपने को हटा कर कुंदन जगलाल की योजनाओं की असफलता पर गहरा दुख अनुभव करता रहा. उससे हुई भूलों पर वह उस समय तक गौर करता रहा, जब तक उसे भी सभी मरीजों के बाद नींद नहीं आ गयी.

कुंदन सबसे बूढ़ा न हो कर भी सबसे पुराना कैदी था. जिस दिन उसकी गिरफ्तारी हुई थी, उस समय तो उसके इर्द-गिर्द के ये सारे लोग इस द्वीप में पहुंचे भी नहीं थे. इन लोगों के इधर पहुंचने से कोई बीस-पच्चीस वर्ष पहले ही कुंदन अपनी टोली के कुछ मित्रों के साथ भारत लौट गया होता, अगर... अगर उस दिन छावनी से छुट्टी पा कर रास्ते में वह उस नदी के किनारे सुस्ताने के लिए रुक न जाता. अपनी पुरानी कहानी कुंदन को सुना चुकने के बाद मंगरू ने बार-बार यह चाहा था कि कुंदन भी उसे अपनी कहानी सुनाये. बार-बार वह कुंदन से अनुरोध करता रह गया था और कुंदन हर बार 'फिर कभी' कह कर टाल जाता. आज मंगरू के उधर लौट जाने के बाद उसका हृदय एकाएक भारी-सा हो गया था. मन-ही-मन पश्चाताप को झेलते हुए वह अपने आप को अपनी वह कहानी सुनाता रहा, जिसकी वजह से वह कैद हुआ था : नदी-किनारे के राफिया के पेड़ के नीचे वह अपने हाथों पर सिर को पीछे की ओर टिकाये

लेट गया था. सामने की पहाड़ी से आती हुई ठंडी हवा उसके शरीर के पसीने को सोखती हुई उसकी सांस तक को ठंडक पहुंचा रही थी...

...कि तभी एकाएक सामने के पानी से छपाक की आवाज हुई थी. हलकी नींद के उचट जाने की घबराहट के साथ वह अपनी जगह पर खड़ा हो गया था. आवाज को लक्ष्य करके उसने अपने सामने जो दृश्य पाया, उसे देख वह स्तंभित रह गया था. वह अपने को भीतर-ही-भीतर कांप कर गर्म हो जाने से रोक नहीं सका था.

देखता रह गया...सामने के उस दुर्लभ दृश्य को. वह अपनी सांसों को थामे उस दृश्य को अपलक देखता रह गया था. उस समय वह अपने सामने जो कुछ देख रहा था, जीवन में पहली बार के लिए.

अपने भीतर की उष्णता और बाहर की खामोशी के साथ वह उस वक्त भी उसी ओर देख रहा था, जब पीछे से किसी का धक्का खा कर वह मुंह के बल नहीं जा गिरा था. फिर तो फ्रेंच में चुनिंदा गालियों की बौछार थी और सामने के टोप पहने उस गोरे की लातों की मार. इससे भी बाज न आ कर गोरे ने सामने से पत्थर उठा कर कुंदन पर पटकना चाहा था, कि तभी कुंदन ने प्रशिक्षण पाये सिपाही की फुर्ती के साथ उछल कर वार को बेकार कर दिया था. गोरे ने पत्थर को दोबारा उठा कर जब उसे कुंदन पर उछालना चाहा, तो कुंदन के लिए बस अपने को बचाने का एक ही उपाय था—उसके पैरों से लिपट जाना. उसने तेजी के साथ वैसा ही किया. गोरा पत्थर के साथ गिर पड़ा था और उसकी कनपटी उसी पत्थर से टकरा कर रह गयी थी.

उस घटना के तीन ही दिन बाद कुंदन को एक गोरी औरत को नंगे स्नान करते देखने और उसके पति की हत्या के अभियोग में उम्र-कैद की सजा हो गयी थी. अपने लिए एक फौजी अदालत की रियायत मांगते हुए कुंदन ने कैदखाने की सबसे काली कोठरी पायी थी. मंगरू को अपनी कहानी न सुना कर वह अपने हृदय को बोझिल कर गया था. अपने को पश्चाताप से बचाने के लिए वह स्वयं को सांत्वना देता रहा कि चारदीवारी में लौटते ही वह मंगरू को अपनी कहानी सुना डालेगा.

★ ★

मुद्दत पहले जब वह कैदखाने के भीतर जंजीर के साथ पहुंचा था, उस समय कैदियों में सभी मलगासी गुलाम थे. तीन दिन बाद उसे पता चला था कि कैदखाने के बीच की दीवार के उस पार चार भारतीय भी थे. कुछ दिनों बाद उनमें से दो से वह मिल भी सका था. अंग्रेजों द्वारा मॉरिशस के जीते जाने के कई साल पहले वे दोनों वहां पहुंचे थे. एक व्यापार करने आया था. दूसरे का इस द्वीप में आगमन इंजीनियर के रूप में हुआ था. दोनों व्यक्तियों पर एक ही आरोप था : मजदूरों को बहका कर जमींदारों के विरुद्ध खड़ा करना. न जाने क्यों कुंदन को यह आरोप बहुत अच्छा प्रतीत हुआ था. उसने चाहा कि खून के बदले उसके ऊपर भी ऐसा ही आरोप होता.

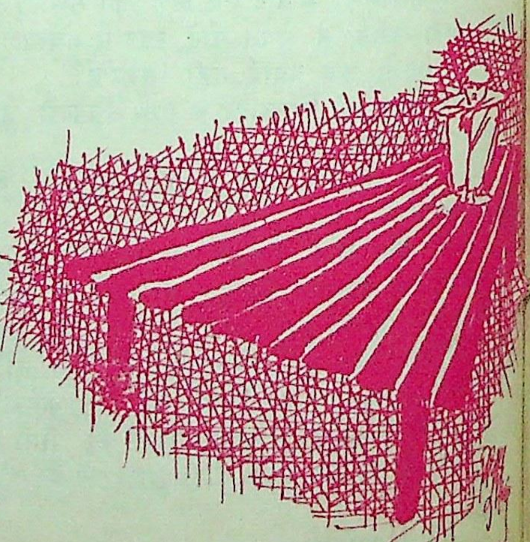
उस समय कैदखाना विस्तृत भी नहीं था. दाहिनी ओर की दीवारें नहीं खड़ी हुई थीं. कैदियों की संख्या दो सौ से अधिक नहीं रही होगी. कैदियों में एक भी गोरे रंग का नहीं था. सभी मलगासी. सांवले, काले और भीमकाय. उनके पैरों में हर वक्त जंजीरें होती थीं. शुरू में जब वे पत्थर तोड़ने के लिए एक साथ मिल कर फिर टुकड़ियों में बंटते तो कुंदन को उनसे डर लगता, लेकिन समय के साथ वह लोगों से हिलमिल गया था. लोग इसे अपनी जबान सिखाते. वह लोगों को चीजों के हिंदी नाम सिखाता.

जिस दिन कुंदन ने गाब्रियल नाम के क्रिओल कैदी को पीछे करके उसकी जगह चाबुक की मार को अपने ऊपर सह लिया था, उस दिन से सभी मलगासी कैदी उसे 'फ़ेर' कह कर पुकारने लगे थे. जब तक वे लोग वहां रहे, कुंदन लोगों का भाई ही बन कर रहा. गाब्रियल कहता —तू नावायेर फ़ेर!

कुंदन मन-ही-मन सोचता, काश गाब्रियल के कहे अनुसार सभी मजदूर भाई-भाई होते!

जुल्म ढाने वाले दो व्यक्ति भाई होते हैं, जुल्म सहने वाले दो व्यक्ति भाई नहीं हो पाते. मलगासी बंदियों ने सीधे बालों वाले सांवले बंदियों को अपना भाई नहीं माना.

बारी-बारी से मलगासी बंदी चारदीवारी से बाहर होते गये थे. उनमें से दो, जिन्हें उम्र-कैद की सजा थी, अवधि से पहले चल बसे थे. मलगासी कैदी जाते रहे. कुछ मालाबार-कैदी भीतर आने वाले थे. कुंदन ने उधर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था. लेकिन मालाबार नाम से भारतीयों को कैद के भीतर पा कर उसे जितनी हैरानी हुई थी, उतना ही हर्ष भी. वह हर्ष भी अपने ढंग का था—हंसी-आंसू साथ लिये. हर दूसरे-तीसरे दिन कोई-न कोई नया कैदी भीतर आ ही जाता. कैदियों की संख्या बढ़ती गयी थी.



सभी की कहानियां एक-सी होतीं...

पत्थरों के नीचे से सोना पाने की वही एक-सी चाह लिये मारीच देसवा पहुंचना. जहाज से उतरते ही गले में नंबर लटकाये खेतों में झोंका जाना. आधा पेट खाना, आधी देह कपड़ा. पीठ पर बांसों की बौछार और....

कोई बैल जैसे काम से इनकार के कारण इधर आ गया था. कोई भारत लौटने की मांग करके. कोई न्याय की दुहाई देता हुआ, तो कोई बीमारी के कारण तीन दिन नौकरी पर न पहुंच सकने के कारण. किसी की गिरफ्तारी केवल इसलिए हो गयी थी कि उसने अपने गले से नंबर लिखे टीन के टुकड़े को निकाल फेंका था. किसी ने सरदार को जवाब देने की हिम्मत की थी. जिस व्यक्ति ने पहले दिन भीतर आते ही आत्महत्या कर ली थी, उसकी गिरफ्तारी इसलिए हुई थी कि सरदार की मांग पर उसने अपनी खूबसूरत पत्नी को पहली रात मालिक के घर नहीं पहुंचाया था.

★ ★

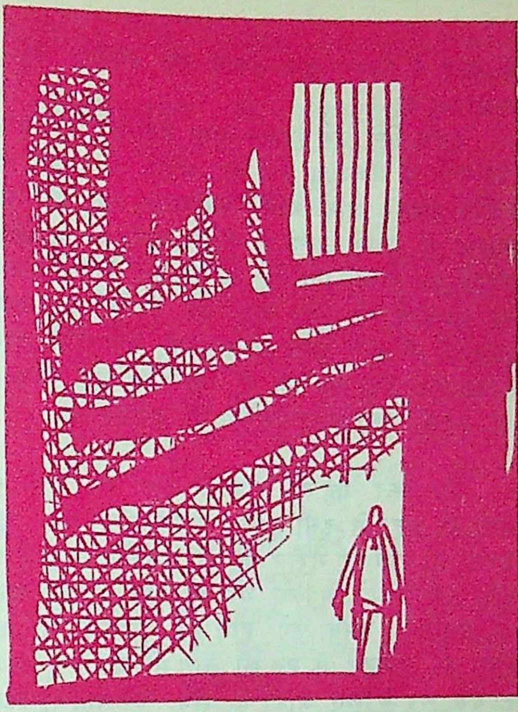
अस्पताल में कुल चार खिड़कियां थीं. वे भी इतनी छोटी कि उनसे बाहर निकलना कठिन था. यदा-कदा थोड़ी-बहुत हवा भीतर आ ही जाती थी, जिससे दोपहर की चिपचिपाती गरमी से द्वार पर का सिपाही ऊंघने लगता था. उसके पास वाला रोगी उसके पसीने की गंध से नाक सिकोड़ते ही अपने मुंह को दूसरी ओर फेर लेता. लोग बताते कि न नहाने के कारण उसके पसीने से इस तरह की दुर्गंध आती थी. इधर तो सभी रोगियों के लिए भी नहाने का कोई खास प्रबंध नहीं था. कुंदन को भी नहाये कई दिन हो गये थे, फिर भी उसके पसीने की गंध इतनी बुरी नहीं हो पायी थी. कुछ लोग इसे त्वचा-भेद बता कर चुप रह जाते.

खिड़की से हाथ बाहर करके कुंदन ने बाहर की हवा को महसूसना चाहा, पर ऐसा लगा कि हवा चल ही नहीं रही थी. अपने शरीर का पसीना उसे लेई की तरह लसलस लगने लगा था. टट्टी के द्वार की बाल्टी में भी पानी इतना कम होता था कि उससे हाथ के अलावा बाकी अंगों को भिगोना तक कठिन था. वह पानी भी बिरले ही साफ होता था. कई दिनों तक बाल्टी के न धुलने कारण उसके भीतर के रेंगते सफेद कीड़े साफ दिखायी पड़ने लगते थे.

जिस लोटे के साथ टट्टी के भीतर प्रवेश करना पड़ता था, उसकी पेंदी घिस गयी थी. भीतर निवृत्त होते-होते लोटे का आधा पानी बह जाता था.

उस प्राकृतिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए सभी को शीघ्रता होती थी. लोटे में छेद तो था ही, उसी तरह के कई छोटे छेद अस्पताल के छप्पर में भी थे. थोड़ी-सी बारिश के वक्त भी छाजन रिसने लगता था और चारपाइयों को इधर से उधर करना पड़ जाता था.

दिन में रोगियों को जो मान्योक परोसा गया था, वह अच्छी तरह सीज नहीं पाया था. यह कंद अच्छी



तरह सीज जाने पर मकई के भात से अच्छा ही होता था. शायद यही कारण था कि उसे अच्छी तरह सीजने नहीं दिया जाता. उस तरह का अवसर बहुत कम होता, जब सीजे हुए रूप में मान्योक मरीजों के सामने रखा जाता. वैसा रसोइये की भूल से हो जाता होगा. अपने दांतों के नीचे उसे कच-कच पा कर कुंदन ने उसे उगल देना चाहा था, पर उसके भीतर की भूख ने उसे ऐसा करने ही नहीं दिया. किसी तरह खाना ही पड़ा था.

पिछली रात कुंदन के पांव का दर्द बहुत अधिक बढ़ गया था. बड़ी कठिनाई से वह चल सका था. उधर सप्ताह भर भूमि पर सोते रहने वाला व्यक्ति भी जो मंगरू के बाद उसकी चारपाई पर आ गया था, रात भर कराह कर कुंदन के दर्द को दोगुना कर गया था. इस व्यक्ति की जांघ का घाव पक कर चमकीले पीले रंग का हो गया था. उसके काटे जाने के दिन को रोज ही स्थगित किया जा रहा था. सात दिन से लगातार उससे यह कह-कह कर उसे जिलाया जा रहा था कि दूसरे दिन डाक्टर के पहुंचते ही पहला काम उसके घाव को काटना होगा. पिछली बार डाक्टर ने घाव को दूर ही से देख कर कह दिया था कि अभी वह काटे जाने के लिए तैयार नहीं था.

सुबह अपने पांव के दर्द से खुद दुखी कुंदन ने जब घाव वाले व्यक्ति के पास पहुंच कर उसकी हालत जाननी चाही, उस समय वह खाट पर बेहोश था. रात में उसका घाव अपने आप फूट गया था. खून और पीब में वह लथपथ था. खून कुछ इतना अधिक बहा दीख रहा था कि सभी मरीज घबरा गये थे. दिन में खबर आयी थी कि डॉक्टर खुद बीमार हो जाने के कारण बिल्कुल नहीं पहुंच सकता. परिचारक घाव को बिना पोंछे ही मरीज की बेहोशी की हालत

में घाव में बिना कुछ लगाये उसे अधमैली पट्टी से बांध गया था.

दूसरे दिन उसे एकदम चंगा बता कर डाक्टर उसे कैदखाने में भिजवा देने का आदेश दे गया. वह व्यक्ति अपनी जांघ थामे गिड़गिड़ाता रहा और परिचारक ने उसके हाथों में जंजीर पहना कर सिपाही के हवाले कर दिया. एक पैर से चल कर रोता-चिल्लाता वह कैदखाने को चल पड़ा. उसे घूम-घूम कर अपनी चारपाई की ओर देखते पा कर सभी मरीजों को उसकी हालत पर दया आ गयी थी. किसी से कुछ होना तो दूर, अपनी दया जाहिर करना भी असंभव था.

और फिर यह तो रोज की बात थी. आगे भी सभी को यहां से इसी हालत में निकलना था. कुछ अच्छा हो जाने पर मरीज को घर भेज दिया जाता है, पर चूंकि इन कैदियों के लिए घर का प्रश्न ही नहीं उठता था, इसलिए उनके चंगे होने का इंतजार भी नहीं होता था. डाक्टर के मन की बात थी, जब चाहे किसी को बड़े घर के लिए आज्ञा दे जाये. जब चाहे वह किसी को अच्छा बता सकता था और जब चाहे किसी को नाजुक स्थिति में चारदीवारी में लौटा सकता था.

कुंदन के सामने वाली छोटी-सी खिड़की से वह बकाइन का निपाती पेड़ स्पष्ट दिखायी पड़ता, जिसकी डालियों पर मैना की जोड़ी फुदकती रहती थी. ये मैनाएं ही भारत के अपने गांव की सब से अधिक याद दिलाती थीं. इन मैनाओं को यहां की फसल की रक्षा के लिए लाया गया था. पहली बार कैद की दीवार पर एक मैना को देख कर वह हैरान रह गया था. पहले तो मॉरिशस में उसने कहीं भी मैना नहीं देखी थी. ब[...] बाद में उसके अन्य साथियों ने बताया था कि उ[...] लोगों के साथ मैना की पचास जोड़ियां आयी थीं. अ[...] साथियों से सभी कुछ सुन चुकने के बाद कुंदन ने [...] कर कहा था—वाह रे मेरे देश की मैना! जहां तुम्ह[...] देश के लोग खूरी घंस-घंस कर बंजर जमीन को खे[...] में बदल रहे हैं, वहां तुम भी फसलों पर उत्पात कर[...] वाली टिड्डियों को मिटा कर इस देश को संवा[...] में अपने ढंग का सहयोग दे रही हो!

भारत में मैना को देखना तक कुंदन नहीं चाह[...] था. लेकिन यहां उसी पक्षी से उसे अगाध प्यार [...] चला था. चारदीवारी के भीतर मैना की टांय-ट[...] में उसके लिए जितनी आत्मीयता थी, वह कहीं नहीं [...] वह लंबे समय तक मैनाओं को देखता और उ[...] सुनता रहता. कभी अपनी मुट्ठी में रोटी का छो[...] टुकड़ा या मकई का थोड़ा-सा भात छिपा कर पत्[...] तोड़ने निकलता. उन चीजों को मैनाओं के बीच फ[...] कर वह गद्गद् हो जाता. उनकी कांव-कांव में उ[...] लिए कहानियां होतीं. उनमें उसके गांव की नदियों[...] कलकल थी. पनघट की औरतों की धांव-धांव थी. गा[...] की वे तमाम यादें थीं, जिन्हें वह बिसार गया था. [...] की हरियाली, वहां की सूखारी, सभी कुछ आंखों [...] सामने बरबस ही आ जाते. कुंदन चाहता कि इन पक्षि[...] में से एक तो कभी उसके कंधे पर आ टिके, लेकिन लग[...] कि मैनाओं को अपनी स्वतंत्रता अधिक प्यारी थी[...]

परिचारक को अपना पांव दिखाते हुए कुंदन [...] चाहा कि उस पर लगाने के लिए उसे कोई दवा मि[...] उसकी बात को अनसुनी करके परिचारक चला ग[...]



दूसरी बार जब कुंदन ने फिर से दवा का आग्रह किया तो एक दूसरा मोटा परिचारक मिट्टी की सुराही जैसी किसी चीज के साथ उसके पास पहुंचा. नीले रंग के एक तरल पदार्थ की कुछ बूंदों को घाव पर टपका कर वह चला गया. उन बूंदों से कुंदन का समूचा पैर झनझना उठा.

जहर की-सी जलन थी वह. अच्छा ही हुआ, परिचारक वहां से उसी क्षण टल गया था, अन्यथा कुंदन ने अपने हाथ का जूठा बरतन उस पर चला दिया होता.

कुछ देर बाद कुंदन को अपना पैर और भी बेकार लगने लगा. घाव एक बार फिर ताजा हो गया था. जगलाल ने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा--दवा-इयवा काम करत बाते, इही खातिर वह दुख रहल बा. सांझ तक अच्छा हो जाय, कुंदन, जरा धीरज धर.

सांझ से रात हो गयी. कुंदन के चेहरे की पीड़ा बनी रही. जगलाल ने इस बार समस्त सहानुभूति के साथ प्रश्न किया--बहुत ज्यादा अंगरत बा का?

कुंदन ने होठों के बीच एक कठिन मुसकान ला कर सचाई को छुपाने का प्रयत्न किया. रात भर बिना कराहे वह दर्द को भीतर-ही-भीतर महसूसता हुआ करवटें बदलता रहा. एक पल के लिए भी उसकी आंखें नहीं झपक सकीं. रात में कैदखाने से आती किसी कैदी की चीत्कार को वह रह-रह कर सुनता रहा. उस चीत्कार से उधर की पीड़ा का अधिक असह्य होना स्पष्ट था. अपनी पीड़ा को भूलने के लिए कुंदन को मनोबल मिला.

--तुम्हें बड़े घर लौट जाने की आज्ञा मिली है.

कुंदन को हैरानी नहीं हुई. पहले ही बात उसकी समझ में आ गयी थी. दोपहर में सिपाही अस्पताल के भीतर पहुंचा. कुंदन के हाथों को जंजीर से जकड़ा और उसे लिये अस्पताल से बाहर होने लगा. बारी-बारी से सभी मरीजों की आंखों से कुंदन की आंखें मिलीं और हटती गयीं. सभी आंखों ने गोया यही कहा . . फिर मिलेंगे . . .चारदीवारी के भीतर!

कैदखाने की पत्थर की ऊंची दीवारों से किसी बंदी का झनझनाता हुआ स्वर गूंजता रहा :

'मूसे मारतें के खेतवा में सोना फड़ल बा
हमर तोहर हथवा में लोहा फड़ल बा!'

कुंदन इस स्वर को पहचानता था. वही पागल कैदी. लोहे की छड़ों को दोनों मुट्ठियों से पकड़े कभी उन्हें ईख समझ कर दांतों से छिलके उतारने की कोशिश करने लगता था. कहा जाता है, वह भारत का कोई बहुत बड़ा क्रांतिकारी था. अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तारी के बाद उसे इस द्वीप में भेज दिया था. काला पानी!

—अगले अंक में—

अस्पताल से कुंदन की जेल में वापसी. नयी कोठरी में कुछ कागज. दूसरे दिन सड़क पर काम करते हुए उन्हें पढ़ना. सुरंग की सूचना. . .और कुंदन नदी के पास के गांव में --जहां एक और ही तरह की गुलामी उसका इंतजार कर रही थी...

मैडागासकर की लोककथा

जलपरी

एक मछुआ नदी के किनारे बैठा मछलियां मार रहा था. उसने बंसी पानी से बाहर खींची तो क्या देखता है कि कांटे में मछली की जगह एक अतीव सुंदरी जलपरी फंसी हुई है. उसका दुग्ध-धवल शरीर बड़ा ही कोमल था. बालों की काली-काली लटें उसके कंधों पर लहरा रही थीं. नदी में वह कच्ची मछलियां खा कर जीती थी.

बाहर आयी तो उसने उस आदमी से कहा-- तुम मुझ से विवाह कर लो. पर एक शर्त है-- किसी को बताना मत कि मैं कहां से आयी.

मछुआ बड़ा खुश हुआ. वह उसे घर ले गया और उसके साथ शादी कर ली. इस खुशी के अवसर पर उसने बड़ा शानदार जश्न किया. फिर अपनी सुंदर पत्नी के लिए उसने एक झोपड़ी बनायी और उसमें उसके साथ वैसे ही रहने लगा जैसे अन्य मछुए अपनी-अपनी पत्नियों के साथ रहा करते थे.

लोगों को ताज्जुब होता कि उस गरीब मछुए को ऐसी सुंदर पत्नी कहां से मिल गयी. वे उससे तरह-तरह से पूछते पर मछुए ने अपनी पत्नी की शर्त को तोड़ा नहीं और किसी को हवा तक न लगने दी कि वह कहां से आयी है.

फिर उनके चार बच्चे हुए. दो लड़के और दो लड़कियां. वह मछुआ अपने गांव का सबसे सुखी आदमी बन गया था.

पर एक दिन क्या हुआ कि उस मछुए ने कुछ ज्यादा पी ली. दूसरे मछुओं को मौका मिल गया. उन्होंने उसे घेर लिया और उससे तरह-तरह के प्रश्न करने लगे. शराब की मस्ती ठहरी. पहले तो वह बड़ी-बड़ी बातें हांकता रहा, पर फिर उसने अपने विवाह का राज खोल दिया.

नदी की बेटी, उस जलपरी ने, जैसे ही सुना कि उसके पति ने उसके बारे में लोगों को बता दिया है, उसने उसे उसी दम छोड़ दिया और वापस नदी में कूद गयी. उसकी बेटियों ने भी उसका साथ दिया. नदी में कूद कर वे भी जलपरियां बन गयीं. उसके बेटे जरूर अपने पिता के साथ रहते रहे, पर उन्होंने अपनी उस रहस्यमयी मां को फिर कभी नहीं देखा.

□□□

(अनुवाद : महेंद्रनाथ झा)

कृतियां

तीन कहानी-संग्रह

'रथचक्र'

लेखक : हिमांशु जोशी; प्रकाशक : पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली; पृष्ठ : ११२, मूल्य : आठ रुपये.

'अंततः' के बाद **'रथचक्र'** हिमांशु का दूसरा कहानी संग्रह है, जिसमें उनकी १२ कहानियां संकलित हैं. इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें कोई दांव-पेंच नहीं है और न ही कोई ऐसा उलझाने वाला बिंब या प्रतीक, जो इनकी संप्रेषणीयता में बाधक हो. सभी कहानियां बड़ी ही सहज, स्वाभाविक शैली में आम आदमी की रोजमर्रा की जरूरतों, आकांक्षाओं और समस्याओं को उठाती हैं और उनके लिए किये जाने वाले शारीरिक, मानसिक और आर्थिक संघर्षों का चित्रण करती हैं. हिमांशु का यह 'आम आदमी' मुख्यतः निम्न-मध्य वर्ग का है, इसलिए वह अपने वर्ग-चरित्र के अनुसार संघर्ष तो करता है, पर स्थिति को बदलने के लिए विद्रोह नहीं कर पाता—पर इस सीमा के कारण ही ये कहानियां इतनी मार्मिक हो उठी हैं कि पाठक अंत तक पहुंचते-पहुंचते शोषण के शिकार पात्रों और उनकी स्थितियों के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना से भर उठता है.

अलग-अलग कहानियों के विचार-पक्ष का अध्ययन करने पर मुझे लगा कि **'कोई एक मसीहा,' 'भेड़िये', 'हरे सूरज का देश'** और **'रास्ता रुक गया है'** में आर्थिक एवं व्यवस्थागत शोषण के प्रति व्यंग्य का भाव है, जो अंतिम कहानी में पूरी तीव्रता के साथ अभिव्यक्त हुआ है. इसी क्रम में **'जीना-मरना', 'सीमा से कुछ और आगे'** और **'रथचक्र'** आदि ऐसी कहानियां हैं, जिनमें आर्थिक संकट और दुश्चिंताओं में दबे-फंसे व्यक्ति और परिवार इस सीमा तक विपन्न हो गये हैं कि उनसे उबरने का उन्हें कोई मार्ग दिखायी नहीं देता.

संग्रह में कुछ कहानियां व्यक्तिगत संदर्भों की भी हैं, जैसे **'न जानना', 'एक समुद्र भी'** और **'अनचाहे'**, पर उनमें भी लेखक की दृष्टि सामाजिकता और पात्रों के परिवेश के प्रति सजग रही है.

कुल मिला कर कहा जा सकता है कि हिमांशु जोशी सही अर्थों में समांतर कहानीकार हैं और उन्होंने अपने नये संग्रह में जो कहानियां संकलित की हैं, वे वैचारिक दृष्टि से समांतर कहानियों की श्रेणी में आती हैं. साथ ही विशेष बात यह है कि हिमांशु की ये सारी कहानियां रचनात्मकता की दृष्टि से भी सुदृढ़ और सशक्त कहानियां हैं.

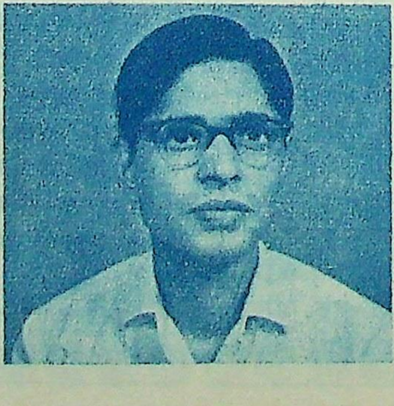
□ **डॉ. वीरेंद्र शर्मा**

'आदमखोर'

लेखक : आशीष सिन्हा; प्रकाशक : भारती भाषा प्रकाशन, ५१८।६ बी, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली—११००३२; पृष्ठ संख्या : १५३; मूल्य : दस रुपये; आवरण : आबिद सुरती.

आशीष सिन्हा ने १९७० के आसपास लिखना शुरू किया. तब से अब तक उनकी कई कहानियां तथा दो-तीन उपन्यास सामने आये हैं. लेकिन **'आदमखोर'** उनकी पुस्तक रूप में छपी पहली कृति है. इसमें उनकी १९७४ तक लिखी पंद्रह कहानियां संग्रहीत हैं.

हिमांशु जोशी



वैसे यह कतई जरूरी नहीं कि कोई लेखक अपनी रचनाशीलता का परिचय रचनाओं के परिमाण से दे. रचनाओं का परिमाण उसकी जिजीविषा का प्रमाण तो हो सकता है, उसकी सार्थकता का नहीं. पर खुशी की बात है कि आशीष दोनों कसौटियों पर खरे उतरे हैं, क्योंकि परिमाण में पर्याप्ति होने के साथ-साथ उनकी कहानियां सार्थक भी हैं. उदाहरणार्थ संग्रह की पहली कहानी **'साजिश'** ही लें. **'साजिश'** आज के आम आदमी के खिलाफ चल रही साजिश की कहानी है. 'उसी ध्वस्त होते हुए खंडहर में एक दिन एक तेज और तल्ख आवाज गूंजी थी—यार, इतनी मेहनत करता हूं, सुबह से शाम और फिर शाम से रात तक अपनी मेहनत बेचता हूं, फिर भी जैसे जीना चाहता हूं, नहीं जी पाता. कोई है, बहुत चालाक और खुदगर्ज, जो संगठित हो कर हमारी मेहनत को बहुत ही सस्ते में खरीदता रहा है!' (पृष्ठ : १३)

लेकिन ऐसा नहीं कि लेखक उस 'चालाक और खुदगर्ज' को पहचान नहीं पाता—वह उसे अच्छी तरह पहचानता है और **'रेड टेप', 'आदिम'** तथा **'बर्फ टूटता हुआ'** जैसी कहानियों में उसे ललकारता भी है. बल्कि उसके प्रति अपना संघर्ष जारी रखता है, और यह संघर्ष तब और भी दारुण रूप ले लेता है जब शोषण अपने चरम पर पहुंच जाता है. **'आदमखोर'** चरम पर पहुंचे इस शोषण को बड़ी बेबाकी से सामने लाती है. बेशक यह कहानी जाहिरा तौर पर सामंती परिवेश से जुड़ी हुई कहानी दिखती है, लेकिन अपने संश्लिष्ट रूप में यह एक निहायत समय-सापेक्ष कहानी है और इस समय-सापेक्षता को कहानी की भाषा तथा शिल्प ने कई गुना बढ़ा दिया है. हां, अंत में यह बात जेहन में जरूर बार-बार उभरती है कि सरजू ने अपनी जान पर खेल कर—जबकि उसका अंतः-



आशीष सिन्हा

करण उसे बुरी तरह कचोट रहा था—उस मासूम बच्चे को त्रिदिव नारायण की कुटिलता से बचा क्यों नहीं लिया? तब यह कहानी एक आम आदमी की बेचारगी की कहानी न रहती, बल्कि आदमी के जीवट की कहानी बन जाती.

वैसे संग्रह की अधिकतर कहानियां **'सारिका'** के पाठकों की सुपरिचित कहानियां हैं. ऐसी कहानियों में **'आदमखोर'** और **'बर्फ टूटता हुआ'** के अलावा **'घर'**, **'अनुराग'** तथा **'प्रेम'** को लिया जा सकता है. संग्रह की बाकी कहानियां भी हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं और अपनी बात अपने पूरे जोम में कहती हैं. **'शहर तक'** सांप्रदायिकता के शैतान का नकाब उतारती है, तो **'दिशाहीन'** तथा **'दुःख या सुख के लिए'** आदमी के भीतर की टूटन का बड़े संवेदनापूर्ण ढंग से चित्रण करती हैं. **'एक एबसर्ड नाटक'**, **'अच्छा तो फिर कभी'** तथा **'पेशा'**—ये तीन कहानियां, निस्संदेह एक दूसरी तरह का झटका देती हैं.

अंत में एक बात और: जहां आशीष में भाषागत ताजगी तथा परिवेश के प्रति भरपूर जागरूकता है, वहां वह कहीं-कहीं रूढ़ भी हो जाते हैं. बहरहाल, अपनी छिटपुट विसंगतियों के बावजूद यह संग्रह अपने लक्ष्य से चूकता नहीं और गहरी चोट करता है, और इसलिए अविस्मरणीय बन जाता है. आवरण भी अपनी विलक्षणता लिये हुए है.

□ **श्रवण कुमार**

'एक अभियान और'

संपादक : सुरेश उनियाल, सुभाष पंत; प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली–११०००६; पृष्ठ : १४०, मूल्य : दस रुपये.

साहित्य और राजनीति के प्रति गहरी रुचि रखने वाली एक ब्रिटिश रूपसी आलिसन क्लेग ने भारत की अपनी पिछली यात्रा के दौरान बातचीत में कहा था : मेरे लिए एलिफेंटा, ताजमहल और खजुराहो वाले भारत से ज्यादा दिलचस्प वह भारत है, जहां के लोग उन असंख्य मनोसंस्कारों और भावनाओं से परिपूर्ण हैं, जिन्हें समझने के लिए एक जिंदगी भी शायद पूरी न पड़े. सामयिक व्यक्ति और उसके जीवन को पूरी तरह जानना ही किसी देश को संपूर्णता में जानना है.

इस दृष्टि से प्रस्तुत संग्रह की अधिकांश कहानियां व्यक्ति के प्रामाणिक यथार्थ की कहानियां हैं. इसमें संकलित लगभग सभी लेखक नये हैं. रचना और जीवन के प्रति इनकी दृष्टि अभी विकसित हो रही है. इस संदर्भ में यह प्रक्रिया दिलचस्प हो सकती है कि एकदम नया लेखक जीवन को देखता, समझता और पसंद करता है या रचना की चुनौती को किस स्तर पर स्वीकारता है—इसका जायजा लिया जाये. तब यह लगता है कि इन कहानीकारों की कहानियों के माध्यम से विकसित होने वाली वैयक्तिक दृष्टि व्यक्ति और उसकी जिंदगी की वास्तविकता को गहरी आत्मीयता तथा सजगता के साथ प्रस्तुत करने में सक्षम है. यद्यपि इन कहानियों में न तो जिंदगी का व्यापक रूप है और न उसे महत्वपूर्ण बना कर कहने की कोई उत्तेजना ही है, इनमें केवल इतना है कि सामयिक व्यक्ति की पहचान उसके सामाजिक-ऐतिहासिक यथार्थ के बीच से की गयी है, बाहरी और भीतरी कारणों से समाज के ढांचे में होने वाले परिवर्तन तथा इनके बीच आकार लेने वाले विघटन तथा इन रिश्तों से ग्रहण करती सामाजिकता की बड़ी स्वाभाविक अभिव्यक्ति इन कहानियों में मिलती है. **'कल'** में जग्गन की मूक छटपटाहट का तीव्र बोध है जो घर के पुरानेपन को बदलने की कोशिश करते-करते स्वयं उसका एक हिस्सा बन जाता है. **'निर्णय'** में अनु का आहत वर्तमान है. यांत्रिकता में वह इस कदर डूब जाती है कि खाने, सोने और सोचने के अलावा उसे हर बात निरर्थक और निर्जीव लगती है. इसी तरह **'वापसी'** की कनु को लंबे अंतराल और यंत्रणा से गुजरने के बाद भी लगता है कि चीजें और स्थितियां नहीं बदली हैं, केवल चेहरे बदले हैं. दूसरे स्तर पर **'काली हवा'** और **'दीवार'** में वर्तमान से उत्पन्न विसंगतियों को फैंटेसी के माध्यम से तथा **'यहां भी नहीं'** में व्यक्ति के असहाय पड़ते जाने को एक सर्वथा नये कोण से देखा गया है. सामयिक व्यक्ति के संकट का जितना स्पष्ट आभास इन नये कहानीकारों की कहानियां देती हैं, उससे यह अंदाजा लगाने में सहायता मिलती है कि सामयिक जीवन की विसंगतियों और अतिवाद के विरुद्ध आज की कहानी की लड़ाई का सही स्वरूप क्या हो सकता है.

इन कहानियों की बुनावट और भाषा सपाट और साधारण होते हुए भी तीखी है. कहानीकारों के अपने अनुभव से उपजी होने के कारण इसमें संप्रेषणीयता है. भाषा और संवेदना के लिहाज से बहुत नयी न होने के बावजूद ये कहानियां सार्थक इसलिए हैं कि अनुभव को पूरी तरह संप्रेषित करती हैं—व्यक्ति के आपसी संप्रेषण को फिर से शुरू करने का एहसास इनमें है और इतना होना भी कम नहीं है. अलकनंदा घोष, जितेंद्र शर्मा, कृष्णा खुराना, देशबंधु, सांत्वना निगम, सुभाष पंत और सुरेश उनियाल की कहानियां शिल्प और संप्रेषण की अधिक समर्थ कोशिश के लिए विशेष रूप से रेखांकित की जाने लायक हैं.

□ **धनंजय**

राजगीर में

अखिल भारतीय समांतर लेखक सम्मेलन (४)

गत १,२, ३ दिसंबर, १९७५ को समांतर लेखकों का पांचवां अखिल भारतीय सम्मेलन राजगीर, बिहार, में संपन्न हुआ. इस सम्मेलन में हिंदी के अलावा मराठी, गुजराती, सिंधी, उर्दू, पंजाबी, कच्छी तथा तमिल के प्रतिनिधि लेखकों ने भाग लिया. पिछले तीन अंकों में आपने उद्घाटन-समारोह तथा पहली दो गोष्ठियों की रिपोर्ट पढ़ी. यहां प्रस्तुत है तीसरी गोष्ठी का विवरण.

तीन दिसंबर की सुबह राजगीर में. हवा में हलकी-सी सर्दी, मेजों पर यहां-वहां बिखरे चाय के कप और आरामकुर्सियों पर उनींदे चेहरे लिये बैठे लेखकों के अनौपचारिक झुंड. मधुकर सिंह, धूमकेतु, सतीश भास्कर और हरिहरसिंह बहुत सुबह उठ गये हैं और चाय-नाश्ते की व्यवस्था कर रहे हैं. कुछ लोग राजगीर के गर्म पानी के कुंड की ओर स्नान करने निकल गये हैं तो कुछ हवा की ताजगी को अपने फेफड़ों में भर लेने की कोशिश में यूं ही टहल रहे हैं.

पहाड़ी से गूंज कर आता बौद्ध-मंदिर के नगाड़े का परिचित स्वर और गेस्ट-हाउस के हाल में शुरू होती राजगीर सम्मेलन की तीसरी गोष्ठी. बातचीत हलके माहौल में हंसी-मजाक के साथ शुरू होती है, लेकिन यह सिर्फ सब लेखकों के हॉल में जमा हो जाने की तैयारी में है. धीरे-धीरे माहौल खामोश हो जाता है और कमलेश्वर बताते हैं कि इस गोष्ठी में कुछ महत्वपूर्ण ग्रामीण संदर्भ उठाये जाने वाले हैं और बहस की शुरुआत गोष्ठी के लिए तैयार किये गये लेखों के पाठ के बाद होगी, ताकि समय का पूरा उपयोग किया जा सके. और अजित पुष्कल गोष्ठी का पहला लेख पढ़ना शुरू करते हैं.

अजित ने अपने लेख **'ग्रामीण संदर्भ एवं परिस्थितियां'** में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हुए आज की ग्रामीण स्थितियों की एक प्रामाणिक तस्वीर प्रस्तुत करने की कोशिश की. 'आज के ग्रामीण संदर्भों और परिस्थितियों की चर्चा के पूर्व संक्षेप में स्वाधीनता के पूर्व के गांव की स्थितियों का जायजा लेना आवश्यक है, क्योंकि उस आधार पर ही हम आज के गांव के परिवर्तन को सही रूप से रेखांकित कर सकेंगे . . .उस समय के गांव की तस्वीर में एक जमींदार था, जो खेतिहर किसानों से लगान वसूल कर सरकार को देता था. खेतिहर मजदूर उसके चंगुल में थे. उनका श्रम मालिक और सूदखोर महाजन के लिए होता था. इसके अलावा बेगार लेने वाले पटवारी, पुलिस के लोग और ठगने वाले पुरोहित थे. दूसरी तरफ गरीब मजदूर और अछूत थे जिनका श्रम मालिक के लिए होता था. जाति-पांति का भेद-भाव प्रखर था, अशिक्षा थी और उच्च वर्ण वालों की तूती बोलती थी. सामंती व्यवस्था की नाकेबंदी बहुत तगड़ी थी. स्वाधीनता के बाद जमींदार समाप्त हुए. गांव में पंचायती व्यवस्था आयी, किंतु अधिकतर प्रधान और सरपंच उच्च वर्ण के लोग ही चुने गये. ये प्रधान पुराने जमींदार या उनके जैसे ही लोग थे. प्रारंभ में यह काम जातीय संगठन के आधार पर हुआ. चुनाव के इस हथकंडे से वर्णभेद बढ़ा. संपन्नता अपनी जगह रही, सिर्फ स्वामित्व का रूप बदल गया. यह स्वामित्व एक व्यक्ति के हाथ में न रह कर उच्च वर्ग के हाथ में चला गया. साझेदारी बढ़ गयी. परिणाम यह हुआ कि बिचौलियों का एक वर्ग तैयार होने लगा. इन लोगों को किसी प्रकार की राजनीतिक चेतना से कोई सरोकार नहीं है. उनका वेश नेताओं का है और काम है अफसरों से संपर्क बनाना, अपने अनुकूल सरकारी संस्थानों से लाभ उठाना. ऐसे लोगों का संपर्क थानों से है, ब्लाकों से है, बीज-भंडारों से है, लेखपालों तथा नहर के कर्मचारियों से है. ये लोग सरकारी संस्थानों से पैसा लेते हैं, गांव के विकास के लिए. खर्च करते हैं अपने ढंग से ये मुकदमे लड़वाते हैं और पैरवी भी करते हैं. खेतिहर मजदूर ज्यों-के-त्यों हैं. वे अब भी हल जोतने का काम करते हैं. कुछ के पास अपनी खेती है, पर बहुत कम, जिससे गुजारा नहीं होता. वे लोग अन्य व्यवसायों की ओर मुड़े हैं. उनमें से कुछ लोगों ने दर्जीगीरी और चमड़े का काम करना शुरू किया है. सरकारी तौर पर ट्रेनिंग प्राप्त की है. निम्न वर्ग के बहुत-से लोगों ने शिक्षा प्राप्त करके नौकरियां कर ली हैं. कुछ गांव से शहर चले गये हैं.

'बीच की पीढ़ी में भी परिवर्तनों के कारण आक्रोश है. वे सोचने लगे हैं कि उच्च वर्ण की तरह उनका भी जाती संगठन हो सकता है. उदाहरण के लिए चमार पंचायत करते हैं और यह तय करते हैं कि वे भी कंठी बांधेंगे और सवर्णों के हाथ का छुआ नहीं खायेंगे. वे मंदिर बनवाते हैं तो ये लोग भी मंदिर बनवायेंगे. चेतना-विहीन होने के कारण ऐसा आक्रोश उन्हें प्रतिक्रियावादी बना रहा है. निम्न वर्ग में भी नेताओं का आगमन हो गया है, पर वे संघर्ष की भूमिका तैयार करने में मददगार नहीं हो रहे. पर वे सवर्ण नेताओं के पिछलग्गू जैसे हैं और अपने अस्तित्व के लिए उन्हीं लोगों का हित साधते हैं.

'. . .मजदूरों पर अत्याचार अब भी कम नहीं हुआ. खेतिहर मजदूर अब भी विद्रोह नहीं कर सकता. यदि वह संगठित हो कर कोई निर्णय लेता है, तो उसे

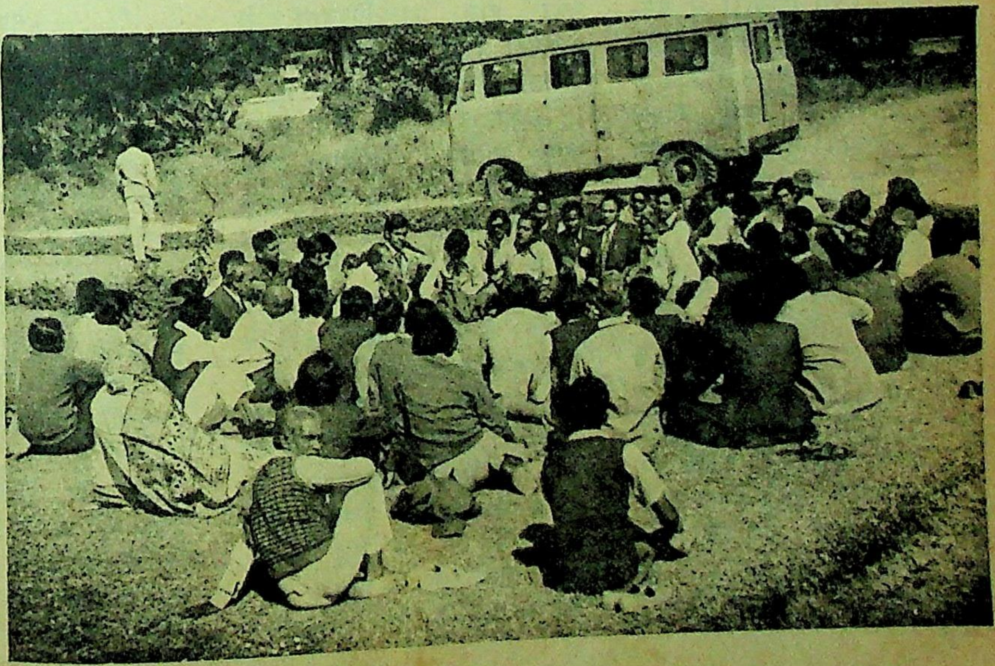
कुचल दिया जाता है. उसकी बस्ती उजाड़ दी जाती है; उन पर हिंसात्मक कार्रवाई होती है. . . उच्च वर्ग की महिलाएं भी अभी अशिक्षित और घरों के अंदर कैद हैं. उनके लिए 'रामायन पढ़ने भर' की शिक्षा को ही महत्व दिया जाता है और वे अब भी पुरातन अंधविश्वासों में जकड़ी हैं. . .

'स्वाधीनता के बाद गांवों में कहीं-कहीं हाई स्कूल और इंटर कॉलिज खुले हैं, परंतु इनके व्यवस्थापक उच्च वर्ण के धनी लोग हैं. विद्यालय इनके लिए प्रतिष्ठा और धनार्जन के साधन मात्र हैं. फिर जो शिक्षा-पद्धति है, वह गांव की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है. कॉलिजों में उच्च या मध्य वर्ग के बच्चे ही ज्यादा जाते हैं. खेतिहर मजदूरों के बच्चे तो शुरू से ही मजदूरी में लग जाते हैं. पढ़े-लिखों में भी बहुत कम ऐसे हैं जो गांव की उन्नति के लिए कुछ करते हों. . . सरकारी तौर पर कृषि के औजारों या अन्य साधनों के लिए जो सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं, उनका उपयोग बड़े किसान ही कर पा रहे हैं. छोटे किसान अब भी पुराने हल-बैलों के सहारे हैं और ऋण से ग्रस्त हैं.'

ग्रामीण परिवेश का बारीकी से जायजा लेते हुए अजित पुष्कल ने अपने लेख में कहा कि आज भी विभिन्न संस्थानों के रूप में गांव में सामंती व्यवस्था विद्यमान है. वहां एक मौकापरस्त सुविधावादी वर्ग तनाव की स्थिति बनाये हुए है, यद्यपि नयी पीढ़ी का एक छोटा-सा वर्ग इस सामंती व्यवस्था से टकराने की कोशिश कर रहा है.

अजित ने अपने लेख में गांव के सांस्कृतिक माहौल को भी रेखांकित किया : '. . .रेडियो, ट्रांजिस्टर वहां भी पहुंच गये हैं. सिनेमाई गीतों का प्रचार है. परंपरागत लोकगीतों का ह्रास हो रहा है. फिल्मी धुनों पर कीर्तन तथा संस्कार के गीत गाये जाने लगे हैं. रामलीला, रासलीला तथा नौटंकियों में भी ऐसी धुनों का प्रवेश हुआ है. श्रम और जमीन से जुड़े लोकगीतों का अभाव होता चला जा रहा है. लोककथाओं का रिवाज टूट रहा है. लोकनाटकों के कथानक श्रृंगारी होते हैं. उनके नायक-नायिकाएं ऐतिहासिक, पौराणिक और धार्मिक पात्र होते हैं. स्वांगों का व्यंग्य पक्ष कमजोर हो चुका है. सामाजिक संदर्भों से संबंधित नाटकों के पात्र दानवीर महाजन, सती स्त्री, डाकू, वेश्या तथा स्वामी भक्त नौकर आदि ही होते हैं. कुल मिला कर सामंतों को खुश रखने वाली संस्कृति का प्रचलन है.'

ग्रामीण परिस्थितियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने के बाद अजित पुष्कल ने इस कसौटी पर हिंदी के आंचलिक लेखन का मूल्यांकन करने की कोशिश भी की. प्रेमचंद की गौरवशाली परंपरा की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रेमचंद अपने पात्रों से संवेदनात्मक स्तर पर संबद्ध थे और उन्हें गांव की जनता से अपार प्रेम था. **'पूस की रात'**, **'कफन'**, **'गोदान'** आदि रचनाओं का उल्लेख करते हुए अजित ने बताया कि प्रेमचंद ने कथ्य के अतिरिक्त अपनी भाषा का तेवर भी ग्रामीण संदर्भों से उठाया. यही कारण है कि उसमें सहज सरलता और जिंदगी से जुड़े मुहावरे दिखायी देते हैं. स्वातंत्र्योत्तर कथा-साहित्य का विवेचन करते हुए अजित पुष्कल ने अपने लेख में **'बाबा बटेसरनाथ'** (नागार्जुन), **'राजा निरबंसिया'** (कमलेश्वर), **'हिरना की आंखें'** (मधुकर गंगाधर) आदि कहानियों में प्रयुक्त ग्रामीण शैली का उल्लेख किया. . . ग्रामीण परिवेश को प्रस्तुत करने में नागार्जुन, रेणु, मधुकर गंगाधर, मार्कंडेय, शिवप्रसाद सिंह आदि के रचनात्मक योगदान का



एक गोष्ठी के दौरान : समांतर लेखकों के बीच गंभीर बातचीत—कमलेश्वर अपनी बात समझाते हुए.

विवेचन करते हुए उन्होंने कहा कि इधर के कथाकारों में मधुकर सिंह, इब्राहीम शरीफ और मिथिलेश्वर ने ग्रामीण जिंदगी से प्रत्यक्ष अनुभव ले कर कुछ सार्थक कहानियां लिखी हैं.

अंत में अजित पुष्कल ने कहा कि यह सही है कि हिंदी कथा-लेखन समृद्ध हुआ है, पर इस समृद्धि के बीच लेखन में ग्रामीण चेतना का अभाव भी होता चला गया है. 'यह एक अहम मसला है और हिंदी लेखन के अधूरेपन का संकेत भी. हमें सोचना चाहिए कि प्रखर चेतना के संवाहक होते हुए भी हम गांव की जनता से कट कर क्यों चल रहे हैं? ...निस्संदेह बिना गांव को समेटे हिंदी लेखन की समग्रता खंडित ही रह जायेगी.'

* *

गोष्ठी का दूसरा लेख था **'महानगरों में बसे गांव'** जिसे राम अरोड़ा ने लिखा था. 'वे दिन कितने अच्छे थे! अब यह क्या हो गया है? ...इस तरह के हताश वाक्य आज प्रायः हर भारतीय अकसर सस्वर या मन ही मन दोहराता है और आने वाले दिनों की कल्पना या किसी बेहतरी की कामना करने में अपने-आपको असमर्थ पाता है. लेकिन कठिनाई यह है कि जो चंद मर्दानें इस लाचारी से छटपटाते हैं, वर्तमान जीवन-पद्धति उनसे सहज न्यूनतम आत्मसम्मान भरी जिंदगी की बेहद जायज और मानवीय सुविधा भी छीन लेती है. इस झल्लाये हुए छिटपुट और गाहे-बगाहे मिलने वाले आदमी को अपने सहजात कुल या फ्रेटर्निटी की सहानुभूति या सहयोग भी नहीं मिल पाता. खाने-पीने और परिवार चलाने जैसी बहुत जरूरी जिम्मेदारी और उद्यम प्रस्तुत करने के लिए उसे दैनिक जीवन में दर्जनों ऐसे समझौते करने पड़ते हैं जो उसके स्वत्व को छीन कर उसे सांस लेने और उम्र के बरस ढोने का कठपुतला बना कर रख देते हैं.

'...मेरे शहर में, लॉजिंग हाउसेज में लाखों ऐसे जवान, अधेड़ और बूढ़े पड़े हैं, जिन्होंने छोटे-बड़े विद्रोहों की सजा के परिणामस्वरूप अपने समाज से विलगाव का दंड पाया है और अब कोई भी समाजशास्त्रीय अथवा राजनीतिक भाषा उन्हें आदमी कहने से सकुचाती है. ये हारे-थके, खामोश लोग ऐसे एकाकी प्रेतों का-सा जीवन बिता रहे हैं जो आदमी कहलाने का प्रिविलेज खो बैठे हैं, मगर प्रेत-लोक के द्वार उनके लिए इसलिए बंद हैं कि वे आदमियों की दुनिया में आतंक पैदा नहीं कर सकते. ये प्रेत आज भारत के हर गांव, कस्बे और छोटे या बड़े शहर में 'जी' रहे हैं. जी भी इसलिए रहे हैं कि मरना किसी मतलब से होता है. अब यह मतलब कौन कहां से लाये? जो यह मतलब ढूंढ़ लाने का, समझने-समझाने का बीड़ा उठायेगा, धुंध के पार एक क्षितिज के बारे में भी बतायेगा, वही नयी चेतना का बिगुल भी बजायेगा. वही यह भी समझायेगा कि कठिन संघर्ष के बाद जो नयी सुबह हासिल करनी है, उसका रंग सिंदूरी होगा, मगर उस सिंदूर से जमीन पर हरियाली लहलहायेगी और उस आदमी को देखने वाले आदमी की आंखें और होंठ आत्मविश्वास से मुसकरा रहे होंगे, और मन और मस्तिष्क में बल और आस्थाएं होंगी. ....कौन होगा यह बीड़ा उठाने वाला आदमी? कौन होगा अपने आदमियों को यह सब बताने और बता-समझा कर उनके साथ चलने वाला आदमी?'

इस भूमिका के साथ राम अरोड़ा ने अपने लेख में कहा कि विभाजन और स्वतंत्रता के बाद के सामान्य जन को तकलीफों ने इतना सताया है कि वह कष्ट या पीड़ा से बिलबिलाने की जगह स्वयं से यह उम्मीद रखता है कि वह यह सब सह जायेगा. 'सह पाना आज प्रायः संपूर्ण मध्यम वर्ग के लिए आत्मनिर्भरता का पर्याय बन गया है. जो सह जाता है, वह अपने सहजात से विमुख रह कर भी उम्र काटने का ढंग सीख लेता है. जो नहीं सह पाता, वह सभी की त्योरियों का शिकार हो कर अपने-आपको समाजच्युत-सा महसूस करता है ....आज एक बहुत बड़ा वर्ग आदमी का मूल्यांकन उसकी सुविधा-संपत्ति से करने की कुत्सितता में यकीन करने लगा है. इस वर्ग व इसकी मानसिकता को आसपास की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अराजकता का कोई भी संकट प्रभावित नहीं करता. यह मध्यमवर्ग बौद्धिक इम्यूनिटी का सबसे बड़ा मरीज है. भ्रष्ट शासन तंत्र के लिए ऐसे लोगों के बल पर न सिर्फ टिके रहना, बल्कि फलते-फूलते रहना और विदेशी अवसरवादियों और षड्यंत्रकारियों द्वारा चुपचाप तरीके से किसी व्यवस्था में सेबोटाज करवाना बहुत आसान होता है ...यह वर्ग हर शासकीय परिवर्तन को स्वीकारता है, धारण करता है और उसके प्रति भक्ति अंगीकृत करता है, इसलिए हमेशा कायम और खुश रहता है. कठिनाई यह है कि इस वर्ग को कोई यह नहीं बताता कि उसने कभी गलत किया था!

'....मगर यह सच है कि इस वर्ग को चेताने का काम सिर्फ साहित्य कर सकता है. इस वर्ग को झिझोड़ना और जरूरत पड़ने पर पीट-पाट कर दुरुस्त करना किसी भी परिवर्तन के लक्ष्य की पहली शर्त है.'

औद्योगिक और खेतिहर मजदूरों की स्थिति पर विचार करते हुए राम अरोड़ा ने कहा कि यह वर्ग उपरोक्त मध्यवर्ग का जनक है, फिर भी उसके द्वारा डिसओंड है. यह वर्ग शासन में प्रतिनिधित्व नहीं पाता और अपनी तकलीफों के प्रति भी अनजान बना रहता है. 'हमारे सर्वहारा के साथ एक त्रासदी यह भी रही है कि उसे बुरे से बुरे दिन ही देखने-जानने

को मिलते रहे.'

'मानसिक तौर पर शहरी और ग्रामीण आदमी कभी एक-दूसरे को जानने, चाहने और अपनी-अपनी तुलना करने में समर्थ नहीं हो सका.... गांव और शहर के आदमी के बीच का फासला बढ़ गया है. आज गांव का एक विपन्न आदमी शहर आ कर दिमागी तौर पर थोड़ा और विपन्न हो जाता है और दूसरी तरफ शहरी आदमी की यथोचित उपाय होने के बावजूद गांव जा कर बसने और प्रसन्न रहने की कल्पना मात्र कुंठित हो चुकी है. इससे भी तकलीफें बढ़ी हैं. और ज्यों-ज्यों तकलीफें बढ़ी हैं, उनका असर कम हुआ है.'

देश के औद्योगिक और आर्थिक विकास को स्वीकार करते हुए राम अरोड़ा ने कहा कि इससे नवधनाढ्य वर्ग तेजी से पनपा है तथा परिवार और मैत्रिक संबंधों को गंभीर आघात पहुंचा है.... आज आर्थिक असमानता के आधार पर न तो कोई किसी का अपमान करने से झिझकता है और न ही अपमानित व्यक्ति इसका बुरा मानता है.

'साहित्य की भूमिका इस परिप्रेक्ष्य में आज पहले से कहीं ज्यादा स्पष्ट और सुनिश्चित है. कल तक साहित्यकार आम आदमी की इन रोजमर्रा की तकलीफों को ग्लोरिफाई करके एक तरह से सिखाया करते थे कि कष्ट सहने से आत्मा का उत्थान होता है. कल तक का साहित्यकार त्याग की महत्ता बड़ी निष्ठा के साथ अभिव्यक्त करता था. मगर आज उसके सामने इन साहित्यिक मूल्यों को नकारने के साथ-साथ नये लक्ष्यों की ओर इंगित करने का दायित्व भी है. और परिवर्तनकामी साहित्यकार को इन लक्ष्यों की ओर आम आदमी के साथ-साथ चलना भी है.'

(क्रमशः)

गोष्ठी-रपटें

समांतर और दलित-साहित्य

उन्नीस अप्रैल, रात के नौ बजे, अकोला नगर की साहित्यिक संस्था 'अक्षर' में दलित कथाकार एवं कवि केशव मेश्राम की उपस्थिति में नगर के युवा साहित्य-प्रेमियों के साथ समांतर एवं दलित-साहित्य पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया.

केशव मेश्राम ने दलित-साहित्य के आंदोलन को स्पष्ट करते हुए कहा—समाज का एक विशिष्ट वर्ग हजारों वर्षों तक बराबरी के व्यवहार के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर तरसता रहा और आर्थिक स्तर पर तड़पता रहा. उसने उच्च वर्ग का नेतृत्व हजारों वर्षों तक स्वीकारा, परंतु उसे दलितता के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला. आज वही 'दलित' शब्द उसी वर्ग के कान खड़े कर रहा है, यह भी संयोग की बात है.

प्रा. श्रीनिवास शर्मा के यह कहे जाने पर कि आर्थिक पिछड़ापन भी दलितता है, केशव मेश्राम ने कहा—यह प्रमुख आंदोलन से विचलित करने की एक स्थिति भी हो सकती है. इस बारे में समांतर और दलित लेखक सदा जागरूक रहेगा. अपनी बात आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, साहित्य सदियों तक मांसल और रेशमी आवरणों के बीच फंसा था. कमलेश्वर ने ठीक ही कहा है—सौंदर्यशास्त्र 'जांघों के जंगलों' में भटक गया था. अब उसे इनसानों की मेहनतकश दुनिया में भी बहुत कुछ पाने लायक दीख रहा है. इस प्रकार समांतर और दलित साहित्य उपेक्षितता को यथार्थ रूप में उजागर करने का एक माध्यम है.

आज हमारे देश का उच्च वर्ग काफी चालाक और धूर्त है. वह राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्र में भी किसी समस्या का 'आउटपुट' ऐसा निकालता है कि समस्या का समस्यापन समाप्त होने लगता है. वह आम आदमी के लिए 'सेक्स' का साहित्य देता है. बाबूराव बागूल की बात का संदर्भ देते हुए अपनी बात उन्होंने कही—कोई भी हृष्ट-पुष्ट औरत-मर्द दो घंटे से अधिक समय तक 'सेक्स' का आनंद नहीं ले सकते. जबकि तथाकथित वर्ग ने तथा लेखकों ने उन्हीं दो घंटों में संपूर्ण साहित्य की दुनिया बनायी. यह जीवन के बाईस घंटों पर किया गया सरासर अन्याय है.

इसी संदर्भ में दामोदर खड़से ने प्रश्न उठाया कि क्या कारण है कुछ समांतर कहानियां आम आदमी की होते हुए भी आम आदमी की समझ में नहीं आतीं? उत्तर में उन्होंने स्पष्ट किया—आम आदमी आज तक एक निश्चित ढांचे की मनोरंजक कहानियां ही पढ़ा करता था, पर अब उसे आचार्यों के सांचों से अलग जब अपने ही माहौल की बात बतायी जा रही है, तब वह अपनी रुचि को एडजस्ट नहीं कर पा रहा है.

कैलाश सेंगर ने पूछा—क्या यह आवश्यक है कि समांतर और दलित-साहित्य के लिए भोगा हुआ ही दर्द हो? सहानुभूति से काम नहीं चल सकता? उन्होंने कहा—स्वानुभूति किसी भी विषय-वस्तु में जान फूंकती है, वैसे शार्प लेखक सहानुभूति को अनुभूति बना सकता है. इस आंदोलन में विशेषकर दो नामों की चर्चा की गयी —कमलेश्वर और इब्राहीम शरीफ. उन्होंने कहा इसी प्रकार कई लेखक हैं, जो प्रस्थापित होने के बाद भी इस लेखन में अपना योगदान दे रहे हैं.

हिंदी साहित्य के संदर्भ में बोलते हुए डा. पटनायक ने कहा—प्रेमचंद ने भी **'ठाकुर का कुआं'** में दलितों के बारे में लिखा है. पर वह दलित मात्र सहानुभूति ही अर्जित कर पाता है. इस संदर्भ में केशव मेश्राम ने अपनी मराठी



विचार गोष्ठी : (बायें से) चतुर कोठारी, कमर मेवाड़ी, देवेंद्र कुमार हिरण, एस. एम. भटनागर, डा. आलमशाह खान तथा डा. नवल किशोर

कहानी 'मालण' सुनायी, जिसमें नायक अपनी भावनात्मक रक्षा के लिए बदले की भावना और घृणा से 'लैस' हो जाता है. इस पर आक्षेप करते हुए अशोक कुलकर्णी ने कहा—यह समाज-व्यवस्था के लिए घातक है. मेश्राम जी ने कहा—तीन हजार वर्षों तक दलितों का सवर्णों पर कर्ज है कि वे उनकी मर्जी के अनुसार जियें. इतने वर्षों तक शोषित व्यवस्था में रहने के बाद इस मोड़ पर थोड़ी-बहुत खड़खड़ाहट तो होगी ही!

पुरुषोत्तम बोरकर ने शंका उपस्थिति की कि कुछ चालाक लेखक प्रसिद्धि के लिए समांतर और दलित-साहित्य आंदोलन में घुसने का प्रयत्न कर रहे हैं. उत्तर में उन्होंने कहा—मांग और पूर्ति के सिद्धांत पर लिखा गया साहित्य समय की कसौटी पर खरा नहीं उतर सकता.

लगातार तीन घंटे तक समांतर और दलित-साहित्य पर चर्चाओं द्वारा उनकी संभावनाओं पर विचार किया गया.

□ **दामोदर खड़से**

आम आदमी

राजसमंद (राजस्थान) में 'आम आदमी और आज की कहानियां' विषय पर विचार गोष्ठी तरुण साहित्य संगम के आयोजन में हुई. विषय का प्रवर्तन करते हुए कमर मेवाड़ी ने कहा कि आज की कहानी आम आदमी के संघर्ष और रोटी के लिए लड़ी जा रही लड़ाई की कहानी है. संयोजक चतुर कोठारी ने कहा कि आज की कहानी में आम आदमी के जीवन का वास्तविक चित्रण हो रहा है, इसलिए वह समय का सत्य है और उसके महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता.

गोष्ठी के प्रमुख अतिथि डा. आलमशाह खान के विचार में लंबी गुलामी के बाद आज के आदमी में सही बयानी का जो हौसला हुआ है, वह आज की कहानी की ही देन है. डॉ. शंभूलाल शर्मा ने आम आदमी के सही बात कहने की स्थिति में होने का कारण उसकी गरीब से दोस्ती होना बताया.

अध्यक्षीय भाषण में डा. नवल किशोर ने कहा कि आज की जिंदगी में जो दुखी है, पीड़ित है या सताया हुआ है. वही आम आदमी है और आज की अधिकांश कहानियां इसी आदमी की कहानियां हैं.

गोष्ठी के अंत में संगम के अध्यक्ष देवेंद्र कुमार हिरण ने आभार व्यक्त किया.

□ **कमर मेवाड़ी**

कहानी की भूमिका

पटना में साहित्य संगम द्वारा आयोजित गोष्ठी का विषय था 'कहानी की भूमिका'. मधुकर सिंह ने विषय का प्रारंभ करते हुए कहा कि कहानी की बात करते ही संपूर्ण साहित्य के प्रति हमारी संबद्धता और रचनात्मक सक्रियता का प्रश्न उजागर हो जाता है. आज की स्थिति में हम केवल मनुष्य-सापेक्ष की ही नहीं, समय-सापेक्ष की भी बात सोचते हैं. सीताराम यादव तथा गौरीकांत चौधरी ने ग्रामीण परिवेश को कहानी का विषय बनाने पर जोर दिया. सत्यनारायण ने यह विचार प्रकट किया कि अपने समय से जुड़ाव हर सही और ईमानदार कहानीकार के लिए बुनियादी जरूरत है. उन्होंने चेतावनी दी कि रचनाशीलता को सतही ढंग पर लेने के खतरे को समझना चाहिए.

गोष्ठी का समापन करते हुए मधुकर सिंह ने कहा कि लेखक की तरह फार्मूलाबद्ध और पुरानी धारणाओं में जीने वाला पाठकों का एक बड़ा समुदाय भी है, जिसे हमारी रचनाएं प्रभाववादी नहीं लगतीं. आज का समय सापेक्ष पाठक भी **'बड़े घर की बेटी'** और **'नमक का दारोगा'** को नहीं, **'कफन'** और **'सवा सेर गेहूं'** को ही सही परंपरा के रूप में स्वीकार करता है.

□ **हरिहर प्रसाद**



पटना गोष्ठी में भाग लेने वाले लेखक एवं पाठक

मोहन राकेश की स्मृति में नाट्य-महोत्सव

स्व. मोहन राकेश की स्मृति में पिछले दिनों एक सात-दिवसीय नाट्य-महोत्सव का आयोजन रायपुर (म. प्र.) में ख्याति प्राप्त रंग-संस्था 'वर्तमान' ने किया जो अनेक दृष्टियों से सफल रहा. प्रतिदिन एक नाटक प्रस्तुत हुआ. कलकत्ता के संगीत कला मंदिर ने **'किसी एक फूल का नाम लो'** और **'बर्फ की दीवार'** का; ग्वालियर के कला मंदिर ने **'युवा अजब बूढ़े गजब'** और **'पगला घोड़ा'** का; कानपुर की रंग-संस्था 'प्रतिध्वनि' ने **'फंदी'** का; जबलपुर की 'विवेचना' ने **'गिनी पिग'** का; रायपुर के महाराष्ट्र नाट्य मंडल ने **'खामोश, अदालत जारी है'** का मंचन किया.

इन नाटकों में **'फंदी'**, **'किसी एक फूल का नाम लो'** और **'गिनी पिग'** की अत्यंत सराहना हुई.

नाट्य समारोह के साथ ही पहले दिन **'रंगमंच की स्थिति और संभावनाएं'** विषय पर एक विचार-गोष्ठी भी हुई, जिसमें डा. शंकर शेष, श्री कन्हैयालाल नंदन, श्री प्रमोद वर्मा तथा श्रीमती अनीता राकेश ने भाग लिया. संचालन किया श्री गिरिजा शंकर ने.

दूसरे दिन प्रसिद्ध रंग-समीक्षक नेमिचंद्र जैन का **'आधुनिक रंगमंच की नयी दिशाएं'** विषय पर व्याख्यान हुआ. जैन जी ने रंगमंच की पिछले दशक में हुई प्रगति पर और उसकी आवश्यकताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नाटक को बड़े शहरों में केंद्रित करने की अपेक्षा उसका विस्तार छोटे-छोटे शहरों में करना चाहिए, ताकि उसे अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाया जा सके.

□ **आशा जरगर**



वर्तमान, रायपुर की गोष्ठी : (बायें से) अनीता राकेश, कन्हैयालाल नंदन तथा डा. शंकर शेष

दमोह का छात्र रंगमंच

दमोह में आधुनिक सज्जा-सुविधा वाले रंगमंच भवन का तो अभाव है, किंतु यहां के विद्यालयों के वार्षिकोत्सवों के अवसर पर प्रस्तुत नाटक इस अभाव की कुछ अंशों में पूर्ति करके रंग प्रेमियों की किंचित तुष्टि करते रहते हैं. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रंगमंच पर प्रस्तुत हरिशंकर परसाई की प्रख्यात व्यंग्यकथा **'भोलाराम का जीव'** का नाट्य-रूपांतर इसका ताजा उदाहरण है. रूपांतर तथा निर्देशन श्रीकांत चौधरी ने तथा पार्श्वसंगीत का संयोजन अशोक चक्रवर्ती और प्रो. राममोहन अग्रवाल ने किया. प्रमुख भूमिकाओं में सुनील जैन, संदीप जैन, प्रदीप टंडन, के. सी. मलैया खूब जमे.

दूसरा उदाहरण है भूतपूर्व छात्र कलाकारों द्वारा प्रस्तुत **'बुंदेली बौटल नृत्य-गीत'**. यह एक प्रयोग था. बुंदेली लोकगीत के मुखड़ों को अंग्रेजी धुन में, लोकनृत्य तथा रॉक एन रोल की कॉकटेल में पेश किया गया. धुनें अशोक चक्रवर्ती और प्रो. राममोहन अग्रवाल ने बनायी थीं, नृत्य निर्देशन किया गजराज ठाकुर ने.

छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत नाटक **'रिहर्सल'** तथा हास्य एकांकी **'नाटक जो हो न सका'** भी प्रशंसनीय रहे.

□ **श्रीकांत चौधरी**



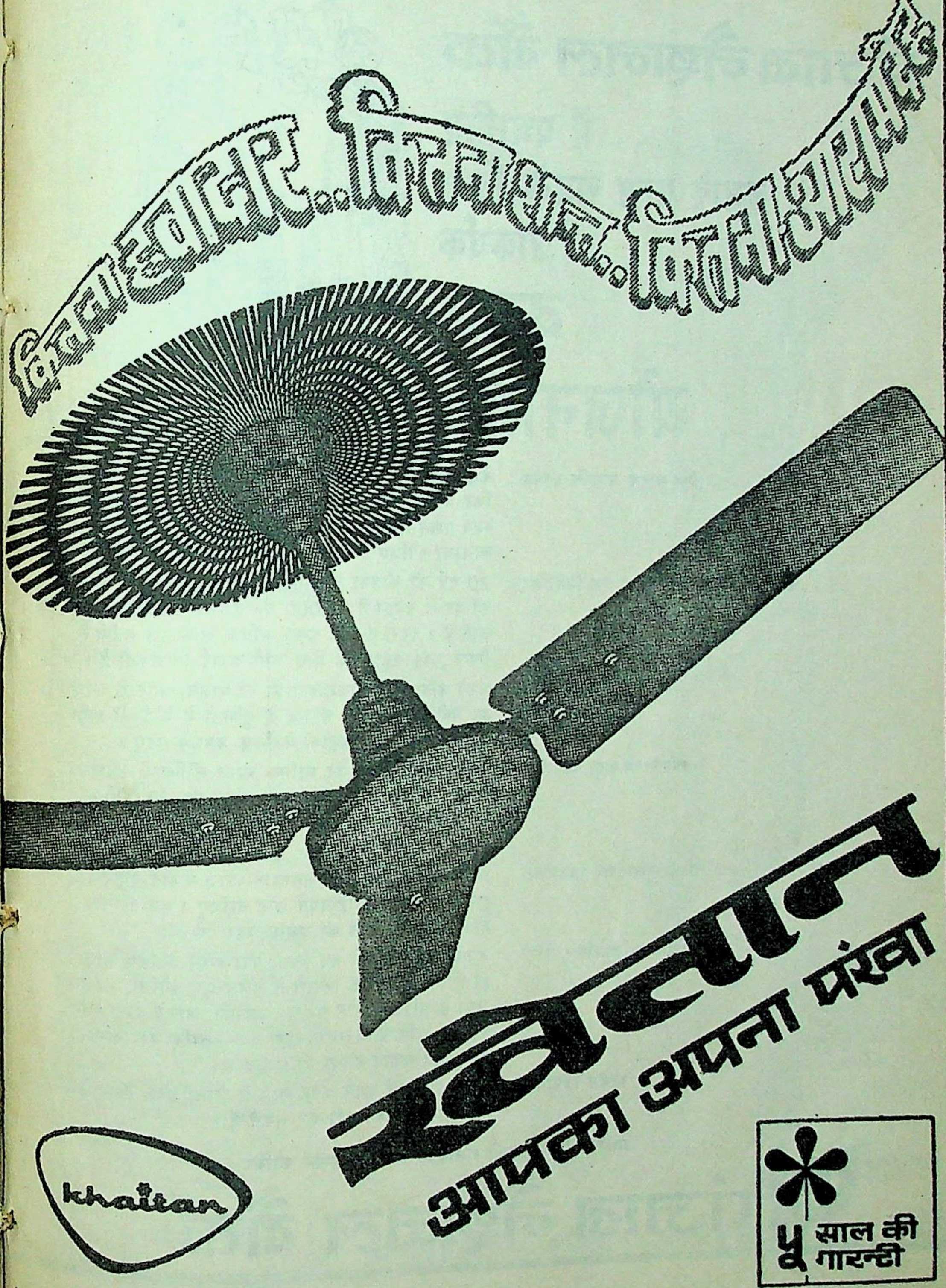
'नीला घोड़ा' का एक दृश्य : वीसेंट (अपराजिता) से घोड़े का भेद लेने की कोशिश करते हुए दो सार्जेंट (बिंदु और राजीव)

ब्राजीली बाल-नाटक

गोरखपुर में नवगठित समांतर युवा और बाल रंगमंच का प्रथम प्रदर्शन ब्राजीली बाल-नाटक **'नीला घोड़ा'** था. इसकी सफलता का श्रेय रहा बाल-निर्देशकों अनिल श्रीवास्तव तथा अपराजिता को. अपराजिता ने अपनी अभिनय-क्षमता से भी दर्शकों को चमत्कृत किया.

हिंदी में बाल रंगमंच के अभाव की पूर्ति करने की दिशा में यह एक सराहनीय प्रयास है.

□ **कृष्ण गोपाल**


कितना शानदार..कितना शान्त..कितना आरामदेह
खेतान
आपका अपना पंखा
khaitan
5 साल की गारन्टी
श्रेष्ठता का प्रमाण
खेतान फैन्स प्राइवेट लिमिटेड १८, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-१

पंजाब नैशनल बैंक

में पधारिए
हमारे पास सबके लिए
आकर्षक
बचत
योजनाएं हैं



होल लाइफ एन्युटि इन्कम : केवल सात वर्षों तक नियमित मासिक किस्तें जमा कीजिए: फिर मज़े से जीवन भर अपनी मासिक किस्त के बराबर स्वयं पेंशन लीजिए और अपने उत्तराधिकारियों के लिए व्यवस्था कीजिए। आपकी असल पूंजी ज्यों की त्यों रहेगी।

मल्टी-बेनिफिट एन्ड ओल्ड एज डिपाजिट : 20 वर्ष की योजना में लगा आपका पैसा 31.6% प्रति वर्ष की दर से बढ़ता है; 5,000 रु० बढ़कर 36,640 रु० हो जाते हैं। 100 रु० या इससे अधिक राशि 13 महीने से लेकर 241 महीनों के लिए जमा कराई जा सकती है।

रिकरिंग डिपाजिट : अपने भविष्य की आवश्यकताओं की योजना आज ही बनाइए। हर महीने 5 रु० या 5 रु० के गुणितों में कोई भी राशि 12 से लेकर 252 महीनों के लिए जमा कराइए।

स्पेशल फिक्स्ड डिपाजिट : अपनी सावधि जमा पर मासिक ब्याज लीजिए। उदाहरण के लिए 61 महीने के लिए जमा किए गए 30,000 रु० पर 250 रु० मासिक ब्याज मिलेगा। मूल राशि ज्यों की त्यों बनी रहती है।

आटोमेटिक एक्सटेंशन डिपाजिट : अपनी सावधि जमा पर लगातार ब्याज कमाते रहिए। हमारे पास स्थायी हिदायतें छोड़ दीजिए। हम परिपक्व होते ही आपके खाते की अवधि बढ़ा देंगे।

डिपाजिट-लिंक्ड हाउसिंग लोन : अपना मकान बनाने का सपना पूरा करने के लिए आज ही नियमित मासिक किस्तों में बचत शुरू कीजिए। आपकी जमा के परिपक्व होने पर हम आपको, आपके द्वारा जमा की गई राशि के बराबर, ऋण देंगे—ताकि आप अपनी पसन्द का मकान बनवा या खरीद सकें।

स्टूडेंट डिपाजिट : 14 वर्ष से बड़े छात्र अपने नाम से खाता खोल सकते हैं—और अपना चेक जारी कर सकते हैं।

ब्योरे के लिए हमारी समीपस्थ शाखा से सम्पर्क कीजिए

पंजाब नैशनल बैंक

davp 76/8

बेनेट कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए श्रीकृष्ण गोविंद जोशी द्वारा टाइम्स आफ इंडिया प्रेस, बंबई में मुद्रित व प्रकाशित. पो. बाक्स २१३, बंबई–४०० ००१; दिल्ली आफिस : ७ बहादुरशाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली–११० ००२; कलकत्ता आफिस : १३/१ और १३/२ गवर्नमेंट प्लेस ईस्ट लंदन आफिस : ३०–ए, डिस्ट्रिक्ट रोड, सडबरी, वेम्बले, मिडिलसेक्स, यू. के.

पंजीयत सं. एम. एच. दक्षिण बंबई: ३९९